वह जो अनिर्वचनीय है ताको कौन रूप रेखा वर्णनकरौं मैंहीं नहीं वर्णन करि सकौंहौं तो दूसर कौन आय जो देख्यो १ प्रणव ... वेदहू नहीं जानै हैं काहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्म वेदनको ... है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदि है उसको कौन कुल भेद कहौं ॥ २ ॥

नहिंतारागणनहिंरविचन्दा। नहिंकछुहोतपिताकेबिन्दा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोबरना ४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती। ताकरकहहुंकौनकुलजाती ५

न तारागण न सूर्य न चन्द्रमा न पिता को बिन्दु एकौ नहीं रहे जाते सब उत्पत्ति है ३ पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये व काको हुकुम वर्णन करत भये ४ और तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुषछबि, निरालम्ब जो होति ६

सहजशून्य जो प्रकाश देखिपरै ब्रह्म ताके मनके स्मरणते एक ज्योति प्रकट होय है सो सालम्ब है योगीजन ब्रह्माण्ड में देखै हैं और वह जो अनुभव ब्रह्म है सोऊ सालम्ब है काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होय है सो कबीरजी कहै हैं कि ये दोऊ सालम्ब हैं कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबके मालिक निरालम्ब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छबिकी मैं बलिहारी जाऊं हौं साहबनिरालम्ब काहेते हैं कि जीवकी जेती सामग्री हैं मनआदिक इन्द्रियन करिकै ज्ञानकरिकै अनुभव करिकै साहब न देखे जायहैं न जाने जायहैं जब आपही अपनो हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजायहैं और आपही ते जाने जाय हैं तामें प्रमाण "सो जानै जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हैं तुम्है है जाई ॥

तुम्हरी कृपा तुम्हैं रघुनन्दन । जानहिं भक्त भक्ति उरचन्दन १ ”
(अर्थ) हे श्रीरामचन्द्र ! जाको तुम जनाइ देहुहौ सो जानै है जो कहो हमारे ही जनाये कैसे जानैंगो वेदशास्त्र तो सब जनौते हैं तो एक बड़ो अवरोध है जब तुम्हारे जानबे के लिये शम दमादिक कियो हृदय शुद्ध भयो तब आप ही को मानैहै कि महीं राम हौं सो तुमको कैसे जानि सकै यां हेतुते तुम्हारी कृपैते तुमको जानै है जब तुमने वाको हंसरूप दियो तब वह पांचौ शरीर ते भिन्न ह्वैके हंसरूपमें स्थितभयो वह हंसस्वरूप कैसो है तुम्हारी अनिर्वचनीयासभक्तिरूप जो चन्दन है सो वाके उरमें लग्यो है ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमी नहीं आयसकै है जिनको कृपा करिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो जानै है तुमको सो ऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालम्ब तिनको कबीरजी कहै हैं कि मैं बलिहारी जाउँहौं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण “धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यदि । पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्वः शरो मे हन्तु रावणिम्” (इति बाल्मीकीये) लक्ष्मणजी ने मेघनादके मारत में शपथ कियो है कि जो पौरुषमें अप्रतिद्वन्द्वी श्रीराम होयँ कहे पुरुषत्वमें वैसो दूसरा न होय तौ हमारो बाण मेघनाद का शिर काटिलेइ सो मेघनादको शिर काटिलियो और भागवतहूमें है “ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् १ ” (अर्थ) हे महापुरुष ! तिहारे चरणारविन्द की हम वन्दना करैहैं कैसे तिहारे चरणारविन्द हैं कि सब कालमें ध्यानकरिबेके योग्य हैं और परिभव जो तिरस्कार ताके नाश करनेवाले हैं अर्थात् जो कोई ध्यानकरै है ताको तिरस्कार लोक में कोई नहीं करै है और मनोवाञ्छित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रयभूत और शिव विरंचि ते स्तुति करेगये व शरण्य कहे रक्षाकरनेमें समर्थ और दासनके पीड़ाहरनेवाले व दीननके पालनेवाले और संसारसमुद्र के नौकारूप तामें प्रमाण कबीरजी

को "साहब कहिये एकको, दूजा कहा न जाय। दूजा साहब जो कहै, बादबितण्डै आय ॥ ६ ॥

इति छठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवीं रमैनी ॥ ७ ॥

जीवमुख-जहियाहोतपवननहिंपानी। तहिया सृष्टिकौनउतपानी १
जहिया होत कली नहिं फूला। तहिया होत गर्भ नहिं मूला २
तहिया होत न बिद्या बेदा। तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिण्ड नहिं बासू। नाधर धरणि न गगन अकासू ४
तहिया होत गुरू नहिं चेला। गम्य अगम्य न पन्थ दुहेला ५
साखी ॥ अविगतिकी गति क्या कहौं, जाके गाँव न ठाँउ ॥
गुण विहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ६

जहियाहोतपवननहिंपानी। तहियासृष्टिकौनउतपानी १
तहियाहोतकलीनहिंफूला। तहियाहोतगर्भनहिं मूला २

जहिया कहे जेहि समय सृष्टि नहीं रही जेहि समय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौन उत्पन्नकियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बाल रह्यो न वृद्ध रह्यो न गर्भ रह्यो न गर्भको मूलबीज रह्यो ॥ २ ॥

तहिया होत न बिद्या बेदा। तहियाहोतशब्दनहिंखेदा ३
तहियाहोतपिण्डनहिंबासू। नाधरधरणिनगगनअकासू ४
तहियाहोतगुरूनहिंचेला। गम्यअगम्यनपन्थदुहेला ५

न वेद रह्यो न चौंदहौ विद्या रहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःख रह्यो ३ न पिण्ड रह्यो न पिण्डमें जीवको बास रह्यो न अधर कहे पाताल रह्यो न धरणि रही न आकाश रह्यो ४ न गुरु रह्यो न चेला रह्यो न गम्य कहे सगुण रह्यो न अगम्य कहे निर्गुण रह्यो और दुहेला कहे दूनों पन्थ नहीं रहे ॥ ५ ॥

साखी॥अबिगतिकीगतिक्याकहौं,जाकेगाँउनठाँउ॥

गुणबिहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ६

वह जो अविगति कहे अव्यक्त जो नहीं प्रकट होय धोखा ब्रह्म है निराकार ताके गाँउ ठाँउ नहीं है वह गुण करिकै विहीन जो निर्गुण है ताको पेखना कहे देखिबे को का कहिकै नामलीजै कि यह है वातो कुछ वस्तु ही नहीं है ॥ ६ ॥

इति सातवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवीं रमैनी ॥ ८ ॥

चौ० तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ईउपनिषद कहै सन्देशा १
ऊनिश्चय उनके बड़भारी । वाहिकिवरणकरैअधिकारी २
परमतत्त्वकानिजपरमाना । सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा । दत्तात्रयीवहै रसस्वादा ४
वहै वशिष्ठ राममिलि गाई । वहै कृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढाई । देहै धरे विदेह कहाई ६
साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियतमुवा नहिं होय ॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्टकहावै सोय ७

तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ई उपनिषद् कहै संदेशा १

तौने धोखा ब्रह्मको जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिषद्को प्रमाणदैकै प्रतिपादन करै हैं सो और सांच जो अर्थ है सो कबीरजी दोऊ तात्पर्य करिकै देखावै हैं "तत्त्वमसी" जो श्रुति उपनिषद्को उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसो कहहैं संदेश कौन कहावै है कि बात को पूर्वापर नहीं समुझै वाकी कहनूति वासों कहिदेइ जो संदेशको हेतुपूछै कि कौने हेतुते कह्यो है तो वह कहै हैं कि संदेश कहि दियो यह नहीं जानैहैं कि कौन हेतु ते कह्योहै सो ऐसे गुरुवालोग श्रुति को तो पूर्वापर जानै नहीं हैं अक्षरमात्र को अर्थ करै हैं कि तत्त्व ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मत्वही है सो जीवही को अनुमान तो ब्रह्म है जीव ब्रह्म कैसे होयगो ब्रह्म तो ज्ञानस्वरूप है शुद्ध है माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसे होती तो

गुरुवा लोग कहे हैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो श्रुतिको अर्थ यह है कि पूर्व षोड़शकलात्मक जीव को कहिआये हैं ताही को कहे हैं कि "त्वम् असि" तौन षोड़शकलात्मक जीवते है षोड़श कला ताहीं में हैं त्रो उनते भिन्न हैं शुद्ध है यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं समुझे हैं सो या बात मेरे तत्त्वमस्यर्थवाद में विस्तारते है॥ १ ॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी। वाहिकिबरणकैंअधिकारी २

ऊ कहे वह जो धोखा ब्रह्म है ताहीकी निश्चय उनके बड़ीभारी है वाहीकी वरण कहे वही धोखा ब्रह्म को अधिकारी जे चेला हैं तिनको वरणकै है अर्थात् अंगीकार करायदेइ है परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं जाने है जे जानेहैं तिनको कहे हैं॥२॥

परमतत्त्वकानिजपरवाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा। दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको निजते पर मानत भये याही हेतुते सनकादिक और नारद जे हैं ते सुख जानत भये अर्थात् सुखी होत भये भाव यह है कि जे कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अपने ते पर माने हैं तेई सुखी होय हैं ३ और फिरि कहे हैं याज्ञवल्क्य और जनकको संवाद भयो है सो याज्ञवल्क्य कह्यो जो परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्यो है और वही तत्त्व दत्तात्रयी चौबीसगुरुबनाय संसार ते वैराग्यकैकै तात्पर्य वृत्ति ते जान्यो है ॥ ४ ॥

वहैवशिष्ठराममिलिगाई। वहैकृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढ़ाई। देहै धरे विदेह कहाई ६

वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको मिलिकै गाय कहे कहिकै वशिष्ठजी जान्यो है और वही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश कियो है ५ वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी विदेह

कहावत भये इहां द्वैजनक जो कह्यो सो वा वंश में एक जनक नाम करिकै राजा भये हैं तेहिते विदेह होत आये ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल अभिमानाखोयकै, जियत मुवा नहिं होय ॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावै सोय ७

ऐसे जे परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमान खोयकै कहे त्यागिकै जियतै मुवा असनाभये अर्थात् हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीरते भिन्न ना भये देखत जो ना देखै सो अदृष्ट कहावै सो परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको वेद, पुराण, कुरान, शास्त्र, महात्मा इनके द्वारा देखतऊहैं, और जिनको वर्णन करिआये सनकादिकमहात्मनको उद्धार ह्वै गयो यहौ देखतऊ हैं समस्त दृष्टिते परन्तु ये मूर्खजीव गुरुवालोग ना जानै तेहिते अदृष्ट कहावै हैं कहे आँधरे कहावै हैं परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहीहैं तामें प्रमाण "राम एव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्" (इति हनुमदुपनिषदि) जो यह कहौ शुक सनकादिक येऊ न जान्यो तो अब को जानैगो नास्तिकपना आवै वस्तु मिथ्या होय है ताते साधु तो जानतई हैं जिनको साहब जनाय दियो है कबीरौंजी कहै हैं "ध्रुवप्रहलादउबारिया, सोहरिहमरेसाथ । हम को शंकाकछुनहीं, हम सेवैं रघुनाथ" ॥ ७ ॥

इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवीं रमैनी ॥ ९ ॥

चौ० बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यमबांधे अञ्जनि के पूता १
यमकेबाहन बांधिनिजनी । बांधे सृष्टि कहांलौं गनी २
बांधे देव तैंतीस करोरी । सुमिरतबन्दि लोहगैतोरी ३
राजासुमिरै तुरिया चढ़ी । पन्थीसुमिरि नामलै बढ़ी ४
अर्थबिहीना सुमिरै नारी । परजा सुमिरैपुहुमीझारी ५

साखी ॥ बँदि मनाय फल पावहीं, बन्दि दियां सो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशि दिन नामहिं लेव ६

चौ० बांधे अष्ट कष्टनौसूता। यमबांधे अञ्जनिके पूता १

अष्ट जे अष्टाङ्गयोग हैं और कष्ट जो विज्ञान है ते हिते बांधि गयो धोखा ब्रह्म को विज्ञानरूप कष्ट है तामें प्रमाण "अव्यक्ता हिगातिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते" (इति गीतायाम्) "श्रेयःश्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये। तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम्" (इति भागवते) और नौ सूतकहे सगुना जो नवधा भक्ति है तेहि करिकै बांधिगयो और यमकहें दुइ विद्या और अविद्या तेहिकरिकै अञ्जनी जो माया ताके पूत जे जीव हैं ते सब बांधि गये ॥ १ ॥

यमकेबाहनबाँधिनिजनी। बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी २

बाँधे देव तेंतीस करोरी। सुमिरतबन्दिलोहगैतोरी३

और यम जे विद्या अविद्या दूनों माया हैं तिनके सब जीव वाहनभये काहेते कि उनहींको ढोवन लगे उनहींकी चाल चलन लगे और वै जे दूनों माया हैं ते बांधिनिजनी कहे फेरि फेरि जीवन को उत्पन्न करिकै संसार दैकै बांधि लियो और शीशमें चढ़ी रहती हैं सो अनादि कालते बँधी जो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधेगये तिनको सुमिरतमात्रहीमें बन्दि कहे लोहेकी बेड़ी में परिके तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरत में का बन्दिलोहेकी बेरी जीव तोरि गये नहीं तोरिगये ॥ ३ ॥

राजासुमिरैं तुरियाचढ़ी। पन्थीसुमिरि नाम लै बढ़ी ४

अर्थबिहीना सुमिरैंनारी। परजासुमिरै पुहुमीभारी ५

तुरीया अवस्था को नाम है तामें ज्ञानीलोग चढ़ी कहे आरूढ़ ह्वैकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहै हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरै हैं और पन्थी जे अनेकपन्थ चलावनवालेहैं ते नानामतके पन्थ में आरूढ़ ह्वै अपने अपने इष्टदेवनके नाम लैकै साधन में बढ़ेहैं सो यही विरहीहैं ४ अर्थविहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य

ते त्यागि वन में बसिकै अपने इष्टदेवनको सुमिरै हैं ते और पर जो ब्रह्म है तामें जो जायो चहै सारी पुहुमी सहित सुमिरै है अ-र्थात् सर्वत्र ब्रह्मही देखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो माया है ताही को सुमिरै हैं काहेते कि जहांलों मन जाय है तहांलों सब माया है ॥ ५ ॥

साखी॥बँदिमनायफलपावहीं, बन्दिदियासो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशिदिननामहिंलेव ६

बन्दि कहे विद्या अविद्यारूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौने फल पावैहैं अर्थात् जे स्वर्गादिकं की चाह करै हैं ते लोहेकी बेरीमें परे जे "अहंब्रह्मास्मि" माने ते सोने की बेरी में परे सो जौने इष्टदेवतनको मनाये सो बन्दीही फल देतभये अथवा बन्दि में नाय कहे बन्दिमें डारिदेये हैं तेई फल पावै हैं अर्थात् स्वर्गा-दिक जे फूलहैं ते सब बन्दिमें डारनवारे हैं सो बन्दि डारनवारो जे फल देय. हैं ते का देव हैं नहीं हैं देव सो कबीरजी कहैहैं कि जे श्रीरामचन्द्र को नाम निशिदिन लेयहैं तेई उबरै हैं ॥ ६ ॥

इति नवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवीं रमैनी ॥ १० ॥

चौ० राही लै पिपराही बही। करगी आवत काहु न कही १
आई करगी भो अजगूता। जन्म जन्म यम पहिरे बूता २
बुतापहिरयमकरै पयाना। तीनलोकमें कीन समाना ३
बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू। पार्वती सुत बांध गणेशू ४
बँधेपवन पावक नभनीरू। चन्द्र सूर्य बांधे दोउ बीरू ५
सांचमन्त्र बांधे सबझारी। अमृत बस्तु न जानै नारी ६

साखी ॥ अमृत बस्तु जानै नहीं, मगनभये कित लोग ॥
कहहिं कबिर कामोनहीं, जीवह मरण न योग ७

राही लैपिपराहीबही। करगीआवतकाहु न कही १

राही कहे सुराहके चलनवाले और पिपराही कहे पीपरकी ब-
निका की नाई अनेक मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं
तिनहूं को लैके संसारसागर में बहतभये करगी बूड़ा को जल जो
छिटकैहै ताको कहैहैं सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूप बूड़ा
है ताके आवतमें काहु न कही कि या धोखाब्रह्ममें न परो बूड़ि
जाउगे ॥ १ ॥

आई करगी भो अजगूता। जन्मंजन्मयमपहिरेबूता २

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि जन्म
जन्म कहे जबजब ब्रह्माण्डन की उत्पत्ति भई तब तब यम पहिरे
बूता कहे यमको काल निरञ्जन जे हैं तिनको बूता कहे पराक्रम
काल पाहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़ है निरञ्जनै को पराक्रम
लैकै जीवनको मारै है ॥ २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना। तीनिलोकमोकीनसमाना ३
बांधें ब्रह्मा बिष्णु महेशू। पार्वतीसुत बांध गणेशू ४
बँधेपवनपावक नभनीरू। चन्द्रसूर्य बाँधे दोउबीरू ५

वही निरञ्जनको बुता कहे पराक्रम काललैके पयान कियो सो
लव, दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग, कल्परूप करिकै तीनलोक में
समाइ जातभयो ३ जौनकाल तीनिलोकमें समानो ताही में ब्रह्मा,
विष्णु, महेश, षण्मुख, गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाणरूपते सब
बँधतभये ४ अरु ताही में पवन व पावक व पानी व चन्द्र व
सूर्य और नभ सब बँधत भये ॥ ५ ॥

सांचमन्त्र सबबांधें झारी। अमृत बस्तु न जानै नारी६

झारादेकै जे साहब के सांच मन्त्र हैं तिनहूं को काल बांधि
लियो काहेते कि जो साहब के मन्त्रको अर्थ प्रभाव और साहब
को ज्ञानरूप अमृतवस्तु नारी जो आवरण कैलियो माया तामें
परे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तो हमारे मारे न मरैंगे याही
हेतुते बांध्यो है ॥ ६ ॥

साखी ॥ अमृतबस्तु जानै नहीं, मगनभये कितलोग ॥
कहैं कबिर कामो नहीं, जीवहमरन न योग ७

अमृतवस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौने कुत्सित संसार में तू मगन भयो कौन साहब जो कामो नहीं अर्थात् कामैं नहीं है सबही में है सो ऐसो अमृतवस्तु साहब समीपई है वा जीव का जनन मरण योग है अर्थात् नहीं है व्यंग्यते या कहै हैं कि जीव महामूढ़ है अथवा जिनको सांच मन्त्र माने रहे ते तो सब बांधि गये अमृतवस्तु जो रामनामको साहबमुखअर्थ सो जानतही नहीं है याते जनन मरण न छूटलभयो ॥ ७ ॥

इति दशवीं रमैनी समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवीं रमैनी ॥ ११ ॥

गुरुमुख ॥ आँधर गुष्टिसृष्टिभै बौरी । तीनिलोकमहँ लागिठगौरी १
ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी । देवनसहित ठग्यो त्रिपुरारी २
राज ठगौरी बिष्णुहिं परी । चौदह भुवन केर चौधरी ३
आदि अन्त जेहि काहु न जानी । ताको डर तुम काहे मानी ४
ऊ उतंग तुम जाति पतङ्गा । यमघर किहेहु जीव के सङ्गा ५
नीमकीट जस नीम पियारा । बिषको अमृत कहै गँवारा ६
विषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूल गो खोई ७
बिष अमृतगो एकहि सानी । जिन जाना तिन बिषकै मानी ८
कहा भये नल सुध बेसूझा । बिनपरचै जग मूढ़ न बूझा ९
मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशा रहई १०
साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुये कि बाजी ढोल ॥
स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानी रहिगा बोल ११

आँधर गुष्टि सृष्टिभै बौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी १

साहब कहैहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे आँधर हैं ते माया और निराकार धोखाब्रह्म याही की गोष्टी जो

मैंही ब्रह्महौं यह मानि अपने को मुक्त मानतभये कोई मायामें परि नाना देवतनकी उपासना करि अपने को भक्त मानत भये कोई जीवात्मै को मानै कोई सुन्निन को मानत भये सो यही ठगौरी जो माया है सो तीनोंलोकमें लागतभई सो आगे कहेहैं ॥ १ ॥

ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी। देवनसहितठग्योत्रिपुरारी २
राजठगौरी बिष्णुहिंपरी। चौदहभुवन केर चौधरी ३

शेषनाग को संहारिकै कहे बांधिकै माया ब्रह्मा को ठग्यो ते संसार की उत्पत्ति करनलगे नागकहजाई जो पाठ होय तौ माया ब्रह्मा को ठगिसि और शेषनाग कहँ जाइकै ठगिसि सो शेषनाग पृथ्वी को भार शीशमें धरतभये देवनसहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमें लगे देवता अपने अपने काममें लगे २ और चौदहभुवन को चौधरी विष्णु को करिकै ठग्यो ते संसार को पालन करनलगे याही रीतिते मायाते जे गुणाभिमानी रहे तिनको सबको ठग्यो ॥ ३ ॥

आदिअन्तज्यहिकाहुनजानी। ताकोडरतुमकाहेनमानी ४

फिरि कैसीहै माया जाको आदि अन्त कोई जनबई न कियो काहेते न जान्यो वा कुछ वस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्र है जेतो पदार्थ देखैहै सुनैहै कहैहै सो सब त्रिगुणमय है गुण न आत्मई में है न ब्रह्मही में है ताते ये सब मिथ्याहीहैं और धोखाब्रह्म मिथ्या है कैसे सो कहेहैं सबको निराकरण करत करत जो वा रहिजायहै ताही को मानो हौं कि सो ब्रह्म हमहैं ताहूको मूलअज्ञान कहौं सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशा में बिचारिदेखो तुमहीं रहिजाउ हौ तुम्हारोई अनुमान ब्रह्म है ताते मिथ्याही है जब तुम्हीं रहि गये तब तुम में तो माया ब्रह्मते छूटने की सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्य होती तौ पहिलेही ते तुमको काहे को बांधिलेती याते तुम डेराउहौ कि हम कैसे कै छूटैंगे सो या माया और धोखाब्रह्म को डर तुम काहेको मानते हौ मैं जो अनिर्वचनीय हौं ताके तुम अंशहौ

तुमहूं अनिर्वचनीय हौ नाहक धोखाब्रह्म और माया को अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ तुम मायाब्रह्म को भ्रमत्यागि मेरे अनिर्वचनीय नाम में लागिकै मेरे पास आवो मैं रक्षाकरि लेउँगो यह मालिक जे श्रीरामचन्द्र हैं ते कहै हैं ॥ ४ ॥

ऊउतङ्गतुम जातिपतङ्गा । यमघर किहेहु जीवकै सङ्गा ५
नीमकीटजसनीमपियारा । बिषको अमृतमान गँवारा ६

वह जो माया और धोखाब्रह्म अग्निरूप ताकी उत्तुङ्ग कहे बड़ी ऊंची लपटैहैं तुम जातिके पतङ्ग ह्वैकैं वामें काहे जरि जरि मरौ हौ सो हे जीव! नानावस्तुनको संगकरि जाहीमें मन लगाय मस्यो और सोई भयो याही भांति जनमिकै मरिकै यमके पास घरबनाये हौ अर्थात् या संगका प्रभाव है जो यमके यहां घर बनाये हैं ५ जैसे नीमके किरवा को नीमही पियारलगैहै जो मिष्टान्नौ पावै तौ न खाय ऐसे विषरूप जो विषय ताको अमृतमानि गँवार जो जीव हैं सो खाय हैं ॥ ६ ॥

बिषकेसंग कौनगुण होई । किंचितलाभमूलगो खोई ७
बिषअमृतगोएकहिसानी । जिनजानातिनबिषकैमानी ८

सो या बिषरूपी विषयके संग कौनगुणहै क्षणभरेको सुख है और सबको मूल जो मेरो ज्ञान सो नशायगो अनेक जन्म दुःख पावन लग्यो ७ साहब कहैहैं कि और नाना देवतन को जो नाम जपिबो और तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो यातो विष है और मेरे नामको जपिबो मेरे लोकमें जाय सुख पाइबो यातो अमृत है सो ये दूनों विष अमृत एकै में सानिगो कैसे जैसे साहब को नाम लीन्हे मुक्त ह्वैजाय है साहब के लोकमें जाय सुख पावैहै ऐसे औरहू देवतनके नाम लीन्हेसे मुक्त ह्वै जाय है औ तिनके लोक में जाय सुख पावैहै वास्तव एकही नाम भेदसे और और कहैहै या भाँतिते जे ज्ञान राखेहैं तिनके ज्ञान को मेरे अनिर्वचनीय नामरूप धाम के जे जनैया हैं तिनके ज्ञानको ते विषयी मानै हैं ॥ ८ ॥

कहाभयेनलसुधबेसूझा । बिनपरचै जगमूढ़ न बूझा ९
मतिकेहीनकौनगुणकहई । लालचलागेआशारहई १०

ऐसे बेसूझ जीव जिनको नहीं सूझपरै है ते कहां शुद्ध भये नहीं भये मैं जो अनिर्वचनीय ताके परचै विना जगमें मूढ़ जीवो तुम न बूझत भयो सो ऐसे मतिके हीन जे तुम तिनके कौन गुण कहैं लालचई में लागेरहैहैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषय की आशा में फिरै है सांच जो वेद को अर्थ मैं तांको न जानत भये ॥ ९। १० ॥

साखी ॥ मुवाअहै मरिजाहुगे, मुयेकी बाजी ढोल ॥
स्वप्नसनेहीजगभया, सहिदानीरहिगाबोल ११

साहब कहैहैं कि हे जीवो ! मुवा जो धोखा ब्रह्म नानादेवता तिनमें जो लागौगे तो मरिजाहुगे अर्थात् जन्मतै मरतरहौगे या तुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेद पुराण हैं सो बाजेहैं कहे कहैहैं तब तुम्हारा इष्टदेवन को स्नेह और सब सुख जगत्को स्वप्न ऐसा ह्वै जायगा ये सब मुयेहैं ये वेद पुराण तात्पर्यते डङ्कादैके कहै हैं अथवा जो गुरुवालोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै हैं सो सब संसार में मुये की ढोल बाजै हैं मरिजाहुगे जो यामें लगौगे तो तुम्हारी सहिदानी बोल रहिजायगा बोल कहाहै जे तुम अपने इष्टदेवनके ग्रन्थ बनाय जावगे तेई रहिजायँगे कि फलाने के बनाये ग्रन्थ हैं कालपाय वोहू न रहिजायँगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनाम को संसारमुख अर्थ करि संसारी भयो हौ सोई जगत् की सहिदानी मेरो नाम रहिजायगो ताहीको फेरि संसार मुख अर्थकरि संसारी होउगे जब नाम में मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे ॥ ११ ॥

इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवीं रमैनी ॥ १२ ॥

चौ० माटिक कोट पषाणकताला । सोई बन सोइ रखनेवाला १
सो बनदेखत जीवडेराना । ब्राह्मणविष्णु एककरिजाना २
जारि किसान किसानी करई । उपजै खेत बीज नहिं परई ३
त्यागिदेहु नर झेलिक झेला । बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
तीसर बूड़े पारथ भाई । जिन बन दाह्यो दवा लगाई ५
भूंकि भूंकि कूकुर मरिगयऊ । काज न एकस्यारसोंभयऊ ६
साखी ॥ मूस बिलारी एक संग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखो हो संतो, हस्ती सिंहै खाय ७

माटिककोटपषाणकताला । सोईबनसोइरखनेवाला १

माटीका कोट यह शरीर है पाषाण का ताला है कठिन भ्रम जौनेंते माया और धोखाब्रह्म में लग्यो है सोई भ्रम के वनको नानावाणी माया ताको रक्षक सोई भ्रमही है जब भ्रम मिटै तब माया धोखाब्रह्म तबहीं मिटै संसारताला खुलै तब मैं सर्वत्र देखेपरों ॥ १ ॥

सोबनदेखतजीवडेराना । ब्राह्मणबिष्णुएककरि जाना २

तौन जो भ्रमको वन नानाशास्त्र तिनके नाना मतन में तुम सब नहिं पारपाये कि कौन मत लैके संसार पार होइ ये शास्त्र एक मत नहीं कहे हैं तब डेराय ब्राह्मण भये "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" एक व्यापक तुम सब विष्णुही को मानतभये व्याप्य पदार्थ न मानतभये सो हे जीवो! जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें होयगो ताते एक मानिबो धोखई है अथवा ब्राह्मण जे हैं ब्रह्मज्ञानी और वैष्णवजे हैं विष्णुके दास तौनेके एकै मानतभये कि दास भाव करत करत जब अन्तःकरण शुद्ध होइगो तब अभेदई भाव होइगो काहेते कि देव ह्वैकै देवताकी पूजा करिबे को होइहै यह शास्त्र में लिखा है ताते हम विष्णुही ह्वैजाइँगे तौने दृष्टान्त देइहैं कि वहै तो बनैहै वहै रखवार तो कैसे पूर परै

माया ब्रह्म ईश्वर ई सब मनके कल्पित हैं मनै है और यही मन को रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वही तो भ्रम है और वही को रक्षक मानै है सो कैसे पूर परैगो ॥ २ ॥

जोरिकिसानकिसानीकरई। उपजैखेतबीज नहिं परई ३

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करैहै जौन बीज खेतमें बोवै है सोई उपजै है तैसे हे जीवो! तुम सब नानावाणी को विस्तार करि नानामतन में लाग्यो सोई फल भयो मेरो जो रामनाम बीज सो तौ खेत में परबई न कियो मेरो ज्ञान फल कहांते होय ॥ ३ ॥

छांड़िदेहुनरझेलिकझेला। बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
तीसर बूड़े पारथ भाई। जिनबन दाह्यो दवालगाई ५

सो हे नरो! झेली का झेला तुम छांड़ि देहु धोखाब्रह्ममें लागि कै तुम मायाको झेला चाहौहौ माया तुमहीं का झेलै है या नहीं जानौहौ कि धोखाब्रह्म माया शबलित है ताही मायाकी धारमें गुरु जे तुमको उपदेश किये ते और तुम दोऊ बूड़े ४ "पृथुविस्तारे" धातु है अपने ज्ञान दवाग्निको विस्तार कैकै अपने सेवकन के जे वनरूप कर्म जारि अपनेलोकनको लैगये ऐसे जे इष्टदेवता जिन-को गुरुवालोग उपदेश करै हैं सो हे भाई! तीसरे तेऊ मायाकी धार में बूड़े काहेते महाप्रलय में वोऊ नहीं रहिजायँ ॥ ५ ॥

भूंकिभूंकिकूकरमरिगयऊ। काजनएकस्यारसोंभयऊ ६

हे नरो! जैसे कूकुर शीशाके महल में अपनारूप देखि भूंकि भूंकि मरिजाय है तैसे तुम्हारोई अनुभव जो धोखाब्रह्म तामें लागि भूंकि भूंकि कहे शास्त्रार्थ करिकरि जन्मत मरत रहौहौ स्यार जो वाणी ताते एको काज नहीं भयो अर्थात् जौनी वाणी के दे-खाये प्रतिबिम्बदेख्यो अनुभव ब्रह्म मान्यो तौने के काज न भयो जनन मरण न छूट्यो अथवा हे जीवो! तुम जे कूकुरहौ ते स्यार, शिवा, भवानी, रुद्राणी अमर में लिखै हैं अथवा "अहंब्रह्म,

अहंब्रह्म, अहंईश्वरः, अहंभोगी, अहंसिद्धः, अहंबलवान्, अहं सुखी” इहै भूंकैहै तामें प्रमाण “ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।”इत्यादिकरूप जो वाणीहै ताको देखिदेखि भूंकतेहौ कहे पढ़ते हौ वा स्यारकूप वाणी के धरिबेको तो भूंकि भूंकि तुमहीं मारिगये स्यार ते कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जो वाणी सो तुम्हारी धरी न धरिगई वाको तात्पर्यार्थ को धन जानतभये रूपं जो वाणी मोमें वृत्ति तो नहीं राखौहौ अपने जानपनी को घमण्ड राखौ हौ ताते माया ते न छूटे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मूस बिलारी एक सँग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखौहो संतौ, हस्तीसिंहैखाय ७

हे नरो ! मूस जे तुमहौ तिनको बिलारी जो माया है सो कैसे न खाय एकसंग तो रहौहौ सो कैसे विना खाये रहिजाय सो हे सन्तो ! एक आश्चर्य और देखो तुम जे जीवहौ तेतौ सिंह हौ तिनको जो हाथी धोखाब्रह्म है सो खायलेय है जो मोको तुम जानौ तो तुम सिंहही बनेहौ तुम सब धोखा मिटावनवारे हौ ॥७॥

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवीं रमैनी ॥ १३ ॥

गुरुमुख-नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १
सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २
चले लोग सब मूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटि नहिं जाई ३
आजुकाजजियकालिहअकाजा। चले लादिदिग्गन्तर राजा ४
सहज बिचारत मूल गँवाई। लाभते हानि होय रे भाई ५
ओछी मती चन्द्र गो अथई। त्रिकुटीसंगम स्वामी बसई ६
तबहीं बिष्णु कहा समुझाई। मैथुनाष्ट तुम जीतहु जाई ७
तब सनकादिकतत्त्व बिचारा। जैसे रङ्क धनपाव अपारा ८
भोमर्याद बहुत सुखलागा। यहि लेखे सब संशय भागा ९
देखत उतपति लागु न बारा। एकमरै यककरै बिचारा १०

मुये गये की काहु न कही। झूठी आश लागिजगरही ११

साखी ॥ जरत जरत से बाचहू, काहेन करहु गोहारि ॥

विष बिषयाकै खायहू, रातदिवसमिलिझारि १२

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १

साहब कहै हैं यह तो उपदेश हम करते हैं तुम सबको परतीति जो नहीं आई सो यहि संसार में पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दिशा, काल, मन, आत्मा को धोखाब्रह्म ई नवौ द्रव्यकी चोट कठिन कौन मार्यो तुमको जाते तुम या मार्यो कि शरीर मैंहीं हौं देवता मैंहींहूं ब्रह्म मैंहींहौं सो तुम भूलगये नवौ द्रव्य मेराही शरीर है ताको न जान्यो तुम तामें प्रमाण "खं वायुमग्निं सलिलं महीं च ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्। सरित्समुद्रांश्च हरेःशरीरं यत्किंच भूतं प्रणमेदनन्यः" (इति भागवते) "यंआत्मानितिष्ठन्यमात्मानवेदयस्यात्माशरीरम्" (इतिश्रुतिः)॥ १ ॥

सोतो शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २

साहेब कहैहै हे जीवो! चित् अचित् जगतूरूप जो मेरो शरीर तामें तुम द्रव्यबुद्धि किये हौ सो त्यागिदेहु यह मेरही शरीर कैके देखौ तो नित्य है नहीं तो शेष होत हौ तब सब लुकाय जायहैं एक एक में लीन ह्वै जायहैं निषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौ कि मैं रहिजाऊँ हौं तब मैं तुमको हंसरूप दै आपने धामको लै आवौंहौं सो या जगत् मेरही शरीर है या परतीति तुमको काहू को न आई द्रव्यही बुद्धि मानते भये ॥ २ ॥

चलेलोगसब मूलगँवाई। यमकीबाढ़िकाटिनहिंजाई ३

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवायकहे भूलिकै हे जीवो! तुम सब नानापन्थ चलेहौ परन्तु यम कहे दोऊ विद्या अविद्यारूप जो घोरनदी तिनकी बाढ़ि जो है धारा सो न काटी जायगी अर्थात् न पैरी जायगी वाही में बूड़ि जावोगे अथवा यम जो हैं कालरूप ब्रह्म ताकी बाढ़ि जो वाणी जो एकते अनेक भई

है सो हे जीवो ! तुम्हारी काटी न काटी जायगी जो काटि पाठ होय तो यह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदी बाढ़ी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी काटी न काटि जायगी अर्थात् वाही में परे रहौगे अथवा चौदहौ जे यम वर्णन करि आये हैं तिनकी बाढ़ि बढ़ी है सो तुम्हारी काटी न कटैगी विना मोको जाने ॥ ३ ॥

आजुकाजजियकाल्हिअकाजा। चलेलादिदिगन्तरराजा ४

हे जीवो ! अनिर्वचनीय जो मेरो नाम ताको जो आजु समुझौ तो कार्य होयगो तिहारो और जो काल्हि कहे शरीर छूटे में समुझो चाहौ तो अकाज है नाजानै कौनी योनि में परौ फिरि समुझौ धौंना समुझौ सो हे जीवो ! तुमतो राजा हौ मन मायादिक ये तुम्हारे ही बनाये हैं सो तो तुम भूलिगये चलेलादि कहे विद्या अविद्या के जे नानाकर्म तिनको अङ्गीकार करि अर्थात् वहै बोझा अपने माथे में धरि दिगन्तर में जाय नानाशरीर धारण करत हौ सो अबहूं मोको जानि तुम सब यह दुःख त्यागो यह मायारूप धोखावालेन को उपदेश दियो अब सहजसमाधिवालेन को कहै हैं ॥ ४ ॥

सहज बिचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई ५

सहजकहे सो हंस अहं यह प्रतिश्वास बिचारत बिचारत सब को मूल जो मेरो नाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायादियो सो हे जीवो ! तुमको तो धोखाब्रह्म को लाभ भया परन्तु इस लाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हे भाइयो ! हानि ह्वैगई अर्थात् नहीं प्राप्तभई ॥ ५ ॥

ओछीमती चन्द्रगो अथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसई ६
तबहीं बिष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुम जीतहुजाई ७

वीर्यकी उलटी गति करत करत ओछीमतिकहे बुद्ध्यादिक सूक्ष्म ह्वै थिर ह्वैगई तब चन्द्ररूप जो वीर्य सो अथैगयो अर्थात् उलटी गति ह्वैगई तब दूनौं नेत्रको उलटिकै ध्यानलगाय प्राण

के साथ वीर्य को चढ़ाय त्रिकुटी में जहां इड़ा, पिङ्गला, गङ्गा, यमुना, सरस्वती को संङ्गम है स्वामी बसे हैं जहां पहुँचौहौ तब लक्ष्मीनारायण तुमसों कहे हैं कि अब ऊपर गैबगुफा में जायकै आठौप्रकारके मैथुन जीति लेहु अबै एकही प्रकार जीत्यो है तब तुम उहां जाउहौ सो आगे कहेहैं ॥ ६ । ७ ॥

तबसनकादिकतत्त्वबिचारा। जैसेरङ्कधनपाव अपारा ८
भोमर्यादबहुतसुख लागा। यहिलेखेसबसंशय भागा ९

सो जब गैबगुफा में ध्यान लग्यो ज्योति में मिल्यो तब सनकादिक कहे हे जीवो! तुम सब वाहीको सखस्युतत्त्व बिचारौहौ कैसे जैसे रङ्क अपारधन पायकै परमतत्त्व मानै है ८ भो मर्याद ब्रह्म जो ज्योति तामें जब आत्मा को मिलायो ज्योतिही ह्वैगयो यहीं तक मर्याद है या मान्यो तब तुमको बहुत सुख लागतभयो अर्थात् वाही में मग्न होइजातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागि गई परन्तु संशय नहीं गई सो आगे कहेहैं ॥ ९ ॥

देखतउतपति लागु न बारा। एकमरैयककरैबिचारा १०

हे जीवो! तुम या देखत हौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्न होत बार नहीं लगै है तो संसार कबै छूट्यो और येहू देखतहौ कि एकै मरै हैं तिनको लाय आय गैबगुफा जारिगई औ फिर वही गैबगुफा में प्राण चढ़ाइ मुक्ति को विचारौ हौ अर्थात् मुक्ति चाहौहौ सो हे जीवो! तुम सब विचारौ तो जो समाधि सुख नित्य होतो तो कैसे मिटि जातो ताते नित्य नहीं है ॥ १० ॥

मुयेगयेकी काहु न कही। झूठीआशलागिजगरही ११

तुम्हारे गुरुवालोग मरे मरिकै कहांगये कौनी गति को प्राप्त भये या निकासकी बात तो काहू न कह्यो सो तो तुम सब न विचार्यो धोखाब्रह्म होबेकी जो झूठी आशा ताही में तुम सब लागि रहेहौ मोको न जानतभये ॥ ११ ॥

साखी ॥ जरतजरतसेबाचहू, काहे न करहु गोहारि ॥
विषविषयाकैखायहू, रातिदिवसमिलिझारि १२

प्रथम तो हे जीवो ! नानायोनि नरक गर्भवास के जठराग्नि में जरत जरत से बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भबास ते निकसे सो गर्भबास को दुःख तौ तुमको भूलिगयो और जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो विषरूपी जो विषय ताही को राति व दिन खायहु अर्थात् झारि विषयही भोग कीन्हों मेरी शरण को काहे न गोहरायो जे मेरी शरणको गोहरावैहैं तेई बचै हैं सो हे जीवो! जब मेरी शरण को गोहरावोगे तबहीं बचोगे मेरी या प्रतिज्ञा है जो कोई मेरी शरणको गोहरावै है ताको मैं बचायही लेउहौं गोहारिको अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सो साहब शरणगये रक्षा करतही हैं तामें प्रमाण "सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम.१" (इति बाल्मीकीये) ॥ १२ ॥

इति तेरहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवीं रमैनी ॥ १४ ॥

गुरुमुख ॥ बड़सो पापी आयगुमानी। पाखँडरूपछलोनर जानी १
वामनरूप छल्यो बलिराजा। ब्राह्मण कीन कौन,कर काजा २
ब्राह्मणही सब कीन्हों चोरी। ब्राह्मणही को लागी खोरी ३
ब्राह्महि कीन्हें ग्रन्थ पुराना। कैसेहुकै मोहिं मानुष जाना ४
यकसे ब्रह्मै पन्थ चलाया। यकसे हंस गोपालहि गाया ५
यकसे शम्भू पन्थ चलाया। यकसे भूत प्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा। यकसे निहुरिनिवाज़ गुजारा ७
कोउ काहूको हटा न माना। झूठाखसम कबीर ने जाना ८
तन मन भजिरहु मेरे भक्ता। सत्य कबीर सत्य है वक्ता ९
आपुहि देव आपुही पाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूत संसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११

कहते मोहिं भये युगचारी। काके आगे कहौं पुकारी १२

साखी ॥ सांचे कोइ न मानई, झूठाके सँग जाय ॥

झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

बड़ोसोपापी आयगुमानी। पाखँडरूपछलोनरजानी १

वामनरूपछल्योबलिराजा। ब्राह्मणकीनकौनकरकाजा २

साहब कहैहैं तैं बड़ोपापी है बड़ोगुमानी है काहेते कि मैं येतो समझाऊं हौं तैं नहीं समझैहै सो मैं जान्यो पाखण्डरूप जो धोखा ब्रह्म ताते हे नर! तुम छले गये और जिनको छल्यो तिनको कहै हैं १ वही माया शबलित ब्रह्म वामनरूप करिकै बलिराजा को छल्यो है सो या ब्राह्मण जो माया शबलित ब्रह्म सो कौनको काज कीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है ॥ २ ॥

ब्राह्मणहीसब कीन्हों चोरी। ब्राह्मणही को लागी खोरी३

वही ब्रह्म सबकी चोरी कियो है काहेते कि माया तो जड़ है यह चैतन्य है ब्रह्मही माया शबलित ह्वै मायहू को कर्ता कै भरे सांचेज्ञानको संसार में शाकादिक पदार्थ बनाइ चोराइ राख्यो है सो जब व्यापकरूप ते सब पदार्थ ब्रह्मही ठहरयो और ब्रह्मही के संयोगते माया कर्ता भई है तब ब्रह्मही को खोरि लगी कि वही सब करै है ॥ ३ ॥

ब्रह्महिकीन्हींग्रन्थ पुराना। कैसेहुकैमोहिंमानुष जाना ४

वही माया शबलित जो ब्रह्म है ताहीते सब वेद पुराण निकसे हैं ताहीते नानामत भये कोई निराकार ब्रह्महीं कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये तुम सब वसहु जो निर्गुण के सगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्य ताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसेहुकै कहे जस तसकै कोई बिरले सन्त जानै हैं और नहीं जानै हैं अथवा मोको सब बातके जनैया श्रीरामचन्द्रको सांच मनुष्यरूप है तामें प्रमाण "आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्" इति और जे नानापंथ वेदते निकसे तिनको आगे कहैं

अर्थ दशन्तिमयानितिदशः गरुडः सरथोयस्यसः दशरथःविष्णुः स एव आत्मजोयस्यसः दशरथात्मजः तम् ॥ ४ ॥

यकसेब्रह्मैपन्थ चलाया । यकसेहंस गोपालहि गाया ५

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत ब्रह्मै नानाशास्त्र के नानापन्थ चलावतभये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को विचारकरत हंस जो जीव सो गोपालहिं गावतभये अर्थात् गो जो इन्द्रिय ताको पालनवारो जो मन ताहीको गावतभये अर्थात् मनमुखी पन्थ चलावत भये और ब्रह्माने वेद कह्यो है वेदते सब मत निकसे हैं जीवनको जो जुदे करिकै कह्यो सो मेरे सम्मुख को जो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नानादेवतन यज्ञादि में लगाय दीन्हे ॥ ५ ॥

यकसे शम्भू पन्थचलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ७

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजी को तामसमत चलावत भये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत जीवन को मन भूत प्रेत देव सब लगाय देते भये अर्थात् माया में अरुझाय देते भये ६ यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाज गुजारत भये ॥ ७ ॥

कोउकाहूको हटा न माना । झूठाखसमकबीरने जाना ८
तनमन भजिरहुमेरे भक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता ९

कोऊ काहूको हटको न मानत भये झूठा जो धोखाब्रह्म ताही को दृढ़ करिकै काया के वीर जे जीव ते नाना देवतनसोते खसम जानत भये कोई महीं ब्रह्महौं या मानत भये खसम जो परम पुरुष मैंहौं ताको तुम सब न जानत भये ८ तनमनते मोहीं में लगो तबहीं तिहारो उबार होयगो सो हे कबीरजी ! वो एकतो

तुम सत्यहौ और एक जो तिहारे समुझावनवालो वक्ता मैं सो सत्य हौं और सब झूठे हैं वही ब्रह्म चारों ओर ह्वैगयो है यह द्वैमत देखायो तामें प्रमाण "सत्यमात्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः" ॥ ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूतसंसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११
कहतेमोहिंभयेयुगचारी। काके आगे कहौं पुकारी १२

और वही माया शबलित ब्रह्म आपही देवता ह्वै गयोहै आपु ही फूल पाती हैं आपुही पूजा करनवालो है आपुही कुल जाति है १० सो या भाँतिते वही ब्रह्म सर्वभूत में निवासी ह्वैके आपु ही खसम ह्वै रह्योहै औ जामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसी सुख-राशी नारी ह्वै रह्यो है ११ सो यह बात चारोयुग मोको कहत भयो काके आगे पुकारिकै कहा कोई समुझै या धोखाब्रह्म को नहीं देखो परै ॥ १२ ॥

साखी ॥ सांचे कोइ न मानई, झूंठाके सँग जाय ॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

सांचो मैं सांचे तुम जीव यह मत तो कोई नहीं मानै है झूठा जो वह ब्रह्म ताके संग सब जाय हैं अर्थात् वहीको सर्वस्व मानैहैं सो झूठा वह ब्रह्म और झूठा ज्ञानवाला जो जीव सो मिलिकै अहमक खेहा खाय है अर्थात् मस्यो तब राख खाय है जनन मरण नहीं छूटै है ॥ १३ ॥

इति चौदहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवींरमैनी ॥ १५ ॥

चौ० उनई बदरिया परिगै सांझा। अगुवाभूले बनखँड मांझा १
पियअनतै धन अनतै रहई। चौपरि कामरि माथे गहई २

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होइ ३

उनईबदरियापरिगैसांझा। अगुवाभूलेवनखँडमांझा १

भ्रमकी बदरीओनई परिगै सांझा कहे जगत् में अँधियारी ह्वै गई साहबको ज्ञानरूपी रबि मूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखण्ड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि तें भूलिगये कोई भैरव कोई भवानीको कोई गणेशको इत्यादि नाना देवतनकी उपासना करतेभये और शास्त्रहु में नानामत होतभये कोई कर्मको कोई ब्रह्मको कोई प्रकृतिपुरुषको कोई ईश्वरको कोई कालको कोई शब्दको कोई ब्रह्माण्डमें ज्योतिको प्रधान मानतभये और तिनहूं में एकएक मतन में अनेक मत होते भये और मुसल्मानहूंके मजहबमें तिहत्तरि फिरके होत भये एकमें तो मुक्ति होती है औरनमें नहीं होती सो जो जौने फिरकेमें पराहै सो ताही को मुक्तिवाला माने है सो या एक सिद्धान्त ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेद ब्रह्मा तेपूछ्यो तब ब्रह्मै संभ्रमपूर्वक सबको शेष के पास पठयो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य सिद्धान्त सबको समुझायो है सो आदिमङ्गलमें लिखि आयेहैं और मेरे बनाये रामायणके अन्तहूमें लिख्यो है सो या हेतुते कबीरजी कहे हैं कि अगुवा जे ब्रह्मा तिनहींको भ्रम भयो है ॥ १ ॥

पियअनतै धन अनतैरहई। चौपरिकामरिमाथेगहई २

पियतो साहबहै और पियके मिलनवारो जो जीवनको ज्ञान सोई धन है सो दोऊ अनतही रहैहैं कोई बिरले सन्त पावैहैं चौपरि जो चारों वेद तिनकी कामरि ऐसी भारी शीशपर धरे अपने अपने मन को अर्थ करैहैं वेदको सिद्धान्त नहीं पावैहैं अथवा चौपरि जो चारो खानिके जीव ते कर्मरूप जो है कामरि ताको कांधे में धरे हैं ॥ २ ॥

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखीसों रोय ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारीहोय ३

जीव जे हैं ते अनु हैं अल्पबुद्धि हैं कर्मकाण्डरूप जो फूल ताही

को भार नहीं साहिसकैं अर्थात् सोई नहीं समुझिपरै ब्रह्मविचार कैसे समुझिपरै सो वेदरूप कामरीं कांधेधरे जब ब्रह्मविचार करन लगे निषेध करत करत तब विचार में ब्रह्म न आयो तब सखी जे जीव हैं तिनते सेइकै कहतेहैं नेति नेति इतनै नहीं है अबै और कछु है नहीं समुझिपरै यही रोईबो है सो ज्यों ज्यों वेदरूप कामरी भीजैहै कहे विचारत जाइहैं त्यों त्यों भारीहोत जाय है अर्थात् गहिरो अर्थ होत जाय है सो कैसे समुझिपरै वातो धोखाब्रह्म कुछ वस्तुही नहीं है ॥ ३ ॥

इति पन्द्रहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १५ ॥

अथ सोलहवीं रमैनी ॥ १६ ॥

चलत चलत अति चरण पिराने। हारिपरे तहँ अतिखिसिआने १
गण गन्धर्व मुनि अन्त न पाया। हारि अलोप जग धंधे लाया २
गहनी बन्धन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ३
भूलिपरे जिय अधिक डेराई। रजनी अन्धकूप ह्वै जाई ४
माया मोह उहां भरि भूरी। दादुर दामिनि पवनहु पूरी ५
वरसै तपै अखण्डित धारा। रैनि भयावनि कछु न अहारा ६
साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अन्धा सभै भुलान ॥
कहा कोइ नहिं मानही, सब एकैमाहँ समान ७

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँअतिखिसियाने १

नाना मतमें लगे जीव तिनके चरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात् थकिआये मति नहीं पहुँचै एकहू शास्त्रके विचारके पार न गये अतिरेसयान पाठ होय तो यह अर्थ कि बड़े सयानो रहे तेऊ हारिगे तामें प्रमाण "इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः। प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम्" तब खिसिआइकै यह कहते भये ॥ १ ॥

गणगन्धर्वमुनिअन्तनपाया। हरिअलोपजगधन्धेलाया २

जौने ब्रह्मको अन्त गन्धर्व और मुनिनके गण नहीं पायो ताको

हम कैसे जानिसकैं जो ब्रह्मको साकार कहैहैं तो मध्यम प्रमाण में आयजाय हैं अनित्य होय हैं और जो ब्रह्मको निराकार कहैहैं तो जगत्का कर्तृत्व सिद्धान्त न भयो कबीरजी कहैहैं कि कैसे होयगा संदेहमें परे जैसे हरि हैं तैसे विना सद्गुरुके बताये तो जानत ही नहीं हैं यहिते हरि अलोप कहे हरि अप्रकट भये तिनके विना जाने जगत्के धन्धे में जीव सब अपनो मन लगायराख्यो ॥ २ ॥

गहनी बन्धन बांध न सूझा । थाकिपरे तब कछू न बूझा३

गहनी बन्धन जो माया शबलित ब्रह्म जौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसो जो ब्रह्म ताको बांध जीवनको न सूझिपर्‍यो कौन बांध कि जो कोई मोहींमें लगैहै तो मैं बांधिकै संसारमें डारि देउँ हौं या माया शबलित ब्रह्मको बांध न सूझि पर्‍यो जो कहो काहेते बांध बांध्यो है तो जगत् की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याही ते जो कोई वामें लगै है ताको साहब को ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखै है सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसार में थकिपरे तब कछू न बूझत भये अर्थात् अनेक मतनको विचारै है पै सिद्धान्त न पावत भये साहब को ज्ञान भूलिगये ॥ ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराई । रजनी अन्धकूप ह्वै जाई ४
मायामोह उहां भरि भूरी । दादुरदामिनिपवनहुपूरी ५
बरसै तपै अखण्डितधारा । रैनिभयावनिकछुनअहारा६

सो जब साहबको ज्ञान भूले संसारमें परे तब अधिक डर आवत भयो काहेते कि मूला अज्ञानरूप रजनीकी बड़ी अँधियारी होत भई कछू न सूझिपर्‍यो काहेते कि "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै लीन ह्वैकै वही संसारमें पर्‍यो जहां माया मोह भूरि भरे हैं तब तो माया कारणरूपा रही है अब कार्यरूपा भई बहुत मोहादिक होतभये तामें परे जैसे दादुर बोलै हैं अर्थ कछू नहीं है तैसे उनको वेदको पढ़िबोहै अर्थ नहीं जानै हैं जो काहूके कहे कछू ज्ञान भयो

तब दामिनी कैसी दमक ह्वै जायहै कछु हृदय में नहीं ठहरायहै और पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायके योग करिये तो श्रम करै है कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखण्डधारा अमृत बर्षाइ नागिनी उठाइ समाधि करैहै और कोई तपै अखण्डित धारा कहे पांचहज़ार कुम्भक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनीको जगाय प्राण चढ़ाय समाधि करैहै तहौं भयावनि रैनि जो मूला अज्ञानकी अँधियारी ताहीमें पस्यो अर्थात् जबतक ज्योति देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योति में लीन ह्वैगयो तब सुषुप्ति ऐसे में पस्यो रह्यो यही भयावनि रैनिहै भयावनि को हेतु यह है कि प्राण के उतरिबेकी अवधि बनी है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अन्धासभैभुलान ॥
कहाकोइनहिंमानहीं, सब एकैमाहँ समान ७

और जे मायाते सभयरहे डेराते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहँकिकै औरई और मतनमें लागिगये और जे अज्ञान आंधरे रहैं ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपावै न किये भूलिही गये सो कबीरजी कहै हैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानै है सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यर्थः और साहब को विना जाने ब्रह्महूमें लीनह्वै संसारहीमें आवै हैं वाको प्रमाण पीछे लिखि आये हैं ॥ ७ ॥

इति सोलहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १६ ॥

अथ सत्रहवीं रमैनी ॥ १७ ॥

चौ० जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुत धर्म सुखहृदया होई १
जासों बात रामकी कही । प्रीति न काहूसों निर्बही २
एकैभाव सकलजग देखी । बाहेर परै सो होय बिबेकी ३
बिषयमोहके फन्दछोड़ाई । जहांजायतहँ काटु कसाई ४
आय कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटों माथा ५

मानुष बड़े बड़े ह्वै आये। एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६
पढ़ना पढ़हु धरहु जनि गोई। नाहिंतोनिश्चयजाहुबिगोई ७
साखी ॥ सुमिरन करहु सुराम को, औ छांड़हु दुख की आस ॥
तरऊपर धरि चापि है, जस कोल्हू कोटि पचास ८

जसजिवआपुमिलैअसकोई। बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासों बात रामकी कही। प्रीति न काहूसों निर्बही २

जैसो आपु होइ तैसो जब ताको मिलै तबहीं धर्म बढ़ैहै और हृदय में बड़ो सुख होय है तामें प्रमाण गोसाईंजी को (दोहा) "इष्टमिले अरु मन मिले, मिले भजनरसरीति। तुलसिदास तासों मिलै, हठिकै उपजै प्रीति १" सो औरीभाँति सुख नहीं होयहै १ काहेते कि जासों कहे जौने जीवनसों रामकी बात मैं कहौ हौं कि तैं रामचन्द्रको है तिनको अपनो साहब मानु नानाईश्वर जो तैंने मानेहैं सो ये सब मायाके जालमें परेहैं तोको कहा उबारैंगे सो कबीरजी कहैहैं कि या मेरी बातपै काहूजीवनकी प्रीति न निबहत भई अर्थात् जो मेरी बातप्रीति ते सुनै साहबको जानै अपने अपने मत में आरूढ़ ह्वै बाद सो करै है वस्तु नहीं ग्रहण करै है॥ २ ॥

एकैभाव सकलजग देखी। बाहेरपरै सो होय बिबेकी ३
बिषयमोहके फन्दछोड़ाई। जहांजाय तहँ काटु कसाई ४

एकैभाव सकलजग देखी कहे जे एक ब्रह्मभाव जगत्को देखै हैं तेहिते बाहेर अपनेको दास मानि साहबरूपते जगत्को जानै हैं सोई विवेकी होय हैं सो ऐसे विवेकिन के पास तो नहीं जाय है ३ नानाविषय के मोहके फन्द छोड़ायकै अर्थात् संसारते वैराग्य करिकै अधिकारिहू ह्वैकै जहां जहां जाय है तहां तहां कसाई जे गुरुवालोग ते गला काटैहैं अर्थात् साहबको ज्ञानकाटि धोखाब्रह्म में लगाय देयँ हैं सो याको गला काट्यो गलाकाटे फेरि जन्म होयहै याते गुरुवालोगन को कसाई कह्यो ऐसे याहूको जनन मरण होय है व्यंग्य यह है कि जे जीव साहबको त्यागि औरे और में

लगेहैं ते पशु हैं उनको ऐसही गला काट्यो जायहै ये कसाई शरीर को गला काटैहैं यहौ द्वैतज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गला काटै हैं जो संसार में रहतो तो कबहूं दैवयोगते साधुसंग भये उद्धारहू होतो सो तौने धोखाब्रह्म में लगाय दियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावेंगे ॥ ४ ॥

आय कसाई छूरी हाथा। कैसेहु आवै काटों माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये। एकै परिडत सबै पढ़ाये ६

कसाई जे गुरुवालोग तिनकी बनाई पोथी सोई छूरी हाथ में लीन्हे यह ताकेहैं कि कैसेहुकै कौन्यो मतको आवै तो ठगिकै अपने मतमें कैलेईं माथ काटिलेयँ कहे मूड़िडारैं चेला करि लेयँ सो साहबको छोड़ाइ औरै और में लगावन वारोहै सो गुरु कसाई है ५ मनुष्य जे बड़े बड़े ज्ञानीलोग हैं ते यही पढ़ावतभये कि एकै वही ब्रह्म है जीव नहींहै और कोई या पढ़ाया कि एक जीवही सांच हैं और सब असांच है ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई। नहिंतौनिश्चयजाहुबिगोई ७

जौन पढ़ना तुम गुरुवालोगनते पढ़यो है सो अब जनि गोइ राखो और जो गोइराखोगे तो कुमतिही में परेरहौगे जो गोइ न राखोगे तो सन्तलोग समुझायकै भ्रम काटिडारैंगे कैसे कि जो एकब्रह्म होतो तो भ्रम कौन को होतो और जो एक जीवही साहब होतो तो बँधि कैसे जातो सो माया तो बांधनवाली है और जीव बन्धनधारी है और साहब छुड़ावनवालोहै यह विचारि साहबको जानो साहब छुड़ाय लेइँगे नहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमति में लागि कै बिगारिजाहुगे ॥ ७ ॥

साखी॥ सुमिरनकरहुसुरामको, औछांड़हुदुखकीआस॥
तर ऊपरधरि चापिहै, जसकोल्हूकोटि पचास ८

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरन करो धोखा ब्रह्म और माया इनकी दुःखरूप जो आश सो छांड़ो जो न

छांड़ोगे तो तरे तो मायारूप कोल्हू ऊपर ब्रह्मरूपजाठमें तुमको पेरिडारैगो पचासकोटि कोल्हू कह्यो सो अगणित ब्रह्माण्ड हैं तामें डारि कै॥ ८॥

इति सत्रहवींरमैनीसमाप्तम्॥ १७॥

अथ अठारहवीं रमैनी॥ १८॥

चौ० अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई। भूले राम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतोजिय जरिमूलै जाई २
शब्द न मानै कथै बिज्ञाना। तातै यम दीन्ह्योहै थाना ३
संशय सांउज बसै शरीरा। तेखायल अनबेधल हीरा४

साखी॥ संशय साउज देह में, संगहि खेलै जुआरि॥
ऐसा घायल बापुरा, जीवन मारै झारि ५

अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई। भूलेराम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतौजियजरिमूलैजाई२

अद्भुत पन्थ जो ब्रह्म ताको वर्णत कोईने अन्त नहीं पायो राम जे साहब हैं तिनके भूले कहे विना जानेते सब दुनिया धोखाब्रह्म माया में भूलिगई १ हे भाइउ! चेतौ तौ चेतौ नहीं तो मायाब्रह्म की आगिमें जरिकै मूलते जाउगे यह कबीरजी कहै हैं नहीं तो यम जीव लैजाइँ जो यह पाठ होय तो यह अर्थ है कि चेतौ तो चेतौ नहीं तो यम लैजायकै नरकमें डारिदेइँगे॥ २॥

शब्द न मानै कथै विज्ञाना। तातै यम दीन्ह्योहै थाना३
संशय साउज बसै शरीरा। तेखायल अनबेधलहीरा४

विज्ञानहूको सार जाते सब शब्द निकसेहैं ऐसो जो रामनाम ताको तो मानै नहीं है और और मतमें लागिकै विज्ञान कथै है तातै यमराज जो जैसो कर्मकरैहै ताको तैसो नरक स्वर्गको थान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मन सो शरीररूपी वनमें बसिकै अनबेधल कहे जाको यश रामनाममें नहीं है ऐसो जो हीराजीव ताको खायगयो कौनी रीतिते खायो सो आगे कहै हैं॥ ४॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें, संगहिखेलै जुआरि ॥
ऐसा घायलबापुरा, जीवनमारै झारि ५

जैसे शिकारी बाघको मारै है जो बाघ घायल भयो तो शिंकारीको धरिडारै है तैसे संशय साउज जो व्याघ्ररूप मन सो देहरूपी वनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलैहै जब मनोवासना छैकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वैबो है सो व्याघ्ररूप जो मन है सो घायल ह्वैकै बापुरे जे सब जीव हैं तिनको झारादैकै मारै है अर्थात् सबको वहीं माया धोखाब्रह्ममें लगायदियो और जो यह पाठ होय कि "ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै झारि" तो यह अर्थहै कि ऐसा घायल कहे घाती जो मन सो बपुरे जीवनको झारादैकै मारैहै जनन मरण देइहै ॥ ५ ॥

इति अठारहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवीं रमैनी ॥ १९ ॥

चौ० अनहदअनुभवकीकरिआशा । देखो यह बिपरीततमाशा १
यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहै शून्य तहां चलिजाई २
शून्यहिबाञ्छा शून्यहि गयऊ । हाथा छोड़ि बेहाथा भयऊ ३
संशय साउज सब संसारा । काल अहेरी सांझ सकारा ४
साखी ॥ सुमिरन करहु सो रामको, काल गहे है केश ॥
नाजानौं कब मारि है, क्या घर क्या परदेश ५

अनहदअनुभवकीकरिआशा।देखोयहबिपरीततमाशा १

अनहद शब्द सुनत सुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू विचारै है कि ब्रह्म मैंहीहौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरहीको है वह ब्रह्म मेरही अनुभव है यह बड़ो तमाशा है ताहीकी आशाकरै है यह बड़ी विपरीत है ॥ १ ॥

यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई २
शून्यहिबाञ्छाशून्यहिगयऊ । हाथाछोड़िबेहाथा भयऊ ३

सो हे भाइयो, हे जीवो ! यह तमाशा तुमहूं अनेकन जन्म ते देखते आये हौ परन्तु जहां शून्य है तहां जाइके मुक्ति ह्वैबो चाहौहौ तुम या नहीं विचारौहौ कि शून्य जो धोखाब्रह्म तामेंजो हम जायँगे तो हमारी मुक्तिकी वाञ्छहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्य है आपने ते झूठेमें बांधिके साहब को हाथ छोड़िके बेहाथ भयऊ कहे धोखाब्रह्म के हाथ में ह्वैजाउ हौ अथवा कबीरजी छूट जीवन्ते कहैहैं हे भाइयो! देखौ तो तमाशा ये जीव जहां शून्यहै धोखा है तहां सब चलेजायँ हैं जौने ज्ञान में साहब भरपूरेहैं तहां नहीं जायँहैं ॥ २ । ३ ॥

संशय सावज सब संसारा । कालअहेरी सांझसकारा ४

संशय कहे मनरूप जो सावज ताहीको सकल कहे सुरतिया संसार ह्वैरह्यो है अर्थात् मनरूप जीव ह्वैरह्यो है संकल्प विकल्प सब कैरहे हैं सो अहेरी जो काल शिकारी सो सांझ सकार कहे काहू को जन्मतमें मारैहै आदि अन्त कहे मध्यको काल है काहू को आयुर्दायके अन्तमें मारैहै यम वो ॥ ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसोरामको, काल गहे है केश ॥
नाजानों कब मारिहै, क्याघर क्यापरदेश ५

सो कबीरजी कहै हैं कि परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो काल है सो केश करमें गहे है या नहीं जानौ हौ धौं कब मारै या घर में या परदेश में अर्थात् साहब के विना स्मरण घर में रहोगे तो न बचोगे जो वनमें जाउगे तो न बचोगे ॥ ५ ॥

इति उन्नीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १९ ॥

अथ बीसवीं रमैनी ॥ २० ॥

चौ० अबकहुरामनामअविनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी१
जहां जाहु तहँ होहुपतङ्गा । अबजनिजरहुसमुझिविषसङ्गा२

रामनामल्लौलायसोलीन्हा। भृङ्गीकीट समुझि मन दीन्हा ३
भो अतिगरुवा दुखकैभारी। करुजिययतन सो देखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा। त्वहिं नहिं सूझै वार न पारा ५

साखी॥ इच्छाको भवसागरै, बोहित राम अधार॥
कहैंक[illegible] हरिशरणगहु; गोबछखुर बिस्तार ६

अबकहुरामनाम अबिनासी। हरितजिजियराकतहुँनजासी १

अविनाशी जो रामनाम ताको अबहूं कहु हरि कहे भक्तन के आरति हरणहारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हे जीव! और मतन में कतहुँ न जा अर्थात् चित चित्तते विग्रह करि सर्वत्र साहिबै को देखु॥ १॥

जहाँजाहुतहँहोहुपतङ्गा। अबजनिजरहुसमुझिविषसङ्गा २

जौनेन मतमें जाहु हौ तहां पतङ्गही से जरिजाउहौ सो संग जो विषाग्नि ताको समुझि अब जनि जरहु अर्थात् जो इनको संग करहुगे तो मन इन्द्रियादिकन को विषय को सिद्धान्त कीन्हे है ताही में तुमहूं को लगाइ देयँगे तो संसारहीमें परे रहोगे ताते इनको संग त्यागि रामनाम जपौ जो कहौ कौनी रीतिते जपैं राम नाम तो मन बचनके परे है सो आगे कहै हैं॥ २॥

रामनामल्लौलायसोलीन्हा। भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा ३

रामनाम में सो लौ लगाय लीन है कौन जौन भृङ्गी और कीट की ऐसी गति समुझिकै अपने मन दीन्ह है अर्थात् जैसे कीट भृङ्गी को देखत देखत वाको शब्द सुनत सुनत वोको डेरात डेरात तदाकारकैहै भृङ्गीहीरूप ह्वैजाय है तैसे रामनाम जपत जाइ है वाको सुनत जाइ है जगत्मुख अर्थते डेरात जायहै और साहब मुख अर्थमें साहबको रूप और अपनो हंसस्वरूप विचारत निज हंसरूप में तदाकार ह्वैजाय है मनआदिक मिटिजाय है शुद्ध रहिजाय है सो अपनेरूप पाय जायहै तब मन वचन के परे जो रामनाम सो आपनेते स्फूर्ति होइ है तामें लौ लगायकै जैसे कीट

भृङ्गी बनिकै और कीटको भृङ्गी बनावै है तैसे यही जीव उपदेश करिकै औरेहू को हंसरूप बनावै है सो जो भृङ्गीको शब्द कीट न ग्रहण करै तो कीटही रहिजाय ऐसे जो रामनाम को जीव न ग्रहणकरै तो असारही रहिजाय है तामें प्रमाण अनुरागसागरको "ज्यों भृङ्गी गे कीटके पासा। कीटहि गहि गुरगामि परगासा॥ बिरला कीट होय सुखदाई। प्रथम अवाज गहै चितलाई॥ कोइ दूजे कोइ तीजे मानै। तन मन रहित शब्दहित जानै॥ तब लैगे भृङ्गी निजगेहा। स्वाती देकर निज सम देहा" ॥ ३ ॥

भोअतिकरुवादुखकेभारी। करुजियययतनजोदेखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा। त्वहिंनहिंसूझैवार न पारा ५

यह संसार भारी दुःख करिकै अति गरुवा बोझा है जीव तू विचारि देखु जो ताको बोझा लगै तो रामनामको यतन करु ४ मनकी बात वहै मनते गुरुवनको धोखा ब्रह्म ताहिते उठी जो विकाररूप लहरि माया ताको कौनो मन कहिकै ताको वारपार नहीं सूझै है ॥ ५ ॥

साखी ॥ इच्छा के भवसागरै, बोहित रामअधार ॥
कहै कबीर हरिशरणगहु, गोबछखुरबिस्तार ६

यह जो समष्टि जीवको इच्छारूप भवसागर तामें बोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहीं है सो कबीरजी कहैहैं हरि जे साहेब हैं तिनकी शरण गहु यह भवसागर गऊके बछवा के खुरके सम उतरि जायगो यामें संदेह नहीं है ॥ ६ ॥

इति बीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २० ॥

अथ इक्कीसवीं रमैनी ॥ २१ ॥

चौ० बहुत दुखेहै दुखकी खानी। तबबाचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानि युक्ति जो चलई। युक्तिहिते फन्दा नहिं परई २
युक्तिहि युक्ति चलतसंसारा। निश्चय कहा न मानु हमारा ३

कनककामिनी घोरपटोरा। संपति बहुत रहे दिन थोरा ४
थोरेहि संपतिगो बौराई। धरमरायकी खबरि न पाई ५
देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई। अमृत धोखे गो बिष खाई ६

साखी॥ मैं सिरजों मैं मारहूं, मैं जारों मैं खाउँ॥
जल थल मैंहीं रमिरह्यों, मोर निरञ्जन नाउँ ७

बहुतदुखैहैदुखकीखानी। तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजोचलई। युक्तिहितेफन्दानहिंपरई २
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा। निश्चयकहानमानुहमारा ३

यह दुखकी खानि जो संसार सो बहुत दुःख है अर्थात् बहुत दुःख देइ है तुम तबहीं याते बचौगे जब सबके मालिक रक्षकजे श्रीरामचन्द्र तिनको जानौगे आन उपाय न बचौगे १ काहेते जे श्रीरामचन्द्र को जानिके युक्ति सहित चलैहैं तेई वही युक्तिहीते संसारके फन्दा में नहीं परैहैं सो कबीरजी कहै हैं सो युक्ति आगे लिखैंगे २ या संसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलैहै कबीर जी कहै हैं मैं जो निश्चय बात कहो हौं कि रामनामहीते तेरो उद्धार होयगो याकी युक्ति कोई नहीं मानै है अपनेही मनकी युक्ति चलै है॥ ३॥

कनककामिनी घोरपटोरा। संपति बहुत रहे दिनथोरा ४
थोरे हि संपति गो बौराई। धर्मराजकी खबरि न पाई ५

कनक जोहै कामिनी जोहै घोड़े जेहैं हाथी जेहैं पटम्बर जेहैं ये संपति तो बहुत हैं परन्तु इनके भोग करिबेको दिन तो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतो भोग में बितावै है साहब को कब जानैगो ४ सो तैंतो थोरही संपति में बौराय गयो धर्मराज की खबरि तैं नहीं पाई कि जब मोको धरिलैजाइँगे तब सारी संपति हियईं परी रहिजायगी तब कौन भोग करैगो यह बिचारि साहब को जानो॥ ५॥

देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई। अम्रतधोखेगोबिषखाई ६

और देवयोग जो कदाचित् तुम्हें धर्मराजको त्रास देखिके मुख जब कुम्हिलायगयो कहे संसारतें वैराग्यभयो तब गुरुवा लोगनके निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं अमृत हौं मन मायादिक ते भिन्न हौं सो बात तो तू सांच विचारी ऐसही है परन्तु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूपमेंहै सो गुरुवालोग नहीं बतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताहीं के धोखें ते 'अहंब्रह्मास्मि' विष खायगयो भगवत्दास आपने को न मान्यो साहबको न जान्यो सर्वत्र मैंही हौं या मानि कहनलाग्यो ॥ ६ ॥

साखी ॥ मैं सिरजौं मैं मारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथल मैंहीं रमिरह्यों, मोर निरञ्जन नाउँ ७

और मैंहीं जगत्को सिरजौं हौं, मही मारौं हौं, मही जारौं हौं, जौने अग्निते जारौं हौं ताको मही खाउँ हौं और जल थल में मैंहीं रमि रह्यो हौं मोर निरञ्जन नाउँ है कैवल्य मही हौं और अञ्जन जो माया ताते शबलित ह्वैके मैंहीं सब करौं हौं ॥ ७ ॥

इति इक्कीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवीं रमैनी ॥ २२ ॥

चौ० अलखनिरञ्जन लखै न कोई। जेहिके बँधे बँधा सबकोई १
जेहि झूठो औ बँधो अयाना। झूठी बात सांच के माना २
धन्धा बँधा कीन्ह व्यवहारा। कर्म बिबर्जित बसै निनारा ३
षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि बृक्ष छाशाख बखानै। विद्याअगणित गनै न जानै ५
औरौ आगम करै बिचारा। तेहि नहिं सूझै वार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता। दान पुण्य औ किये बहूता ७

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठै धाइके, बिन शिर सेंती जाइ ८

अलखंनिरञ्जनलखैनकोई। जेहिकेबँधे बँधा सबकोई १
जेहिझूठोसो बँधो अयाना। झूठी बात सांचकै माना २
धन्धाबँधाकीन्हव्यवहारा। कर्मबिबर्जित बसै निनारा ३

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव! तूतो आपनेको निरञ्जन मान्यो सो निरञ्जन तो अलख है वांको कोई नहीं लखै है जाके बँधेते कहे मायामें सबकोई बँधेहैं १ हे अजानो! जौने झूठे सो तुम बँधो हौ सो झूठही है तुम सांच मानो हौ सो न मानो २ धन्धा जो साहबकी सेवा ताको बँधा कहे बांधनवारे तौनेको व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्मते वर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहै है या परमार्थ तुमलोग कहौ हौ और वाही में आरूढ़ होत हौ साहबको नहीं जानौ हौ ॥ ३ ॥

षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारिबृक्ष छा शाख बखानै। विद्याअगणितगनै न जानै ५

षट्रसनको खोटमानि त्यागन करिकै और षट् आश्रम करिकै षट् दर्शन करिकै वही धोखाब्रह्महीको सिद्धान्त मानते भये ४ पुनि चारि वेद, छवोशास्त्र, अगणितविद्या वाच्यार्थ करिकै धोखाब्रह्मको कहैहैं ताको तो तुम ग्रहणकियो तात्पर्यवृत्ति ते जो साहबको कहै है सो तुम न जानत भये ॥ ५ ॥

औरौ आगमकरै बिचारा। त्यहि नहिं सूझैवार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजेभूता। दान पुण्य औरकिये बहूता ७

अरु औरौ आगम जेहैं ज्योतिष यन्त्र मन्त्र आदि दैकै तेऊ तात्पर्यवृत्तिते जौने साहबको कहै हैं ताको वार पार तो तुमको न सूझिपस्यो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखा ब्रह्म ताही में लागत भये और और देवता ६ सो यहिप्रकार नानामतन करिकै मानते भये कोई नानादेवतन के जप किये, कोई तीर्थ किये, कोई व्रत किये, कोई भूतनकी पूजा किये, कोई दान किये, कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्म ते किये ॥ ७ ॥

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठे धाइकै, बिन शिर सेंती जाइ ८

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखाब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो नेहको मन्दिर है तामें तू धायकै मति पैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तो बिन शिर कहे सबके शिरे जे साहब तिनके विना सैंतिही जाइगो कछु हाथ न लगैगो तेरे साधन मुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होइँगे अथवा तुम्हारो माथा काटो जायगो वृथा मारेजाउगे ॥ ८ ॥

इति बाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवीं रमैनी ॥ २३ ॥

चौ० अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता। मन भुलान मैगर मैंमन्ता १
सुख बिसराय मुक्तिकहँ पावै। परिहरिसांचझूंठनिजधावै २
अनल ज्योति दाहै यकसङ्गा। नयन नेह जसजरै पतङ्गा ३
करुबिचारज्यहिसबदुखजाई। परिहरि झूठा केरि सगाई ४
लालच लागे जन्म सिराई। जरामरण नियरायल आई ५
साखी ॥ भ्रमको बांध लई जगत्, यहिबिधि आवहि जाय ॥
मानुष जन्महि पाइ नर, काहे को जहँडाय ६

अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता। मनभुलानमैगरमैंमन्ता १
सुखविसरायमुक्तिकहँपावै। परिहरिसांचझूंठनिजधावै २
अनलज्योति दाहै यकसङ्गा। नयननेह जसजरैपतङ्गा ३

जौने संसार में अलप तो सुख है और आदिहू में अन्तहू में दुख है ऐसे संसार में मैगर मैंमन्ता कहे मतवारो हाथी जो मन सो भुलाइकै मैंमंता कहे मही ब्रह्म हौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देह हौं या मानिलियो १ सुखरूप जे साहब हैं तिनको बिसरायकै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहां पावै सांचको छोड़िकै झूठ जो धोखाब्रह्म है तामें तो धावै है यह जीव कैसे सुख पावै २ अनल-

ज्योति जो ब्रह्म है सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहै है अग्नि ब्रह्म को नाम है "अज्ञत्वादग्निनामासौ" कैसे दाहै है जैसे नयननेह कहे देखनके लालच लगे दीपककी ज्योति में पतङ्ग जरै हैं ॥ ३ ॥

करुबिचारज्यहिसबदुखजाई। परिहरिझूंठाकेरिसगाई ४
लालचलागे जन्म सिराई ।जरामरणनियरायलआई५

झूंठ जो या धोखाब्रह्म है और अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागिकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बिचार करु जाते तेरे सब दुःख जाइँ ४ धोखा ब्रह्म के लालच में लगे कि हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याही में लगे लगे जन्म सिराय गयो जरा जो बुढ़ाई और मरण सो नियराय आयो॥ ५ ॥

साखी ॥ भ्रमको बांधलई जगत, यहि बिधि आवैजाय ॥
मानुषजन्महि पाय नर, काहे को जहँडाय ६

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत् है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै और जाइ है कहे लीन होइ है "मानुषजन्महि पाय नर, काहेको जहँडाय" कहे काहे जड़वत् होय है मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि मनुष्य के मनुष्यै होय हैं हाथी के हाथी होय हैं कछु हाथी के मनुष्य नहीं होय हैं.ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्म को हो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्यरूप जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनही को है ॥ ६ ॥

इति तेईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवीं रमैनी ॥ २४ ॥

चौ० चन्द्रचकोर कासिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीन पलटाई १
चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई । यहिबिधि सिगरे गये बिगोई ३
आगे दैदै सबन गँवावा । मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा ४

चौंतिस अक्षरसों निकलै जोई । पाप पुण्य जानैगा सोई ५

साखी ॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

चन्द्रचकोरकसिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीनपलटाई १

साहब कहै हैं कि हे जीवो! तुमको गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टान्त जनायकै नाना ईश्वर में लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमा को ताकत् ताकत चकोर चन्द्ररूप है या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमी नहीं लगै है अग्नि खायजाय है तैसे अपनो स्वरूप जो ब्रह्म ताको जब जानिलेहुगे तब तुमको दुःख सुख न जानिपरैगो कोई यह कहै हैं कि जैसे चन्द्रमा चकोर में नेह करैहै ऐसे तुम ईश्वरनमें प्रीति करोगे तो दुःख सुख न जानि परैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि मैं हंसस्वरूप हौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँगो सो पलटायकै ब्रह्ममें लगायदिये नानादेवतन में लगाय दिये ॥ १ ॥

चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई । यहिबिधिसिगरेगयेबिगोई ३

चारि अवस्था जे हैं जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ते सपन कहाती हैं तो झूठी फुरी जानत रहे हैं २ वह कैवल्य जो है पँचईं अवस्था तद्रूप ह्वैजाइबो कि महीं ब्रह्म हौं सो मिथ्या है यह बात कोई नहीं जानै है यही बिधि सिगरे जीव बिगरिगये कहे बिगोइ गये ॥ ३ ॥

आगे दैदै सबन गँवावा । मानुषबुद्धि न सपनेहु पावा ४
चौंतिस अक्षर सों निकलै जोई । पापपुण्यजानैगासोई ५

वही धोखाब्रह्मके आगे और कुछ नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वही ते है यही बात आगे दैदै कहे विचारिकै सिगरे जे ऋषि मुनि हैं ते आज अपने स्वस्वरूप को गँवावत भये मनुष्यरूप जो मैं तिनके जाननेवाली बुद्धि सपन्यो न पावत भये ४ चौंतिस

अक्षर सों जो निकरैगा सोई पाप पुण्य जानैगा मैं साहब को हौं और मैं लागों हों सो धपई करौं हौं या बात मेरो अनिर्वचनीय निर्वाण जो नाम है ताको जपिकै जानैगो और अपनो स्वस्वरूप जानैगो ॥ ५ ॥

साखी ॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

जो पदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहोगे जो स्मरण करोगे संसार में सोई होउगे वही धोखा में लागिकै पुनि संसारी होउगे वामें ते निकरिकै बाहर न होउगे काहेते कि वह तो अकर्ता है तुम्हारी रक्षा कौन करैगो सो साहब कहै हैं कि सर्वत्र पूर्ण हौं तेरे हुजूर ठाढ़ कहतई हौं कि तैं मेरो है तू काहे धोखा ब्रह्ममें ईश्वरन में जगत्के नानापदार्थ में लागिकै जन्म गँवाये देत है ॥ ६ ॥

इति चौबीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ॥ २५ ॥

चौ० चौंतिस अक्षरको यही बिशेखा । सहसौ नाम यहीमें देखा १
भूलि भटकि नर फिरि घर आवै । होतज्ञान सो सबन गँवावै २
खोजहिं ब्रह्म विष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

साखी ॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
बड़े बड़े बीरबाचैं नहीं, कहहि कबीर पुकारि ५

चौंतिसअक्षरकोयहीबिशेखा । सहसौ नाम यहीमें देखा १
भूलिभटकिनरफिरिघरआवै । होतज्ञानसोसबनगँवावै २

चौंतिस अक्षर को विशेष धोखई है काहेते हजार नाम यही चौंतिस अक्षरै में देखे है अर्थात् जे भरि वचन में आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखई है मिथ्याही सो चौंतिसै अक्षर के भीतर सब है अनिर्वचनीय पदार्थ तोको कैसे मिले १ चौंतिस अक्षरको

विस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञान भूलि भटकिके जब पार नहीं पावे है तब फिरि थकिके आपने घटमें आय या कहै है कि एकयेहू नहीं है वेदहु जो "नेतिनेति" कहैहैं तब अपनेो स्वरूप में आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवालोग भटकाइके अज्ञान में डारि दिये जौन यह विचार कियो कि ये सब अनिर्वचनीय नहीं हैं सो गँवाय दियो अनिर्वचनीय धोखाब्रह्महीं को मानत भये॥ २॥

खोजहिं ब्रह्मबिष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्बमुनिदेवा। अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

अनन्त जे लोक हैं तिनमें अनन्त जे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति तिनकी भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डन में अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनन्तलोकमें बहुत सेवाकरि गन्धर्व, मुनि, देवता खोजनलगे॥ ३। ४॥

साखी॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानै हारि॥
बड़े बड़े बीर बाचैं नहीं, कहहि कबीर पुकारि ५

और यती सती सब मनमें हारि ना मानिकै वही अनिर्वचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि मैं पुकारिकै कहौहौं या माया ब्रह्मके धोखाते बड़े बड़े बीर नहीं बाचैं हैं जे कोई बिरले सन्त साहबको जानै हैं तेई बाचैहैं ;तामें प्रमाण कबीरजीको "रसना रामगुण रमिरभि पीजै। गुणातीत निर्मूल कलीजै॥ निरगुण ब्रह्म जपौरे भाई। जेहि सुमिरत सुधि बुधि सब पाई॥ बिष तजि राम न जपसि अभागे। काबूड़ेलालचकेलागे॥ ते सब तरे रामरस स्वादी। कह कबीर बूड़े बकवादी"॥ ५॥

इति पचीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ २५॥

अथ छब्बीसवीं रमैनी॥ २६॥

चौ० आपुहि करताभे करतारा। बहुबिधि बासन गढ़ै कुम्हारा १

विधना सबै कीन यकठाऊं। अनेक यतनकै बनकबनाऊं २
जठरअग्निमहँदियपरजाली। तामें आपु भये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहर आया। तब शिवशक्ती नाम धराया ४
घरको सुत जो होय अयाना। ताके संग न जाय सयाना ५
सांची बात कहौं मैं अपनी। भया देवाना और कि सपनी ६
गुप्त प्रकट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूंठ गर्ब भूलै मति कोई। हिन्दू तुरुक झूंठ कुल दोई ८
साखी॥ जिन यह चित्र बनाइया, सांची सूरति ढारि॥
कहहिं कबिर ते जन भले, चित्रवन्तहिंलेहिं बिचारि ६

आपुहिकरताभेकरतारा। बहुबिधिबासनगढ़ैकुम्हारा १
बिधनासबैकीनयकठाऊं। अनेकयतनकैबनकबनाऊं २

विधि जे ब्रह्मा हैं ते अपनेको कर्ता मानि सब साजु जोरि अनेक यतन कै जगत् बनावत भये जैसे कुम्हार दण्ड चक्र सब साजु जोरिकै बासन गढ़ैहै सो कर्तार जो अपने को कर्त्ता मान्यो सो वाकी अज्ञानता है काहे ते कबीरजी कहै हैं कि सबसाजु आगेहि उत्पन्न ह्वैरहीहै कौन नई साज बनाइ कर्तार अपनेको कर्त्ता मानै साजु तो सब आगेकी उत्पन्न भई है सो कहै हैं॥ १। २॥

जठरअग्निमहँदियपरजाली। तामेंआपुभयेप्रतिपाली ३
बहुतयतनकै बाहर आया। तबशिवशक्तीनामधराया ४

जब महाप्रलय होइजाइहै तब जौनकाल रहिजायहै सो काल सदा शिवरूप है ताके जठर में कहे पेटमें अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म तामें समष्टि जीव परजालि दिये पराशक्ति को जाल लगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म सो महीं हौं यह मानि मायाशबलित होत भयो तामें तौने मायाके प्रतिपाली आपही होत भये अर्थात् जीवनके मानेमात्र माया है ३ सो माया शबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनाम को संसारमुख अर्थ करि पांचौ ब्रह्म आदि सब वस्तु उत्पन्नकै समष्टि

ते व्यष्टि ह्वैके जगत् उत्पन्न कियो ताको शिवशक्त्यात्मक नाम धरावत भये ॥ ४ ॥

घरकोसुतजो होयअयाना। ताकेसंग न जाहि सयाना ५

सो कबीरजी कहै हैं कि हे जीवो ! ये ब्रह्मादिक तुम्हारही सुत हैं तुमहीं समष्टिते व्यष्टि भये हौ कि जो घरको पूत अयान होइ है ताके संग सयान नहीं जाय है ऐसेही ब्रह्मादिक जे अनेक मत करिकै आपने को कर्ता मानि लिये हैं तिनके संग तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम न परौ तुम साहब को जानो ॥ ५ ॥

साँची बात कहौंमैं अपनी। भयादेवाना औरकिसपनी ६

सो कबीरजी कहै हैं कि सांचीबात मैं अपनी कहौं हौं अपनी कौनकी मैं नानामतनको छांड़ि साहबको जान्यो है सो तुम नहीं बूझौ हौ औरकी सपनी कहे स्वप्नवत् झूठी नानामतन की बाणी में देवाना कहे बिकल हे जीवो ! ह्वै रहेहौ सो नानामत त्यागि साहब को जानो कहे 'औरकी सुनी' जो या पाठ होय ताको अर्थ या है साँची बात अपनी मैं कहता हूं जो मेरे मतमें साहब को जानता है सोई साँच है या सुनि पुनि और का जो भया सोई देवाना ॥ ६ ॥

गुप्त प्रकट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूठ गर्ब भूलै मति कोई। हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई ८

सो हे जीवो ! गुप्त कहे जब समष्टिमें रहे हौ तबहूं और जब प्रकट कहे व्यष्टिमें रहे हौ तबहूं एकही मुद्रा रहे हौ अर्थात् साहिबै के रहे हौ तुम जे नाना मतन में परि नानासाहब मानि ब्राह्मण शूद्र कहते हौ सो झूठे हौ जीवत्व तो एकही है ७ मैं हिन्दू हौं मैं तुरुक हौं यह झूंठो गर्ब करिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ तो हिन्दू तुरुक कुल ये दोऊ झूठे हैं तुमतौ साहब के हौ ॥ ८ ॥

साखी॥ जिन यह चित्र बनाइया, सांची सूरति ढारि॥

कहहिकबिरतेइजनभले, चित्रवन्तहिलेहिबिचारि६

जिन यह नानाचित्र बनाइया कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत् में बनायोहै तौनेको सूत्रधारी साहब साँचो है जौन सबको सुरतिदियो है सो कबीरजी कहैहैं चित्रवन्त जो या मन नानादेह देनेवालो थाको जो कोई बिचारि लियो कि या मिथ्या है और साँच साहबको जानिलियो ते जन भले हैं ॥६॥

इति छब्बीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ॥ २७ ॥

चौ० ब्रह्मा को दीन्हों ब्रह्मंडा। सातद्वीप पुहुमी नौखण्डा १
सत्य सत्यकै बिष्णु दृढ़ाई। तीनिलोकमहँ राखिनि जाई २
लिङ्गरूप तब शंकरकीन्हा। धरती कीलि रसातल दीन्हा ३
तब अष्टङ्गी रची कुमारी। तीनिलोक मोहनिसबझारी ४
द्वितियानामपार्बति भयऊ। तपकरता शंकर को दयऊ ५
एकै पुरुष एक है नारी। तातें रचिनि खानि भौ चारी ६
शर्मन वर्मन देवो दासा। रजगुण तमगुण धरणि अकाशा ७
साखी ॥ एक अण्ड ॐकारते, यह जग सब भयो पसार ॥
कहकबीर सबनारिरामकी, अबिचलपुरुषभतार ८

ब्रह्माको दीन्हों ब्रह्मण्डा। सातद्वीपपुहुमी नौखण्डा १
सत्यसत्यकै बिष्णु दृढ़ाई। तीनिलोकमहँराखिनिजाई २

अष्टाङ्ग कौन है "भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच। अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा" ऐसी जो इच्छारूपी नारि अष्टाङ्गी सो ब्रह्माको ब्रह्माण्ड देतभई और सातद्वीप नवौखण्ड पृथ्वी विष्णुको दैकै तीनिलोकमें राखिनि कहे व्यापक करिदेत भई और विष्णुको नाम सत्य धरावत भई सो आठ नाम में प्रसिद्ध है "हरिः सत्यो जनार्दनः" सो जब ब्रह्मा विष्णु दोऊ अपने अपने को मालिक मानि लरे तब महादेवजी कह्यो कि हम लिङ्ग बढ़ावै हैं जोई अन्त लैआवै सोई बड़ो ॥ १ । २ ॥

लिङ्गरूपतबशङ्करकीन्हा। धरतीकीलरसातलदीन्हा ३

तब महादेवजी सातलोक नीचे के सात ऊंचे के तामें कील-वत् लिङ्ग बढ़ावत भये ब्रह्मा, विष्णु, दोऊको पठयो कि जाय अन्त लै आवो सो विष्णु जायकै आ कह्यो कि हम अन्त नहीं पाये ब्रह्मा कह्यो हम अन्त लै आये सुरभी के दूधते नहवायो, केतकी के फूलते पूज्यो है सो सुरभी और केतकी साखी हैं तब महादेवजी तीनोंको झूठा जानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्य होउ, सुरभीको कह्यो तुम्हारो मुख अशुद्ध होइ, केतकी को कह्यो हम पर न चढ़ो और विष्णुको प्रसन्न ह्वैकै या कह्यो कि तीनलोक में पूज्य होउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणन में कथा प्रसिद्ध है॥ ३॥

तबअष्टङ्गीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसबझारी ४

द्वितियानाम पार्बतिभयऊ। तपकरताशंकरकोदयऊ ५

तब अष्टङ्गी जो कारणरूपा शक्ति सो प्रसन्न ह्वैकै तीनि लोककी मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तप करता जे दक्ष हैं तिनके द्वारा महादेवजीको देत भई तौनेहीको दूसरो पार्वती नाम भयो॥४।५॥

एकै पुरुष एक है नारी। ताते रचिनि खानि भै चारी ६

शर्मनवर्मनदेवोदासा। रजगुणतमगुणधरणिअकासा ७

एकै पुरुष जो है ब्रह्म अरु एकै नारी जो है माया ताते चारि खानिके जीव उत्पन्न होतभये अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज ६ और शर्मन, वर्मन, देवो, दासा कहे शर्मन ब्राह्मण, वर्मन क्षत्रिय, देवो वैश्य, दासा शूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता, वर्मन कहे बक्ता, अरु देवता व उनके दास रजोगुणी, तमोगुणी व धरती और आकाश होतभये॥ ६। ७॥

साखी॥ एकअण्ड ओंकारते, यह सब जगभयो पसार॥
कहकबीरसबनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार८

मङ्गलमें पांच ब्रह्म पांच अण्डमें राख्यो है या कहि आये हैं

सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जो है अखण्डप्रणवता प्रतिपाद्य जो ब्रह्म सो माया शबलित ह्वै इच्छा आदि अष्टाङ्गी उत्पन्नकै जगत् पैदा कियोहै सो कबीरजी कहैंहैं कि धोखा वही है प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं. काहेते रामनामहीके जगत्मुख अर्थते प्रणव प्रकटभयो है ताते प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनाम को साहबमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हे जीवो! तुम सब रामचन्द्रहीकी नारी हौ अविचल कहे न चलायमान निर्बिकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित्शक्ति माया अष्टाङ्गीआदि अचित् शक्ति ई दूनों शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रहीहैं इहां कबीरजी माया में सब परेहैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबीरजी कि तुम रामकी नारी हौ और पुरुष करौगी तो मारी जाउगी ॥ ८ ॥

इति सत्ताईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवींरमैनी ॥ २८ ॥

चौ० असजोलहाकामर्मनजाना । जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़ बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २
सहस तार लै पूरिन पूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३
कहहिं कबीर कर्मसों जोरी । सूत कुसूत बिनय भल कोरी ४

असजोलहाकाकर्मनजाना । जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाशदुइगाड़बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २

यहि भांतिको जोलहा जो मन है जौन जगत् में ताना पसार्‌यो है कहे बाणी पसार्‌यो है ताको मर्म कोई न जानत भयो भतार श्रीरामचन्द्रको भूलिगये धोखाब्रह्म नानापति खोजन लग्यो १ महि और आकाश कहे अधः ऊर्ध्व दुइ गड़वा बनावत भये तामें चन्द्र सूर्य इड़ा पिङ्गला हैं तिनकर नरा भरावत भये ॥ २ ॥

सहसतारलै पूरिनपूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३

कहहिं कबीर कर्मसोंजोरी । सूत कुसूत बिनयभलकोरी ४

अरु तार जो है प्रणव ताको हज़ारन् दोनों कुम्भक में जपत भये अजहूं लों वाहीमें लगेहैं और यह कहे हैं कि कठिन दूरि है३ कबीरजी कहैहैं जब तानाको ताग टूटि जाइहै तब कोरी भिजैकै जोरि देइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरि देइ है सो कर्मको लाठिनमें बांधिकै सूत जो है जीव कुसूत जो है वाणी ताको जोलहा जो मन है सो बिनय है अथवा विद्या-अविद्या सूत कुसूत बिनय है जब वस्तु तैयार होइजाय है तब जोलहाको बिनिबो छूटैहै सो धोखाब्रह्ममें लागि अनादिकालतें बिनतईहै जब साहबको जानै तब साधनरूप कर्म करिबो छूटिजाइ हंसरूप साहब देइ जरामरण मिटिजाइ ॥ ४ ॥

इति अट्ठाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २८ ॥

अथ उनतीसवींरमैनी ॥ २९ ॥

चौ० बज्रहु ते तृण क्षण में होई । तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरू जानि परिहरई । कर्मकबांधल लालच करई २
कर्म धर्म बुधिमति परिहरिया । झूठानाम सांचलै धरिया ३
रजगति त्रिबिध कीन परकाशा । कर्म धर्म बुधिकेर बिनाशा ४
रबिके उदय तारा भो छीना । चरबेहर दोनों में लीना ५
बिषकेखाये बिष नहिं जावै । गारुड़सोइ जो मरतजिआवै ६
साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों, पलकहिमोंडसिजाय ॥
बिषहर मन्त्र न मानहीं, गारुड़ काह कराय ७

बज्रहुते तृण क्षणमें होई । तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरूजानिपरिहरई । कर्मकबांधललालचकरई २

वज्रहु तृण क्षण में करिदेइ है अरु तृणते वज्र करिदेइ है ऐसे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को जानो १ निझरूनरू कहे जिनको माया ब्रह्म को धोखा निझरि गयो कहे मिटि गयो ऐसे जे नर हैं

ते पूरा गुरु पाइकै परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै सम्पूर्ण जगत् के कर्म त्यागिदेयँ हैं और जे कर्म में बँधेहैं ते अनेक लालच करै हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्म मिलन की कोई ईश्वरन की ॥ २ ॥

कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया। झूठानामसांचलैधरिया ३
रजगतित्रिबिधिकीनपरकाशा। कर्मधर्मबुधिकेरबिनाशा ४

साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधि है ताको त्यागि देते भये झूठे झूठे जे देवता हैं तिनको नाम सांच मानिकै जपत भये ३ गुरुवालोग रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी तीन प्रकार के मत प्रकाशकैकै साहब के मिलनवारो जो कर्म-धर्म बुधि है ताको नाश करि देत भये ॥ ४ ॥

रविके उदय तारा भो छीना। चरबेहरदोनों में लीना ५
बिषके खाये बिषनहिंजावै। गारुड़सोजोमरतजिआवै ६

गुरुवालोग हे जीवो! तुमको उपदेश देयँ हैं जैसे सूर्य के उदय मों ताराको तेज क्षीण ह्वैजाय है ऐसे जब ज्ञान भयो जीवत्व मिट्यो तब चर और बेहर जो अचर ये दोनों में लीन ह्वैजाय है चर अचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानै है ५ सो साहब कहै हैं कि हे जीवो! ऐसो उपदेश जो गुरुवालोगोंने तुम्हैं दियो सो ठीक नहीं है काहेते कि संसार विष उतारिबे को तुम धोखा ब्रह्म में लगे हौ सो विषके खाये विष नहीं जाइहै यह धोखा ब्रह्म विषरूपै है संसार देनवारो है गारुड़ सो कहावैहै जो मरत में जिआइ लेइ सो मेरो ज्ञान धोखाब्रह्म विषते बचाइ कालते बचाइ लेइ ताको जानो ॥ ६ ॥

साखी॥ अलखजोलागीपलकमों, पलकहिमोंडसिजाय॥
बिषहरमन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ७

अलख जो वह ब्रह्म है सो सबके पलकमें लाग्यो है अर्थात् पल पल में ध्यान करै है और एक पलही में डसिजाय है

अर्थात् जो गुरुवनके मुँहते कढ्यो सो पलै में वा ज्ञान लगिजाय है सो साहब कहै हैं कि तैं मेरो है मेरी तरफ़ आउ यहि विष को हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानत ही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काह करौं ॥ ७ ॥

इति उनतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ तीसवीं रमैनी ॥ ३० ॥

चौ० ओ भूले षटदरशन भाई । पाखँडबेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना । चारो बद्ध चतुरगुण मौना २
जैनी धर्मक मर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुआ चम्पा फूला । मानो जीव कोटि समतूला ४
औ पृथिवी को रोम उचारै । देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथ बिन्दुकरै असरारा । कलपै बिन्दु खसै नहिं द्वारा ६
ताकर हाल होय अघकूचा । छा दरशन में जौन बिगूचा ७
साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै, रह्यो सकल घट पूरि ८

ओभूले षट दरशन भाई । पाखँडबेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना । चारोबद्ध चतुरगुण मौना २

पाखण्ड वेष जो धोखाब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्यो है ताही में षट्दर्शन जे हैं तेऊ भूलिगये १ यह जो धोखाब्रह्म को ज्ञान है सो जीव जो है ताको सीव जो कल्याण है सो नशावनवारो है और चारों प्रकारके जीव जे हैं तेऊ बद्ध हैं जे चतुर हैं ते गुणमौना कहे गुणातीत हैं परन्तु वोऊ धोखाब्रह्मही में हैं ॥ २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुआ चम्पा फूला । मानो जीवकोटि समतूला ४

अरु जैनी जे नास्तिक हैं ते धर्म को मर्म नहीं जान्यो काहेते कि बांधे तो मुँहै पट्टीरहै हैं कि कहूं किरवा न घुसिजाय जीवको

बचावैहैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिन वृक्षनमें जीव हैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जे पारसनाथ देव हैं तिनमें चढ़ावै हैं ३ दवना व मरुआ और चम्पाके फूल को तोरिकै कोटिन जे जीव हैं ते सूंघिकै अघाय हैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्तिमें चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ो ! प्रत्यक्ष जे जीव वृक्ष हैं तिनके पत्रको तोरि कै जड़ जो पाषाण है तामें काहे को चढ़ावो हौ तुम तो प्रत्यक्ष प्रमाण मानौ हौ कर्म किये फल होय है या मानतही नहीं हौ पाषाण पूजे कहा फल होयगो ॥ ४ ॥

औ पृथिवीकों रोम उचारै । देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथबिन्दु करै असरारा । कलपैबिन्दुखसै नहिंद्वारा६
ताकरहालहोय अघकूचा । छादरशनमें जौनबिगूचा ७

और पृथ्वी के रोमा जे हैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावै हैं और शिष्यनकी त्रिनको देखिकै भोग करिकै अपनो जन्म हारि-देइहैं कहे नरकको जायहैं ५ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दु को असरार कहे सरल करैहैं और कन्यन ते भगिनी नाते और उन-की त्रिन ते भोग करै हैं तब वह बिन्दु ऊपरते नीचेको कल्पत है कहे बढ़त है और पुनि नीचेते मेरु दण्ड ह्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लैजाइहै ६ सो जे जैनधर्मी हैं छः दर्शन में बिगूचा कहे भूलि गये हैं तिनकी और जिनको कहिआये हैं वीर्य बढ़ावनवारे तिनको हाल अघकूचा कहे नरकनमें कूचे जाइ हैं ॥ ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकट है, रह्योसकलघटपूरि ८

अमरपद कहे आत्माको जो स्वस्वरूप है सो साहबको अंश है दास है सोई अमर है ताको ज्ञान नियरेते दूरि है और बाहिरे है इहां नियरेते दूरि कह्यो ताते अपने को ज्ञान नहीं है और बा-हिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परन्तु जो सतगुरु भेद बतावै है तो ज्ञान होइहै आत्मा के स्वरूपको जानैहै ताको साहब

निकटही है काहे घट घट में तो पूर्ण है तो आत्माके निकटैहै॥८॥

इति तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३० ॥

अथ इकतीसवीं रमैनी॥ ३१॥

चौ० स्मृति आहि गुणनको चीन्हा। पापपुण्यको मारग लीन्हा १
स्मृति वेद पढ़ै असरारा। पाखण्डरूप करै अहँकारा २
पढ़ै बेद औ करै बड़ाई। संशय गाँठि अजहुँ नाहिं जाई ३
पढ़िकैशास्त्रजीव बध करई। मूड़ काटि अगमनके धरई ४

साखी॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय॥
अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

स्मृतिआहिगुणनको चीन्हा। पापपुण्यकीमारगलीन्हा १
स्मृति बेद पढ़ै असरारा। पाखँडरूप करै अहँकारा २

स्मृति कहे स्मृति गुणनको चीन्हा आप कहे तीनोंगुण स्मृति में देखिपरै काहेते कि पाप पुण्यको मार्ग कीन्हे हैं अर्थात् पाप पुण्य के मार्ग वहीते जानिपरै हैं १ रा रा जो जीव स्मृति वेद का अस पढ़त है पाखण्डरूप हैकै या अहंकार करै है जानिबेके लिये नहीं पढ़ै है अर्थात् हम विद्यामें जीतै कोई विद्यावान् जानि हमैं मानै चेला होइ इत्यादि कछू आपने पढ़ै है॥ २॥

पढ़ै बेद औ करै बड़ाई। संशय गांठि अजहुँ नहिं जाई ३
पढ़िकै बेद जीव बध करई। मूड़काटि अगमन कै धरई ४

बेद पढ़ै है सब देवतन की बड़ाई कहे स्तुति करै है अथवा अपनी बड़ाई करै है कि महापण्डित हौं संशयकी गांठि जो परि गई है सो अजहूं नहीं जाइहै वेदान्तशास्त्र आदि पढ़ै है आत्मा सर्वत्र है या कहै है पै चैतन्य जो जीव है ताको मूड़ काटिकै पाषाणकी मूर्ति है ताके आगू धरै है॥ ३। ४॥

साखी॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय॥
अनुभव भावन दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

कबीरजी कहै हैं कि यहि पाखण्डते बहुत जीवन को सतावत भये उनको अनुभवको भाव नहीं दरशै है कि जैसे हम मारे हैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जबभर जिये हैं तबभर अपनी इच्छा नहीं करैं हैं जेहिते बचैं ॥ ५ ॥

इति इकतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवीं रमैनी ॥ ३२ ॥

चौ० अन्ध सो दर्पण बेद पुराना। दरवी कहा महारस जाना १
जस खर चन्दन लादे भारा। परिमलबास न जान गँवारा २
कह कबीरखोजै असमाना। सोनमिलाजोजायअभिमाना ३

जैसे आँधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै और दरवी जो करछुली है सो पाकके रसको कहाजानै १ और गदहा चन्दनको लादे चन्दनकी सुबास कहाजानै तैसे गँवार जे हैं ते वेद पुराणको तात्पर्यार्थ जे साहब हैं तिनको कहा जानैं जो गरवीपाठ होय तो या अर्थ है अहंकारीलोग मधुररसको का जानैं २ सो कबीरजी कहै हैं कि आसमान जो निराकार धोखाब्रह्म ताको खोजै हैं सो वातो झूठई है सो पुरुष याको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्मको अभिमान जाय और साहब को जानिलेय ॥ ३ ॥

इति बत्तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३२ ॥

अथ तैंतीसवीं रमैनी ॥ ३३ ॥

चौ० बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १
आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठी मोह कालको धन्धा २
बँधवतबन्ध छोड़ि ना जाई। बिषयस्वरूपभूलिदुनियाई ३
हमरे लखतसकलजग लूटा। दासकबीर राम कहि छूटा ४
साखी ॥ रामहि राम पुकारि ते, जीभ परोगोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदि पियनकी होस ५

बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १

यहां कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड ये तीनों

की कठिनता देखाइ तात्पर्यवृत्तिते छड़ाइ साहब में लगावै है कबीरजी कहैहैं कि हे भाइउ! जौनी स्मृति को कर्म प्रतिपादक अर्थ करि कर्मरूप जेवरी में तुम बँधिगयेहौ स्मार्त भये हौ सो स्मृति वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको तात्पर्य कर्मके छड़ाइबेमें है धौं कर्मके बांधिबे में है तो स्मृतिको अर्थ कब जानोगे सो वेदको तात्पर्य तो कर्मते छड़ायबेही में है कैसे जैसे जीवनकी मांसमें आसक्ति स्वभावईते है वैसे छोड़ावै तो न छूटै ताते वेद नियम बतावैहै कि मांस खाय तो यज्ञमें खाय ताते या आयो कि जब बहुत श्रम करि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञ करैगो तब थोड़ा मांस विना स्वादका पावैगा तामें या बिचारैगो कि या थोड़े मांस विना स्वादके खाये यामें कहाहै या विचारि मांस छोड़ि देयगो या भांति कर्मकाण्ड को तात्पर्य निवृत्तिही में है और स्मृति नाना देवतनकी उपासना कहैहैं सो उन पूजनकी यन्त्र मन्त्र की पुरश्चरणकी विधि कठिनहै जो करतमें सिद्धभयो तो उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तो बैकलाइकै मरिजाइ है या भांति उपासनाकाण्डको तात्पर्य निवृत्तिही में है और स्मृति ज्ञानकाण्ड जो कहै हैं सो मनको साधन कठिन है काहेते कि जो "अहंब्रह्मास्मि" मान सर्व कर्मनको त्यागिदियो और दूसरी बुद्धि न गई तो पतित ह्वै जाय है तामें एक इतिहास है एक राजाके गोहत्या लगी सो हत्या आई तब राजा कह्यो कि सर्वत्र ब्रह्महीहै हमहूं ब्रह्म हैं हमको हत्या काहेको लगैगी हाथके देवता इन्द्र हैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो तब वह हत्या राजाकी बेटीके पास गई सो वो श्रृंगारकरि रानी के पलँगमें परिरही तहां राजा आये कन्याको परी देखी तब कह्यो कि तू कहां परीहै तब कन्या ने कह्यो जैसे रानी तैसे मैं ब्रह्म तो एकहीहै तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिर में चढ़िबैठी या भांति ज्ञानकाण्डहू को तात्पर्य निवृत्तिही में है कि जौनसरल उपाय वेद तात्पर्य कैकै बतावै है कि मनादिकन को छोड़िकै राम-

नाम को जपै साहबको ह्वै जाय तो मुक्ति ह्वैजाय तामें प्रमाण "द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं प्रति जगाम कथं नु भगवन् गां पर्यटन्कलिं स तरेयमिति सहोवाच भगवत् आदिपुरुषस्य नारायणस्य नाम्नेति नारदः पुनः पप्रच्छ भगवतः किंतन्नामेति सहोवाच हरेराम हरेराम रामरामहरेहरे" (इतिश्रुतिः) आदिपुरुष भगवान् नारायणके नाम हैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो और पूछ्यो कि कौन नाम है तब रामनाम को बतायो तेहिते उद्धारकर्त्ता रामनामही है पुनि स्मृतिहू कहै है "सप्तकोटि महामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः। एकएवपरोमन्त्रो रामइत्यक्षरद्वयम्" ताते वेदको तात्पर्य कर्मकाण्ड–उपासनाकाण्ड–ज्ञानकाण्ड तीनों के त्यागमें है साहबके मिलायबे में है तामें प्रमाण "सर्वे वेदायत्पदमामनन्ति" (इतिश्रुतिः) और कबीरजीहू ने कह्यो है कि वेदको अर्थ उलटिकै कहे तात्पर्यते समुझै तो तौने अर्थ वेद को सांच है अपरोक्ष अर्थ तो झूठो है तामें प्रमाण "दौरधूप सब छोड़ो सखिया, छोड़ो कथापुरान। उलटि वेदका भेदलखो, गहि सारशब्द गुरुज्ञान" दूजो प्रमाण "आसन पवन किये दृढ़रहुरे। मनको मैल छांड़ि दे बौरे॥ का श्रृङ्गी मूड़ा चमकाये। क्या बिभूति सब अङ्गलगाये॥ क्या हिन्दू क्या मूसलमान। जाको साबित रहै इमान॥ क्या जो पढ़िया वेदपुरान। सो ब्राह्मण बूझै ब्रह्मज्ञान॥ कहै कबीर कछु आन न कीजे। रामनामजपिलाहालीजे" सो स्मृति में जो तुमको नाना अर्थ भासमान होय हैं सोई बन्धन रूप जेवरि कमरमें लेतै आई है सो वा जेवरि तुम्हारीही बरी है॥१॥

आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठा मोह कालको धन्धा २

सो आपही स्मृतिको कर्मप्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरी बरिकै आपही गर बांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठा जो मोह है तामें परिकै कालको धन्धा बनावत भयो अर्थात् नानादेह धरत भयो काल मारत भयो साहबको जो तात्पर्य ते स्मृति बतावै है ताको नास बुझावत भयो॥ २॥

बँधवंतबन्धछोंड़िनाजाई। विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेदेखत सबजगलूटा। दासकबीर रामकहि छूटा ४

सो बांध तो बांध्यो पै वह बन्धते छोड़यो नहीं छूटै है विषय में सब दुनिया भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तौ छागर मारि बलिदानदै खाइलियो और सुरापानहू करिबेको चाह्यो और वेश्या राखिबो चाह्यो तो बाममार्गीभयो इत्यादिक अर्थ करिकै ३ सो कबीरजी कहैं हैं कि हमारे देखत देखत यह माया सम्पूर्ण जगको लूटिलियो सो मैं तो रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ॥ ४ ॥

साखी ॥ रामहिं राम पुकारते, जीभ परी गोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदिपियनकीहोस ५

मोको रामै राम पुकारत पुकारत कि राम में लगौ जीभ में रोस परिगयो कहे ठहर परिगयो पै जीव न मानतभये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि सीधे राम कहै तरिजाय वही धोखाब्रह्म में लगाइके नानामत दक्षिण बामादिक करिकै खोदिकै जलपियन की होस करैहै कहे आशा करै है सो ये तो सब धोखाही है मुक्ति कैसे होयगी ? सीधे रामजपि स्वामी सेवक भावकरि संसारसागर ते उतरि काहे नहीं जाय है ॥ ५ ॥

इति तेंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवीं रमैनी ॥ ३४ ॥

चौ० पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई। निजमुक्तिहिंमोहिं कहहुबुझाई १
कहँबसै पुरुषकवनसो गाऊँ। सोम्वहिं पण्डितसुनावहु नाऊँ २
चारि वेद ब्रह्मा निज ठाना। मुक्तिक मर्म उन्हों नहिं जाना ३
दानपुण्य उन बहुतबखाना। अपनेमरनकि खबरि न जाना ४
एक नाम है अगम गँभीरा। तहवाँ अस्थिर दास कबीरा ५
साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥

• आवागमन कि गम नहीं, तहँ सकलो जगजाय ६

पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई।निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई१
कहँबसैपुरुषकवनसोगाऊँ।सोमोहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ२

हे पण्डितौ ! पढ़ि पढ़ि के चतुराई करौ हौ सो अपनी मुक्ति तौ समुझाइ कहौ कहांते तिहारी मुक्ति होइहै जौनेको मुक्ति मानै हौ सो ब्रह्म धोखा है १ अरु वह ब्रह्मलोक प्रकाश है सो जाके लोक को प्रकाश है सो वह पुरुष कहां बसै है ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बतावो वह कौन है ॥ २ ॥

चारिबेदब्रह्मानिजठाना । मुक्तिकर्म्मउन्हौं नहिंजाना ३

चारिवेद् को हम कियो है और हमही जानैहैं हमहीं पढ़ै हैं यह ब्रह्मा मानत भये पै वेद को तात्पर्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी ह्वैके जगत्की उत्पत्ति काहेको करते ब्रह्महूको भ्रम भयो है सो प्रमाण मङ्गलमें कहिआये हैं तो पण्डित कहाजानै वही धोखामें पण्डित लोग लगावतभये कि वह जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है सो तुहीं है "अहंब्रह्मास्मि" यह भावना करु सो वातो जीवही अनुभव है जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहां बतावै वाको तो अनामा कहै हैं अरु वाको वस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देश काल वस्तुते रहित कहै हैं सो जाके नामरूप नहीं है देश काल वस्तुते रहितई है सो वह है कि नहीं है जो कहौ अनुभवमें तो आवै है तबतो अनुभवौ तो जीवहीको है जो यह बिचारिबो धोखाई भयो तो जीवब्रह्म कैसे होइगो ॥ ३ ॥

दानपुण्यउनबहुतबखाना।अपनेमरनकीखबरिनजाना ४
एक नाम है अगमगँभीरा । तहवां अस्थिर दासकबीरा ५

अरु कर्मकाण्डवारे दान पुण्य बहुत बखान्यो है पै अपने मरिबे की खबरि नहीं जान्यो कि यह काल बहुत दान पुण्यवारेन को खाइ लियो है हम कैसे बचैंगे ४ जौने नाममें लगे जन्म मरण

नहीं होइ है और अगमहै कहे जे सन्तलोग हैं तेई पावै हैं अरु गम्भीर पद है कहे गहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाम में मैं स्थिर हौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥
आवागमनकी गम नहीं, तहँसकलौजगजाय६

वो ब्रह्म कैसो है कि चींटी जो वाणी है सो नहीं पहुँचै और राई जो बुद्धि है सो नहीं ठहराय अर्थात् मन वचन के परे है और आवागमन की गम नहीं है अर्थात् न वहांते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात् मिथ्या है तहां सिगरो जग जाय है ॥ ६ ॥

इति चौंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवीं रमैनी ॥ ३५ ॥

चौ० पण्डित भूले पढ़ि गुण बेदा। आपु अपनपौ जानु न भेदा १
संध्या तर्पण औ षटकर्मा। ई बहुरूप करहिं अस धर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३
और के छुये लेतहो सींचा। तुमते कहौ कौनहै नीचा ४
यहगुणगर्बकरौ अधिकाई। अतिकेगर्ब न होइ भलाई ५
जासु नाम है गर्बप्रहारी। सो कस गर्बहि सकै सिहारी ६

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनि पद निर्बान ॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये बिदेही थान ७

पण्डित भूलेपढ़िगुणबेदा। आपु अपनपौ जानु न भेदा१

पण्डित जे हैं ते गुण भेद कहे त्रैगुण्यविषयक जो वेद है ताको भूलिगये कहे वेदको तात्पर्य त्रैगुण्य जानत भये कौन तात्पर्य न जान्यो सो कहै हैं कि न आपको जान्यो कहे अपने स्व-स्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंश हौं और अपनपौ न जान्यो कहे याके प्रियसखा साहबहैं तिनहीं ते जीवको अपनपौ है तिनको न जान्यो यह देश बोली है कि फलानेसों अपनपौ है

कहे सख्य है अरु जीव साहबको सखा है तामें प्रमाण "द्वासुपर्णास्युजायाया" (इति श्रुतेः) ॥ १ ॥

संध्या तर्पण औ षट्कर्मा। ईबहुरूपकरहिं असधर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई३

अरु संध्या तर्पण और षट्कर्म इनहीं आदि दैकै बहुरूप कहे बहुतभाँति के जे धर्म हैं तिनको करै हैं २ अरु साक्षात् वेदमाता गायत्री ताको चारियुग में ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य उपदेश पावै है कहो मुक्ति केहिकी भई है काहेते वाको तात्पर्य्य तो यह है कि जब साहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तो मुक्ति होइ सो साहबको स्वरूप और आपनो स्वस्वरूप तो जानतई नहीं है मुक्ति कैसे पावै ॥ ३ ॥

और के छुये लेतहौ सींचा। तुमते कहौ कौन है नीचा ४
यह गुणगर्ब करौ अधिकाई। अतिकेगर्ब न होइभलाई ५
जासु नाम है गर्बप्रहारी। सो कसगर्बहिसकै सिहारी ६

और को छुवौहो तो गङ्गाजल सींचौ हौ कि पवित्र ह्वै जाय सो कहो तुमहीते कौन नीच है ४ मल मूत्रादिक तुमहीं में भरेहैं और अपने गुणको गर्ब अधिक तुम करतेहो सो अतिगर्ब किये भलाई नहीं होइहै काहेते कि ५ जाको नाम गर्बप्रहारी है सो कैसे गर्ब को सिहारि सकै वह जो परमपुरुष है सो गर्बप्रहारी है तिहारो गर्ब कैसे सहैगो ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल मर्य्यादा खोइकै, खोजिनिपदनिर्बान ॥
अंकुरबीजनशाइकै, भये बिदेही थान ७

जे कर्मको त्याग किये हैं तिनको गांठिहूको धर्म गयो आपनी कुल मर्यादा तो पहिले खोइ दियो है और निर्बानपदको खोजत भये अंकुर जो है सुरति बीज जो है शुद्धजीव आत्मा बीज जो

१ "इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा। प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्रउच्यते" (इति स्मृतिः) ॥

है साहब ताको नशायके बिदेही जोहै ब्रह्मनिराकार ताहीके थान भये कहे आपनेकोब्रह्म मानतभये सो जाको अनुभवहै ब्रह्म ताको तो भूलिहीगये विना अंकुरपाले कैसे होइगो अर्थात् धोखही में परे रहिगये वामें कुछ नहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजी को "अंकुर बीज जहां नहीं, नहीं तत्त्व परकाश। तहां जाय का लेउगे, छोड़हु झूठी आश" अर्थात् चेष्टारहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछ वस्तुही नहीं है मिलिबोई कहां करै ॥ ७ ॥

इति पैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवीं रमैनी ॥ ३६ ॥

चौ० ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई। एकसयान सयान न होई १
दुसरसयानको मर्म न जाना। उत्पतिपरलयरैनिबिहाना २
बाणिजएकसबनामिलिठाना। नेमधर्म संयम भगवाना ३
हरि अस ठाकुरते जिन जाई। बालनभिस्तगाँवदुलहाई ४
साखी ॥ ते नर मरिकै कहँ गये, जिन दीन्हों गुरु छोट ॥
राम नाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई। एकसयान सयान न होई १
दुसरसयानकोमर्म न जाना। उत्पतिपरलयरैनिबिहाना २

ज्ञानी जे हैं चतुर जे हैं बिचक्षण जे हैं तिनहीं लौं जेई लोग हैं अर्थात् सूक्ष्म ते सूक्ष्म ताहूते सूक्ष्म लौं विचारनवारे जे अद्वैतवादी सबलोग हैं ते एक जो ब्रह्म ताहीमें सयान जो भये कि महीं ब्रह्म हौं यही मानतभये तो वे सयान नहींहैं १ दूसर सयान जे द्वैतवादी हैं जे साहबको और आपनेही को मानै हैं ताको तो मरमई नहीं जानै हैं भूलिकै उत्पति परलय कहे संसारकी जो उत्पत्ति प्रलय होतरहै है ताहीमें रैनि बिहाना कहे दिन राति जनमत मरत रहैहैं ॥ २ ॥

बाणिजएकसबनामिलिठाना। नेमधर्मसंयमभगवाना ३

हरिअसठाकुरतेजिनजाई। बालनभिश्तगाँवदुलहाई ४

एक बणिज सब मिलि ठानत भये नेम, धर्म, संयम इत्यादिक जे सब साधन हैं तिनहींको भग कहे ऐश्वर्य मानिकै तिनमें सब लागतभये.३ हरि कहे आरतिके हरनहारे जे साहब हैं तिनते जिनजाइ कहे जे जे फरक ह्वैगये हैं ते बालन कहे बालककी ऐसी है बुद्धि जिनकी ऐसे जे जीव हैं ते भिश्तगाँव दुलहाई कहे भिश्त जो स्वर्ग है ताहीको दुलहाइकै गावतभये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्गमें जाइ अप्सरनते भोगकरै यही गावत भये॥४॥

साखी॥ ते नर मरिकै कहँगये, जिन्हदीहों गुरु छोट॥
रामनाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

जिनको गुरु छोट दियो है अर्थात् थोरे अक्षरको मन्त्र दियो और जो घोट पाठ होइ तो यह अर्थहै कि गुरु उनको मूड़ घोटि दियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा जूंठ प्याला को घोटादैदियो पियाय दियो ते नर जे हैं हिन्दू मुसलमान ते मरिकै कहां गये अर्थात् कहूं नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोट वस्तु जो नाना देवतनकी उपासना धोखा ब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छांड़ो अन्त में उबार रामनामही करैगो तामें प्रमाण "मनरे जबते राम कह्योरे। फिरि कहिबे को कछु न रह्योरे॥ काभो योग यज्ञजपदाना। जो तैं रामनाम नहिं जाना॥ काम क्रोधदोउभारे। गुरुप्रसादसबतारे॥ कहै कबीर भ्रमनाशी। राजाराम मिले अविनाशी"॥ ५॥

इति छत्तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३६॥

अथ सैंतीसवीं रमैनी॥ ३७॥

चौ० एक सयान सयान न होई। दुसर सयान न जानै कोई १
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लै जाई २
पँचयें सयान न जानै कोई। छठयें महँ सब गैल बिगोई ३

सतयें सयान जो जानौ भाई। लोक बेद मो देहु दिखाई ४
साखी ॥ बिजक बतावै बित्तको, जो बित गुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै बिरला कोइ ५

एकेसयान सयान न होई। दुसर सयान न जानैकोई १
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लै जाई २

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयान हैं अर्थात् वाही को सांच मानै हैं और सब मिथ्या है ते सयान नहीं हैं और दूसर माया में जे सयान हैं वे कहैं हैं कि मायाको हमें जानै हैं सो माया तो सत् असत ते विलक्षण है ताको कोई जानतही नहीं है कि कौन वस्तु है १ अरु तीसर जो जीव तामें जे सयान हैं कि जीवात्मै सबको मालिक है या विचारै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं ते सयान जो जीव है ताको खाइ हैं कहे पाखण्डमत में लगाइ नरक में डारि देइ हैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयान हैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपने लोकको लैजांय हैं ॥ २ ॥

पँचये सयान न जानैकोई। छठयें महँ सब गये बिगोई ३
सतयेंसयान जोजानौभाई। लोक बेद महँ देहु देखाई ४

और पाँचौं इन्द्रिंनकी विषय तिनमें जे सयान हैं तेतो वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठों है मन ताही ते सबै गैल बिगोइगई है ३ सातवें सयान जो साहब ताको जो जानौ तो हे भाई! लोक वेदमें मैं देखायदेहुँ कि जेते वर्णन करिआये तिन ते साहब परे है ॥ ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावै बित्तको, जोबित गुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीव को, बूझै बिरला कोइ ५

श्रीकबीरजी कहैं हैं कि, जैसे जौन बित्त गुप्त होय है कहे गाड़ा होइ तौने धनको बीजक बतावै है तैसे सारशब्द जो राम नामबीजक सो साहबमुख अर्थमें जीवको बतावै है कि साहबको

है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरला साधु बूझै है॥५॥

इति सैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवींरमैनी॥ ३८ ॥

चौ० यहिबिधिकहौंकहा नहिं माना।मारगमाहिंपसारिनिताना १
रातिदिवसमिलिजोरिनितागा। ओटतकाततभर्मनभागा २
भर्मै सबघट रह्यो समाई। भर्म छोड़ि कतहूं नहिं जाई ३
परै न पूरि दिनोंदिन छीना। जहां जाहु तहँ अङ्गबिहीना ४
जोमतआदिअन्तचलिआया।सोमत उनसबप्रकटसुनाया। ५
साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीश चढ़ाय ॥
सन्तोहै संतोष सुख, रहहु तौ हृदय जुड़ाय ६

यहिबिधिकहौंकहानहिंमाना। मारगमाहिं पसारि निताना १

कबीरजी कहैं हैं कि सतयुग में सत्यसुकृत नामते त्रेता में मुनीन्द्र नामते द्वापरमें करुणामय नामते कलियुगमें कबीर नामते मैं चारों युगमें जीवनको रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें ताना पसारत भये कहे अपने अपने मतमें अर्थ करि लेते भये ॥ १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा।ओटतकाततभर्म न भागा २

और रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत भये अर्थात् जहां जहां अर्थ नहीं लगैहै तहां तहां अपने मतमें योजित करतभये और ओटत कातत कहे शङ्कासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटब कातब पीछे कह्यो सो प्रथम शङ्का समाधान करिकै काति ओटिकै ताना तनत भये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेर फेर शङ्का समाधान करि ओटि काति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धान्त न भयो ॥ २ ॥

भर्मै सबघट रह्यो समाई। भर्म छोड़ि कतहूँ नहिं जाई ३

परै न पूर दिनौदिन छीना। जहां जाहु तहँ अङ्ग बिहीना ४
जोमतआदिअन्तचलिआया। सोमतउतसबप्रकटलखाया ५

वही भर्म घट घटमें समाइ रह्यो है भर्म छोड़िकै अमत न जात भये वही संशय में रहिगये ३ पूर नहीं परैहैं कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौदिन क्षीण होत जाइहै क्षीण कहां होइहै कि यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दूरभयो पै जहां जाइ है तहँ निराकार धोखई मिलैहै हाथ कछु नहीं लगैहै ४ वेदको अर्थ तो परोक्ष है कहे अप्रकट है तात्पर्यवृत्ति करिकै साहबको लखावै तौन अनादिमत ताको न समुझतभये वह वेदको अर्थ गुरुवालोग प्रकट करिकै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अन्तते चलो आयो है ताको बल गरिगयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ वह सँदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीश चढ़ाइ ॥
सन्तो है संतोषसुख, रहहु तो हृदय जुड़ाइ ६

वही "तत्त्वमसि" उपनिषद्को संदेश शीश चढ़ाइ लेते भये वेद्नमें वाणीमें तात्पर्य करिकै सांच पदार्थ कह्यो ताको न जानत भये सन्तपद संतोष सुखहै तौने जो रहो तो हृदय जुड़ाइ और में तो तापई होइगो काहेते सबते परे है जाको साहब दूसरो नहीं है ऐसे जे चक्रवर्ती श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जब पायो तब उनते कम ब्रह्महोवेकी ईश्वरके मिलिबेकी और मायिक जे पदार्थ हैं तिनके मिलिबेकी चाहई न होइगी काहेते कि वह चक्रवर्ती के मिलिबेके समसुख नहीं है ब्रह्मानन्द विषयानन्द आदिकन में तब लगैगो तहहीं सबते संतोष है याको मन शान्त ह्वै जाइगो ॥ ६ ॥

इति अड़तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३८ ॥

अथ उन्तालीसवीं रमैनी ॥ ३९ ॥

चौ० जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया। कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया १
करिमत कर्मकरै करतूती। बेद किताब भया सबरीती २

करमत सो जो गर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिन्दू तुरुक न जानै भेऊ ४
सखी॥ पानी पवन सँजोयकै, रचि आई उतपात॥
शून्यहिंसुरतिसमानियाँ, कासों कहिये जात ५

जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया १
करिमतकर्मकरैकरतूती। बेद किताब भया सब रीती २

जिन्ह महम्मद सबको कलियुगमें कलिमा पढ़ायो है तेऊ कह्यो है कि हम अल्लाह के कुदरतिको खोज कहे अन्त नहीं पायो १ आपन आपन मत करिकै करतूती कैकै कर्म करनलगे सो वेद किताब सब रीति ह्वै जातभये॥ २॥

करमतसोजोगर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिन्दू तुरुक न जानै भेऊ ४

कर्महिंते गर्भमें आय अवतार लेते भये अरु कर्महीते नाम धरतभये ३ और कर्मैते सुन्नति और जनेऊ चलत भये ताको भेद हिन्दू तुरुक दूनौ न जानत भये॥ ४॥

साखी॥ पानी पवन सँजोयकै, रचि आई उतपात॥
शून्यहिंसुरतिसमानिया, कासोंकहियेजात ५

पानी कहे बिन्दु अरु पवन ये दूनौके संयोग ते गर्भभयो कहे शरीररूपी उत्पात खड़ाभयो सो कर्म में लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पै कर्म न छोंड़त भये अरु जिन कर्म छोंड़िबोऊ कियो तिनकी सुरति शून्यै में समाइ जातीभई सो वहांकी बात कासों कही जात है अर्थात् काहूसों नहीं कहिजाय है "नेतिनेति" कहिदेइ हैं अर्थात् वहां तो शून्य है कुछु हाथ न लग्यो॥ ५॥

इति उन्तालीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३९॥

अथ चालीसवीं रमैनी॥ ४०॥

चौ० आदम आदि सुद्धि नहिं पावा। मामा हौवा कहँ ते आवा १

तब होते न तुरुक औ हिन्दू। मायके रुधिर पिताके बिन्दू २
तब नहिं होते गाय कसाई। कहुबिसुमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबना रह्योहै कुल औ जाती। दोजख भिश्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकी खबरि न जानै। मतिभुलान दुइदीन बखानै ५

साखी॥ संयोगे का गुनरवै, बिन योगे गुणजाय॥
जिह्वास्वाद के कारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

आदम आदिसुद्धिनहिंपावा। मामा हौवा कहँते आवा १
तब होते न तुरुक औ हिन्दू। मायकेरुधिरपिताकेबिन्दू २

आदि आदम जे ब्रह्मा ते मामा कहे जगत्पिता हौवा नाम ऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सों ब्रह्महीं सुधि ना पायो कि कहां ते आई है १ तब आदि में न हिन्दू रहे न तुरुक रहे और मायके रुधिरते पिता के बिन्दुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो॥ २॥

तबनाहिंहोतेगायकसाई। कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबनरह्योहैकुलऔजाती। दोजखभिश्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकीखबरिनजानै। मतिभुलानदुइदीनबखानै ५

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो बिसमिल्ला कहिकै हलाल करैहै सो किन फुरमाई है ३ अरु तब न कुल रह्यो और न जाति रही दोजख भिश्त कहां रह्यो है ४ मनके मसलेकी सुधि न जान्यो कोई मेरे मनैके बनाये हैं दोनों दीन और अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिन्दू है न मुसलमान है मतिहीन दुइदीन बखानत भये॥ ५॥

साखी॥ संयोगे का गुणरवै, बिनयोगे गुणजाय॥
जिह्वास्वादकेकारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

जब मनको आत्माको संयोग होइ है तबहीं संकल्प होइ है और तबहीं गुण होइहै अरु जब मनको आत्माको संयोग नहीं होइ है तब गुण जाइहै कहे गुणौ नहीं रहैहै अरु संकल्पौ नहीं रहै है सो नर जे हैं ते जिह्वा सुखके कारण और शिश्न इन्द्रिय

सुखके कारण बहुत उपाय करतभये और मन व आत्मा को संयोग छोड़ावन को उपाय करत भये और जे मन आत्मा को संयोग छोड़्यो है ते आपने स्वस्वरूप को प्राप्त भये हैं ॥ ६ ॥

इति चालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४० ॥

अथ इकतालीसवीं रमैनी ॥४१॥

चौ० अम्बुकिराशि समुद्राकि खाई। रबि शशि कोटि तेंतिसोभाई१
भँवरजालमें आसनमाड़ा । चाहत सुख दुख संग न छाड़ा२
दुख का मर्म काहुं नहिं पाया। बहुतभांतिके जग बौराया ३
आपुहि बाउर आपु सयाना । हृदयाबसत राम नहिं जाना ४
साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरि के दास ॥
जामें भया न यामिनी, भामिनिचलीनिरास ५

अम्बुकिराशिसमुद्रकीखाई। रबिशशिकोटितेंतिसोभाई १
भँवरजालमेंआसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसङ्गनछाड़ा २

अम्बु कहे बिन्दु ताकी राशि शरीर है समुद्र जो है संसारसागर ताकी खाई है अर्थात् संसारहीमें सब शरीर परे हैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहे आवैहैं तैसे नानाजीवनके शरीर परे रहैहैं और सूर्य चन्द्रमा तेंतीस कोटि देवता १ यही संसारसागरके भँवरजालमें परे कबहूं नरकको जाय हैं कबहूं स्वर्गको जायहैं याही भांति सब जीव और सब देवता चाहत तो सुख को हैं कि हमको सुख होय पै दुःखरूप जो संसार है ताको संग नहीं छोड़ैहैं ॥ २ ॥

दुखकामर्मकाहुनहिंपाया । बहुत भांतिकेजगबौराया ३
आपुहिबाउरआपुसयाना । हृदयाबसतरामनहिंजाना ४

वह ऊखरूप जो संसार है ताको मर्म कोई न जानत भयो बहुत भांति करिकै जगमें सबजीव बौराय गये ३ सो जीव जे हैं ते आपुहीते बाउर होत भये अरु आपहीते सयान होत भये हृदय में बसत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जानतभये अर्थात्

जे संसार में परे हैं ते तो बाउरई हैं जे आपनेको बहुत. ज्ञानी मानै हैं और सयान मानै हैं तेऊ बाउरे हैं अर्थात् जे और और ईश्वरनके दास भये और जे आपहीको ब्रह्म मानत भये कि हमहीं ब्रह्म हैं और आपने आत्मैको मानत भये तिनको साहब को ज्ञान नहीं होय है या हेतुते दुःखहीको सुख मानैहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ तेई हरि तेई ठाकुरा, तेई हरि के दास ॥
जामें भया न यामिनी, भामिनि चली निरास ५

तेई जे जीव हैं ते अपने को हरि मानत भये व आपनेही को ठाकुर मानत भये कि हमहीं जगत्कर्ता हैं और आपनेही को हरिके दास मानतभये अर्थात् सब आपही को मानत भये और यामिनी कहावै है लगानिया वह वस्तु कराइदेइ है सो पूरा गुरु कहावै है सो यह जीवको उद्धार कराइदेइ है सो जो जीव पूरा गुरु रामोपासक ना पायो जो समुझाइ देइ कि यह धोखाहै तिन जीवन ते भामिनि जो मुक्ति सो निराश ह्वै गई कि ई न मुक्ति होयँगे ॥ ५ ॥

इति इकतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४१ ॥

अथ बयालीसवीं रमैनी ॥ ४२ ॥

चौ० जबहमरहल रहा नहिं कोई। हमरे माहँ रहल सब कोई१
कहहुसोरामकवनतोरसेवा। सोसमुझायकहों मोहिंदेवा २
फुरफुरकहउँ मारुसबकोई। झूठे झूठा संगति होई ३
आंधर कहै सबै हम देखा। तहँ दिठियार पैठि मुँह पेखा४
यहिबिधिकहौमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदया होई ५
कहहिं कबीर हंस मुकुताई। हमरे कहले छुटिहौ भाई ६

जब हमरहलरहानहिंकोई। हमरेमाहँ रहल सबकोई १
कहहु सो राम कौनतोरसेवा।सोसमुझायकहौमोहिंदेवा२

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब हम साहब के लोकमें रहै हैं तब

तुम कोई नहीं रहेहौ तुम सब हमरे साहब के लोक प्रकाश में रहेहौ १ अपने को रामतौ कहौहौ तुम्हारी सेवा कौनहै कहां वेद पुराण में लिखो है कि इनकी सेवा किये मुक्ति होइगी सो तुम देवता बने फिरौहौ परन्तु मोको समुझाय के कहौ तो कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्ति भई है ॥ २ ॥

फुर फुर कहउँ मारु सब कोई। झूठे झूठा संगति होई ३

जो कोई फुरफुर कहै है तो सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुम सांचहौ साहबकेहौ तो सब मारन धावै है शास्त्रार्थ करि लरै है काहेते लोक में रीति है कि झूठेकी झूठेनसों संगति होयहै सो सांच जो जीव सो झूठामन उत्पत्ति करिकै झूठा जो धोखा ब्रह्म ताहीकी संगति होत भई ॥ ३ ॥

आंधर कहै सबै हम देखा। तहँदिठियार पैठि मुँहपेखा ४

साहबके ज्ञानते बिहीन जे आंधर हैं ते या कहै हैं कि वेद शास्त्र पुराण में अर्थ सब हमने ब्रह्मरूपई देखा है जाके देखते सबको ज्ञान हमको ह्वै गयो तामें प्रमाण "येनाश्रुतं श्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं विज्ञातं भवति" तहां दिठियार जे साहबके देखनवारे ते वोई श्रुतिन में साहब मुख अर्थ देखै हैं कैसे जैसे 'येनाश्रुतं श्रुतं' कहे जौने रामनामके सुने जो नहीं सुनाहै सोऊ सुनै अस होइजाइहै काहेते वेद शास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसे हैं और जौने रामनामके जानेते यह जो अमत है सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मत होइ जाइहै अर्थात् परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको चित अचित विग्रही सबको मानै है और मन वचन के परे जे अविज्ञात साहब ते रामनाम साहब मुख अर्थ में व्यञ्जित होयहै अथवा रामनाम को जानिकै साधन किहेतें साहब हंसरूप दै जानेजाइ है ॥ ४ ॥

यहिविधिकहौंमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदयाहोई ५

कहहिं कबीर हंसमुसकाई। हमरे कहले छुटिहौ भाई ६

सो या भांति ते मैं सब जीवनको समुझाऊँ हौं पै कोई बिरला मानैहै कौन मानैहै जौन जस मुखते कहैहै तैसे हृदय ते होइ है ५ कबीरजी कहे हैं कि मुसकाई मुसके बँधीं जीवो हमारेही कहते तुम छूटोगे औरीभांति न छूटोगे और मुकताई पाठ होय तो या अर्थ मुक्ति होबेकी है इच्छा जिनके ॥ ६ ॥

इति बयालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तेंतालीसवीं रमैनी ॥ ४३ ॥

चौ० जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा। नरकगयेतेहिनरकहिबासा १
आवत जात न लागहि बारा। काल अहेरी सांझ सकारा २
चौदहि विद्या पढ़ि समुझावै। अपने मरनकि खबरि न पावै ३
जाने जिवको परा अँदेशा। झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगति छाँड़ि करै असरारा। उबहै मोट नरक की धारा ५
साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनसुखी, नारी पुरुष बिचार ॥
ते नर चौरासी भ्रमहिं, जबलगि शशि दिनकार ६

जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिबासा १

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्मा है सोई मालिक है दूसर नहीं है एकै है ते नर की मुक्तिकी बातैं कौन कहै वे स्वर्गहू नहीं जायहैं नरक में जायकै नरकहीमें बास किये रहै हैं काहेते नरकही जायहैं कि इहां तो तीर्थ, व्रत, संयम जो स्वर्ग जाबे को उपाय है ते तो मिथ्या मानि छांड़ि दियो जीवात्मै को मालिक मान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षाकरै और वेद, पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनको उपाय एकौ न कियो जब यमदूत मोगरालैकै मारनलगे बांधिकै कांटा में काढ़िलावनलगे तब मूढ़ पुकारनलाग्यो गुरुवालोगनको ते रक्षा न किये और गुरुवालोगनहूं की वही हवाल देखनलग्यो सो साहबको नाम तो सब छांड़िकै लियो नहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहां स्वर्गजाबेवारो सुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटके से पाद जन्म

गँवाइ दिये न इतके भये न उतके भये तामें प्रमाण "रामनाम जान्यो नहीं, कहा कियो तुम आय ॥ इतके भये न उतके, रहिया जनम गँवाय" ॥ १ ॥

आवतजातनलागहिबारा। कालअहेरी सांझसकारा २
चौदहबिद्यापढ़िसमुझावै। अपनेमरणकिखबरिनपावै ३

आवत जात बार नहीं लगै है कहे पुनि पुनि जन्म लेइहै काल जो अहेरी है सो सांझ सकार उनहीं को खाय है वही वासना उनकी बनीरहे है फेरि वाही मनमें आरूढ़ है फेरि वही नरकही को जायहै २ और चौदहो विद्या पढ़िके गुरुवालोग जे हैं ते औरै को तौ समुझावैहैं परन्तु अपने मरणकी खबरि नहीं पावै हैं ॥ ३ ॥

जानौजियकोपराअँदेशा। झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगतिछोड़िकरैअसरारा। उबहै नर्कमोट को भारा ५

जे जीवात्महीं को जानै हैं साहबको नहीं जानै हैं तिनहीं को अँदेश परै है काहेते कि सब झूठ ही है वही सँदेश कहे हैं जब यमदूत मारनलगे तब वा मारु देखि उनको अँदेश परै है कि हमारी रक्षा कौनकरैहै सो या पापिनकी दशा गरुड़पुराण में प्रसिद्ध है ४ साहबके जाननवारे जे साधु हैं तिनकी संगति छोड़िके जे असरार कहे कफरई करै हैं अपने जीवात्मै को मालिक मानै हैं साहबको नहीं जानै हैं उ कहे वे जे दुष्ट हैं ते बहै मोट नरक को भारा कहे नरक को है भार जामें ऐसी जो माया की मोटरी ताही को बहै कहे ढोवै हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष विचार ॥
तेनरचौरासी भ्रमहिं,जबलगिशशिदिनकार ६

कबीरजी कहै हैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु और जे साहबके बतावनवारे हैं सो येई गुरु हैं जो कोई इनकी वाणी को मिथ्या मानै है सोई गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही और मनमुखी कहे अपनें मनैते नारि नर विचारिकै जे एक जीवात्महींको मालिक

मानैं हैं ते चौरासी लक्ष योनिही में जबलगि सूर्य चन्द्रमा रहै हैं तबलगि वाही में परे रहै हैं ॥ ६ ॥

इति तेंतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चौवालीसवीं रमैनी ॥ ४४ ॥

चौ० कबहुँ न भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गँवाये हाथा १
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना। साधुसंगतुम नहिं पहिंचाना २
अब तौ होइ नरक में बासा। निशिदिनपरेलबारकेपासा ३
साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया, कहै कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवसपरतहै धार ४

कबहुं न भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गँवाये हाथा १

साहबके जाननवारे जे साधु तिनको सत्संग कबहूँ न कियो और उनके बताये साहबको साथ कबहूँ न कियो जेहिते आवागमनरहित होय मनुष्य ऐसो जन्म अपने हाथ ते गमाय दियो ॥ १ ॥

बहुरि न ऐसो पैहौ थाना। साधुसंगतुमनाहिंपहिंचाना २
अबतोरहोइनरकमें बासा। निशिदिनपरेलबारकेपासा ३

ऐसो थान कहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिंचान्यो है साधुसंग करो जो पूरा गुरु पाइजाउगे तो उबार ह्वै जाइगो २ धोखा जो है ब्रह्म और माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लबरा तिनके पास में निशिदिन पर्‌यो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मों बास होइगो ॥ ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया, कहैं कबीर पुकार ॥
चेतवाहोहु तौ चेतिले, दिवसपरतहैधार ४

दूनो ब्रह्ममायाके धोखा में सबको नरक जात देखिकै कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि चेतिबे को होइ तो चेतो नहीं तो दिनैके तिहारे ऊपर धार परै है कहे गुरुवालोगनको डाकापरै है भाव यह

है जो गुरुवालोगन को डाका तुम्हारे ऊपर परैगो और वह ब्रह्म को उपदेश करैगो और तुम्हारे वह धोखा दृढ़ परिजाइगो तो तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूं वह धोखाते काहूके फेरे न फिरोगे अर्थात् काहूको कहा न मानोगे तो संसारही में परेरहोगे बहुत बड़े बड़े वही धोखाते ब्रह्ममें परिकै मरिगये साहब को न जानत भये सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

इति चौवालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवीं रमैनी ॥ ४५ ॥

चौ० हिरणाकुश रावण गये कंसा । कृष्ण गये सुर नर मुनि बंसा १
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड़ सबगयो जो रहे सयाना २
समुझिनपरीरामकीकहानी । निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगोपन्थ थकित भो पवना । दशौदिशा उजारिभोगवना ४
मीनजाल भोई संसारा । लोह कि नाव पषाणको भारा ५
खेवै सबै मरम नहिं जाना । तहिबो कहै रहै उतराना ६
साखी ॥ मछरी मुख जस केचुवा, मुसवन मुँह गिरदान ॥
सर्पन माहँ गहे जुवा, जाति सबनकी जान ७

हिरणाकुशरावणगयेकंसा । कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मागये मरम नहिंजाना । बड़सबगये जो रहेसयाना २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश, रावण, कंस ये मरिजात भये और इन तीनों के मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मर जातभये दशौ अवतार निरञ्जन नारायणै ते हैं हैं या हेतुते मारिजानवारे तीनि कह्यो मारनवारो एकही कह्यो और सुर, नर, मुनि इनके वंशवारे तेऊ मरिगये और ब्रह्मा आदिक जे बड़े बड़े सयान रहैं तेऊ वेद को तात्पर्य न जान्यो मरिगये ॥ १ । २ ॥

समुझिनपरीरामकीकहानी । निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगोपन्थथकितभोपवना । दशौदिशा उजारिभोगवना ४

रामकी कहानी कहे रामनाम की कहनि जो चारों वेद कहेहैं सो काहू को न समुझिपरी धौं निरबक दूधही है धौं पानिही पानी है अर्थात् जिनको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको ज्ञानभयो वेद को तात्पर्य बूझ्यो साहबमुख अर्थ लगायो सो दूध ही पियत भयो और जो जगत्मुख अर्थ में लग्यो सो पानिही पानी पियत भयो साहब मुख अर्थ न जान्यो एते सब मरिगये ३ अपने अपने पन्थ चलावतभये जब पवन थकित भयो कहे श्वासारहित भई तब दशौंदिशा कहे दशौ इन्द्रिनद्वारके जे देवता ते जातरहे तब दशद्वार को जो शरीर गाउँ सो उजारि ह्वैगयो कहे मरिगये याते या आयो कि जे नानामत चलावै हैं मत यहै रहिजायहै जा शरीर में मरिकै गये ताहीकी सुधि रहै है ॥ ४ ॥

मीनजाल भोई संसारा। लोह कि नाव पषानको भारा ५

याही रीतिते मरत जियत जे मीनरूप जीव हैं तिनको यहि संसारसमुद्रमें वाणी जाल फन्दनको भयो सो जे जालमें फँदे ते तो अविद्याके जालमें फँदेही हैं जे उबरे चाहैहैं ते जड़वत् जो मन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जो अविद्यारूपी लोहेकी नाव तामें चढ़े सो वह बूड़िही जायगी फिर वही संसार में परे रहे हैं ॥ ५ ॥

खेवै सबै मर्म नहिं जाना। तहिवो कहै रहै उतराना ६

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहे वही धोखा ब्रह्म में लगावै हैं और या कहै हैं कि हम मर्म जान्यो है तुम यामें लगौ पार ह्वै जाउगे सो वह जो संसारसमुद्र में अविद्यारूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूड़िही जायगी तामें गुरूचेला दोऊ बूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् वेदान्त आदि नानाशास्त्रनमें नानातर्क उठाय उठाय विचार करतऊ जायहैं संकल्प विकल्प नहीं छूटै तात्पर्य तो जानै नहीं और जन्मभरि चेला पूछतई जायहै परन्तु तबहूं यही कहै हैं कि तुम संसार समुद्र में उतराने हौ कहे उबरेहौ यह नहीं विचारै हैं

कि संकल्प विकल्प छूटबई नहीं कियो संसारते कैसे उबरैंगे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मछरीमुखजस केचुवा, मुसवन मुँह गिरदान ॥
सर्पन माहँ गहेजुवा, जाति सबनकी जान ७

जैसे मछरीके मुखमें केंचुवा मुसवानके मुहँमें गिर्दान अर्थात् जब मूस गिर्दानको रंग देख्यो तब लाल मास अथवा लाल फल जानि धरनधायो जब फूंक मास्यो तब आँधर ह्वैगयो गिर्दानही मूसको खायलियो और सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूंदरको धरैहै जो उगिलै तो आँधर ह्वैजायहै खाय. तो मरिजाय ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्मकाण्डी हैं ते जैसे मछरी केचुवा को जब खाय है तब मुँहमें बरवा चुभिजायहै वाही में फँसिजाय है तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्म करैहै जनन मरण नहीं छूटैहै काल खायलेइ है और जे ज्ञानकाण्डी हैं ते साहबको ज्ञान तो काचो है अपने शास्त्रबल या कहै हैं कि हम समुझायकै पाखण्डमतवारे जे हैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या विचारि तिनके यहां गये सो वे धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मास्यो कि आँधरे ह्वैगये साहब को जौन ज्ञान रहै सो भूलिगये तो उनके खाबे को पै वोई उलटिकै खागये और उपासनाकाण्डी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपासना धस्यो सोतौ छोड़तही नहीं बनैहै डरैहै कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवता के लोक गये और फेरि आये जन्म मरण नहीं छूटैहै जैसे सांप छछूंदर को धस्यो परन्तु न उगिलत बनै न लीलत बनै ताते कबीर जी कहैहैं कि साहब को जानो जनन मरण उनहीं के छुड़ाये छूटैगो ॥ ७ ॥

इति पैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४५ ॥

अथ छियालीसवीं रमैनी ॥ ४६ ॥

चौ० बिनसै नाग गरुड़ गलिजाई । बिनसै कपटी औ सतभाई १

बिनसैपापपुण्यजिनकीन्हा। बिनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा २
बिनसै अग्नि पवन अरु पानी। बिनसै सृष्टि जहांलौं गानी ३
बिष्णुलोक बिनसै छनमाहीं। हो देखा परलयकी छाहीं ४
साखी॥ मच्छरूप माया भई, यमरा खेलहि अहेर॥
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे, सुर नर मुनि केहिकेर ५

जे भर ब्रह्माण्ड के भीतरहैं ते सब नाशवान् हैं संसारसमुद्र में ऐसो माया लपेट्यो कि यह मत्स्यजीव माया है गई अर्थात् मिलिगई है कहे जीवनको शरीर में डारिदियो है शरीरही देखपरे है जीवको खोज नहीं मिले है भीतर बाहर मन मास आदिक वह जड़मायही देखिपरैहै यमराजो धीमर काल है सो शिकार खेलैहै ताते कोई नहीं उबरै है कोई हालही मरैहै कोई महाप्रलय में मरै है॥ १। ५॥

इति छियालीसवीं रमैनी समाप्तम्॥ ४६॥

अथ सैंतालीसवीं रमैनी॥ ४७॥

चौ० जरासन्ध शिशुपाल सँहारा। सहसअर्जुनै छल सो मारा १
बड़छल रावणसो गये बीती। लङ्कारह कञ्चनकी भीती २
दुर्योधन अभिमानहिं गयऊ। पाण्डवकेर मरम नहिं पयऊ ३
मायाके डिभंगे सबराजा। उत्तम मध्यम बाजन बाजा ४
छौचकवैवितधरणि समाना। यको जीव परतीति न आना ५
कहँलौं कहौं अचेते गयऊ। चेत अचेत झगर यकभयऊ ६
साखी॥ ई माया जग मोहनी, मोहिसि सब जगधाय॥
हरिचन्द्र सतिके कारने, घर २ सो गो बिकाय ७

ये जे राजा बड़े २ गनाय आये ते सब मारे परे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकरिकै गये सो कहाँलौं मैं कहौं चित अतितके झगरा ते कहे चित जीव अचित माया ई दूनौं के संयोग ते सब जीव पृथ्वी में मिलगये अपने शुद्ध आत्मा को न जानत भये यह माया जो है जगमोहनी सो सब जगको धायकै मोहि लेत

भई हरिश्चन्द्र जे राजा हैं ते सत्यके कारण विद्यामायामें बँधिकै घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ॥ १ । ७ ॥

इति सैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ॥ ४८ ॥

चौ० मानिकपुरहि कबीर बसेरी। मद्दति सुनो शेष तकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुर धामा। झूसी सुनी पिरनके नामा २
इकइसपीर लिखे तेहिठामा। खतमा पढ़ैं पैगंबर नामा ३
सुनिबोल मोहि रहा नं जाई। देखि मकुरवा रहे लोभाई ४
हबीबी औ नबीके कांमां। जहँलों अमलसो सबेहरामा ५

साखी ॥ शेखअकरदी शेख सकरदी, मानहु वचन हमार ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, देखो दृष्टि पसार ६

प्रकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहां से खतकी मुद्दति सुन्यो जिन पीरनके स्थान १ जमनपुर में सुन्यो ते झूसीपार में आये तहां मैं हूं गयों २ इकैसो जे पीरहैं तिनके नाम लिखेहैं कि ये सब पैग़म्बरेकेर फ़ातियां देइ हैं और कलमा पढ़ै हैं ३ सो उनके बोल सुनि २ मो पै नहीं रहाजाय है मकुरवा देखि २ ये सब भुलायरहेहैं यह जानिकै तहां मैं जाइकै कह्यो कि ४ हबी कहे देवतनको खाना अथवा हबी फ़ारसीमें दोस्तको कहै हैं और जहां भर नाम है नबीके जे तुम लेतेहो और नबी के जहां भर काम है जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हराम हैं काहेते अल्लाह तो मन वचन के परे है ५ हे शेखअकरदी, हे शेख सकरदी! हमारो कहो जो वचन है सो सब साँच मानो आदि अन्तमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहां भर मन वचन में पदार्थ आवै हैं सो सब माया को पसार है अल्लाह नहीं है सो कबीरजी के चौबिसपरचैसे खत के लिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भयज्ञान में बिस्तारते हैं ॥ ६ ॥

इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवीं रमैनी ॥ ४९ ॥

चौ० दरकी बात कहौ दुर्बेशा। बादशाह है कौने भेशा १
कहां कूच कहँ करै मुकामा। कौनसुरतिकोकरौंसलामा २
मैं तोहिं पूछौं मूसलमाना। लाल जर्दकी नाना बाना ३
काजी काज करौ तुम कैसा। घर २ जबै करावो वैसा ४
बकरीमुर्गीकिनफुरमाया। किसकेहुकुमतुमछुरीचलाया ५
दर्द न जानैं पीर कहावे। बैता पढ़ि २ जग समुझावै ६
कहकबीरयकसय्यदकहावैं। आपुसरीका जग कबुलावै ७
साखी॥ दिन भर रोजा धरतहौ, राति हततहौ गाय॥
यह तौ खून वह बन्दगी, क्योंकर खुशी खोदाय ८

और पदको स्पष्टही है॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ दर्द तो तिहारे दिलमें आवती नहीं है गला कटावते में अल्लाह को बागी चाखऐब करतेहौ अरु बैतें पढ़ि २ के पीर कहावतेहौ और जगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बेपीर पीरभर कहवावतेहौ ६ सो कबीरजी कहे हैं कि एक सय्यद जो है वह पीर गुरुवा सो जैसा आप खुआरहै और तैसे सबको खुआरकरैहै ७ दिनको तो रोजा धरते हौ और बन्दगी करतेहौ और रातिको गाई हततेहौ कहे मारते हौ सो यह तौ खूनकरतेहौ बहुत भारी और वह बन्दगी बहुत थोरी करतेहौ दिनको न खायो रातिहीको खायो क्योंकर तिहारे ऊपर खोदाय खुशी होय ताते यह कि वह तो साहब को है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहीं कें हाथ तुम्हारऊ गला वह साहब कटावैंमे ॥ ८ ॥

इति उनचासवीं रमैनी समाप्तम्॥ ४९ ॥

अथ पचासवीं रमैनी ॥ ५० ॥

चौ० कहतेमोहिंभयलयुगचारी। समुझतनाहिंमोहिसुतनारी १
बंशआगिलागि बंशैजरिया। भ्रमभुलाय नल धन्धेपरिया २
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई। मृगी के फन्दे मिरगा परई ३

लोहै लोह काटजसआना। तियकै तत्त्व तिया पहिंचाना ४
साखी ॥ नारि रचन्ते पुरुष है, पुरुष रचन्ते नार ॥
पुरुषहि पुरुष जो रचै, तेहि बिरले संसार ५

चारिउ जग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहते कोई समुझत नहीं है १ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारिदेइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रम में भुलायकै नर धन्धे में परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासना में परिकै जरै है कोई सुत नारी के धन्धे में परिकै जरै है २ जैसे हाथिनीके फन्दे हाथी रहैहै मृगी के फन्दे मृगा परे है कहे फँदिजाय है ऐसे जीवके फन्देमें जीव परेहै जैसे लोहते लोह कटिजायहै तैसे जीवहीते जीव यह मारो परै तियकी तत्त्व स्त्री पहिंचानै स्त्री जो ऊंटिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमिजाय है काहेते साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही मों विश्वास मानै माया में मिलिकै या जीव माया ही में रह्यो है ताते माया कही पदार्थ में विश्वास मानैहै ३ । ४ नारीते पुरुष रचि जाइहै कहे मायाते सब पुरुष भये हैं और पुरुष जो है शुद्धसमष्टिजीव ताहीते माया भई है और पुरुष जो हैं शुद्धजीव सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीति करै ऐसो कोई बिरला है ॥ ५ ॥

इति पचासवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवीं रमैनी ॥ ५१ ॥

चौ० जाकरनाम अकहुवाभाई। ताकर कहां रमैनी गाई १
कहैको तात्पर्य है ऐसा। जस पन्थी बोहित चढ़िबैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहत चला पुनिजाता ३
रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ। मन अस्थिर नहिं बोलै काऊ ४
साखी ॥ तनरहतै मन जातहै, मनरहते तन जाय ॥
तनमन एकै है रह्यो, हंस कबीर कहाय ५

जाकर नाम अकहुवा भाई। ताकर कहाँ रमैनी गाई १

जाको नाम अकह है ताको तो हिन्दू मन वचनके परे कहते हैं और मुसलमान "बेचून, बेचिगून, बेसुभा, बेनिमून" कहते हैं सो हम पूछते हैं हिन्दू कहै हैं कि वह तो निराकार होतो तो कहै हैं कि वेद मेरी श्वासा है शरीर न हो तो तौ वेद श्वासा कैसे होतो जो कहो वेद तो माय कहे तो मिथ्याके बताये तुमही सांच पदार्थ कैसे जानिहौ जो कहै साकार है तो मध्यम परमान ठहराय तो अनित्य होइ हैं अकहुवा न होइगो अरु जो मुसलमान निराकार कहै हैं कि उसके आकार नहीं है तो मूसा पैगम्बरको कोहतरकै पहाड़ में छँगुनी देखायो सो वह पहाड़ क्षार ह्वैगयो जो शरीर न होतो तो छँगुनी कैसे देखावतो कुरान में लिखैहै कि जिस तरफ़ अपना मुँह फेरै तिसी तरफ़ साहबका मुँह है और सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथ है और अल्लाह महम्मदसों कहते हैं कि जिसका हाथ पकरा तूने तिसका हाथ पकरा मैं तब सों इन लीलोंते यह आवताहै कि उसके शकल है पै जिसतरहका उसका शकल है सो कोई नहीं कहिसकै है काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होय तो उसकी उपमा दैकै समुझाय सकै सो उसकी शक्ल तो कोई नहीं समुझाय सक्ता है लेकिन जो कोई उसकी शकल देखा है सोई जानता है जैसी उसकी शकल है लेकिन बयान नहीं कर सक्ता है और कुरान खोदाको कलाम है कहे बात है जो बदन न होता तो कलाम कैसे कहते सो निराकार साकार के परे अकह जो साहब है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि वर्णन की कथा जबान में किस तरहसे कहौ वचन में तो आवै नहीं है अथवा जाकर नामै अकहुवाहै ताको रूप अकहुवा बनै है तिसकी कथा कहां कहैं जो याहू अकहुवा होयगी जो ऐसा भया तो जानि न परैगो किसूको मिथ्या होइजाइगो तौनेको कबीरजी कहै हैं कि सबको हमको अकहुवा है कछू उसको साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हम ताहीकी कही रमैनी गाइतहै सो जो कछु रमैनी में लिख्यो है सो सांचही है ॥ १ ॥

कहै को तात्पर्य है ऐसा । जसपन्थी बोहितचढ़ि वैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता । बैठारहा चला पुनि जाता ३

जौन कहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांच शरीरते साहब नहीं मिलैहैं काहेते मन वचनके परेहै साहब और जो हमसों साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतु यह है साहब विचार्यो कि मनवचके परे जो मैंहौं सो विना मेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जो कहौ साहब को का परी है न जानैंगे जीव तो साहबके दयालुताकी हानि होइहै याते उपदेश करै कहैहैं सो जौने अकह रामनाम के जपे ते साहब प्रसन्न है हंसरूप देइ है तौन रामनाम रमैनी ते जानिकै काहेते कि "इच्छाकर भवसागर, बोहित रामअधार । कहहिं कबिर हरि शरणगहु, गोबछ खुर बिस्तार" ऐसी साखी रमैनी में लिखी है तेहिते या अर्थ आया कि संसारसागर पार होवेको एक रामनामही जहाज मानि नामार्थ में जो शरणकी विधि है ताको अनुसंधान करत रामनाम जपै २ यह रहनि गहनि कैकै जैसे बछवाको खुर लोग उतरि जाय हैं ऐसो संसारसागर में रामनाम को अभ्यासकै तरिजायहैं कैसे जैसे नाव को चढ़ैया नाव में बैठाहै पै पार होत जाय है ऐसे रामनाम को जपैया संसारसागर में बैठो देखो परै है परन्तु पार को चलो जाय है ॥ ३ ॥

रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ । मनअस्थिरनहिंबोलैकाऊ ४

इस तरहके जे हैं जिनके वदन कहे संभाषण करिबे ते जीवनको स्वागको सुभाउ कहे ब्रह्म ह्वैजावो चतुर्भुजादिकनके लोक में जाइ चतुर्भुज ह्वैजावो और नानादेवतनके लोकजाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै संसार तों छूटिही जायहै सो वे बोलै हैं और मन स्थिर ह्वैगयो है कहे मनको संकल्प विकल्प तो छूटे नहीं है मनते भिन्न ह्वैबो कहा है कि संकल्प विकल्पही मनको स्वरूप है जब संकल्प विकल्प छूटिगयो तब मनते भिन्न ह्वै गयो सो कैसे मनतेभिन्न होइगो सो साधन आगे कहै हैं ॥४॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै, मन रहते तन जाय ॥
तन मन एकै ह्वैरहो, हंस कबीर कहाय ५

तन जो है वा शरीर स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण सो अर्थ अनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वैगयो तब मन जातरहै है और मन जायहै तब चारिउ शरीर जात रहैहैं सो जब तन मन एकह्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बँधेहैं सो प्राण और मनको एकघर करिदेइ सो नाम जपि विधि जानि तब संकल्प विकल्प मनको छूटिजाय है मन तो संकल्प विकल्परूप है सो जब संकल्प विकल्प छूट्यो. तब मन नाश ह्वैगयो तब चारिउ शरीर को हेत जो है ज्ञान सोऊ जातरहै है तब चारिउ शरीर भिन्न ह्वै जाय हैं एक शुद्ध आत्मा में स्थिर ह्वैरहे हैं मुक्ति ह्वै जाय हैं जैसे पूर्वशुद्ध समष्टिरूप में रह्यो है तैसे सो ह्वै गयो जैसे समष्टि जीव में जब रह्यो है तब जगत् को कारण रह्यो आयो है साहब को न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वैगयो है तैसे यह जो शरीरन में साहबको भजन करिराख्यो साहब को जानि राख्यो सो जब मनआदिक याके छूटिगये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो काहेते कि रामनाम को साहब मुख जानि राख्यो है सो मङ्गल में साहब कहिआये हैं कि जो रामनाम जपि कै मोको जानै तो मैं हंसरूप दै अपने पास बुलाय लेऊं याही ते साहब हंसरूप देइ है तब वह कायाको वीर जीव हंस कहावै है कैसे हंस कहावै है कि असार जे हैं चारिउ शरीर और मन मायारूप पानी ताको छोड़िदियो और सार जो है साहबको ज्ञानरूप दूध ताको ग्रहण कियो और अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सो कबीरजी लिखबे कियो है शब्दमें निर्मल नाम चुनि चुनि बोलै अरु अकह रामनामई है अरु अकह निर्गुण सगुण के परे है श्रीरामचन्द्रई हैं तामें प्रमाण "रामके नामते पिण्डब्रह्माण्ड सब रामको नाम सुनि भर्ममानी। निर्गुण निरङ्कार के पार परब्रह्म है तासु को नाम

रङ्कार जानी ॥ विष्णुपूजाकरै ध्यान शङ्कर धरै भनहि सुबिरचि बहुबिबिध बानी । कहै कब्बीर कोइ पार पावै नहीं रामको नामहै अकह कहानी" ॥ ५ ॥

इति इक्यावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवीं रमैनी ॥ ५२ ॥

चौ० ज्यहिकारणशिवअजहुँबियोगी। अङ्गबिभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपार न पावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २
ऐसीबिधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांतिदिखाई देऊ । गुप्तै रहि सुभाव सब लेऊ ४
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमर मानै नहीं, किमिछूटैभ्रमजाल ५

ज्यहिकारणशिवअजहुबियोगी।अङ्गबिभूतिलायभेयोगी१
शेषसहसमुखपारनपावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २

जाके कारण शिव अङ्गमें विभूति लगाइकै योगी भये परन्तु अजहूँलौं वासों वियोगी हैं काहे ते कि जो वियोगी न होते तो तमोगुणाभिमानी काहे रहते १ और शेष सहसमुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तेहि तें सहित जीवनको समुझावै है काहेते जीवनको हित मानिकै समुझावैहै कि मोको जानिकै मेरेपास आवै संसारदुःख नपावै ॥२॥

ऐसीबिधि जो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांति दिखाई देऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ४

साहब कहा समुझावै है कि जैसो पूर्व कहिआये हैं नामार्थ में लिखि आये हैं शरणकी विधि तैसो अनुसंधान करत रामनाम जपिकै निरन्तर जो छठयें मास याहोइ तो जो या शरीरते करै है छामहीना में दर्शन सो पावै है याही भांतिसों जो मोको ध्यावै तो छठयेंमास मेरो दर्शन पावै कहे छठौ जो हंसस्वरूप तामें

स्थिर ह्वैकै ३ तो कौनिउँ भांतिसों मैं देखाइ देउहौं और निशि दिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभावलेउ और जो दृढ़ होइ तो राम नामका साधक हेत ताको छठो शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछे पाछे रघुनाथजी नित्य बनेरहत हैं तामें प्रमाण "रामरामेतिरामेति रामरामेतिवादिनम्। वत्संगौरिवगौर्थच्यो धावन्तमनुधावति" ॥ ४ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीरपुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमर मानै नहीं, किमिछूटै भ्रमजाल ५

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि जिनको शेष शिवादिकने पार नहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजु कालिह ऐसे सुलभ ह्वैगये हैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपाय करैं तो छठयें शरीर में मोको पाइजाईं ते साहबको कह्यो मैं यतनो समुझावत हौं पै सब बेवकूफ़ हैं जीवन को हवाल उहै है कहे वही मायाके नानामतन में लगेहैं वहीको विचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायो है हमारो कहो यतनेहू पै नहीं मानैहैं सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसे छूटै ॥ ५ ॥

इति बावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५२ ॥

अथ तिरपनवीं रमैनी ॥ ५३ ॥

चौ० महादेव मुनि अन्त न पावा। उमासहित उन जंन्म गँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिं कोई। मन निश्चल कहु कैसे होई २
जौ लग तन में ऐहै सोई। तौ लग चेत न देखौ कोई ३
तबचेतिहौजबतजिहौप्राना। भया अनततबमनपछिताना ४
इतनासुनतनिकटचलिआई। मनको बिकार न छूटै भाई ५

साखी ॥ तीनिलोक मों आयकै, छूटि न काहु कि आश ॥
यक आंधर जग खाइया, सब जग भया निराश ६

उनते अधिक सिद्धि कौन साध्यो है जाको मन निश्चल होइ अर्थात् सिद्धि साधे मन निश्चल नहीं होयहै २ जबलग शरीर

में मन है तबलग चेतन करिकै अथवा महा महा देवता जे हैं और बड़े बड़े मुनि जे हैं ते अन्त नहीं पायो जो कोऊ जान्यो है ते वोही साधन ते जान्यो है कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोई नहीं देखै हैं ३ कबीरजी कहे हैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे तब कहां चेतौगे यह काकु है ज़ब अनतही जानना शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तो यह अर्थ है कि तुम जो अयानेभये साहबको न जान्यो हमार कहा मानबई न कियो तो अब पछिताना क्या है पछितातो काहेको है संसार पीर सहो ४ यह सब जगत् शास्त्रन में सुना है कि मौत निकट चलीआवै है हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथै है मन को बिकार नहीं छोड़ै है ५ तीन लोक में आइकै सब मरि गयो परन्तु काहू की आशा न छूटत भई एक आंधर जो है मन सो जगत् को खाइलियो सब जगत् परमपुरुष के मिलिबेको निराश ह्वैगयो इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुष को कबहूं नहीं देखै है काहेते कि साहब मन वचन के परेहै आपही शक्ति देइहै जीव को तबहीं देखै है ॥ ६ ॥

इति तिरपनवींरमैनी समाप्तम् ॥ ५३ ॥

अथ चौवनवींरमैनी ॥ ५४ ॥

चौ० मरिगयेब्रह्माकाशिकेवाशी । शीव सहित मूये अविनाशी १

मथुरा मरिगयेकृष्णगुवारा । मरि मरि गये दशौ अवतारा २

मरिम रिगयेभक्तिजिनठानी । सर्गुणमें जिन निर्गुण आनी ३

साखी ॥ नाथ मछन्दर ना छुटै, गोरखदत्ता ब्यास ॥

कहहिं कबीर पुकारिकै, सबपरे कालके फाँस ४

ब्रह्मा जे हैं काशीके बासी शंभू जेहैं तिनते सहित अविनाशी जे विष्णु ते मरिगये सो अविनाशी सबकोई कहतई हैं और मरिबो कहेहैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महाप्रलय में तिरोधान ह्वै पुनि प्रकटहोइ हैं याते अविनाशी कह्यो है १ मथुरा

के कृष्ण व गुवार और दशौ अवतार तेऊ मरि कहे तिरोधान ह्वै गये कहांगये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हज़ारन ब्रह्मा, विष्णु, महेश और दशौ अवतार ठाढ़े हैं जाको जौने ब्रह्माण्डको हुकुम होइ है सो तहां अवतार लैं पुनि अपने अंशन में लीन होइ है तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमान्प्रति "आसीनं तमनुध्याये सहस्रस्तम्भमण्डिते । मण्डपे रत्नसङ्के च जानक्या सह राघवम् ॥ मत्स्यः कूर्मश्च कृष्णश्च नारसिंहाद्यनेकधा । वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च । देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च ॥ पृश्निगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च । वासुदेवो परोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनाम महेश्वरः । तेषामैश्वर्यदातृत्वं तं मूलत्वं निरीश्वरः ॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिः साक्षी गतिः प्रभुः । विष्णु स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदान्तकृद्विभुः ॥ ब्रह्मा स ब्रह्मणांकर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः । रुद्राणां सपतीरुद्रो रुद्रकोटिनियामकः ॥ चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च । अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च । सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीराम इतीरितः २" और जिन सगुणमें भक्तिको ठानी है तेऊ मारिगये और जे निर्गुण आन्यो है तेऊ मारिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ मरिगये ३ और मछन्दर, गोरख, दत्तात्रेय और व्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब काल के फाँसमें परत भये कहे महाप्रलय में नाश ह्वैगये महाप्रलय में जब ब्रह्मा मरे हैं तब कोई नहीं रहे हैं ॥ ४ ॥

इति चौवनवीं रमैनीसमाप्तम् ॥ ५४ ॥

अथ पचपनवीं रमैनी ॥ ५५ ॥

चौ० गये राम अरु गये लछमना । संग न गै सीता आसि धना १
जात कौरवन लाग न बारा । गये भोज जिन साजल धारा २

गे पाण्डव कुन्तीसी रानी। गे सहदेव जिन मतिबुधिठानी ३
सर्व सोनेकै लङ्क उठाई। चलत बार कछु संग न लाई ४
कुरिया जासु अन्तरिक्ष छाई। सो हरिचन्द्र दाखि नहिं जाई ५
मूरुखमानुष अधिकसँजोवै। अपना मुवल और लगिरोवै ६
इन जानै अपनों मरि जैबै। टका दश बिढै और लै खैबै ७

साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

गये राम अरु गये लक्ष्मना। संगन गै सीता असिधना १

देवतन मुनिनको कहि आये हैं अब राजनको कहै हैं काहेते कि आगे दशअवतार कहि आये हैं इहां पुनि राम कहै हैं तहां इहां जे जीव रामराजा भये ताको और लक्ष्मणको महाभारत सभापर्व में नारद युधिष्ठर ते कह्यो है राजन के गिनती में यमकी सभामें तिनको कहै हैं कि राम गये लक्ष्मण गये और संगमें सीता असि नारी न जातभई जो यह अर्थ कोई न मानै तो यह कहै हैं कि नारायणके अवतार रामचन्द्र हैं तिनहीको जाइबो कबीर कहै हैं तो कबीरजी तो सांचके कहवैया हैं झूठा कैसे कहैंगे सब रामयणमें वर्णन है कि प्रथम जानकी शरीरते सहित गई हैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जात भये जिनके संग श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति शरीरसहित चली जाती है सो जो कबीरजी व राजा जे भये हैं तिनको जाइबेको न कहते तो संगमें सिया असि धना न गई यह कैसे लिखते ॥ १ ॥

जातकौरवनलागिनबारा। गयेभोज जिनसाजलधारा २
गे पाण्डवकुन्तीसी रानी। गेसहदेवजिनमतिबुधिठानी ३
सर्वसोनेकी लङ्क बनाई। चलत बार कछु संग न लाई ४

और कौरवनको जात बार न लग्यो और राजा भोज गये जिन धारानगरी को बसायो है कहे साज्यो है जरासन्ध के पुत्र हैं भोज तें कलियुग के राजा सब आय गये २ और पाण्डवा जे हैं

व कुन्ती ऐसी रानी जो है और सहदेव जे हैं ते सब जातभये जे पण्डित हैं तिनहूं में अपनी मति कहे बुद्धि अधिक ठानत भये कहे करत भये ३ और सब लङ्का सोनेकै रावण बनायो पै चलतबार संगमें न गई ॥ ४ ॥

कुरियाजासुअन्तारिक्षछाई । सोहरिचन्द्रदेखिनहिंजाई ५

और जाकी कुरिया अन्तरिक्षमें छाई है कहे स्वर्ग में महल बनो है इन्द्रते अधिक सिंहासन में बैठे हैं ऐसे जे हैं हरिश्चन्द्र राजा तेऊ नहीं देखि परे हैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भाव यह है कि महाप्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाइ है ॥ ५ ॥

मूरखमानुषअधिकसँजोवै । अपनामुवलऔरलगिरोवै६

इन जानै अपनो मरिजैबे । टका दश बिढ़ै और लै खैबे७

मूरुख जो मनुष्य है सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवैहै अर्थात् और को मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सबको मरिबो देखतई जाय हैं और रोवै हैं अपने मरनकी चिन्ता नहीं करै हैं ६ या नहीं जानै हैं कि जेते दिन बीति गये जेतने मरिगये और मरिही जायँगे यहै विचारै हैं कि और दश टका बिढ़वैं जाते बहुत दिन बैठे खायँ ॥ ७ ॥

साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

जीति जीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशस्वी दशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करै हैं उनके सुकृतको यश जगतुहीमें रहिगयो उनके साथ न गयो और अयशस्वी रावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब कोई निन्दा करै हैं जाके दुष्कृतको अयश जगतुही में रहिगयो ॥ ८ ॥

इति पचपनवींरमैनीसमाप्तम् ॥५५॥

अथ छप्पनवीं रमैनी ॥ ५६ ॥

चौ० दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उमगै काऊ १
कन्ध न देइ मसखरी करई। कहुधौं कौनि भांति निस्तरई २
अकरमकरै करमको धावै। पढ़ि गुणिवेद जगत समुझावै ३
छूछे परे अकारथ जाई। कह कबीर चितचेतहु भाई ४

दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उबरै काऊ १

कबीरजी कहै हैं कि जे रोज़ रोज़ ज्ञानाग्नि करिकै कर्म को जारै हैं और अपने जीवत्वको ज़ारै हैं कि हम ब्रह्म ह्वै जायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूकै कर्महीं जरे न कोई ब्रह्महीं भयो अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगये हैं कर्म जाको अर्थात् कर्महीं नहीं है ऐसो जो ब्रह्म ताको पायो है अर्थात् कोई नहीं पायो है जो कहो जड़भरतादिक पायो है तो वे जो ब्रह्महीं ह्वै जाते तो दूसरो मानिकै रहूगण को कैसे उपदेश करते कपिलदेव सगरके लरिकन को काहे जारिदेते और सनकादिक जय विजय को काहे शाप देते सो तुम ब्रह्म ह्वैवेकी आशा न करो जो संसार में परे रहौगे तो कबहूं सत्संग पायकै उद्धारहू होइजाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़ में परोगे तो गड़िजाउगे कबहूं न उमगौगे अर्थात् तिहारो कतहूं उद्धार न होइगो ॥ १ ॥

कन्धनदेइ मसखरी करई। कहुधौं कौनभांति निस्तरई २

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तार होय समीचीन साधुनको संत्सग तो मिलै नहीं है गुरुवालोग को संत्सग मिलै है ते मसखरी करै हैं मसखरी कौन कहावैं जो आप तो जानै और औरेन को ठगै सो गुरुवालोग आप तो जानै हैं कि या झूठा ब्रह्म में हम लागे हमारे हाथ कछु वस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जो साहब में लगे है जीव तिनको कांधा तान दिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्ट तो न किये कि भले लगे हैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं "अहं ब्रह्मास्मि" मानौ तो तुमको अनेक प्रकारकी

ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होइ है साहब को ज्ञान छांड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारिदिये ॥ २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै। पढ़िगुणिबेदजगतसमुझावै ३
छूछे परै अकारथ जाई। कह कबीर चित चेतहु भाई ४

कैसे हैं वे गुरुवालोग करत तो अकरममत है कि हमको करम त्याग है हम संन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं और करम करिबेको धावै हैं और वेदको पढ़िगुणिकै जगत्को समुझावै हैं कि निष्कर्म होउ चाहई ते सब विकार है चाह छोड़िदेउ और आप भाजीके लिये बाज़ार में झगरै हैं सो उनके कहे जीवन को कैसे समुझिपरै ३ उनको उपदेश अकारथई जायहै और जो सुनै है सो छूंछई परै है अर्थात् कछू वस्तु हाथ नहीं लगै है सो कबीरजी कहै हैं कि हे भाई! चित चेत करो जेहिते कनक कामिनीरूप माया ते और धोखा ब्रह्म ते बचि जाउ ॥ ४ ॥

इति छप्पनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवीं रमैनी ॥ ५७॥

चौ० कृतिया सूत्रलोक यक अहई। लाख पचासके आगे कहई १
बिद्या बेद पढ़ै पुनि सोई। बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता। वाहु के भर्म भये संकेता ३
साखी ॥ खग खोज़नको तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहो, झूठा है हङ्कार ४

कृतियासूत्रलोक यकअहई। लाखपचासकेआगेकहई १

अथ कृतिया कहे यह कृत्रिम जो है कर्म "अहं ब्रह्म" मानिबो सो यह लोकमें एक सूत्रके बरोबर है कहे रसरी के बरोबर है जीवनके बांधिबेको मङ्गलमें कहेउ आयेहैं कि ब्रह्ममें अणिमादिक सिद्धियाँ होइहैं सो वह कृत्य करिकै कहे ब्रह्म मानिकै पचासलाख

बर्षके आगेकी कहै हैं सो पचासलाख यह उपलक्षण है अर्थात् भूत-भविष्य-वर्तमान सब कहै हैं ॥ १ ॥

बिद्या बेद पढ़ै पुनि सोई। बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता। वाहुके भर्म भये संकेता ३

विद्या जो है वेद जो है सो सम्पूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौन बात कहै हैं तौन परतक्ष होइहै कहे वाक्य सिद्धि ह्वैजाइ है २ वे विद्या के वेत्ता कहे जनैया जे लोगहैं ते वह बातको पहुँचि कहे पहुँचतभये अणिमादिक सिद्धि होत भई और ब्रह्मको जानत भये परन्तु साहब को जो है साकेत लोक ताके जानिबेको उनहूंको भ्रम भयो अर्थात् साहब को लोक न जानत भये ॥ ३ ॥

साखी ॥ खगखोजन को तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहौ, झूठा है हङ्कार ४

और खग जो है हंस तिहारो स्वरूप ताके खोजिबे को तुम चल्यो कि हम अपने आत्मा को स्वरूप जानैं सो साहब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म सों लग्यो है वाही को अपनो स्वरूप मानि लियो है जब कुछ संसार तुमको छूट तब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म है ताही को "अहं ब्रह्मास्मि" मानिकै बैठ्यो सो वह अगम है काहूकी गम्य नहीं है अपार है अर्थात् झूठा है भाव यह है कि जब साकेत लोक को जानोगे तब साकेत निवासी जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको जानोगे तब वे हंसस्वरूप दै अपने धाम को लैजायँगे तबहीं जन्म मरणते रहित होउगे तब हंसस्वरूप पावोगे औरी भांति संसार तै न छूटोगे न सिद्धि प्राप्त भये न ब्रह्म भये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजी को दोहा "बारि मथे घृत होइ बरु, सिकताते बरु तेल। बिनु हरिभजन न भव तरै, यह सिद्धान्त अपेल १" और कबीरहूजी को प्रमाण "राम बिना नर ह्वैहौ कैसा। बाटमाँझ गोबरौरा जैसा" ॥ ४ ॥

इति सत्तावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवीं रमैनी ॥ ५८ ॥

चौ० तैं सुत मानु हमारी सेवा। तो कहँ राजि देहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई। अवरो बात सुनो कछु आई २
उतपति परलै देउ देखाई। करहु राज्य सुख बिलसहु जाई ३
एको बार न जैहै बाँको। बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको ४
जाय पाय देहौ सुखधाना। निश्चय बचन कबीर को माना ५
साखी ॥ साधुसन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदिअन्त उत्पति प्रलय, सब देखा दृष्टिपसार ६

तैं सुत मानु हमारी सेवा। तोको राजिदेहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई। अवरो बातसुनो कछु आई २

वही लोकके गये जन्म मरण छूटैहै सो कबीरजी साहिबकी उक्ति कहै हैं साहब कहै हैं हे सुत, हे जीव! तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहै है कि मैं इनको दास हौं तिन देवतनकी राज्य मैं तोको देहुँगो अर्थात् मेरो पार्षद जब होयगो तब सबके ऊपर ह्वै जायगो ते देवता तुम्हारही सेवा करैंगे १ और गम जो है जगत्, दुर्गम जो है निर्गुणब्रह्म ये दूनों धोखा जे गढ़ हैं ते तोको छोड़ाय देउँगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउँगो और वह धोखाब्रह्म में न लगन देउँगो जो जीवन को संसारी करिदेइ हैं तब सगुण निर्गुण के परे जो और कछु बात है सो मेरे पार्षद कहै हैं सो तैंहूं मेरे नगीच आइकै सुनैगो ॥ २ ॥

उतपतिपरलैदेउदेखाई। करहुराज्यसुख बिलसहुजाई ३

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनी भांति सो मेरे प्रकाश के भीतर समष्टिजीवते होइ है सो मैं उंचेते तोको देखाइ देउँगो और जगत् में आयकै जो मोको जानिकै मेरी भक्ति करै हैं सो सुख है सो तैंहूं मेरी भक्ति करिकै संसाररूपी राज्य में जाइकै सुख सों बिलसैगो तोको संसार बाधा न करिसकैगो जगत्रूपी राज्य के विषयानन्द ब्रह्मानन्द आदिक जे सुख हैं ते सुख नहीं हैं जो कहो साहब

के लोक जाइ फेरि कैसे आवैगो उहाँ गये तो अपुनरावृत्ति कहि आये हैं तो कबीरजी बीरसिंह देवको साहबके लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत् बाधा नहीं करिसकै है वे साहब लोकही में हैं काहेते कि साहब को लोक प्रकाश सर्वत्र व्यापक है साहबकी सकल सामग्री साहबके रूपई बर्णन करि आयेहैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्र पूर्ण है तो साहबको लोक और साहब सर्वत्र पूर्णई है जे साहबको जाने हैं और जगत्‌ऊ में हैं तो साहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ॥ ३ ॥

एको बार न जैहै बाँको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको ४
जायपायदेहौसुखधाना । निश्चयबचनकबीरकोमाना ५

एको बार न बाँको जाइगो जन्म मरण तेरो छूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो ४ और संपूर्ण जे पाप हैं ते रहैंगे और सुखको धाना कहे समूह तोको देउँगो सो साहब कहैहैं कि हे जीव! कबीरजी को वचन तुम निश्चय मानिकै मेरे पास आवो ॥ ५ ॥

साखी ॥ साधु सन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदिअन्तउत्पति प्रलय, सबदेखादृष्टिपसार ६

जे हमारो कह्यो वचन प्रमाण मान्यो है तेई साधु हैं कहे साधन करणवारे हैं और तेई सन्त हैं तिनहीं के मनादिक शान्त ह्वैगये हैं और तेई आदि, अन्त, उत्पत्ति, प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बात जानिलियो है ॥ ६ ॥

इति अट्ठावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवीं रमैनी ॥ ५९ ॥

चौ० चढ़त चढ़ावत भड़हरफोरी । मन नहिं जानै को करिचोरी १

चोर एक मूसल संसारा। बिरलाजन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी। एकै राम सकल रखवारी ३
साखी॥ पाहन ह्वै ह्वै सब चले, अनभितियन को चित्त॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

चढ़तचढ़ावतभड़हरफोरी। मननहिंजानैकोकरिचोरी १
चोर एक मूसलसंसारा। बिरला जन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमिलै बारी। एकै राम सकल रखवारी ३

गुरुवालोग आप प्राण चढ़ावै हैं अरु औरको सिखै सिखै प्राण चढ़ावै हैं सो यही प्राण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरि के वही धोखाब्रह्म में लीनभये मनते या नहीं जानै हैं कि साहब के ज्ञानकी चोरी को करै है वही धोखाब्रह्म ही तो करै है यह नहीं जानैहैं वाहीमें लगे हैं १ सो चोर एक जो धोखाब्रह्म है सो संसार भरेको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्मही के ज्ञानको सब दौरेहैं परमपुरुष को नहीं दौरे हैं तेहिते कोई बिरलाजन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है २ जे श्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमि को बारीके सम रखवारी कहे रक्षा करैहैं इहां एकै राम रखवार है यह जो कह्यो ताते बाँधनवारे धोखा देनवारे बहुत हैं पै बन्धन ते छोड़ावनवारे एक श्रीरामचन्द्रई हैं दूसरो नहीं है स्वर्गते ऊपर के भूमिते मध्यके पातालते नीचे के लोक सब आये॥ ३॥

साखी॥ पाहन ह्वै ह्वै सबचले, अनभितियनकोचित्त॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

अनभितिया को चित्त जो धोखाब्रह्म है तौने में लागिकै सम्पूर्ण जे जीवहैं ते पाहन ह्वैगये कहे जड़वत् ह्वैगये वे धनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्रको न जानतभये जौन ब्रह्मते सबजीव मिताई कियो सो अनहित भये कहे संसारमें डारनवारो धोखई ठहरयो॥ ४॥

इति उनसठवीं रमैनी समाप्तम्॥ ५९॥

अथ साठवीं रमैनी ॥ ६० ॥

चौ० छांड़हु पति छांड़हु लबराई। मन अभिमान टूटि तब जाई १
जनचोरी जो भिक्षा खाई। फिरिबिरवा पलुहावन जाई २
पुनिसंपति औपतिको धावै। सो बिरवा संसार लै आवै ३

साखी ॥ झूठा झुठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहि कारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

छांड़हुपति छांड़हुलबराई। मन अभिमानटूटितबजाई १
जनचोरी जो भिक्षाखाई। फिरि बिरवापलुहावन जाई २
पुनि संपति औ पतिको धावै। सो बिरवा संसारलै आवै ३

कबीरजी कहै हैं कि नाना देवता जो पति मानो हौ और लबराई जो धोखाब्रह्म है ताको छोड़िदेव न छोड़ोगे तो पुनिकै जब संसार आवोगे तबतो अभिमान दूरि होजाय अर्थात् नाना देवतनही की सुधि रहिजायगी न धोखाब्रह्म ही की सुधि रहिजाइगी १ काहे ते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ सो आगे कहै हैं जीव या सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै औरं देवतनते भिक्षा माँगि खाय हैं और फिरि फिरि बिरवारूप देवतन को पलुहावै कहे प्रश्नकरे जायहैं पुनि उनहीं सों सम्पति कहे नाना ऐश्वर्य होय सिद्धि होय और पति कहे राजा होय इन्द्र होय याको धावै हैं सो वे बिरवारूप जे देवताहैं ते फिरि फिरि संसारमें लै आवै हैं जन्म मरण होय है ॥ २। ३ ॥

साखी ॥ झुठा झुठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

सो झूठा जो ब्रह्म है ताको झूठ समुझिलेउ अरु देवता संसारहीमें हैं सो यह संसार जो है ताको मिथ्या मानिलेउ और सब को कारण जौन सर्वत्र है जाको पूर्व कहि आये हैं कि एकै राम रखवारी करै हैं सो मैं हीं हौं तिहारो पति तुम मोमें लगौ जाते

तुम्हारो उबार ह्वैजाइ जिनको तुम पति मानिराख्यो है ते तुम्हारे पति नहीं हैं वे बांधनेवारे हैं ॥ ४ ॥

इति साठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६० ॥

अथ इकसठवीं रमैनी ॥ ६१ ॥

चौ० धर्मकथा जो कहते रहई। लबरी नित उठि प्राते कहई १
लबरिबिहानेलबरीसांझा। यक लाबरि बस हृदयामांझा २
रामहुँकेर.मर्म नहिं जाना। लै मति ठानी वेद पुराना ३
वेदहुकेर कहा नहिं करई। जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४
साखी ॥ गुणातीत के गावते, आपुहि गये गमाय ॥
मार्टीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

धर्मकथा जो कहतैरहई। लबरी नितउठि प्राते कहइ १

धर्म की कथा जो कहतई रहै हैं कि स्त्री आपने पति ही को जानै और दूसरेको पति करि न जानै परन्तु धर्म कछू जानै नहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह साहबकी शक्ति है याके पति साहब हैं तामें प्रमाण "अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्" (इति गीतायाम्) "वासुदेवः प्रमाणैकः स्त्रीप्रायमिदं जगत्" दूसर कबीर का प्रमाण "दुलहिन गावो मङ्गलचार। हमरे घर आये रामभतार ॥ तनरति करि मैं मनरति करिहौं पांचौ तत्त्वबराती। रामदेव मोहिं ब्याहनऐ हैं मैं यौवन मदमाती॥ सरिरसरोवर बेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा। रामदेव सँग भाँवरि लेहौं धनि धनि भाग हमारा ॥ सुर तेंतीसो कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी। कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरुष एक अविनाशी" ते साहब को या जीव नहीं जानै है और और में लगे है बड़े प्रातःकाल उठिकै लबरी कहैहै कि हमहीं राम हैं दूसरो नहीं है अथवा जब जीव जन्म लेइहै सो प्रातःकाल है जब गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्यो है कि तुम मोको गर्भ ते छुड़ायो मैं तिहारो भजन करौंगो और जब गर्भते

निकस्यो जन्म लियो तब वह बात लबरी के डार्यो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहां कहां करन लग्यो ॥ १ ॥

लबरिबिहानेलबरींसाँझा। यकलाबरिबसहृदयामाँझा२
रामहुँकेर मर्म नहिं जाना। लै मति ठानी वेद पुराना ३

सो यहि तरह ते लबरी बिहाने कहे है और साँझ के लबरी कहै है कहे आपन व गुरु के और देवता की एकता माने है काहेते तीनि हैं कि एक लबरी जो है माया सो हृदय में बसै है सोई सब लबरी कहावै है २ सो भला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वह तो धोखा है जो कछू वस्तु होइ तो जानै परन्तु सांच व सर्वत्र पूर्ण और सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि जो कोई मेरे सम्मुख होई ताको मैं छुड़ाय लेउँ या जीव न जानत भये साहब छुड़ाइ लेइ है तामें प्रमाण "अबहीं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारो" याही हेतु सुरति दियो है मति लैकै कहे ग्रहण करिकै वेद पुराण के अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धान्तन में लगाय देइ है ॥ ३ ॥

बेदहु केर कहा नहिं करई। जरतै रहै सुस्त नहिं परई४

सिद्धान्त तो एकै होइ है साहब को सिद्धान्त जो तात्पर्य वृत्ति करिकै यह कहै है सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेद में जो सुकर्म लिखे हैं सो करिकै नरक ते तो बचै सो वेदहू की कही जो विधि निषेध है सोऊ नहीं करै है ऐसो मूढ़ यह जीव शोकरूपी अग्नि में जरतै रहै है सुस्त नहीं परै है सुचित्त नहीं होय है अर्थात् इहां कुछ छोड़यो उहां धोखा जो ब्रह्म है तहां कुछ न समझयो और ईश्वर जे हैं तिनहूं को काहू न मान्यो और सबके रखवार दयालु जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूं छोड़यो तेहिते मूर्ख ऊंटके पाद ह्वैगयो न ज़मीन को न आसमान को वाको कौन बचावै जो कहो आत्मा को चीन्हिकै बचि जाय तो जो आत्मा में एती शक्ति होती तो बन्धन में न परतो आपही बचि जातो ताते सबके रखवार जे साहब हैं तिनहीं के बचाये बचै है ॥ ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहि गये गमाय ॥
माटीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

गुणातीत जो साहब को लोक ताके गावते कहे प्रकाशते जहां समष्टि जीव रहे हैं तहां आपुही रामनामको साहबमुख अर्थ गमाय के संसारमुख अर्थ करि संसारी ह्वै गयो शरीर धारण कियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो और पवन में पवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये और जो 'गुणातीत के गावते' यह पाठ होइ तो यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखाब्रह्म ताको गावत गावत साहब को गवांइ जात भये ॥ ५ ॥

इति इकसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवीं रमैनी ॥ ६२ ॥

चौ० जो तोहिं कर्ता वर्णविचारा। जन्मत तीनिदण्ड अनुसारा १
जन्मत शूद्रभये पुनि शूद्रा। कृत्रिमजनेउ घालिजगदुंद्रा २
जो तुम ब्राह्मणब्राह्मणीजाये। और राह तुम काहे न आये ३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया। पेटै काहेन सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई। ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छांडुकपटनलअधिकसयानी। कह कबीर भजु शारँगपानी ६

जोतोहिंकर्तावर्णविचारा। जन्मततीनिदण्डअनुसारा १

जे तोको ब्रह्मा वर्ण को विचार कियो कि ये ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं मुसलमान हैं सो एतो शरीर के धर्म हैं तीनि दण्ड जे हैं संचित-क्रियमाण-प्रारब्ध तिनके कर्म के अनुसारते जन्मत कहे जन्मलेइ हैं ॥ १ ॥

जन्मत शूद्रभयेपुनि शूद्रा। कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये। औरराहतुमकाहेनआये ३

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तब तैं शूद्रई रहहै काहेते कि संस्कार कुछ नहीं रहहै और जब मरै है तब अशुद्धई रहैहै शिखा

जनेऊ दूनों आगीमें जरिजाइ हैं तबहूं शूद्रै ह्वै जाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगत् में द्वन्द्व मचाइ दियोहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्रिय हैं ये वैश्य हैं ये शूद्र हैं २ जो कहो हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह ह्वै काहे आये ब्रह्माण्ड फोरिकै आवते आँखीके राह ह्वै आवते अशुद्ध राह ह्वै काहे आये अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै और न तैं आपनी शक्ति ते आइसकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्न करै है कर्महीते तैं आवै है तेहिते जन्म-ते तो शूद्र हौ संस्कारते द्विज भये वेद अभ्यास कियो तब विदभये और जब ब्रह्म को जानैगो तब ब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तो में आवै है अहंब्रह्मता धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूंको तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मण कैसे होइगो जब तैं साहब को जानैगो तबहीं ब्राह्मण होइगो ॥ ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया । पेटै काहे न सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५

और जो तू कहै है कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्न हैं तो पेटै काहे न सुरति करायो तेहिते तुरुकिनी के पेटते भये ते मुसल्मान नहीं है ४ कारी पीरी गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तो का बिलग होइ है ऐसे आत्मा तो एकही जाति है हिन्दू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ॥ ५ ॥

छांडुकपटनलअधिकसयानी।कहकबीरभजुशारँगपानी६

आपनी सयानी अधिक करिकै जो कपट करि राख्यो है सो छोड़ि दे विचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिन्दूहै न तुरुकैहै तैं जाको अंश है ऐसे शारँगपाणि जे साहब हैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारँगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतु है कि धनुषबाण लिये तेरी रक्षा करिबेको तैयार हैं औरै औरै में लगे हैं जो साहबमें लागेहैं

सोई सबते श्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण "विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनो वचनेहितार्थप्राणं पुनाति सकुलं न तु भूरिमानः १" (इति भागवते) ६॥

इति बासठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवीं रमैनी ॥ ६३ ॥

चौ० नाना वर्णरूप यक कीन्हा । चारि वर्ण उन काहुन चीन्हा १
नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
विमलष करै नयन नहिं सूझा । भो अयान तब कछुव न बूझा ४
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके वेष ॥
घट घट अविनाशी बसै, सुनहु तकी तुम शेष ५

नानावर्णरूप यक कीन्हा । चारिवर्णउनकाहुनचीन्हा १
नष्टगयेकरतानहिंचीन्हा । नष्टगये औरहि मनदीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
विमलषकरैनयननहिंसूझा। भोअयानतबकछुवनबूझा ४
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नट के बेष ॥
घटघटअविनाशीबसै, सुनहुतकीतुम शेष ५

वर्ण धर्मखण्डन करि आये अब सब वर्णको एक मानि जे साहबको भूले हैं तिनको खण्डनकरै हैं नानारूप जे जीव हैं तिनको एक वर्ण कहे एक रङ्ग करिदेत भयो 'अहं ब्रह्मास्मि' करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरो नहीं है चारिउ वर्ण वहीको वर्णन करत भये यह न जानत भये कि यह धोखाब्रह्म को खाइ लेइ है १ फिरि फिरि सब जीव नष्ट ह्वैगये कहे मरि गये उद्धारकर्ता जो साहब है ताको न चीन्हत भये और औरहि जो वा धोखा ब्रह्म है तौनेमें मन दैके नष्ट ह्वैगये अर्थात् लीन ह्वैगये साहबको

१ धर्मश्च सत्यं च दमस्तपश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितीक्षाऽनसूयाः । यज्ञश्च दानं च धृतिः श्रुतं च व्रतानि वै द्वादश ब्राह्मणस्य ॥

तो जानें नहीं फिर संसारी भये २ जे वेदको बखानि बखानिकै पढ़ि पढ़िकै औरनको अर्थ सुनावै हैं ते वेद पढ़्यो परन्तु भेद न जान्यो कहे वेद को तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वैगये सब वेदको भेद साहब है तामें प्रमाण "सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति" ३ बिमलष जो साहब मन वचनके परे ताको खं कहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि वह नहीं है आकाशवत् ब्रह्महीं पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्र तौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि परै जब न सूझि पर्‌यो तब अज्ञान ह्वैगये "नेति नेति" कहनलगे कि अकथ है कबीर का प्रमाण "वेद बिचारि भेद जो जानै। सतगुरु मर्म शब्द पहिंचानै" ४ गुरुवालोग कहैहैं कि वही जो है अविनाशी सो सबके घट घटमें सबको नाच नचावैहै और नटके वेष आपो नाचैहै सो कबीर शेषतकी सों कहै हैं कि हे शेषतकी! जो सबको नाच नचावैगो आप नट के वेष नाचैगो सो अविनाशी कैसे होइगो? काहेते कि नट एक वेष लै आयो पुनि वह वेष छोड़िकै और वेष लैआयो याही भांति नानावेष नट धारण करै हैं ते सब अनित्य हैं नानावेष धरिबो तो मायाके गुण हैं वह मायाके परे कैसे होइगो और जब मायाते परे न होइगो तो अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेषतकी! तुम सुनो वाहू विचार करत करत जो शेष रहिजायहै सो तुमहो वातो तुम्हाराही अनुभव है अथवा तुम शेष हौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेष हौ कहे अंश हौ॥ ५॥

इति तिरसठवींरमैनीसमाप्तम्॥ ६३॥

अथ चौसठवीं रमैनी॥ ६४॥

चौ० काया कञ्चन यतन कराया। बहुत भांतिके मन पलटाया १
जो सौबार कहौ समुझाई। तहिबो धरा छोड़ि नहिंजाई २
जनके कहे जोजनरहिजाई। नवो निद्धि सिद्धी तिन पाई ३
सदा धर्म तेहि हृदयाबसई। राम कसौटी कस तै रहई ४

जोरि कसावै अन्तै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी ॥ ताते परी कालकी फांसी, करहु आपनो शोच ॥
जहां संत तहँ संत सिधावै, मिलि रहे पोचै पोच ६

कायाकञ्चनयतन कराया। बहुतभांतिकै मन पलटाया१
जोसौबारकहौं समुझाई। तहिबो धरा छोड़िनहिंजाई२
जनकेकहेजोजनरहिजाई। नवो निद्धि सिद्धी तिनपाई ३
सदाधर्मतेहिहृदयाबसई। राम कसौटी कसतै रहई ४
जोरि कसावै अन्तै जाई। तो बाउर आपुहि बौराई ५
साखी ॥ ताते परीकालकी फांसी, करहु आपनो शोच ॥
जहांसन्त तहँ सन्त सिधावै, मिलिरहे पोचै पोच६

कबीरजी कहै हैंकि ईजीवनके कायाको हम बहुत यतनकरवाया और बहुत भांति ते मन पलटाया कि तू धोखा को त्यागि कञ्चन आपने स्वरूपको जानो १ या बात यद्यपि मैं सौबार समुझाऊं हौं ताहूपै ऐसा धोखाको धस्यो कि छोड़ि नहींजाय सो जे जन गुरुवाजनके कहे रहिजायहैं धोखाको नहींत्यागै हैं२ ते नवो निद्धि पावै हैं और निर्गुण सगुणके परे मैं जो बात कहौंहौं ताको कहांबूझैं ३ जे मेरो कह्यो बूझैहैं कि हम साहबके हैं या धर्म जिनकेहृदय में बसै है ते साहबकेरूप कसौटी में आपनो कञ्चनस्वस्वरूप कसतई रहै हैं और जे साहब नहीं कसै हैं गुरुवालोगनके कसावै जाइहैं ते वे बाउरऊ निराकार ब्रह्म तामें आपही बौरायजाय हैं जो और को और कहै सो बाउर है ४। ५ सो हे जीवो! तुम साहब के होइकै धोखा में लागे ताहीते कालकी फांसी में परेहौ सो आपने छूटिबे को शोच करौ देखो तो जहां सन्त रामोपासक हैं तहँ सन्त जाइहैं आपनोस्वरूप जानि छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगन को उपदेश लेइ हैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहे हैं ॥ ६ ॥

इति चौसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६४ ॥

अथ पैंसठवीं रमैनी ॥ ६५ ॥

चौ० अपने गुणके औगुण कहहू । यहै अभाग जो तुम न बिचरहू १
तुम जियरा बहुतै दुखपाया । जलबिन मीनकवनसचुपाया २
चातकजलहलभरे जोपासा । मेघ न बरसै चलै उदासा ३
स्वांग धर्‍यो भवसागर आसा । चातकजलहलआशैपासा ४
रामै नाम अहै निजसारू । औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचित है सपनेनिधि पाई । हियनमाहँ कहँ धरै छिपाई ६
हरि उतङ्ग तुम जातिपतङ्गा । यमघर कियो जीवको सङ्गा ७
हिय न समाय छोड़ नहिं पारा । झूठलोभ तैं कछुन बिचारा ८
अस्मृति कहा आपु नहिं माना । तरिवर छल छागरह्वैजाना ९
जियदुरमति डोलै संसारा । तेहिं नहिं सूझै वार न पारा १०
साखी ॥ अन्धभया सब डोलई, यह कोई नहिं करै विचार ॥
हरिकि भक्ति जाने विना, भवबूड़ि मुआ संसार ११

अपनेगुणकेऔगुणकहहू । यहैअभागजोतुमनविचरहू १
तुमजियराबहुतैदुखपाया । जलबिनमीनकवनसचुपाया २
चातकजलहलभरे जो पासा । मेघनबरसैचलैउदासा ३
स्वांगधर्‍योभवसागरआसा । चातकजलहलआशैपासा ४

स्वतः सिद्ध तुम साहब के दास हौ या जो आपनो गुण ताको अवगुण कहौ हौ कि हम ब्रह्म हैं सो या नहीं विचारौ हौ कि हम ब्रह्म हैं कि दास हैं याही तुम्हारी अभाग है दासभूत प्रेतमान "दासभूतः स्वतः सर्वदात्मनः" परमात्मा में बहुत दुःख पायो है जो छाया पाठ होय तो बहुत दुख में आयो सो जब विना कौनो सचुपायो है नहीं पायो ऐसे विना साहब के जाने सचु न पावोगे १ । २ जैसे जब मेघ स्वातीको जल नहीं बरषै हैं तब चातक उदासै रहै है कहे पियासै रहै है जो नजीक समुद्रो भरो होय तो कहा होइ ऐसे स्वामी मेघसम रामोपासक पूरा गुरु तुम नहीं पायो जो साहब को बताइ देइ ताते तुम उदासई गया और और

में लगावनवारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पै जनन मरण छूट्यो ३ भवसागर ते पार होबे की आशाकरि स्वांग जो धोखा ब्रह्म तौने को तुम धस्यो कि "अहं ब्रह्मास्मि" मानिसंसारते छूटि जाइँगे सो तुम्हारी आशा चातककी भई कि स्वाती तो पायो नहीं जो बहुत जल है पै बिना स्वाती चातक की आशा फांसही ह्वैगई अथवा स्वांग धोखाब्रह्म को जो तुम धस्यो है सो साहब की आशा कहे दिशा नहीं है भवसागरही की आशा कहे दिशा है ॥ ४ ॥

रामै नाम अहै निज सारू । औ सब झूठ सकल संसारू ५
किञ्चितहै सपने निधिपाई । हियनमाहँ कहँधरै छिपाई ६
हरिउतङ्गतुमजाति पतङ्गा । यमघरकियोजीवकोसङ्गा ७
हियनसमायछोड़नहिं पारा। झूठलोभतैंकछुनबिचारा ८
अस्मृतिकहाआपुनहिंमाना । तारिवरछलछागरह्वैजाना ६
जियदुरमतिडोलैसंसारा । तेहिनहिंसूझै वार नपारा १०

हे जीवो ! तुम यह विचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साहब मुख अर्थ समुझि कै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप और तुम्हारो स्वरूप रामनामही में है और सब कहे सब ब्रह्मई है यह जो मानि राख्यो है सो धोखा है झूठा है और मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठे हैं ५ जो "अहंब्रह्मास्मि" ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठी है तैं तो किंचित् कहे अणुहै वा विभु है झूठ लोभते कछु न विचारा तुम्हारे हिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभवति होइ है याको छोड़िदेव और वाको पार नहीं है कहे लबरी और न होय है याते झूठ लोभ किये है कि मैं ब्रह्म होइ जाउँगो सो कछु न विचारा काहेते अच्छा विचार नहीं किये है अथवा कछू न विचारा कहे वा विचार कछू नहीं है मिथ्या है ६ । ७ । ८ जौन स्मृति बतावै है " स्याज्जीवनेच्छा यदि ते स्वसत्तायां स्पृहा यदि ।

आत्मदास्यं हरेः स्वास्थ्यं संभावं च सदा स्मर १" सो तुम स्मृतिको कहा आर कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्म में लगिकै अपने को ब्रह्ममानिकै तरिवर जो है संसार ताको छल जो है धोखाब्रह्म सोई है छागर कहे बोकरा ताही ह्वैकै कहे वह ब्रह्म ह्वैके तुम जान्यो कि हम चरिलेइँ अर्थात् संसार ते छूटिजाइँ सो येतो बड़ो संसाररूपी वृक्ष कहा धोखाब्रह्म बोकरा चरोचरिजाइ है ६ जौन जीमें दुर्मति करिकै संसार में डोलौहौ कहे फिरौहौ सो 'अहंब्रह्म' माने संसार को वारापार न पावोगे वह तो धोखा है॥ १० ॥

साखी ॥ अन्धभयासबडोलईयह, कोइ नहिं करैबिचार॥
हरिकिभक्तिजाने बिना, भवबूड़िमुआसंसार ११

श्रीकबीरजी कहे हैं कि मैं येतो समुझाऊं हौं परन्तु सब संसार की आंखी फूटिगई हैं अन्धभया सब डोलै है कहे फिरै हैं यह विचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसार दुःख हरै सो हरि जे हैं सबके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति विना जाने भव जो है धोखाब्रह्म तौने है भ्रम को समुद्र ताही में संसार बूड़ि मुआ कहे संसारीजीव बूड़ि मुये ॥ ११ ॥

इति पैंसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६५ ॥

अथ छाछठवीं रमैनी ॥ ६६ ॥

चौ० सोई हितू बन्धु मोहिं भावै। जात कुमारग मारग लावै १
सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई २
सो झूठा जो सुत कै तजई। गुरुकी दया रामको भजई ३
किंचितहै यकजगतभुलाना। धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४

साखी ॥ ज्िय जो नेक पयान किय, मन्दिर भया उजार ॥
मरे जे जियते मरिगये, बाचे बाचनहार ५

सोई हितू बन्धु मोहि भावै। जात कुमारग मारग लावै १

सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई २
सो झूठा जो सुतकै तजई। गुरुकी दया रामको भजई३
किंचितहैयहजगतभुलाना।धनसुतदेखिभयाअभिमाना४

साखी॥ जिय जो नेकपयान किय,मन्दिर भया उजार॥
मरे जे जियते मरिगये, बाचे बाचनहार ५

सोई हितू वा बन्धु मोको भावै है जो कुमारग में जात जे जीव हैं तिनको सुमारग में लैआवै कहे साहब को बतावै अथवा कुमार्ग में जात जो जीव हैं ताको साहब के सुमार्गमें लगावै १ अरु सोइ जीव सयान है जो सुमार्ग में आयकै रहिजाय है कहे स्थिर है जाय है अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धान्त साहबही में लगाइदेइ सो कबहूं न भुलाइहै २ ऐसो गुरुवा झूठा है जो सुतकै कहे मूड़ मूड़िकै अपनो चेला बनाइकै तजि देइ है साहब को नहीं बतावै है और और देवतन को सौंपि देइहै और जाकी दया ते अर्थात् जाके उपदेश ते यह जीव श्रीरामचन्द्र को भजन करैहै सोई सांचो गुरु है भाव यह है कि विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रजी के जाने यह जीवको शोक नहीं छूटैहै जे गुरुसाहब को बताइ कै संसार ते नहीं छुड़ावै हैं और और मतनमें लगाइ कै संसारमें डारि देइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरक देनवारे हैं और आप नरक जानवारे हैं तामें प्रमाण "शिष धन हरै शोक नहिं हरई। सो गुरु घोर नरक में परई" और कबीरहूजी लिखि आये हैं "छोड़िदेहु नरझोलिकझेला। बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला।" इहै जीव तू तो अनु है एक जो ब्रह्म और जगद्रूप जो है माया तामें भुलाइरह्योहै याही ते तैं जगत् में उत्पन्न भयो है आपने को मालिक मानि धन सुतादिको ताको अभिमान होइहै ३।४ हे जीव! जो नेकहु पयान ते किय स्थूलशरीर मन्दिर उजार होइजाइ है सो विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरे ते जीवतो मरिकै चौरासीलाख योनि में भटकनेलगे और बाचे

बाचनहार कहे जे पांचौ शरीर ते बचिकै पार्षदरूप पाचनहार रहे ते बाचे ॥ ५ ॥

इति छाछठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सतसठवीं रमैनी ॥ ६७ ॥

गुरुमुख चौ० ॥ देह हलाये भक्ति न होई । स्वांगधरे बहुतै नर जोई १
धिंगाधिंगी भलो न माना । जो काहू मोहिं हृदय न जाना २
मुखकछुऔरहृदयकछुआना ॥ सपन्योकबहूंमोहिं न जाना ३
ते दुख पावैं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहु निनारा ४
जो नर गुरुकी निन्दा करई । शूकर श्वान जन्म सो धरई ५
साखी ॥ लखचौरासीयोनिजीवयह, भटकि भटकि दुख पावै ॥
कह कबीर जो रामहिं जानै, सो मोहिं नीके भावै ६

गुरुमुख ॥ देहहलायेभक्तिनहोई । स्वाँगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगाधिंगीभलो न माना ॥ जो काहूमोहिंहृदय न जाना २

देह हलाये कहे पेट हलाय कुण्डलिनी उठावै है और स्वांग धरे कहे कोई खाख लगावै है कोई जटा नहीं बढ़ावै है कोई टोपी दै अलफी पहिरि कुबरी लेइहै कोई कोई तिलकै नहीं देइहै कोई बेंड़ा तिलकदेइहै कोई नाकते तिलक देइहै कोई काठफल पाषाण अस्थि इत्यादिकी माला पहिरै है ऐसे स्वाँगधरे नरनको देखेहै सो विना साहबके जाने भक्ति होइहै नहीं होइ है १ धिंगाधिंगी कहे बड़े बड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बड़े बड़े धिंगा ह्वै रहे हैं और बड़ी बड़ी धिंगी ह्वैरही हैं भलो जो साँचमत ताको नहीं मानै हैं साहब कहै है जो कोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पावै है नहीं पावै है ॥ २ ॥

मुखकछुऔरहृदयकछुआना । सपन्योकबहूंमोहिंनजाना ३
ते दुखपावहिं यहि संसारा । जोचेतौतौहोहुनिनारा ४
जोनरगुरुकीनिन्दाकरई । शूकर श्वानजन्म सो धरई ५

मुखमें तो और है कि हम संन्यासी हैं हम साधु हैं हम ब्रह्मचारी हैं और हृदयमें और है धन मिलै को उपाय खोजै हैं ते नर सपन्यो कबहूं मोको नहीं जानिसकेहैं ३ सो ऐसे जे प्राणी हैं ते यहि संसार में दुःख नाना प्रकारके पावैहैं सो हे जीवो! तुम चेतकरौ तो इतने न्यारा ह्वै जाउ ४ और जे तात्पर्यवृत्ति करिकै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरु हैं तिनकी जो कोई निन्दा करै हैं कि जोई वर्णन करै हैं सो सब मिथ्या है ते मरिकै श्वान अरु शूकर को जन्म धारण करै हैं ॥ ५ ॥

साखी॥लखचौरासीयोनिजीवयह,भटकिभटकिदुखपावै।
कहकबीरजोरामहिंजानै, सोमोहिं नीके भावै ६

साहब कहै हैं कि मेरो भक्त कबीर कहै है कि चौरासी लाख योनिमें जीव यह भटकि भटकि दुःख पावै है सो तिनमें जो कोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भावै है सो ऐसो प्रकट कबीर बतावै है ताहूको और और अर्थकरि और और लगैहैं सो मोको नहीं जानै हैं ॥ ६ ॥

इति सतसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६७ ॥

अथ अड़सठवीं रमैनी ॥ ६८ ॥

चौ० तेहि वियोगते भये अनाथा। परिनिकुञ्जबन पावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जे जानै। जो समुझै सो भलो न मानै २
नटवर बन्द खेल जो जानै। ताकर गुण जो ठाकुर मानै ३
उहै जो खेल सबघटमाहीं। दूसर को लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै। कैसहुकै जन पूरा पावै ५
साखी॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर॥
लागै तो भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर ६

तेहिंबियोगतेभये अनाथा। परिनिकुञ्जबनपावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जो जानै। जो समुझैसो भलो न मानै २

सम्पूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं के वियोग अनाथ ह्वैगये निकुञ्जवन जो वाणी को जाल है नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्त मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के मिलनेके पाथ कहे पन्थ न पावत भये १ जिनको पूर्व कहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीव! जो तैं जानै तो वेदहू वे मतवारेनको नकलई कहैहैं तो जो साहब को समुझैहै सोऊ उनको नहीं मानैहैं नकलई मानैहै ॥ २ ॥

नटवरबन्द खेल जो जानैं। ताकरगुण जो ठाकुर मानै३
उहै जो खेलै सबघटमाहीं। दूसरको लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जौ अवसर आवै। कैसे कै जन पूरा पावै ५

अब योगिनको कहै हैं नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहे यह जीव आत्मा को ब्रह्माण्ड में चढ़ाइकै फिरि उतारै जानै है ताको गुण यह है कि समाधि लगि जाइ है कहे ब्रह्मरूप ह्वै जाइ है सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानै है ३ अर्थात् जौन ब्रह्म मैं ह्वै जाउहौं तौने घट घट में है दूसरे की कछु नहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछु नहीं है ४ सो जे यह मत करै हैं तिनको भलो पोच कहे नीको नागा अवसर आवत है अर्थात् जब जीवमें लीन ह्वै ब्रह्मरूप ह्वै जाइहै यातो भलो अवसर और जब समाधि उतरि गई जैसेके तैसे ह्वैगई या पाँच अवसर है सो कैसे कै जन पूरों ज्ञान पावै कि हम पूर्ण ब्रह्म हैं तो सर्वत्र पूर्ण हैं जो या ब्रह्म ह्वै जातो तो समाधि उतरेहू में वही वृत्ति बनी रहती ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर ॥
लागै तौ भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर६

जेकरे शर लागैहै सोई बाण लागेकी पीर जानै सो जो कोई समाधि लगावै है सोई समाधि उतरे को दुःख जानै है सो समाधि तो तोर लागै है ना भागु समाधिही लगाये रहु सो तेरे।

भागिबो तो बनतई नहीं है समाधि उतरेही आवै है याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहै हैं सुखसिंधु जे साहब हैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधि लगी रहै है अर्थात् जो एकहू बार साहब के सम्मुख भयो है सो फिरि नहीं संसार में बच्यो है तामें प्रमाण "एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय इति" अथवा जाके बाण लगैहै सोई पीर जानै है सो जो साहबमें लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानै हैं कि हम योग में यज्ञादि में लगिकै नाहक जन्म गँवाये सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको दुर्लभ जानि तैं लागु तौ भागु न साहब सुखसिन्धु है तिनको तू निहारु तो ये सब धोखनकी पीर दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरो न गनैंगे तामें प्रमाण "कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यते। न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया।" (इति वाल्मीकीये) ॥ ६ ॥

इति अड़सठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ उनहत्तरवीं रमैनी ॥ ६९ ॥

चौ० ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरै लये गफ़िलाई १
महादेव का पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाट बाट में लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपची जोरी ४
कब नारदबन्दूख चलाया। व्यासदेव कब बम्ब बजाया ५
करहिं लड़ाई मतिकेमन्दा। ईहैं अतिथि कि तरकसबन्दा ६
भये बिरक्तलोभमन ठाना। सोना पहिरि लजावै बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गांव पाय यश चलो करोरा ८

साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरै लये गफ़िलाई १

महादेव को पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाटबाट में लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्ते मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपची जोरी ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहब को तो जानै नहीं हैं गाफ़िल ह्वैकै भूले भूले फिरै हैं १ अरु महादेव को पन्थ जो तामसशास्त्र है सो चलावै हैं और बड़े महन्त कहावै हैं २ सबके देखावन को हाट में और पहारन के बाट में तारी लगाय कै बैठे हैं और सिद्ध कहावै हैं और सबके देखावन को यह कहै हैं कि संन्यासी को धर्म नहीं है कि द्रव्य लेय और हाथ छुवै परन्तु जो कोई चढ़ाइकै चलो जाइहै ताको चिमटाते लैकै कमण्डलु में डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ३ दत्तात्रेय कबै मवासिन को शत्रुन को तोर्‍यो है और शुकदेव कबै तोपखाना अपने साथ जोरिकै चलायो है ॥ ४ ॥

कब नारद बन्दूख चलाया। व्यासदेव कब बम्बबजाया ५
करहिंलराई मतिके मन्दा। ईहैं अतिथिकितरकसबन्दा ६
भये बिरक्त लोभमनठाना। सोना पहिरि लजावैंबाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गाँवपाय यशचलोकरोरा ८

और नारदमुनि कबै बन्दूख चलायो है और व्यासदेव कबै नगारादैकै काहूके ऊपर चढ़े हैं ५ ई संन्यासी बैरागी मतिके मन्द लड़ाई करै हैं ई अतिथि हैं तरकसबन्द सावन्त हैं ६ भये तो बिरक्त संन्यासी परन्तु लोभ करिकै रोज़गार करै हैं सोना पहिरि कै बाना को लजावै हैं ७ और घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संग लेतभये और काहू राजाते गांव पायो करोरपती है या यश चलायो बड़े ज्ञानी हैं बड़े भक्त हैं या यश चलायो ॥ ८ ॥

साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

लाव लश्कर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहै हैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्ष की अवस्था बनीरहैहै ऐसे ब्रह्माके पुत्र तिनहूंको या मजा होय तो कबीरजी कहैहैं कि स्त्रीनके साथमें सुन्दरी का सोहै है नहीं सोहै है कबहूं दाग लगावतई है जैसे कारीहांड़ी हाथमें लेइ तो दागलागि ही जाय है ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्रीरहै है तेपाखण्डिनको दाग लगतै है स्त्रिनते नहीं बचै हैं नामके तो संन्यासी बैरागी हैं अखाड़ा गृहस्थी बांधे हैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखण्डी हैं ते मायारूपई ह्वैरहे हैं तेई माया रूपी सुन्दरी कहे स्त्री हैं तिनको संग न करै और जो संग करै तो दाग लगवई करै सो जीव ते पाखण्डिनको संग न करै तामें प्रमाण "पुंसां जटाधरणमोजवतां वृथैव मेथाविनामखिलशौचनिराकृतानाम्। तोयप्रदानपितृपिण्डबहिष्कृतानां संभाषणादपि नरा नरकं प्रयान्ति" (इति विष्णुपुराणे)॥ ६॥

इति उनहत्तरवीं रमैनी समाप्तम्॥ ६९॥

अथ सत्तरवीं रमैनी॥ ७०॥

चौ० बोलाना कासों बोलियेभाई। बोलतही सबतत्त्व नसाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा। सो बोलिय जो परै बिचारा २
मिलै जो सन्तबचनदुइकहिये। मिलै असन्त मौन ह्वै रहिये ३
पण्डितसों बोलिय हितकारी। मूरुखसों रहिये झखमारी ४
कह कबीर ई अधघट डोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै ५

बोलाना कासोंबोलियेभाई। बोलतही सब तत्त्व नशाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा। सो बोलिय जो परैबिचारा २

बैरागिनकी संन्यासिनकी दशा जैसी ह्वैरही है सो पूर्वकहि आये सो ऐसे पाखण्डी संसारमें ह्वै रहे हैं बोलाना कासों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाई जाइहै तत्त्व कहावैहै यथार्थ सो साहब के जे नाम रूप लीलाधाम यथार्थ हैं ते नशाइ जाइ हैं कहे

भूलिजाइ हैं १ बोलत बोलत बिकारई बाढ़ै है ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को विचार ठीक परिजाइ औरनी तरहते सांच विचार ठीक परै सो कहै हैं ॥ २ ॥

मिलैजोसन्तबंचनदुइकहिये। मिलैंअसन्तमौनह्वैरहिये ३
पण्डितसों बोलिय हितकारी। मूरुखसोंरहियेझखमारी ४

जो सन्त मिलै तौ द्वै बचन कहबऊ करिये द्वैबचन कह्यो ताको भाव यह है कि थोरई आपने प्रयोजनमात्र बोलिये और सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़ैहै और असंत मिलै तो मौन ह्वैरहिये बोलियें न काहेते कि उनके संगते अज्ञान बाढ़ै है ३ तेहिते पण्डित सों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि पण्डित जेहैं ते सारासार को विचार करिकै सारपदार्थ जे साहबहैं तिनको ठीक करिकै असार जो है धोखाब्रह्म और माया ताको छोड़ि दियों है वे साहबको बतावैंगे और मूरुख सों बोलिबो झखमारी है काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तो अपने स्मरण की हानि होइ है वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तब आपही झखमारि कै रहिजाइगो पीछे क्रोध होइगो अरु मूरुख नहीं समुझै है तामें प्रमाण गोसाईंजी को (सोरठा) "फरै न फूलै बेत, यदपि सुधा बरषै जलद। मूरुख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं बिरञ्चिसम १ पानी को पान, भीजैं तो बेधै नहीं। त्यों मूरुखको ज्ञान, बूझै तौ सूझै नहीं" ॥४॥

कह कबीर ई अधघट डोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जे सत्संगऊ करैहैं और मूरुखहू सों बोलैहैं शास्त्रार्थ करैहैं व और और मतको सिद्धान्तजानो चाहैहैं कि हमारे मत ठीक है कि औरऊ मत ठीक है परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परे हैं यह सिद्धान्तको निश्चय नहीं है ते अधघट जे हैं और और मतवारे इनके समुझाये नहीं समुझै हैं और असन्तसंग करिकै बिचारकी हानि होइ है कहा हानि होइ है कि औरऊ को बिचार मन पर न लागैहै अपने मत में भ्रम होने लगै

है आपनो ठीक नहीं ठीक है जैसे आधी गगरी जलसे भरी होइ तो वाको जल डोलैहै ऐसे साहब में उनको ज्ञान तो पूरो नहीं ताते डोलैहै और जो पूरा सो बीचलैके बोलैहै औरे प्रश्न सुनिकै वाको बिचार लैलियो कहे समुझिलियो कि यह बोलिबो अधिकारी है हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलै है जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलैहै औ जल वामें नहीं अमाय है ऐसे वे तो साहब के ज्ञान में पूरे हैं सो उनको ज्ञान डोलै नहीं है अरु और मतन को सिद्धान्त के जे ज्ञान हैं ते उनके अन्तःकरण में नहीं समाय हैं॥५॥

इति सत्तरवीं रमैनी समाप्तम्॥ ७०॥

अथ इकहत्तरवीं रमैनी॥ ७१॥

चौ० सोग बधावासमकरिजाना। ताकी बात इन्द्र नहिं जाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्ति कै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई। जैसे काग चील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी। राजपाट सब गनै उजारी ४
जैसे नरक तस चन्द न माना। जस बाउर तस रहै सयाना ५
लपसी लौंग गनै यकसारा। खाँड़ै परिहरि फांकै छारा ६
साखी॥ यहि बिचार ते बह गयो, गयो बुद्धि बल चित्त॥
दुइ मिलि एकै ह्वै रह्यो, काहि बताऊं हित्त ७

सोगबधावा समकरिजाना। जाकीबात इन्द्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई। जैसे कागचील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी। राजपाटसब गनै उजारी ४

औरे पदको अर्थ स्पष्टै है १।२।३ अब फिरि साहब के जनैयनको कहैहैं कि भिश्ति कहे स्वर्गको मानै हैं तैसे नारी कहे दोजख को मानै हैं अरबीकी किताबनमें भिश्तको जिन्नत और दोजखकी नाईं अर्थके सम्बन्धते बहुत जगह कह्यो है अथवा

नार कहै आगि सो जामें होय ताको नारी कहे हैं अर्थात् नरक और भिश्ति पाठ होय तो जैसे भिश्ति कहे देवालको मानैहैं तैसे नारीको मानै हैं और राजपाट जो है जगत् ताको उजारई गनै हैं कि संसार हई नहीं है चित्त अचितरूप साहबई के हैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण "नरक स्वर्ग अपवर्ग समाना। जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना" ॥ ४ ॥

जैसे नरकतस चन्दनमाना। जसबाउर तसरहै सयाना ५
लपसीलौंगगनै यकसारा। खाँड़े परिहरि फांकै छारा ६

जैसे नरक कहे विष्ठा को तैसें चन्दनको मानै हैं और हैं तौ सयान कहे साहबको जानै हैं परन्तु रहत बहुत बाउरही के तरह हैं ५ और जे साहब को नहीं जानै हैं आपही को ब्रह्म मानै हैं तिनको कहै हैं लपसी लौंगको एकई मानै हैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकै हैं अर्थात् ताहूको एकही गनै हैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानै हैं जो कहो समान दृष्टि करतई हैं साहब के गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपही को ब्रह्म मानै हैं और खांड़ परिहरिकै छार फांकै हैं ताको भाव यह है खांड़ साहब जे मिठाई ताके देनेवारे तिनको छांड़ि कै छार फांकै हैं जामें सार कछु नहीं है 'अहं ब्रह्मास्मि' ज्ञान करै हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ यहिविचारते बहगयो, गयोबुद्धिबलचित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वै रह्यो, मैं काहिबताऊंहित्त ७

श्रीकबीरजी कहै हैं विचारत बुद्धि को बल जो है निश्चय करिकै 'अहंब्रह्म' मानि सो येहू जात रह्यो और चित्त जो है सोऊ जात रह्यो मनो नाश बासना क्षय ह्वै गई कछु बासना न रहगई दुइ जे हैं ब्रह्म और जीव ते मिलिकै एकही ह्वै रहे जैसे जल मिलिकै एकै ह्वै जाय है हितुवा वह कहावै हैं जो रच्छा करै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्ममें लीनहोइ हैं पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलै आवै है तब तो दूसरो यह मानते नहीं है मैं

काको हितुवा बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ और जो साहब हितुवा मानै रक्षक मानै तो साहब याको हंसस्वरूप दैके आपने पास बोलाइलेई इहां मायाकी गति नहीं है तो पुनि धरिके जीवको संसारी करै ॥ ७ ॥

इति इकहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७१ ॥

अथ बहत्तरवीं रमैनी ॥ ७२ ॥

चौ० नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा। तामें भरमि रहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही । बुध अधबुध अचरजयककही ३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई । बुध अधबुध अचरज बड़ होई ४

नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा । तामें भरमिरहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही ।बुधअधबुधअचरजयककही३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई।बुधअधबुधअचरजबड़होई४

एक नारि जो यह माया है सो संसार में आवतभई न वाके महतारी है और न वह बापते उत्पन्न है अर्थात् अनादि है १ अरु न वाके गोड़ है न मूड़ है न प्राण है न अधार है अर्थात् निराकार है भर्मई है ताहो में संसार भरमि रह्यो है २ और सातो जे बार हैं दिन तिनमें वही माया की सही है अर्थात् काल में वही अमिसो है और सातोबार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारों ओर बिस्तार है बुध जो है पण्डित निर्गुणवारे जे सारासार के विचार करिकै आपही को ब्रह्म मानै हैं और अधबुध जे हैं आधे पण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनों में आश्चर्य जो है माया ताको एक कहहैं दूनोंमें यह माया बरोबरि व्याप्त है ३ श्रीकबीर जी कहै हैं कि यह बड़ो आश्चर्य है तौ कछु नहीं है और वही माया

की बन्दना निर्गुण सगुणवारे दोऊ करै हैं जो मन बचन में आवै है सो मायाही है ॥ ४ ॥

इति बहत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ७२ ॥

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७३ ॥

गुरुमुखचौ० चलीजाति देखायकनारी। तरगागरि ऊपरपनिहारी १
चलीजाति वह बाटै बाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २
जाड़नमरै सुपेदी सौरी। खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझ सकार दिया लै बारै। खसम छोड़ि सुमिरै लगवारै ४
वाहिकेसङ्गमें निशिदिनराँची। पियसों बात कहै नहिं साँची ५
सोवतछांड़िचली पियअपना। ईदुख अबधौंकहौंकयहिसना ६
साखी ॥ अपनी जाँघ उघारिकै, अपनी कही न जाय ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जन गाय ७

चलीजाति देखा यक नारी। तर गागरि ऊपरपानिहारी १
चलीजात वह बाटैबाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २

सुरतिरूपी जो नारी सोईहै दूती ताको हम चली जात देखा है हृदय जो गगरी है सो तरे है और सुरतिउठी सो ऊपर सुधा सरोवर में जलभरनको गई शीश में पहुँची १ वह सुरति जब चलै है तब षट्चक्र बेधिकै राह राह जाय है काहेते कि नाभी में "मणिपूरक चक्र" है तामें शीश दिये नागिनी बैठी है सोई षट्कहे पलँग है सो ऊपर है ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सोरहै है तहां ते सुरति उठै है तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राण जाय है ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदी सौरी। खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझसकार दियालैबारै। खसमछोड़िसुमिरै लगवारै ४

सुपेदी कहे रजाई जो है यह शरीर सो जाड़न मरै है अर्थात् शीत उष्ण वहीको लगैहै सौरी कहे सुपेदीको सुमिरण करिकै

जाड़न मरैहै अर्थात् जबलग देहाभिमान है तबलग शीत उष्ण है आत्मा को नहीं लगै है साहब कहैहैं कि वह जो है आत्मा मेरी घरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरी शक्ति सो मैं जो हौं याको खसम ताको नहीं चीन्है है याहिते बौरी कहे बौरायगई ३ साँझ सकार दिया लै बारैहै कहे समाधिलगायकैज्योतिको बारिकै कुण्डलिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वहां ज्योतिमें मिलाये है और याको मैं खसम हौं सो मोको छोड़िकै लगवार जो है धोखाब्रह्म ताको सुमिरै है ॥ ४ ॥

वाहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची।पियसोंबातकहैनहिंसाँची ५
सोवतछांड़िचलीपियअपना।ईदुखअबधौंकहबक्यहिसना ६

सुरतिरूपी नारी जो है दूती ताहीके साथ ह्वैकै वही धोखाब्रह्म में निशिदिन राचिरही है कहे प्रीति करि रही है पिय जो मैं हौं तासों सांची बात नहीं कहैहै सांची बात कहाहै कि मैं तिहारो हौं यह जो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्ति को छोड़ाय लेउँ साहब की यह प्रतिज्ञा है जो मोको जानै मोको गोहरावै तो मैं संसार ते छुड़ाइ लेउँ तामें प्रमाण "अबहूं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारे ५" सो जीवरूपा शक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहि गई जागत न भई सोवत में मोको छोड़ि स्वप्न देखनवाली संसारी ह्वैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्राप्त भई तब संसार में परिकै नाना दुःख पावै है सो यह दुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तो जानै नहीं है अरु और सब स्वप्नते झूठे हैं ॥ ६ ॥

साखी॥ अपनीजाँघउघारिकै, अपनी कही न जाइ ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जनगाइ ७

साहब कहै हैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपा शक्ति मोको छोड़िकै संसारी ह्वैगई सो अपनी जङ्घा जो उघारिहोइ तो कोई कहां अपनो गिल्ला करै है नहीं करै है ऐसे मेरी शक्ति यह जीव

सो जो और और लगवार जो है सो यह दुःख का मोसो कहि जाइ है नहीं कहि जाइ है कितो मेरो दिल जानै है याको उद्धार है जाइ याही चाहौहौं और कि मेरेजन जे हैं ते मेरो सौशील्य दया बात्सल्यादिक गुण गान करिकै जानै हैं कि साहब में निर्देह सौशील्यादिक गुण हैं जीवको उद्धारई चाहे हैं और तो अज्ञानीजीव अपनो भूल न जानैंगे याही जानैंगे कि जो साहब सबको मालिक है सब करिबेको समर्थ है ताकी जो इच्छा होती तो हम सब जीव के बन्ध ते तामें प्रमाण "सो परन्तु दुख पावत, शिर धुनि धुनि पछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाय ॥ ७ ॥

इति तिहत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ७३ ॥

अथ चौहत्तरवीं रमैनी ॥ ७४ ॥

चौ० तहिया गुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमल पत्र तरङ्ग यकमाहीं। सङ्गहि रहै लिप्त पै नाहीं २
आस ओस अण्डन महँ रहई। अगणितअण्डनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४
धर्म कहै सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५
ढोर पतङ्ग सरै घरियारा। तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पन्थ नहिं जोहै सोई ७
साखी ॥ भर्मक बांधलई जगत्, कोइ न किया बिचार ॥
हरिकि भक्ति जाने बिना, भवबूड़ि मुआ संसार ८

तहियागुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमलपत्र तरङ्ग यक माहीं। सङ्गहिरहै लिप्त पै नाहीं २
आशओसअण्डनमहँरहई। अगणितअण्डनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४

जब जीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो

और गुप्त कहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहे हैं और न तेहिजीवके संगरह्यो और न मायारही है १ जैसे कमलपत्र में जल रहैहै पै कमलपत्र में लिप्त नहीं रहै है तैसे यह आत्मा में मायाब्रह्म यद्यपि सब कारणा रहे हैं परन्तु मायाब्रह्म में आत्मा लिप्त न रह्यो २ ब्रह्महैवेकी जो आशा है सोई पियासहै सो ओस चाटे कहूं पियास जाइ है नहीं जाइहै ओसके सम जो है ब्रह्मानन्द सो जीवरूप जे हैं अगंड तिनमें रहैहै अर्थात् कारणरूपते जीव में बनो रहै है जब समष्टिजीव रह्योहै तब रहे तो अगणित हैं अण्ड परन्तु सब मिलि एकई कहावत रह्योहै अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ३ निराधार जो निराकार ब्रह्म है जामें सबजीव भरेहैं ताको आधार लै जानिये कि साहबके लोक में है अर्थात् साहब के लोकको प्रकाशहै तबतो समष्टिरही याहीं रामनाम लैके वाणी उचरी कहे प्रकटभई इहां रामनाम लेके वाणी प्रकटभई ताको हेतु यह है कि वाणी में जगत् प्रकटकरिबेकी शक्ति नहीं रही रामनाम को जगतमुख अर्थ लैके वाणी उचरी है पांचोब्रह्म समेत जगत् उत्पत्ति कियो है सोई इहां सिद्धान्त करै है ॥ ४ ॥

धर्म कहे सब पानी अहई । जातीके मन बानी रहई ५
ढोरपतङ्गसरै घरिआरा । तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई । बहुरि पन्थ नाहिं जोहै सोई ७

वेदशास्त्र में आत्मा को धर्म कहेहैं कि आत्मा चित्त है याते चित्त धर्म है जैसे जल में जल मिलै तो एकई होजाइ है ऐसे चिन्मात्र जो ब्रह्म है तामें मिलिकै चित्त जो है जीव सो एकई है जाय काहेते कि दुहुनको चित्तधर्म एकई है और जाती कहे सब जाति जे जीव हैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हें हैं कि मैं साहबको अंश हौं जाति करिकै वही हौं कछु स्वरूप करिकै नहींहौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञ है मैं अल्पज्ञ हौं वह विभु है मैं अणु हौं वह स्वतन्त्र है मैं परतन्त्र हौं यह जो कहहैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतो

वाणी को विस्तार है सामान्यधर्मलैके कहै हैं ५ ढोर पतङ्ग घरिआर आदिक जामें मरै हैं ताही जल में सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी वाणी में सब मरि मरि समाइहै और पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै और जौन सब जीवको फंदाये है तौनीही वाणी में कहे सब आचार करैहै अथवा वही वाणी को आचरण करैहै आपनेको ब्रह्म मानैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ६ यह वाणीके फन्दते बाहरह्वैकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें जो लागैं तो पुनि न जगत्के पन्थको जोहैं अर्थात् फिरि न जगत्में आवै॥७॥

साखी ॥ भर्मकबांधलईजगंत, कोइनहिंकियाबिचार ॥
हरिंकिभक्तिजानेबिना, भवबूड़िमुवा संसार ८

यहि भांति भर्म जो माया शबलित ब्रह्म त्यहि करिकै बँध्यो जो यह संसार है ताको कोई नहीं विचार कियो हरि कहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्ति के विना जाने भर्मके समुद्र में संसार बूड़ि मुवा कहे.संसारीजीव बूड़ि मुयो ॥ ८ ॥

इति चौहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७४ ॥

अथ पचहत्तरवीं रमैनी ॥ ७५ ॥

चौ० तेहिसाहब के लागो साथा। दुइ दुखमेटिकै होहु सनाथा १
दशरथकुल अवतरि नहिं आया। नहिंलङ्काके रायसताया २
नहिं देवकिके गर्भहि आया। नहीं यशोदा गोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिं करिया। पैठिपतालनहींबलिछलिया ४
नहिं बलिरायसो माड़ीरारी। नहिं हिरणाकुशबधलपछारी ५
बराहरूपधरणी नहिं धरिया। क्षत्री मारि निक्षत्रनकरिया ६
नहिं गोवर्धन करतेधरिया। नहीं ग्वालसँगबनबनाफिरिया ७
गण्डकशालग्रामनशीला। मत्स्य कच्छ ह्वै नहिं जलहीला ८
द्वारावती शरीर न छांड़ा। लै जगनाथ पिण्ड नहिं गाड़ा ९

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वा पन्थे मतभूल ॥
जेहि राखे अनुमानकरि, थूल नहीं अस्थूल १०

तेहि साहबके लागोसाथा। दुइदुखमेटिकैहोहु सनाथा १

जिनको पूर्व कहिआये हैं ते हरि कहे रक्षक मन वचनके परे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके साथ में लागो दूनो जे दुःख हैं निर्गुण और सगुण तिनको मेटिकै सनाथ होउ कहे नाथ जे साहब हैं तिनते सहित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुणके सगुणके परे हित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परेहै कबहूं जब कौन्यो कल्प में बाणनके युद्धकी इच्छा होइ है तब आपही प्रकट ह्वैकै प्रतापी नामको रावण होइहै तासों बाणनको युद्ध करैहै और फिर शरीर सहित को चले जाइहै और बहुधा जे अवतार होइहैं तो नारायणै अवतार लेइहैं ॥ १ ॥

दशरथकुलअवतरिनहिंआया। नहिंलङ्काकेरायसताया २
नहिं देवकिकेगर्भहि आया। नहीं यशोदागोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया। पैठिपतालनहींबलिछलिया ४

श्रीकबीरजी कहे हैं कि वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दशरथ के इहां अवतार नहीं लियो दशरथ के इहां अवतार लै नारायणै रावण को मारे हैं २ अरु वे साहब देवकी के गर्भ में नहीं आयो अरु वाको यशोदा गोद में नहीं खेलायो ३ अरु वे साहब पृथ्वी रमण ह्वैकै म्लेच्छन को दमन अर्थात् बामनरूप नहीं धर्‌यो ॥ ४ ॥

नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी। नहिंहिरणाकुशबधलपछारी ५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया। क्षत्री मारिनिक्षत्रनकरिया ६
नहिंगोवर्धनकरगहिधरिया। नहींग्वालसँगबनबनफिरिया ७

अरु वे साहब बलिरायसों रारि नहीं मांड़्यो कहे मोहनी अवतार लै देवतनको अमृत पिआय दैत्यनको वारुणी पिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूप ह्वै नहीं मार्‌यो और हिरण्यकशिपु को पछारिकै नहीं बाध्यो कहे नहीं बध्यो अर्थात् नृसिंहरूप नहीं धर्‌यो ५ अरु वे साहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहीं धर्‌यो और क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुरामको अवतार नहीं लियो ६ अरु वे साहब करते गोबर्धन को नहीं धर्‌यो अर्थात् गोविन्दरूप नहीं धर्‌यो और न ग्वाल के संग वन वन में फिर्‌यो है याते हलधररूप नहीं धर्‌यो ॥ ७ ॥

गण्डकशालग्रामनशीला। मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला ८
द्वारावती शरीर न छाड़ा। लैजगनाथपिण्डनहिंगाड़ा ९

अरु वे साहब गण्डक में शालग्राम की शिला नहीं भये और न मत्स्य कच्छ ह्वैके जल में परे हैं ८ अरु वे साहब द्वारावती में शरीर नहीं छोड़ो है अर्थात् कालस्वरूप नहीं धारण कियो जौन जौन फिरि द्वारावती में छोड़्यो है और जगन्नाथ के उदर में ब्रह्म जो इधा में तेज राख्यो है सो वे साहबको तेज नहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायण हैं और सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ॥ ९ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वापन्थेमतिभूल ॥
ज्यहिराखे अनुमानकरि, थूल नहीं अस्थूल १०

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि वा पन्थे मतिभूल कहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमान करि कहे अनुमान करि राख्यो है ब्रह्म को सोऊ वे साहब नहीं हैं और अस्थूल नहीं अस्थूल कहे न स्थूल होइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं हैं ताते सगुण निर्गुण साकार निराकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथ के इहां नारायण अवतार लेइ हैं तिनको रामनाम होइ है तिनहीं रामरूपते सगुण निर्गुण के परे हैं ॥ १० ॥

इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७५ ॥

अथ छिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७६ ॥

चौ० माया मोह कठिनसंसारा। यहै बिचार न काहु बिचारा १
मायामोहकठिनहै फन्दा। होय बिबेकी सो जन बन्दा २
रामनाम लै बेराधारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३
साखी ॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरे से नहिं काम ॥
आदि अन्त औ युगयुगै, रामहिते संग्राम ४

मायामोह कठिन संसारा। यहै बिचारनकाहु बिचारा १

मायामोह रूप ते संसारको देखै है कहे नानापदार्थ भिन्न देखै है याहीते संसार कठिन है यामें व्यङ्ग्य यह है कि जो संसार को भगवत् चिदचित् विग्रहरूप करिके देखै तो संसार उतरिजायबे को सरलै है सो यह बिचार कोई न बिचार्‌यो ॥ १ ॥

मायामोह कठिन है फन्दा। होय बिबेकी सो जनबन्दा २

अरु यह संसार में मायामोहरूप कठिन फन्दा है जो संसार में सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत् चिदचित् विग्रहरूप देखै और विवेकी होइ सोई जन साहब को बन्दा है ॥ २ ॥

रामनाम लै बेरा धारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३

और रामनाम जो है बेरा ताको आधार लैकै जो कोई साहब को जान्यो है ताको उबार ह्वै गयो है सो तैंहूं रामनाम जो है बेरा ताको आधार लै कहे रामनाम में आरूढ़ हो साहबको जानु तौ तैं संसारसमुद्र को पार ह्वै जाय ॥ ३ ॥

साखी ॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरे से नहिं काम ॥
आदि अन्त औ युग युगै, रामहिते संग्राम ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह रामनाम अतिदुर्लभहै मोको औरे से काम नहीं है आदि अन्त में और युगयुग में मोसों रामैं ते संग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाम में जो जगत्मुख अर्थ है ताको खण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण

करौ हौं अर्थात् जब जगत् की उत्पत्ति नहीं भई है तब और युग युगन में कहे मध्य में अन्त में कहे जब मुक्त ह्वैगयो तबहूं राम नामही ते संग्राम कियो है अर्थात् रामनाम को विचार करत रहो हौं ॥ ४ ॥

इति छिहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७६ ॥

अथ सतहत्तरवीं रमैनी ॥ ७७ ॥

चौ० एकै काल सकल संसारा । एकै नाम है जगत पियारा १
तियापुरुष कछु कथो न जाई । सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजाय नहिं बोली । हलुकागरुआ जाय न तोली ३
भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४
साखी ॥ अपरम परम रूप मगुरंगी, नहिं त्यहि संख्या आहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

एकै काल सकल संसारा । एकै नाम है जगतपियारा १

एक जो है लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जो ब्रह्म मानिलेइहै सोई माया शबलित ह्वैबो है सोई काल सकल संसार में है सो जगत् को पियार एक जो है रामनाम ताको बिना जाने याही ते जन्म मरण होइ है ॥ १ ॥

तियापुरुषकछुकथो न जाई । सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजायनहिं बोली । हलुकागरुआजायनतोली ३
भूखनतृषाधूपनहिं छाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४

वह माया शबलित ब्रह्मको स्त्री न कहि सकै न पुरुष कहि सकै सर्वरूप ह्वैकै संसार में समाइ रह्यो है २ वाको न रूप कहि सकै और न वह हलका गरुआ तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु होइ तो कहिजाय औ तौलि जाइ ३ जौनेलोक में न भूख है न तृषा है न धूप है न छाहीं है न दुःख सुख है तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्म रहै है ॥४॥

साखी॥ अपरमपरमरूपमगुरङ्गी, नहिंतेहिसंख्याआहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

वह साहबको लोक परमरूप है ताको प्रकाश जो है वह ब्रह्म सो परमरूप है कहे परम नहीं है तौने को आपनेही को मानिबो जो है कि वह ब्रह्म हमहीं हैं सो धोखा है तौनेके मगमें रँगे जीव हैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रकाशमें भरे रहे जे समष्टि जीव हैं ते व्यष्टि ह्वै गये हैं तिनकी संख्या नहीं है सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि आपही कल्पना करिकै वह प्रकाशरूप ब्रह्म को मान्यो कि वह ब्रह्म मैंहौं सो वह तो लोकप्रकाश है जीव वह प्रकाश ब्रह्म नहीं ह्वैसकै है यही धोखामें जीव बूड़ो जाइ है यह बड़ो आश्चर्य है और जो यह पाठ होइ "अपरमपारे परमगुरु ज्ञानरूप बहुआहि" तो यह अर्थ है अपरम जो है प्रकाशरूप ब्रह्म ताहू के पार जो है परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्म है ताको परम श्रेष्ठ कहे मालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो वह जो है प्रकाशब्रह्म ताको जो ज्ञान कियो कि ब्रह्म मैं हौं वहै जो है धोखाब्रह्म तेहिते बहुआहि कहे जीव बहुत ह्वैगये काहेते कि ज्ञान बहुतहै ज्ञानी ज्ञान करिकै ब्रह्म मानैहैं और योगी जे हैं ते ज्योति-रूप में आत्मा को मिलाइकै ब्रह्म मानै हैं इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्य मानै हैं और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज, कोई अष्टभुज, कोई देवी, कोई गणेश, कोई सूर्य इत्यादि कन में ऐक्य मानै हैं ज्ञान करिकै तेहिते ज्ञान नाना हैं और साहब तो मन वचन के परे वह लोक में एकही बनो है ॥ ५ ॥

इति सतहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७७ ॥

अथ अठहत्तरवीं रमैनी ॥ ७८ ॥

चौ० मानुष जन्म चुके जगमांझी । यहि तनकेर बहुत हैं सांझी १
तातजनाति कहै हमरो बाला । स्वारथ लागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोर पिय आही । बाघिनिरूप गरासै चाही ३

पुत्र कलत्र रहे लवलाये। जम्बुक नाईं रह मुँहबाये ४
काग गीध दोउ मरण बिचारैं। शूकरश्वान दोउ पन्थ निहारैं ५
धरती कहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिन कहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरत उबारों ७
ज्यहि घर को घर कहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुम आपन कै जानी। बिषयस्वरूप भुले अज्ञानी ९

साखी॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुखपाय॥
चेतत नाहीं बांवरे, मोर मोर गोहराय १०

मानुषजन्म चुके जगमांझी। यहि तनकेर बहुतहैं सांझी १
तातजननिकहैं हमरो बाला। स्वारथलागि कीन्ह प्रतिपाला २
कामिनिकहै मोरपियआही। बाघिनिरूपगरासै चाही ३

हे जीव! तैं मानुष जन्म जगत् के बीच में पायकै चूकिगयो साहब को भजन न कियो या तनके साझिया बहुत हैं १ और माता पिता कहै हैं हमारो पुत्र है आपने अर्थ में लागिकै प्रतिपाल करेहै २ और कामिनि जो परस्त्री है सो कहैहै हमारो बड़ो प्यारो पति है बाघिनिरूप मरति समय में गरासिओई चाहै है अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जाय है॥ ३॥

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये। जम्बुक नाईं रहमुँहबाये ४
कागंगीधदोउमरणबिचारैं। शूकरश्वानदोउपन्थनिहारैं ५
धरतीकहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिनिकहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरतउबारों ७

पुत्र कलत्र जो घरकी स्त्री को लालच लगाये रहै हैं धन लेबे की और वाको उनकी चिन्ता में मांस सुखान जातहै जैसे सियार मांस खाबेको मुँह फारेरहै है तैसे वेऊहैं ४ और काग जे हैं गीध जे हैं शूकर जे हैं श्वान जे हैं ते मरनको पन्थ तेरो निहारै हैं या बिचारै हैं कि जो मरै तौ हम मांस खायँ ५ और धरती कहै है कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाख मैं उड़ाय

लैजाउँ ६ औ अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते जरत में उबार होइ बचिजाय ॥ ७॥

जेहि घरको घर कहै गवारें। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुमआपन कै जानी। बिषयस्वरूपभुलेअज्ञानी ९
साखी ॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुख पाय ॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय १०

जेहि घर को शरीर को तू कहै है कि मेरोहै सो घर शरीर तेरे गले की बेरी कहै फांसी है अथवा बैरी है यमके यहां गला कटावेंगे ८ हे अज्ञानी! तौने शरीर को तू आपनो मानिकै विषयन में परिकै भूलिगयो है ९ सो यतने जेतने कहि आये ते यहि तनके साझी हैं तिनते जन्म भरि तैं दुःख पायकै हे बावरे! कहे मूढ़! मोर मोर तैं गोहरावै है कि यातन मेरोहै अजहूं चेत नहीं करै है कि यातनै मोको फांसे है ॥ १० ॥

इति अठहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७८ ॥

अथ उन्नासिवीं रमैनी ॥ ७९ ॥

चौ० बढ़वत बाढ़ि घटावत छोटी। परखतखर परखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलों कही। औरौ कहौं परै जो सही २
कहे बिना मोहिं रहो न जाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ३
साखी ॥ खाते खाते युग गया, अजहुं न चेतो जाय ॥
कहहिं कबीर पुकारि कै, जीव अचेतै जाय ४

बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी। परखतंखरपरखावतखोटी १
केतिककहौं कहांलों कही। औरौ कहौं परै जो सही २
कहे बिना मोहिं रहो न जाई। बेरहि लै लै कूकुर खाई ३

यह मायाको प्रपञ्च जो है सो बढ़ावत जाइ तो बढ़तई जाय है रङ्कते इन्द्रहू ह्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जाय है और जो घटावै लगै तो घटिही जाइहै और नानामतमें लागि मनमुखी बिचारै है

तब तो खर कहे सांचे है और जब काहू साधुते परखायो तब झूठही ह्वै जायहै १ और मैं केतिको बात कह्यो परन्तु पाथर कैसो पानी बहिजाइहै बेधै तो हई नहीं है मैं कहांलों कहों व औरऊ कहों जो सहीपरै कहे जो तोको सांच जानिपरै २ हे जीव! तेरे ये दुःख देखिकै मोको दया होइ है ताते विना कहे मोसों नहीं रहिजाइहै जौने बेरा रामनाम संसारसागर के उतरिबेको मैं बताइदेउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग ते खाइ जाइहैं कहे मेरो कहो तामें नहीं लगन देइ हैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यह पाठ होइ 'बिरहिनि लैलै कूकुर खाइ' तो यह अर्थ है कि बिरहिन जे लोग हैं जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिनको गुरुवालोग खाइ जाइ हैं अथवा बीर जे साहब हैं तिनते हीन जे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ॥ ३ ॥

साखी ॥ खाते खाते युग गया, अजहुँ न चेतो जाय ॥
कहँहिं कबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ४

सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि खातखात केतन्यो युग बीति गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटै है अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नहीं चेत करै है सो यह जीव अचेतै कहे विना साहब के चेत किये अर्थात् विना साहबके जाने नरकको चलोजाइहै॥४॥

इति उन्नासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७९ ॥

अथ अस्सीवीं रमैनी ॥ ८० ॥

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसों भेटनसपना १
खराखोट जिन नहिं परखाया। चहतलाभसों मूर गमाया २
समुझि न परै पातरी मोटी। आछी गाढ़ी सब भो खोटी ३
कह कबीर केहि देहौं खोरी। जब चलिहौं झिन आशा तोरी ४

बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २

हे जीव ! आपही ते तुम ज्ञान योग वैराग्य तपस्या में साहस करिकै बहुतक्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहीं है जौन छुड़ावनवारो है १ जिन जीव गुरुवालोगनके समुझाये नानामत में लागि कहूं सांच साधूते खरा खोट नहीं परखायो ते जीव चाहत तो मुक्तिको लाभ हैं परन्तु जिन सुकर्मनते अन्तःकरण शुद्धद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो ॥ २ ॥

समुझि न परै पातरी मोटी । आछीगाढ़ी सबभो खोटी ३
कहकबीर केहि देहौंखोरी।जबचलिहौंझिनआशातोरी ४

सो जिन मूर गमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटी कहे विभु नहीं समुझि परै है काहेते आछी जो मति है तामें निश्चयरूप गाढी नहीं परै है कि यतनोई विचार है "नेति नेति" कहे है याते सब खोटही ह्वैगयो ३ श्रीकबीरजी कहैहैं सांचो जो है साहब रक्षक ताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि हम ब्रह्म ह्वैजायँ तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीन होउगे फिरि संसार परोगे तब काको खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्म हौ ॥ ४ ॥

इति अस्सीवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८० ॥

अथ इक्यासिवीं रमैनी ॥८१॥

चौ० देव चरित्र सुनौ रे भाई । सो तो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजे सुनी मँदोदरि तारा । जेहि घर जेठ सदा लगवारा २
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया।सुरुगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कह कबीर हरिके गुणगाया । कुन्तीकर्ण कुँवारेहि जाया ४

देवचरित्र सुनौरे भाई । सोतो ब्रह्माधिया नशाई १
ऊजेसुनीमँदोदरि तारा । ज्यहिघर जेठ सदालगवारा२

बड़े बड़े जीव माया में परिकै भूलिगये हैं छोटे जीवनको कहा कहिये हे भाइउ ! देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग

भूलि गये १ ऊजे मन्दोदरी तारा जेहैं तिनके घर में जेठही लगवार होत आयो है जो कहो सुग्रीव बिभीषण को कहते हौ तो तिनके घर न कहते तिनके कहते औरई लहुरे हैं वे जेठ कहे हैं सो ब्रह्मा के हवाले कह्यो ब्रह्मा के पुत्र आपुसै में काज करतभये सो पुलस्त्य जेठ हैं ते लहुरे भाईकी कन्या को बिवाहे या मन्दोदरी के घरको हवाल भयो और ऋक्षराज स्त्री भये तिन्हैं सूर्य और इन्द्र गहे तिनते सुग्रीव और बालि भये सो प्रथम सूर्य ग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई और सूर्य ते जेठ इन्द्र हैं तेऊ पीछे ग्रहण कियो तारा के घरको हवाल भयो सो तारा मन्दोदरीके घर जेठही लगवार होत आयो है जो लहुर पाठ होइ तो सुग्रीव बिभीषण बने हैं शकै नहीं है ॥ २ ॥

सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया। सुरगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कहकबीर हरिके गुणगाया। कुन्तीकर्णकुँवारेहिजाया ४

सुरपति अहल्याको गमन करतभयो और सुरगुरु जे बृहस्पति हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ३ और कुन्ती जो हैं सो कुँवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या डौलके हैं जो नीचहू नहीं करै है परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावत भये ताते इनहूंकी सज्जनहीं में गिनती भई ऐसहु में हरि रक्षा कै लियो सो हे जीव ! तैं केता अपराध कियो ॥ ४ ॥

इति इक्यासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८१ ॥

अथ बयासिवीं रमैनी ॥ ८२ ॥

चौ० सुखकबृक्षयकजक्त उपाया। समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युग चारी। फलद्वै पापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुबर्णिनजाही। कै चरित्र सो तेही माही ३
नटवरसाजसाजिया साजे। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्ति न देखा। शिवशक्ती बिरञ्चिनहिं पेखा ५

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै, होत सकल की हानि ६

सुखक बृक्ष यकजक्क उपाया। समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युग चारीं। फल द्वैपाप पुण्य अधिकारी २
स्वाद अनँद कछुबर्णिनजाही। कै चरित्र सो तेही माही ३

साहबको बिसरायकै सूखा जो वृक्ष है यह संसार माया कहे पावत भयो विषय विषरूप माया न समुझिपरी संसारी ह्वैगयो १ शरीर धारणकै छौ उरमिन को धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षी है जौने वृक्ष चारिउ युगमें पक्षी ह्वैगयो अथवा क्षयमान जे नवगुण हैं तिनको धारण कीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षी है नवगुण कौन हैं सुख दुःख इच्छा जल द्वेष धर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जो है पक्षी सो पापपुण्य फल ताको खाइबेको चारिउयुग अधिकारी है २ तिन फलनमें बहुत स्वाद है कछु कहो नहीं जाय है तेही वृक्ष में जीवरूप पक्षी चरित्र करै है सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

नटवरसाजसाजियासाजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहाबपुरायुक्ति न देखा। शिवशक्ती बिरञ्चि नहिंपेखा ५

नटके बटा कैसा साज साजि कहे नाना रूप धारण करिकै आवै जाय है जो बाजीगर खेल खेलै है तौनै देखै है अर्थात् जे ब्रह्म में लगे ते ब्रह्महो देखै हैं जे जीवात्मामें लगे हैं ते जीवात्मै को देखै हैं इत्यादि जो जौने मत में है सो ताही में लगो है सांच बताये लरैधावै है काहेते उनकी बासना अनेक जन्म ते वही है ४ गुरुवा करिकै मोहा जो बपुरा जीव है सो साहबके जानिबे की युक्ति न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्व कहिआये हैं सो या शिवशक्ति विरञ्चि मायारूप या बात न जानतभये॥५॥

साखी॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि॥
जो जानै सो बाचि है, होत सकलकी हानि ६

परदे परदे कहे विना साहब के जाने संसार में जीव चलिगया कहे संसार में जातरह्ना वाणी जो है वेद शास्त्र सो तात्पर्य करिकै साहब को बतावै है सो जीवको न समुझि पर्यो जो कोई वेद शास्त्रादि में तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानै सोई बाचै है अपरोक्ष अर्थ जगत्सुख जानिकै सबकी हानि होतही जाय है ॥ ६ ॥

इति बयासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८२ ॥

अथ तिरासिवीं रमैनी ॥ ८३ ॥

चौ० क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिन अबधू गुरु ज्ञान लखाया। ताकर मन तहँई लैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै। पांचों मेटि एककरि बूझै ३
जीवहि मारि जीव प्रतिपालै। देखत जन्म आपनो घालै ४
हालै करै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमत राऊ ५
साखी ॥ मनमत मरै न जीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्य सनेही रामबिन, चले अपनपौ खोय ६

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिनअबधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँई लैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै। पांचों मेटिएककरि बूझै ३

जैसे क्षत्रिय क्षत्रियाधर्म करै है तौ वाके सवाई कर्म बढ़ै हैं रण में पैठिकै शत्रुनको मारिकै शूरतारूप कर्म बढ़ै हैं ऐसे जीव यह क्षत्रिय हैं क्षत्रिय जे साहब हैं तिनकी जाति है सो संसार रण में पैठिकै मन माया धोखा ज्ञान ई शत्रुमारि साहबके मिलनरूप शूरता बढ़ै है १ जे अबधू कहे बधू जो माया त्यहिते रहित रामोपासक जे साधु ते गुण जे साहब हैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताको मन तहँई लय भयो मनोनाश वासनाक्षय ह्वैगई जब मनोनाश भयो तब धाया कहे हंसरूप में स्थित ह्वै साहबके पास

को धावत भयो २ क्षत्रिय सो है जो कुटुम्ब सों जूझै कुटुम्ब याके कोहै पांचौ शरीर तिन को मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप त्यहि करिकै साहब को बूझै ॥ ३ ॥

जीवहिमारिजीवप्रतिपाले । देखतजन्मआपनोघाले ४
हाले करै निशाने घाऊ । जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ५

जीवहि मारिकै कहे जो और और को जीव है रह्यो है आपने को ब्रह्म मानै है आपने को औरै औरै देवताके दास मानै है यह नाम मिटाइदेइ और यह जीवको जीव नाम मिटाइदेइ और हंसरूप में स्थित ह्वैकै जीव को नाम रामदास धरावै तबहीं यह जीव को प्रतिपाल होइहै आपने देखते जन्म मरणको लैहै कहे छोड़िदेइ है ४ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हाले निशाने में घाउ करै अर्थात् मनोनाश वासक्षय हाले ह्वैजाइहै और जे मनमतराउहैं अपने मनमतमें अपनेको राजा मानै हैं जूझिकै संसार में परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्म मानै है कोई आत्मैको मालिक मानै है ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपने को कृष्णमानि जूझिपर्‌यो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारे जाय हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ मन मतमरैनजीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्यसनेहीरामाबिन, चले अपनपौ खोय ६

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्व नहीं जाइ है जिअब तो तब कहिये जब साहब को जानिकै साहबके लोकहि में जन्म मरण छूटि जाय मारिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीन होय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सो शून्य जे हैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमती हैं ते मरैहैं न जियै हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनको है तामें प्रमाण ॥“ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः”॥ ६ ॥

इति तिरासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८३ ॥

अथ चौरासिवीं रमैनी ॥ ८४ ॥

चौ० जोजिय अपने दुखै सँभारू । सो दुख व्यापिरहो संसारू १
माया मोह बन्ध सब लोई । अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोर में सबै बिगूता । जननी उदर गर्भमहँ सूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंरा अस गये बहूता ४
उपजै खपै योनि फिरि आवै । सुखकलेशसपनेहुँ नहिंपावै ५
दुख संताप कष्ट बहु पावै । सो न मिला जो जरत बुझावै ६
मोर तोर में जर जग सारा । धिक जीवन झूठो संसारा ७
झूठे मोह रहा जगलागी । इनतेभागिबहुरिपुनिआगी ८
जे हितकै राखे सबलोई । सो सयान बाचे नहिं कोई ९

साखी ॥ आपु आपु चेतै नहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीरसपनेजगे, निरस्थि अस्थि नहिं कोइ १०

जोजियअपनेदुखैसँभारू । सोदुखव्यापिरहो संसारू १
मायामोह बन्ध सबलोई । अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोरमें सबै बिगूता । जननी उदर गर्भमहँसूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंरा अस गये बहूता ४

हे जीव ! जौन दुःख यह संसार में व्यापिरह्यो है तौने अपने दुःखको सँभारु अर्थात् तौने दुःखते निकसु १ मायामोह में सब बँधेहौ सो अल्पतो लाभ है अर्थात् विषयसुखते थोरही है तिन सबके मूल सम्पूर्ण दुःख के मेटनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइ हैं कहे बिसरि जाय हैं २ मोर तोर याही में सब जीव बिगूता कहे अरुझिरहेहै याहीते जननीके उदर में सदा सूतत है अर्थात् गर्भवास नहीं मिटैहै ३ जैसे भौंरा फूलनमें रस लेनको जाइहै संध्या ह्वैगई तब कमल संपुटित ह्वैगयो तब फँसि गयो तैसे ये जीव बहुरूपते बहुत पराक्रम करिकै खेल खेलै हैं कहे विषय रसलेनको जाय हैं माया में फँसिजाय हैं ॥ ४ ॥

उपजैंखपै योनिफिरिआवै । सुखकलेशसपनेहुँनहिंपावै ५

दुखसंताप कष्ट बहुपावै। सो न मिला जो जरत बुझावै६

उपजै है और खपै कहे मरै है पुनि पुनि योनि में फिरि आवै है सुखको लेश सपन्यो नहीं पावै है५ दुःख संताप कष्ट बहुत पावै है जो आगीते जरत बुझावै सो गुरु नहीं मिलैहै इहां दुःख संताप कष्ट तीनबार जो कह्यो तामें कुछ भेद है दुःख वह कहावै है जो काहू मारे होइ है और जो रोगादिकन करिकै होइ है सो कष्ट कहावै है और जो कोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ॥ ६ ॥

मोर तोरमें जर जग सारा। धिकजीवन झूठो संसारा७
झूठमोहरहाजगलागी। इनतेभागि बहुरिपुनि आगी ८
जे हितकै राखे सबलोई। सो सयान बाचे कहिं कोई ९

और तोर मोर करिकै सब संसार जरजाइ है यह संसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूंठो है सो ऐसे झूठे संसार में जीवनको जीबेको धिक्कार है ७ मायाको जो मोह है सो सब संसार में लागिरह्यो है सो झूठो है इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झूठ ब्रह्माग्निमें जरै है ८ जे जे सबलोई यह लोगन को हितकै राखै हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचैहैं तू कैसे बचैगो ॥ ९ ॥

साखी॥ आपु आपु चेतै नहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ॥
कहकबीरसपनेजगै, निरस्थिअस्थिनहिंकोइ १०

आपु आपु कहे आपने स्वरूप को नहीं चेतै है कि मैं परम पुरुष श्रीरामचन्द्र के हौं सो मैं जो समझाऊंहौं तो रिसहा होइ है सो कबीरजी कहै हैं कि जो सपने जागै सपन कहा है देह को अभिमानी मनमुखी है जागै कहे अपने मनते यह बिचारिलेइ कि मैं.जाग्यो मैं ब्रह्म ह्वैगयो अथवा आपने को जान्यो महीं सबको मालिक हौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं है मैं अपनेको जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहब को न मान्यो सो

निरस्थि कहे नास्तिक है सो अस्थि कहे आस्तिक न होइ है सो कहा जागैहै नहीं जागैहै अर्थात् वह ज्ञानतो धोखा है संसारसमुद्र ते तेरी रक्षा कहा करैगो.ताते वह साहबको समुझि जाते तेरो संसारसमुद्र ते उबार करि देइ ॥ १० ॥

इति चौरासिवीं रमैनी सम्पूर्णम् ।

इति ॥

अथ पाहिला शब्द ॥ १ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी । नारी एक पुरुष दुइ जाये बूझो पण्डित ज्ञानी १ पाहन फोरि गङ्गयक निकरी, चहुँदिशि पानी पानी । तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी २ उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी । वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिन पानी ३ नारी सकल पुरुष वहि खायो, ताते रहेउ अकेला । कहै कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ४ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी ॥

नारी एक पुरुष दुइ जाये, बूझो पण्डित ज्ञानी १

हे सन्तों,हे जीवो ! तुमतो शान्तरूप हौ गुरु जे हैं सबते श्रेष्ठ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतो कहे सातो जे भक्ति हैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात् सगुण निर्गुण के.परे मन वचन के परे है कौन सातभक्ति हैं ते कहै हैं शान्त प्रथम ताकर द्वै भेद सूक्ष्मा-सामान्या सो शान्त के सूक्ष्मा के सामान्या के जुदे जुदे लक्षण हैं ताते तीनि भक्ती ये हैं औ दास्य, सख्य, वात्सल्य, शृङ्गार चारिये मिलाय सात भक्ति भई सोई जे हैं सातौ रस हैं ते मन वचन ये नहीं आवै हैं जब प्राप्ति होइ हैं तबहीं जानि परै है कि ऐसे हैं सो या भांति साहब की जे सातौ भक्ति हैं ते गुप्त ह्वै गईं काहेते कोऊ न जानत भयो सो कहै हैं नारी जो है कारणरूपा माया

सो द्वै पुरुष को प्रकट कियो एक जीव दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्म ईश्वर प्रकट भये हैं सो आदि मङ्गलमें कहि आये हैं "जनी प्रादुर्भावे" धातु है या जायौ को अर्थ प्रकट करबोई है और माया ते जीव ईश्वर प्रकट भये हैं तामें प्रमाण "मायाख्यायाः कामधेनोर्वत्सौ जीवेश्वरावुभाविति। जीवेशावाभासेन करोति माया चाविद्या च" (इति श्रुतेः) सो हे परिडत ! ज्ञानी तुम बूझो तो सारासार के विचार करनवारे सांच हौ यह वाणी जो है सोई तुमको भरमाइ दियो है ॥ १ ॥

पाहनफोरिगङ्गयकनिकरी, चहुँदिशि पानी पानी ॥
तेहि पानी दुइ पर्बत बूड़े, दरिया लहरि समानी २

पाहन कहिये कठिनको सो कठिन मन है ताको फोरिकै गङ्गा निकँसी नानापदार्थनमें जो राग होइ है सोई गङ्गा हैं सो वही रागरूपा माया में परिकै जीव संसार में रागकरि बूड़िगये और ईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वर जे हैं तेई दुइ भारी पर्वत हैं ते बूड़िगये और दरिया जो धोखाब्रह्महै तामें रागरूपी जो है गङ्गा ताकी जो लहरिहै सो समाइजातीभई अर्थात् सब धोखही में राग करत भये सांच वस्तु में जिन जाना तेई बाचे अथवा वही राग गङ्गा लहरि संसारसागर में समाइजाती भई सबजीव ईश्वर संसार में रागद्वेष करिकै बूड़िगये अथवा वहै जो वाणी गङ्गा सो पाहन जो मन है तौनेको फोरिकै निकरी है सो चारिउ ओर पानी पानी ह्वै रही है तौने पानी दुइ पर्वत बूड़े एक जीव एक ईश्वर और गङ्गा समुद्र में समानी हैं इहां वाणीरूप गङ्गा कोपर्यवसान दरिया जो ब्रह्म है ताही में होत भयो ॥ २ ॥

उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी ॥
वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिन बानी ३

मक्खी जे हैं जीव ते तरुवर जो है देह तामें उड़िकै आपने आपने बासननते लागत भये अर्थात् प्रलय जब भई तब वही ब्रह्म

में लीनभये पुनि जब सृष्टि भई तब पुनि शरीर पावत भये अथवा मक्खी जे हैं जीव ते संसारवृक्ष में लागत भये ते सब एक वाणी बोलैहैं कि एक ब्रह्महीहै दूसरो नहीं है साहबको नहीं जानैहैं सो वही मक्खी जो जीव है ताके मक्खा नहीं है कहे प्रथम जीव जो हिरण्यगर्भ समष्टिजीव है.ताके पति नहीं है परन्तु विना पानी गर्भ रहतई भयो जीवते संसार प्रकटै यह आपहीते नाम को जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तो याको उद्धार करिबो रमानामदियो बाकी मेरे नाम मेरो अर्थ जानिकै मेरे पास आवै संसार न होइ ॥ ३ ॥

नारी सकल पुरुष वहि खाया, ताते रह्यो अकेला ॥
कहै कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला. ४

नारी जो है वहै कारणरूपा माया सो सबजीव ईश्वर जे पुरुष हैं तिनको खाइलियो कहे आपने पेटमें डारिलियो अर्थात् उनके काहूके ज्ञान न रहिगयो आपनो चेरो बनाइ लियो तेहिते हे संतो, हे जीवो ! तुमतो शुद्ध हौ इनको छोड़िदेउ तब साहब जे हैं तेई छोड़ाइ लेइँगे अकेला रहो कहे अकेल जे सबके साहब परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके ह्वैकै रहौ जो जीव ईश्वरनको संग करौगे तो तुमहूंको माया धरिलेइगी श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो अबकी समुझै कहे यहं मानुष शरीर पाइकै समुझै सोई गुरू है तौने जीवको हम चेला ह्वैजाइँ अर्थात् ताके हम सेवक ह्वै जाइँ जो जो हमसों पूछै सो सब वाको बताइ देइँ कछू गोप्य नं राखैं अथवा सो हम पूछिलेइँ कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनी भांति ते छूट्यो सो कबीरजी तो कबहूं बँधिकै छूटै नहीं हैं ताते कबीरजी कहै हैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तो हम पूछि लेइँ बँधिकै छूटै कैसे सुख होइ ॥ ४ ॥

इति पहिला शब्द समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा शब्द ॥ २ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै । काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १ उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै । नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिम्ब प्रकासै २ बिन चरणनको दुहुँदिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै । ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३ औंधे घड़ा नहीं जल डूबै, सूधेसों घट भरिया । जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करु, गुरुप्रसाद ले तरिया ४ पैठि गुफामें सब जग देखै, बाहर कछुव न सूझै । उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५ गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै । नटवर बाजीपेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६ कथनी बदनी निजुकै जोहैं, ई सब अकथकहानी । धरती उलटि अकाशहि बेधै, ई पुरुषहि की बानी ७ बिना पियाला अमृत अचवै, नदी नीरभरि राखै । कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ॥ ८ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै ॥

काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १

हे सन्तो, हे जीवो ! तुमतो चैतन्यरूप हौ तुम काहेको सोवौ हौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहौ मायादिक तो जड़ हैं और तिहारो अनुभव जो ब्रह्म है सोऊ जड़ है काहेते कि तिहारो मन तो जड़ है ताहीकी कल्पना ब्रह्म है जो कहो मनको बिषय ब्रह्म है यह तो कोई वेदान्त में नहीं है तो जहांभर मन वचनमें आवै तहांभर अज्ञान कल्पित है और "अहं ब्रह्मास्मि" में ब्रह्म है यह मानिबो तो मूलाज्ञान में है यह वेदान्तको सिद्धान्त है जैसे धूरि धूम बादर घटादिक के आकाशही रहिजाय है कबीरजी कहै हैं कि तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ जहांभर ब्रह्म कहै हैं और विचार करै हैं सो मन वचन में आइजाइहै ताते मनहीं को कल्पित है ताते वोऊ जड़ हैं सो तुम नहीं हौ तुमतो चैतन्य हौ तिहारे

रूप को काल नहीं खाय है और कौनौ कल्पना नहीं व्यापै है अर्थात् कौनौ तुम्हारे स्वरूप में कल्पना नहीं उठैहै और तेरो जो स्वरूप है याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के समीपरहै है सो रूप जरा जो बुढ़ाई है तातें नहीं छीजै है अर्थात् कबहूं बुढ़ाई नहीं होइ है सदा किशोर बनोरहै है ॥ १ ॥

उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै ॥
नवग्रह मारि रोगिया बैठे, जलमें बिम्ब प्रकासै २

रागरूपी जो है गङ्गा सो संसारमुख ब्रह्ममुख ह्वैरही है सो जो उलटै साहबमुख होइ साहबमें जीव अनुराग करै तो समुद्र जो है संसारसागर और धोखाब्रह्मसागर ये दुहुंनको सोखिलेइ और शशि जोहै जीवात्मा मानिबो कि एक आत्मही है दूसरो पदार्थ नहींहै यह ज्ञान और सूर जोहै नाना निरञ्जनादिक ईश्वरनके दास मानिबेको ज्ञान तौनेको गरासिलेइहै और यह सांचो साहबको है जान याको देइहैं संसारवालो जो रोग है सो पारखहीते जाय है सो नवग्रह जब निबल होइहै तब रोग होइहै सो नवग्रह नवद्रव्य हैं नवद्रव्य के नाम पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, आत्मादिक मन तिनको मारिकै कहे मिथ्या मानिकै और आपनी आत्मा को साहब को दास मानिकै बैठे तब रागरूपी जल में बिम्ब जो है शुद्ध साहब को अंश याको स्वरूप जाको प्रतिबिम्ब धोखाब्रह्म है और संसार है तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै ॥ २ ॥

बिनचरणनकोदशादिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै ॥
ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३

तब विना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुख चलिबो याको छूटिगयो अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन ह्वै गयो तब नवधाभक्तिको छोड़िकै दहु कहे दशौ जो साहबकी अनुरागात्मिका भक्ति हैं तौने के दिशा को धावै है अथवा नवद्वार को

छोड़िकै दशो द्वारको जोहै मकरतार साहबके इहांकी डोरिलगी है तहांको धावै है और शरीरन को जे प्राकृत नयनहैं ते याके न रहिगये साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौनेकै नेत्र करिकै साहब को चिदचिद्रूप यह संसार सो सूझि परन लग्यो कहे बूझिपरनलग्यो तब अरे मूढ़! भ्रमरूप जोहै ससा खरहा अहंब्रह्म बिचार सो तैं जोहै समर्थसिंह ताको ग्रासै है सो वह तो धोखाहै वही भर्म भूलि गयो सो हे जीवो! यह अचरज कोऊ बूझौ और जौन ज्ञान मैं कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो जो कबहूं न होइ नई बात होय सो यह आश्चर्य है ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे वह ब्रह्म तुम्हारई अनुभव है ताहीमें तुम भुलान हौ॥३॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया, सूधे सों घट भरिया॥
जेहि कारण नर भिन्नभिन्न करु, गुरुप्रसाद ते तरिया ४

औंधा घड़ा जो जल में डारि दीजै तौ नहीं डूबै है जल नहीं भरि आवैहै सो तैं जो साहबको पीठि देकै ब्रह्ममें और संसार में लगै सो तो धोखाहै जैसे सूधे घट में जलभरि आवै है तैसे तैंहूं साहबकी ओर मुखकरु जब साहब तेरे ऊपर प्रसन्न होइगो तबहीं तैं ज्ञान भक्ति करिकै पूरा होइगो जा कारण नर भिन्न भिन्न करै है कहे भिन्न भिन्न पदार्थ मानै है और सब पदार्थ साहबको चिद-चिद्रूप करिकै नहीं देखै है सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठ अन्धकारको दूर करनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्र-सादते तरोगे अथवा साहबके बतावनवारे अन्धकारके दूर करन-वारे जब गुरु मिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरोगे॥ ४॥

पैठि गुफा मों सब जगदेखै, बाहर कछुव न सूझै॥
उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफा है तौनेमें पैठिकै कहे श-रीर पाइकै चिदचित् साहबको रूप सब संसार याको सूझिपरै

और साहबके रूपते बाहिरे और कुछ वस्तु न सूझिपरै सुरतिरूपी जो बाण है सो जगतुमुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख ह्वै रहा है सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिव कहे राजा जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगावै यह बात जो कोई शूरा होइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्माज्ञान की एक आत्मै सत्य है तिनको जीत लेइ सो बूझै तबहीं जन्म मरण याको छूटै है॥ ५ ॥

गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै॥
नटवर बाजी पेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६

गायन जो है बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहब को कहै हैं तौनेको तो कबहूं नहीं गावै है अनबोला जो निराकार धोखाब्रह्म है जो कबहूं बोलतै नहीं है सो कुसे पूरपरै कौनीतरहते अनबोला को गावै हैं सो आगे कहै हैं वह जो धोखाब्रह्म को पेखना है सो नटवत् बाजी है कहे झूँठै है वहां कछू नहीं देखो परै है जो कहो अनहद को हेतु तो बढ़ावै है कहे दशौ धुनि अनहद की तो सुनि परै है॥ ६ ॥

चौ० कथनी बदनी निजुकै जोहै, ई सब अकथ कहानी॥
धरती उलटि आकशहि बेधै, ईपुरुषहिकी बानी ७

सोई तो सब कथनी बदनी है जो बिचारिकै देखो तो अनहद आदि दैकै ई सब अकथ कहानी हैं साहबके जाननवारे पूरेसन्तन के कहिबे लायक नहींहै झूंठेहैं कछु इनमें है नहीं सब मन के अनुभव हैं पुरुष जे हैं तिनकी यह बानी कहे स्वभाव है धरती जो जड़माया है ताको उलटिदेइ है वाको मुख मुरकाइ देइहै वासों आप फिरि आवैहै और आकाश जो ब्रह्म है ताको बेधै कहे ब्रह्म के पारजाय है तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः। तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता रसिका हरिवेदिनः" और कुपुरुष जेहैं ते संसार में लगे हैं कि धोखाब्रह्म में लगेहैं उनकी बानी कहे यहै स्वभाव है॥ ७ ॥

बिना पियाला अमृत अचवै, नदीनीर भरिराखै ॥
कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ८

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचौं शरीर हैं तेई पियाला हैं स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानन्द पियैहैं और महाकारण कैवल्य ते ब्रह्मानन्द पियैहैं पांचौ शरीर पियाला बिना कहेते निकासिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूप है तामें स्थित ह्वैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृत है ताको अँचवै हैं जाते जन्म मरण न होइ तिनको जगत्के रागरूपी नीर करिकै भरी जो नदी है जाको आगे वर्णनकरिआयेहैं नदियानीर नरकभरि आई सो तिनको राखे कहे छारईहैं अर्थात् भूरहीहैं अथवा संसारमें जो राग कियेहैं सो नरक भरी हैं ताको निकारिकै रसरूपा भक्ति जो साहबकी नीर ताको भरिराखै सो कबीरजी कहैहैं कि सोई युग युग जीवै है कहे वही को जनन मरण नहीं होय जो या भांति परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्रेमरूपी सुधारसको चाखैहै ॥ ८ ॥

इति दूसरा शब्द समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा शब्द ॥ ३ ॥

सन्तो घरमें झगराभारी । राति दिवस मिलि उठि उठि लागैं, पांच ढोटा यक नारी १ न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी । कोइ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २ दुर्मति केर दोहागिनि मेटै, ढोटै चाप चपेरै । कह कबीर सोई जन मेरा, घर की रारि निबेरै ॥ ३ ॥

सन्तो घर में झगरा भारी ॥
राति दिवस मिलि उठि उठिलागैं, पांच ढोटा यक नारी १

आगे या कहिआये हैं कि बिना पियाला अमृत अचवै हैं और जे नहीं अचवै हैं तिनको कहै हैं हे सन्तो, हे जीवो ! या घर जो शरीर है तामें भारी झगरा मच्यो है पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं

और नारी जो माया है सो उठि उठि लागै हैं कहे झगरा करै हैं यहै उपाधि राति दिन जीवको लगीरहै है ॥ १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी ॥
कोउ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहै हैं पांचौ बड़े सवादी हैं आकाश श्रोत्र इन्द्रिय प्रधान है सो शब्द चाहै है वायु त्वचा इन्द्रिय प्रधान सो स्पर्श को चाहै है और तेज चक्षुइन्द्रिय प्रधान है सो रूपको चाहै है और जल रसनेन्द्रिय प्रधान है सो रसको चाहै है और धरती घ्राणेन्द्रिय प्रधान है सो गन्धको चाहै है और माया जीवही को ग्रासन चहैहै कोई काहूको हटको नहीं मानै है आपही आपु मालिक ह्वैरहे हैं आपुहीं आपु आपनी मुरादि कहे वाञ्छा पूर करै हैं ॥ २ ॥

दुर्मति केर दोहागिनिमेटै, ढोटै चाप चपेरै ॥
कह कबीर सोई जनमेरा, घरकीरारिनिबेरै ३

दुर्मति जेहैं गुरुवालोग जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोंड़ि आरमहीको सत्यमानै हैं और या कहैहैं कि सब सुख करिलेउं वहां कछु नहीं है ऐसे जे नास्तिक हैं तिनकी दोहागिनि कहे नहीं ग्रहणलायक वाणी तिनको मेटिकै कहे छोंड़िकै ढोटा जेहैं पांचौ तत्त्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दबाइ लेइ अर्थात् वे न दबावन पावैं आपने आपने विषयन में मनको खैंचि लैजाइहै तहां मन न जानपावै सो कबीरजी कहैहैं कि जो पारिख करिकै शरीर जो घर है तौने में जो पांचौ इन्द्रिन को झगड़ा है ताको निबेरै कहे सब तत्त्व जे पृथ्वी आदिकहैं तिनमें लीन जे पांचौ इन्द्रिय हैं तिनकी जे विषय हैं तिनको निबेरा करै कि भगवत् की अचिदात्विग्रहहै पृथ्वी आदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है इन्द्रियरूप करिकै जो देखै और विषयरूप करिकै जो देखै है सो न देखै और यह मानै कि मैं जोहौं जीवात्मा तौने

की एको नहीं हैं काहेते कि मैं चिदचित् विग्रह हौं ये जड़ विग्रह हैं इनते भिन्न हौं सो ये जे हैं जड़ ते आत्मै की चैतन्यता पाइकै आपुस में लड़े हैं सो इनते जब आत्मा भिन्न ह्वै जाइगो तब सब शरीरै एको कार्य करन को समर्थ न होइगो कैसे जैसे शरीरते जीव इनते अपने को जुदो मानैगो हंसस्वरूप में स्थित होइगो सो इनहीं को चपाइ लेइगो घरकी रारि निबरि जायगी सो इस तरहते जो कोई अपने स्वरूपको जानि घर की रारि निबेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र में लगै सोई जन मेरो है ॥ ३ ॥

इति तीसरा शब्द समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा शब्द ॥ ४ ॥

सन्तो देखत जग बौराना। साँचकहौं तो मारनधावै झूठे जग पतियाना १ नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना। आतम मारि पाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना २ बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना। कैमुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना ३ आसनमारि डिम्भ धरि बैठे, मनमें बहुत गुमाना। पीतर पाथर पूजनलागे, तीरथ गर्व भुलाना ४ माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना। साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना ५ हिंदू कहै मोहिं राम पियारा, तुरुक कहै रहिमाना। आपुस में दोउ लरिलरि मूये, मर्म न काहू जाना ६ घर घर मन्त्र जे देत फिरत हैं, महिमाके अभिमाना। गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, ई सब भर्म भुलाना। केतिक कहौं कहा नहिं मानै आपहि आप समाना॥ ८ ॥

सन्तो देखत जग बौराना ॥
सांच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना १

हे सन्तो ! यह जगत् देखत देखत बौराइ गयो यह जानै है कि यह कल्पना मनहीं की है एकनको दुःख पावत देखै है एकन

को भूत होत देखै है एकनको रोगग्रसित देखै है एकनको घोड़े हाथी चढ़े देखै है एकनको राजा होत देखैहै और एकनको मरत देखै है आपही मरघट ज्ञान कथै है कि ऐसेही हमहूं मरिजाइँगे सो यहि देखत देखत भुलाइजाइहैं परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करै है जाते संसारते छूटै जो सांच बताऊं हौं कि सांच जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं जो चित् अचित् में व्यापक हैं सब ठौर बने हैं तिनमें लगौ जाते उबार है तो मारन धावै है और झूठे जे मायाब्रह्म हैं तिनके विस्तारके जे नानामत हैं तिनमें जो कोई लगावैहै तो तिनको सांच मानिके पतिआय जाय है ॥ १ ॥

नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना ॥
आतममारिपाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना २

बहुत नेमी धर्मी देखे हैं बहुत प्रातःस्नान करनेवालेन को देखेहैं स्वर्गको जाय हैं और आत्माको मारिकै कहे भगवान् को मन्दिर शरीर में साक्षात् सब के हृदय में भगवान् अन्तर्यामी-रूप ते बसे हैं तौने शरीरको फोरिकै मेढ़ा महिषादिकनको मूड़ लैके पीतर पाथर आदिक जे देवीकी मूर्ति हैं तिनमें चढ़ावै हैं और सब के उद्धार ह्वैबेको बतावै हैं तो इनमें कौन ज्ञान है कछू ज्ञान नहीं है काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानै हैं ॥ २ ॥

बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना ॥
करि मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें यहै जो ज्ञाना ३

और बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरान के पढ़नवाले ते जीवनको मुरीद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरी के हलालकरै की तदबीर बतावै हैं और आपौ हलाल करै हैं ॥ ३ ॥

आसनमारि डिम्भधरि बैठे, उनमें बहुत गुमाना ॥
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्ब भुलाना ४

और कोई चौरासी आसन कैकै प्राण चढ़ायकै डिम्भधरि बैठे

हैं कि हमारे बरोबरि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमान करै हैं यह योगिनको कह्यो और कोई पीतरकी मूर्ति कोई पाथरकी मूर्ति पूजै हैं और सर्वभूत में व्यापक जो भगवान् तिन भूतन को द्रोह करै हैं ते अज्ञानी हैं साहबको नहीं जानै हैं तामें प्रमाण " अह-मुच्चावचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे । नैव तुष्येऽर्चितोऽर्चायां भूत-ग्रामावमानिनः १ यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कल-त्रादिषु भौमइज्यधीः । यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्व-भिज्ञेषु स एव गोखरः २ " (इति भागवते) और कोई तीर्थन में लागे है इनहीके गर्वमें सब भुलाने हैं कि हम मुक्त ह्वै जायँगे ॥ ४॥

माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना ॥
साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना ५

अब कबीरपन्थिन को नानापन्थिन को कहैहैं कि माला पहिरे हैं टोपी दीन्हे हैं और नाकते लैकै अछिद्र ऊर्ध्वतिलक दीन्हे हैं ताही के अनुसार छाप पाये हैं या कहैहैं हमको गद्दीकी छाप भई है हम महन्त हैं पान पायो है और साखीशब्द गावत हैं पै वाको अर्थ भूले हैं साखीशब्द में जो साहबको रूप बतावै हैं जीवात्मा को सो नहीं जानै ॥ ५ ॥

हिन्दूकहै मोहिंरामपियारा, तुरुक कहै रहिमाना ॥
आपसमेंदोउलरिलरिमूये, मर्म कोइ नाहिं जाना ६

सो हिन्दू तो कहै हैं कि वेदशास्त्र में रामही पियारा है और मुसल्मान कहै हैं कि रहिमानही पियारा है यह द्विविधा लगाय राख्यो है या न जानत भये कि एकही हैं आपस में लड़िलड़िकै मरिगये मर्म कोई न जानत भये कि वही राम है वही रहिमान है साहब एकई है दूसरो नहीं है सब नाम वहीके हैं तामें प्रमाण "सर्वाणि नामानि निजमाविशन्ति" (इतिश्रुतिः) सो सबनाम वही में घटित होय हैं ॥ ६ ॥

घर घर मन्त्र जे देत फिरतहैं, महिमाके अभिमाना ॥

गुरुवासहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७

घर घर जे मन्त्र देत फिरत हैं अपनी महिमा के अभिमानते कि हम सिद्ध हैं योगी हैं पीर हैं औलिया हैं ऐसे जे गुरुवा हैं ते यही अभिमानते सबकी रक्षा करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै सब जीवनको और और में लगाइदेइहैं और कहै हैं कि हम उद्धार कै देइ हैं गुरुवासहित सब शिष्य बूड़िजाइँगे और जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि हम परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षक हैं ॥ ७ ॥

कहहिं कबीर सुनोहो सन्तो, ई सब भर्म भुलाना ॥

केतिक कहौं कहा नहिं मानै, आपहि आप समाना ८

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो! तुम सुनो ये सब भर्मई भुलानरहे हैं मैं चारौयुग में केतनो समुझाऊंहौं पै मानै नहीं हैं यद्यपि माया ब्रह्मकी एती सामर्थ्य नहींहै कि यह जीवको धरि लै जाय काहेते कि वह जीवही को अनुमान है सो यह आपनेनते आप यह भर्म में समाइ गयो है कि मैं ब्रह्म हौं आप आपहीते यह माया ब्रह्म सो आपस मानलियो है अर्थात् संगति कैलियो है तेहिते संसारी ह्वैगयो ॥ ८ ॥

इति चौथा शब्द समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां शब्द ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यक भो भाई । यह कहौं तो को पतिआई १ एकै पुरुष एकहै नारी, ताकर करहु बिचारा । एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २ एकै नारी जाल पसारा, जग में भया अँदेशा । खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेशा ३ नागफांस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई । ज्ञान खड्ग बिन सब जग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई ४ आपुहि मूलफूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई । कहैं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुरु लियो जगाई ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यकभोभाई। यह कहौं तो को पतिआई १
एकै पुरुष एक है नारी, ताकर करहु बिचारा॥
एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २

हे सन्तो, शुद्धजीवो, भाई! एक बड़ो आश्चर्य भयो जो मैं वाको कहौं तो को पतिआय १ एकै पुरुष है एकै नारी है कहे वही जीवात्मा पुरुषौ है नारिउ है ताको बिचारकरो वा कौन है एकै अण्डमा कहे एक ही प्रणवमें उत्पन्न चौरासी लाखयोनि तामें परिकै यह जीव संसारके भर्म में भुलाय रह्यो है अथवा एकही अण्ड कहे ब्रह्माडहि में॥ २॥

एकै नारी जाल पसारा, जगमें भया अँदेशा॥
खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेशा ३

यह जीव शरीर धर्यो तब एकै नारी जो वाणी सो नानाप्रकार की जो है कल्पना सोई है जाल ताको पसारि देतभई तब जग में नानाप्रकार को अँदेशा होत भयो कहे नानाप्रकार के मतन करिके जगत्के कारणको खोजतभये परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये कोई अन्त न पावत भये थकिकै "नेति" कहिदियो आत्मा को नानाविचार कियो कि कौनकोहै॥ ३॥

नागफाँस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई॥
ज्ञान खड्ग बिन सब जग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई ४

सो ये कैसें अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुणकी फांसी लिये घट के भीतर माया बनीरहै है सोई सब संसार को मूसिकै खाइ लेइहै मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वैतो नाना मतन में परे यह जानै हैं कि यही सत्य है माया जो है सो परमपुरुष को जानिबो मूसि लियो कहे चोराइलियो सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको और अपने आत्मा को जानिबो कि साहब को हौं मैं और मायादिकन को मिथ्या मानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताके

बिना सब जग जूझो जाइ है वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो तब साहब को अपनो स्वरूप का जानै ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई॥ कहहि कबीर तेई जन उबरे, ज्यहि गुरु लियो जगाई ५

आपहि वह मायामूल अविद्या है जगत् नानापदार्थ भई कहे कारण अविद्या भई और आपही फूल फुलवारी कहे कार्य अविद्या हैकै जगत्के नानापदार्थ भई और आपही कालरूप ह्वैकै चुनि चुनि खाइहै सो कबीरजी कहैहैं स्वप्न व जो माया तौनेते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरै हैं अर्थात् जो साहबको जानै हैं और अपने स्वरूप को जानै हैं कि मैं साहबको हौं ताको माया स्वप्नवत् है अथवा गुरु जे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र हैं तेई जिनको मोहनिशा में सोवत जगाइदियो है अर्थात् हंसरूप दैके अपने पास बोलाइलियो है तेई जन उबरैहैं कहे बचे हैं ॥ ५ ॥

इति पांचवां शब्द समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठा शब्द ॥ ६ ॥

सन्तो अचरज यकभो भारी। पुत्रधरलमहतारी १ पिता के संगहि भई बावरी, कन्यारहल कुमारी। खसमहिं छोंड़ि ससुर सँग गवनी, सो किन लेहु बिचारी २ भाई संग सासुरी गवनी, सासु सौतियादीन्हा। ननँदभौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहिलीन्हा ३ समधी के सँग नाहीं आई, सहजभई घरवारी। कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ॥ ४ ॥

सन्तो अचरज यक भो भारी। पुत्र धरल महतारी १

---

१ "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकृत्। अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते" (इति गुरुगीतायाम्) ॥

पिताके संगहि भई बावरी, कन्या रहल कुमारी ॥
खसमहि छोंड़ि ससुरसँगगवनी, सो किनलेहु बिचारी २

हे सन्तो ! एक बड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीव है ताकी महतारी जो माया है सो धरतभई १ अरु पिता जो ब्रह्म है ताके संग बावरी ह्वै जातभई कहे जारपुरुष बनावत भई अर्थात् माया शबलित ब्रह्म भयो और कन्या जो बुद्धि है सो पति को निश्चय कहूं न करतभई बिचारै करत रहिगई कुँवारिही रहत भई अर्थात् सब मतन में खोजत भई परन्तु निश्चय न होत भई पहिले पिता जो ब्रह्म है ताको खसम बनायो पुनि तौने खसम को छोंड़िकै ससुर जो है मन कहे मनैको अनुभव ब्रह्म है ताके संग गवनत भई सो हे जीवो ! अपनेते काहे नहीं विचारि लेउहौ कि माया हमारे मनमें पैठिकै और और में बुद्धि निश्चय करावै है २

भाई के सँग सासुर आई, सासु सौतिया दीन्हा ॥
ननँद भौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहि लीन्हा ३

प्रथम याको भय भई तब या बिचार कियो कि "द्वितीयाद्वै भयं भवति" तबही माया लगी याते भाई भयो मायाको भय सोई भाई के साथ नानामतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मन है सोई सासुर है तहां आई और तिन गुरुवनकी बाणी जो है सोई सासु है काहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणी होति है सो गुरुवनकी बाणी-रूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दीक्षारूप सो माया को देतभई सो मायाते दैवयोग छूटिउ जाय परन्तु दीक्षा सवति ते नहीं छूटै है सो मायाकी सवति दीक्षा काहेते भई माया तो ब्रह्म की स्त्री है सो ताही ब्रह्मको दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई ब्रह्मकी बहिनि भई मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पति बनायो सो भौजी आप भई सो ये दोऊ भौजी ननँद मिलिकै परपञ्च रच्यो है अरु जीव कहे है मेरो नाम कहदियो है कि जीवही सब करै है ॥ ३ ॥

समधी के सँग नाहीं आई, सहज भई घरवारी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ४

माया की कन्या बुद्धि कहि आये सो बुद्धि कुँवारेही में नानां जीवन को जारपति बनायो सब जीव साहब के अंश हैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सो माया के समधी भये तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनको विवाह लेत भई अर्थात् बश कर लेत भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! जीव जो पुरुष है सो माया के साथ नारी ह्वैगयो ॥ ४ ॥

इति छठा शब्द समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां शब्द ॥ ७ ॥

सन्तो कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १ लौकै रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं सांई । चिमिकि चिमिकि चमकै दृगदुहुँदिशि, अरबरहा छरिआई २ आपहि गुरू कृपा कछु कीन्हो, निर्गुण अलखलखाई । सहजसमाधि उनमुनी जागै, सहजमिलै रघुराई ३ जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा । परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कहु उपदेश कबीरा ॥ ४ ॥

सन्तोकहौतोकोपतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १

हे सन्तो ! झूठा जो ब्रह्म है ताको कहत कहत जीवन सांच बनिआई वही ब्रह्मको सांच मानलियो है अब जो मैं सांच साहबको बताऊं हौं तो को पतिआय अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्मही में लगे हैं ॥ १ ॥

लौकै रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं साँई ॥
चिमिकिचिमिकिचमकैदृगदुहुँदिशि,अरबरहाछरिआई२

लौ लगनको कहै हैं सो वा ब्रह्ममाहीं हौं या जो लौ कहे लगन ताही ज्ञानको रतन कै अबेधित अमोलिक मानि जामें गाहक

और साईं नहीं है अर्थात् दूसरा तो हई नहीं है गाहक साईं कहां ते होय सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानिलियो है तौने ब्रह्म उनके दृगन में चमकि चमकि चमकै है सर्वत्र देखो परै है जो कहो लोकप्रकाश ब्रह्मही देखो परैहै सो नहीं अरु जो या हठ है कि सर्वत्र ब्रह्मही है या जो बरहा है सो छरिआइ रह्योहै सर्वत्र ब्रह्मही देखाय है जैसे बरहा में जल बढ़े सर्वत्र फैलिजाय है ऐसे "अहं ब्रह्मास्मि" जो या ज्ञान सो जब बढ़यो तब याको हठहीरूप ब्रह्म देखो परै है॥ २॥

आपुहि गुरू कृपा कुछ कीन्हो, निर्गुण अलख लखाई॥
सहज समाधि उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई ३

सो गुरु जे हैं सद्गुरु ते जब आपही कृपा करै हैं तब निर्गुण जो ब्रह्म है ताको अलख लखावै हैं कि वे कछु वस्तुही नहीं हैं अर्थात् अलख हैं धोखा हैं साहब कब मिलै जब सहज समाधि उनमुनी मुद्राकरि जो सर्वत्र ब्रह्म देखै है तौन उनमुनीरूप निद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चित् अचित्रूप विग्रह या जगत् साहब को है या देखै तो सहजही में परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलैं॥ ३॥

जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा॥
परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कबीरा ४

अबेधित अमौलिक आगे कहिआये ताको तो नेतिनेति कहै हैं वामें काहूको मनहीं नहीं बेध्यो अर्थात् धोखही है अब साधुन को मन जो माणिक है अनुरागपूर्वक लाले सो साहब जे हीरा हैं तिनमें बेध्यो है ऐसे जे साहब चित् अचित्रूप जहां जहां देखौहौ तहां तहां सोई है यह कबीरजी कहैहैं कि यह परमतत्त्व को उपदेश मैं गुरुते पायो है॥ ४॥

इति सातवां शब्द समाप्तम्॥ ७॥

अथ आठवां शब्द ॥ ८ ॥

सन्तो आवै जाय सो माया । है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहुँ गया न आया १ क्या मकसूद मच्छकच्छ होना, शंखासुर न संहारा । अहैदयालु द्रोह नहिंवाके, कहहु कौनको मारा २ वेकर्ता न बराह कहावैं, धरणिधरै नहिं भारा । ईसब काम सहबके नाहीं, झूठकहै संसारा ३ खम्भफारि जो बाहरहोई, ताहिपतिज सबकोई । हिरणाकुश नख उदरबिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४ बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया । बिनां बिवेक सकल जग जहड़े, मायाजगभरमाया ५ परशुराम क्षत्री नहिं मारा, ईछलमायाकीन्हा । सतगुरुभक्ति भेद नहिं जानै, जीवअमिथ्या दीन्हा ६ सिरजनहार न ब्याहीसीता, जलपषाण नहिं बन्धा । वे रघुनाथएककैसुमिरे, जोसुमिरैसोअन्धा ७ गोपीग्वालगोकुल नहिं आये, करते कंस न मारा । है मेहरबानसबनको साहब, नहिं जीता नहिं हारा ८ वे कर्ता नहिं बौद्धकहावैं, नहीं असुरको मारा । ज्ञानहीन कर्ता सब भरमे, मायाजगसंहारा ६ वे कर्ता नहिं भये कलङ्की, नहीं कलिङ्गहि मारा । ई छल बल सब मायै कीन्हा, यतिनसतिन सब टारा १० दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ताकै जिनपूजा । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा॥ ११॥

अवतरण. सबते गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को वर्णन करिआये तिनके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहे आवै हैं ते अमायिक हैं काहेते कि आवै जाय नहीं हैं तिनहीं को परात्पर ब्रह्म करिकै वर्णत हैं तामें प्रमाण "पूर्णमदःपूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते" (इतिश्रुतेः)और ई मायातेपरेहैं और बहुधा निरञ्जनादिक जे नारायण हैं जिनको पांच ब्रह्म में कहिआये हैं ते उनकी उपासना करिकै उनको आपने ते अभेद मानिकै उनकी शक्तिको प्राप्ति ह्वैकै जगत्के कार्य सब करै हैं और जब मत्स्यादिक अवतार लेइ हैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उनते अवतार की शक्ति

पाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सब हैं तिनके उपासक हैं उपासना में देवको और अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है "देवो भूत्वा देवं यजेत्" तेहिते उनकी शक्ति ते ये सब अवतार लेइहैं जो कहो यामें कहा प्रमाण है कि ये सब उनहीं के उपासक हैं तो रामनाम के साहब मुखअर्थ में मकार स्वतः सिद्ध सानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौने में साहब के जे सबपार्षद हैं तिनको वर्णन करि आये हैं ये सब नारायणादिक रामनामही की उपासना करै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीन चाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामही में ह्वै जाय है रामनाम की ये सब उपासना करै हैं तामें प्रमाण "नाराधणःस्वयंभूश्च शिवश्चेन्द्रादयस्तथा। सनकाद्या मुनीन्द्राश्च नारदाद्या महर्षयः॥ सिद्धाः शेषादयश्चैव लोमशाद्या मुनीश्वराः। लक्ष्म्यादिशक्तयः सर्वा नित्यमुक्ताश्च सर्वदा॥ मुमुक्षवश्च मुक्ताश्च ऋषयश्च शुकादयः। तत्प्रभावपरं मत्वा मन्त्रराजमुपासते" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) जो कहो ये सब रामनाम में साहब मुख अर्थ तो जान्यो मायिक काहेभयो तो बिना माया शबलित भये जगत् के कार्य नहीं ह्वै सकै हैं तेहिते ये सब माया शबलित ह्वैकै कार्यकरै हैं परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इनके नहीं होइहैं जब महाप्रलय भई तब सब जीव साहब के लोक प्रकाश में समष्टिरूप रहे हैं जब उत्पत्ति भई तब फिरि कर्मकरिकै उत्पत्ति होइहै और ये सब नारायणादिकन की उत्पत्ति प्रलय नहीं होइहै काहेते कि ईश्वर हैं जब महाप्रलय भई तब जे साकेतलोक में नारायणादिकहैं ते इनके अंशी हैं उपास्य हैं तहां लीन ह्वैकै रहे जाइहैं उत्पत्तिसमय में समष्टिजीव व्यष्टि होन चाहै हैं तब राम नाम में जगत् मुख अर्थको भावना करै हैं तब साकेतनिवासी जे नारायण हैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकट होइ हैं साकेत में जे नारायणादिक हैं ते अमायिकहैं और तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जाय हैं ते माया

शबलितै हैं सो ये सब मत्स्यादि अवतारन को मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्व देखावै हैं कि साहब सबते भिन्न हैं ॥

सन्तो आवै जाय सो माया ॥

है प्रतिपाल काल नहिं वाके, नहिं कहुँ गया न आया १

हे सन्तो ! आवै जाय है सो तो मायाको धर्म है जे साहब हैं परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते सबको प्रतिपालहीभर करै हैं कहे उद्धारईभर करैहैं और काम नहीं करै हैं उनके काल नहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै अथवा जो कोई वे साहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र न कहीं गये हैं न आये हैं ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना, शंखासुर न सँहारा ॥
अहै दयालु द्रोह नहिं वाके, कहौ कौन को मारा २
वे कर्ता न बराह कहावैं, धरणि धरै नहिं भारा ॥
ई सब काम सहब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ३

अरु वे उद्धारकर्ता परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्र को क्या मकसूद कहे क्या मकसद है अर्थात् क्या प्रयोजन है मच्छ कच्छ होने का वे शंखासुरको नहीं संहार्यो है शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको मार्यो है अवतारते सब आइगये अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षा करै हैं उनके द्रोह नहीं है कहौ कौनको मार्यो है २ अरु वे उद्धारकर्ता साहब बाराह नहीं भये और न पृथ्वीको भारा धर्यो सो जौन सब कोई कहै हैं कि ई सब काम साहबही के हैं सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार झूठई कहै है सो साहब को बिना जाने कहै हैं ॥ ३ ॥

खम्भ फारि जो बाहर होई, ताहि पतिज सब कोई ॥
हिरणाकशिपु नख उदर बिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४
बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया ॥

बिना बिवेक सकलजग जहड़े, माया जग भरमाया ५

और खम्भ फारिकै बाहर ह्वैकै नरसिंहरूप ह्वै नखते हिरण्यकशिपुके उदरको बिदार्‍यो है तौनेन व्यापक ब्रह्म को सब कोई पतियाय है सो वे उद्धारकर्ता परमपुरुष श्रीरामचन्द्र नहीं हैं यह सब माया कियो है ४ और बावनरूप ह्वै वे साहब बलिको नहीं यांच्यो है मांगिबो पाइबो तो सब माया है सब जगत् के जीव बिना बिवेक जहड़े कहे भुलाय गये हैं सब जीवन को माया भरमाइ लियो है ॥ ५ ॥

परशुराम क्षत्री नहिं मारा, ई छल मायहि कीन्हा ॥
सतगुरुभक्ति भेद नहिं जानै, जीव अमिथ्या दीन्हा ६

अरु वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र परशुराम ह्वै क्षत्रिन को नहीं मार्‍यो है यह सब मायाही कियो है सतगुरु कहे सैकरन जे गुरुवा हैं ते साहब के भक्तिके भेद को जानै नहीं हैं जीव को ये जे नारायण हैं और सब जे अवतार हैं तिनही को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कहिकै कि वे सांच साहब येई हैं तिनही की जीवन को दीक्षा देइ हैं सो मिथ्या है ॥ ६ ॥

सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषाण नहिं बन्धा ॥
वे रघुनाथ एक के सुमिरे, जो सुमिरै सो अन्धा ७

और वे सिरजनहार कहे ताके सुरतिदियो ते ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं और जगत्को उत्पत्ति होइहै सो सीता को नहीं बिवाह्यो और सेतु नहीं बांध्यो सो वे निर्विकार उद्धारकर्ता रघुनाथ को और इन सब अवतारन को एक करिकै सब कोई सुमिरहैं सो जो एक करिकै सुमिरै हैं ते अन्धे हैं काहे ते कि वे तो रघुनाथ हैं रघु कहिये सब जीवको तिनके नाथ हैं वे काहेको काहू के मारनको अवतार लेइँगे वे निर्विकार और ये माया शबलित ह्वैकै सब अवतार लेइहैं जो कोई आवैजाय है सो मायिक है सो वे निर्विकार साहब और सविकार ये सब अवतार

एक कैसे होइँगे और रघु जीवको कहै हैं ते रघुशब्दके उत्पत्ति (रङ्घन्ते लोकाल्लोकान्तरं गच्छन्ति रघवो जीवास्तेषांनाथः) अर्थ-लोकते और लोक जाय ते जीव रघु हैं तिनके नाथ जे हैं तेई रघुनाथ हैं ॥ ७ ॥

गोपी ग्वाल गोकुल नाहिं आये, करते कंस न मारा ॥
है मेहरबान सबन को साहब, नहिं जीता नहिं हारा ८

और गोपी ग्वाल गोकुल में कबहूं नहीं आये हैं वे उद्धारकर्ता साहब कंसको करते नहीं मास्यो और न मथुरा गये काहेते कि ब्रह्मवैवर्त में लिखाहै "वृन्दावनं परित्यज्य पदमेकं न गच्छति" वे साहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारे हैं वे न काहूसों जीते हैं न हारे हैं न काहूको मारै हैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो वे तो रासई करत रहे हैं ॥ ८ ॥

वे कर्ता नहिं बौद्ध कहावैं, नहीं असुर को मारा ॥
ज्ञानहीन कर्ता सब भरमे, माया जग संहारा ९
वे कर्ता नाहिं भये कलङ्की, नहीं कलिङ्गहि मारा ॥
ई छलबल सब मायै कीन्हा, यतिनसातिन सब टारा १०

अरु बौद्धरूप ह्वैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनको संहार कराइडास्यो है सो सब माया कियो है वे मुक्तिकर्ता साहब नहीं कियो काहेते कि वे मुक्तिकर्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैंगे शोक ज्ञानहीन जेहैं ते भर्मे यह कहै हैं कि यह सब उद्धारकर्ता जो है सोई सब करैहै सो कर्ता नहीं करै है यह माया सब जगत्को संहारकरै है ९ अरु वे उद्धारकर्ता परम पर-पुरुष श्रीरामचन्द्र कलङ्की अवतार नहीं लियो और न कलिङ्ग-देशी जे म्लेच्छ हैं तिनको मास्यो है यह छलबल सब मायै कियो है यतिनको जो है सत्य सब ताको टारिदियो है अर्थात् यती जे रहे संन्यासी गोरखादिक तिनकर सत्य जो है साहबको जाननवारो मत तौनेको टारिदियो योगादिकनमें लगाइदियो ॥ १० ॥

दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ता कै जिन पूजा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा ११

नारायणै माया करिकै अवतार लेइहै ते सब ईश्वरी माया है कहे ईश्वररूपही माया है तिनको जिन पूजा कहे रामचन्द्र मानिकै न पूजो वैसे पूजो तो पूजो ईश्वर मानिकै न पूजो सो कबीर जी कहैहैं कि हे सन्तो! जो उपजै हैं और खपै हैं सो साहबते दूजो पुरुष हैं वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूं नहीं आवै जाय हैं तामें प्रमाण "पूर्णःपूर्णतमः श्रीमान् सच्चिदानन्दविग्रहः। अयोध्यां क्वापि संत्यज्य स कचिन्नैव गच्छति" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) "साकेते निश्यमाधुर्यधाम्नि स्वे राजते सदा" (शिवसंहितायाम्) जो कहो इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतार लिख्यो है सोई कबहूं आवै जाय नहीं है साकेतही में बनेरहैहैं जब कबहूं बाणयुद्धकी इच्छा चलै है तब यह अयोध्या साकेतई प्रकट होइ है अरु उहांके सब परिकार जसके तस प्रकट होइहैं यह ब्रह्माण्ड में तहां जैसे साकेत में विहारकरै हैं तैसे विहारकरै हैं याही हेतु ते ज्ञानी अज्ञानी जड़ चेतन कीट पतङ्गादिको मुक्ति करिदियो सो श्रुतिमें लिखै है "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" बिना ज्ञान मुक्ति नहीं होइहै सो जो वह साकेत केशव न होते तो मुक्ति कैसे होते जो कहो यह ब्रह्माण्ड वह साकेतई ह्वैगयो तो साकेत को आइबो तो आयो तो सुनो वह साकेत और यह अयोध्या एकई है इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे साकेत तो साहब के रूपई है सो वहो सर्वत्र पूर्ण है "अयोध्या च परंब्रह्म" इत्यादिक प्रमाण ते जब परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट विहार करन को होइहै तब प्रकट ह्वैजाय हैं और जब गुप्तविहार करनकोहोइहै तब गुप्त ह्वै जाइहैं तब साकेत जो प्रकट और गुप्त ह्वै जाइहै कैसे जैसे श्री कबीरजी को जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छा होइ है तब प्रकट होइ उपदेश करै हैं और जब देखै हैं और जब गुप्त उपदेश

करन होइहै तब गुप्त उपदेश करै हैं जाको उपदेश करैहैं सोई जानै है वे साकेतनिवासी श्रीरामचन्द्र जैसे सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्रपूर्ण है जो कहो उनके नामादिक तो अनिर्वचनीय हैं वे कैसे प्रकट वचन में आवैंगे तो नारायण जे रामावतार लेइहैं तेई हैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यञ्जित होइ हैं सो पीछे लिखिआये हैं जब उद्धारकर्ता साहब प्रकट होइहैं तब जे देखनवारे सुननवारे हंसरूप में स्थित हैं तेई वहीरूपते देखैंहैं सुनैंहैं सच्चिदानन्दात्मको भगवान् सच्चिदानन्द।तिमका अस्यव्यक्तिः यह श्रुति करिकै एकरूपता कहिआयें हैं याहीतेलोकहूको व्यापक कह्यो और नारायण जो रामावतार लै अशोकवाटिका में लीलाकियो सो वर्णनकरि मन वचन के परे जे साहब हैं तिनके लीला को व्यञ्जितकरैंहैं सो व्यञ्जित तो करैंहैं परन्तु मन वचनके परे जे साहबहैं तिनके नामरूप लीलाधाम मन वचनकेपरे साकल्य करिकै व्यञ्जितऊ नहीं करिसकैंहैं सो यह बात जो कोई साहब करिकै हंसरूप पाये हैं सो साहबके मन करिकै साहबको नामादिक जानै है और जपै है और साहबके दिये रूपकी आंखीते साहबको देखै है तामें वेदसारोपनिषद्को प्रमाण ३७ "जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्य पप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयंज्ञात्वेह विमुक्तोभवतीति १ सहोवाच कौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधामलीलामनोवचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशंकथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञापकाज्ञानादिति सपुनःप्रतिवक्ति २" अथैते श्लोका भवन्ति॥ "विरजायाःपरे पारे लोको वैकुण्ठसंज्ञितः। तन्मध्ये राजतेऽयोध्या सच्चिदानन्दरूपिणी ३ तत्र लोके चतुर्बाहू रामनारायणः प्रभुः। अयोध्यायां यदा चास्य अवतारोभवेदिह ४ तदास्ति रामनामेदमवतारविधौ विभोः। तन्नाम्नो नामरहितस्याम्नातंनामतस्यहि ५ दशकण्ठवधाद्यादिलीलाविष्णोःप्रकीर्तिताः। सकदाचित् कल्पेस्मिन् लोके साकेतसंज्ञिते ६ पुष्पयुद्धं रघूत्तंसः करोति सखिभिःसह ७ कस्मिन् कल्पेतु रामोऽसौ बाणजन्येच्छयां विभुः। तैरेवसखिभिः सार्द्धं-

माविर्भूय रघूद्वहः८रावणादिवधेल्लीला यथा विष्णुः करोति सः । तयायमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः६क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः । लीलानिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम् १० किंचायोध्यापुरोनाम साकेत इति सोच्यते । इमामयोध्या माख्याय सायोध्या वर्ण्यते पुनः ११ अनिर्वाच्यत्वमेतस्या व्यक्तमेवानुभूयते । रामावतारमाधत्ते विष्णुः साकेतसंज्ञिते १२ तद्रूपं वर्णयित्वा निर्वचनीयप्रभोःपुनः । रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्य हि १३ ” (इत्यथर्वणवेदे वेदसारोपनिषदि प्रथमखण्डे) श्रीकबीरजीका यही मत है कि साकेत छोड़ि कहूं नहीं जाय है नित्यविहारी है ॥ ११ ॥

इति आठवां शब्द समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां शब्द ॥ ९ ॥

सन्तो बोलेते जगमारे । अनबोलेते कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न विचारे १ पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमियापाछे । बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २ उन्दुर राजा टीकाबैठे, विषहरकरैखवासी । श्वानबापुरा धरनिढाकुरा, बिल्लीघरमें दासी३ कागज कारकारकुड़ आगे, बैलकरै पटवारी । कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, भैंसै न्याउ निवारी ॥ ४ ॥

सन्तो बोले ते जगमारे ॥

अनबोलेतें कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न विचारै १
पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमिया पाछे ।
बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २

हे सन्तो ! जो बोलोहौ कहे जो मैं बताऊंहौं सोतो मानै नहीं है बोलेते जगमारेहै कहे शास्त्रार्थ करैहै और जो न बोलौ तो बनै कैसे शब्दको कोई नहीं बिचारै १ अरु पहिले पूत जो जीव है ताको जन्म ह्वैलेइहै तब पिता जो है जीवको अनुमान ब्रह्म ताको

जन्म होइ है पिता जीव को काहेते कह्यो कि जब शुद्धजीव एकते अनेक ब्रह्म ही द्वार भयोहै वह माया शबलित ब्रह्मपूत है और जीव मायाही में पर्‌यो है दोनों माया शबलित हैं सो बाप जो है जीव और पूत जो है ब्रह्म तिनकी महतारी एकमायाही है अर्थात् यहीते अनादिकालते दोनों प्रकट हैं यहीमें परेहैं सो तैं विचारु तो यह अचरजको काछेहै अर्थात् तैंही अपने अज्ञानते यह अचरज काछे है और नानारूप धरैहै ॥ २ ॥

उन्दुर राजा टीकाबैठे, बिषहर करै खवासी ॥
श्वानबापुरा धरनिठाकुरा, बिल्ली घर में दासी ३

उन्दुर जोहै मूस सोतो राजाभयो टीकामें बैठ्यो और बिषहर जोहै सर्प सो खवासी करैहै और श्वानबापुरा जो है सो धरनिठाकुरा कहे वस्तुलैकै ढांकिकै धरैहै कहे भण्डारी है और बिल्ली घरमें दासीहै सो खानवालिनि है अर्थात् उन्दुरकहे वह साहब को ज्ञान जाको दूर कैदियोहै उन्दुर मूसको संस्कृतमें कहैहैं सो उन्दुर कहे मूस तो जीव है सो शरीरको आपनो मानिलियोहै सोई राजा भयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्प सो काल है सो खवास भयो कहे क्षण पल घरी पहर वाको खातबीती तो होत जायहै सो खवास ह्वैकै यह काल वाकी आयुर्दाय को खातईजायहै और नानाप्रकार की जो बिषय हैं तेई बीराहैं ताको खवावत जायहै अरु श्वान कहे वह श्वान भवानन्द जो हैं सो बापुरा जो जीव ताको धरिकै ढांकि लियोहै कहे साहबको ज्ञान नहीं होन देइहै और बिल्ली जो है षट् दर्शननकी बाणी सो घरमें दासी ह्वैरहीहै कहे नानामतन में लगावै है साहबकी भक्तिरस जो है सोई है गोरस ताको खाइलेइ है ॥ ३ ॥

कागज हार कारकुड आगे, बैल करै पटवारी ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, भैंसै न्याउ निवारी ४

कागजकारकहे लिखो कागजकार कुड जो बैल है ताको आगे

धरो है सोई बैल पटवारी करैहै सो कारो कागज कहे लिखो कागज जो गुरुवालोगन की बनाई पोथी तिनको आगे धरिकै बैल जे गुरुवालोगन के चेला हैं ते पटवारी करैहै अर्थात् कायानगरी के बसैया जे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दशो इन्द्रिय तिनको बिचारिकै कि कौन काके आधीन है ज्ञानरूपी द्रव्य तहसील करैहै वा पटवारी कैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मै ते चैतन्य हैं याते आत्मै मालिक है यह निश्चय कियो सो कबीरजी कहैहैं हे सन्तो! तुम सुनो वहां भैंसा जो है सोई न्याउ निवारैहै इहां भैंसा कहे गुरुवालोग जो हैं सो आप चहलामें परे हैं और चहलामें परो जो जीव ताही को मालिक बतावे हैं और चेला जे हैं तिनहूं को माया के चहला में डारैहैं ऐसो न्याउ निवारैहैं भाउ यह है कि भैंसा यमकी असवारी है सो यमही पुर को लैजाइगो तहां जब यमके लट्टा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ॥ ४ ॥

इति नवम शब्द समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवां शब्द ॥ १० ॥

सन्तो राह दुनों हम डीठा। हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबनको मीठा १ हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूधसिंघाड़ा सेती। अनको त्यागै मननहिं हटकै, पारन करै सगोती २ तुरुक रोजा नमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै। उनकी भिश्त कहां ते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३ हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घटसों त्यागी। वै हलाल वै झटका मारे, आगि दुनों घर लागी ४ हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सद्गुरुइहै बताई। कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, राम न कहेउ खोदाई ॥ ५ ॥

सन्तो राह दुनौ हम डीठा ॥

हिन्दू तुरुक हटा नहि मानै, स्वाद सबन को मीठा १

हे सन्तो! हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानैहै हम सबको समुझावते हैं कि बिश्रयन को छोंड़िकै देखो तो दूनों की राह एकई है सो दूनों दीनको बिषयनको स्वाद मीठो लग्यो है यहीके मिलनकी उपाय करे हैं साहब को नहीं खोजैहैं ॥ १ ॥

हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूध सिंघाड़ा सेती॥
अनको त्यागै मन नहिं हटकै, पारन करै सगोती २
तुरुक रोजानमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै॥
उनकी भिश्त कहांते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३

हिन्दू जेहैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी ब्रतसाधे हैं कहे उपासे रहैहैं और फरहार करै हैं और बिहानभये नानाप्रकारके व्यंञ्जन बनाइकै सगे जेहैं गोती भाई तिनको लैकै पारण करै हैं और मनको नहीं हटकैहैं कहे दशौइन्द्रिय ग्यारहों मनको नहीं हटकै हैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करैहैं अथवा जैसे सगोतीमें कहे सगाई में अर्थात् जैसे विवाह में ज़ाफ़त में खाय हैं तैसे पारण करै हैं २ और मुसल्मान रोजा रहैहैं व नमाज गुजारैहैं और बिसमिल्ला को बाँग दैकै पुकारैहैं और सांझको मुर्गी मारिकै पोलाव बनाइ बनाइ खाय हैं सो कहो तो उनकी भिश्त कैसे होइगी ॥ ३ ॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घट सों त्यागी॥
वै हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनों घर लागी ४

हिन्दूकी दया तुरुककी मेहर है जो हिन्दू दया करता तो यम ते छूटत अरु जो मुसल्मान मेहर करता तो यमते छूटत सो ये दोऊ दया और मेहरको आपने घटते त्यागि दियो है मुसल्मान कहै हैं कि गलेकी रगसे भी अल्लाह नगीच है और घटघट में मौजूद है और गला काटतई हैं सो गौ से एकी गला काटते हैं और हिन्दू कहै हैं कि ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है और झटका मारै हैं कहे

मूड़ काटि डारै हैं सो दूनों घरमें आगि लगी है यह अज्ञानरूपी आगि दूनोंकी बुद्धि को दाहे डारै है ॥ ४ ॥

हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सतगुरु इहै बताई ॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, राम न कहौ खोदाई ५

हिंन्दू मुसल्मान की एकै राह है राम न कह्यो खोदाइ कह्यो राम कह्यो नाम सब वही बादशाहके हैं सो वह बादशाह को हिन्दू तुरुककी एती बड़ी साबाशी कब नीक लगैगी अथवा हिन्दू तुरुक की एकराहहै कहे एक रामनाम लियेते उद्धार होइ है सो कर्मते निवृत्त ह्वैके न हिंन्दू राम कहै न मुसल्मान खोदाइ कहै आपने आपने कर्म में सब लगे हैं तेहिते माया कैसे छूटै अथवा न नारायण राम कह्यो कि तुम झटका मारौ न खोदाइ कह्यो कि तुम हलाल करौ ये दोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियो है ॥ ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां शब्द ॥ ११ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई। बकरा मारि भैंसाको धावै, दिल में दर्द न आई १ करि असनान तिलक करि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई। आतमराम पलकमो बिनशे, रुधिर कि नदी बहाई २ अतिपुनीत ऊंचेकुल कहिये, सभामाहँ अधिकाई। इनते दिक्षा सबकोइ माँगै, हाँसि आवै मोहिंभाई ३ पापकटनको कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा। बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यमघींचा४ गाय बधै तेहि तुरका कहिये, उनते वै का छोटा। कहहि कबीर सुनौ हो सन्ता, कालिके ब्राह्मण खोटा ॥ ५ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई ॥
बकरा मारि भैंसाको धावै, दिलमें दर्द न आई १
करि असनान तिलककरि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई ॥
आतमरामपलकमो बिनशे, रुधिर कि नदी बहाई २

हे सन्तो ! पांड़े निपुण कसाईहैं काहेते कि कसाई अबिधिते मारै है वह बिधिते मारै है याते निपुणहै बोकराको मारिके भैंसा के बलिदान दीबेको धावैहै १ स्नान करिकै रक्तचन्दनके बड़े बड़े तिलक देकै बैठेहैं और बिधिसों देवीको पूजावैहै अरु यह कहै है अन्तर्यामी सर्वत्र है और बोकरा भैंसाको मूड़काटि डारैहै रुधिर की नदी बहन लगैहै तब वह आतमराम जो है जीव कहे आत्मा जो है शरीर तेहि बिषे है आरामजाको सो बिनाशि जायहै कहे शरीरते जुदा ह्वैजाय है जैसे दूध पानी बिनाशि जाय है मुरदा ह्वैजाय है ॥ २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये, सभा माहँ अधिकाई ॥
इनते दिक्षा सब कोउ मांगै, हँसि आवै मोहिं भाई ३

सो ऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अतिपुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं अरु सभामें उनहीं की अधिकाई है कहे शास्त्रार्थ करिकै सभामें आपनिन अधिकाई राखै है तेहिते सब कोई दीक्षा मांगै हैं कि हमको दीक्षा दै संसारते उबारिलेउ सो यह देखिकै मोको हँसि हँसि आवै है कि आपई नरक में जाइहै तो नरक ते कैसे उबारि है अर्थात् तोहूं को वही नरकमें डारि देइ है ॥ ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा ॥
बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यम घींचा ४

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावै हैं रामायणादिक और वही कथा में बर्णन है कि रघुनाथजी शिकार खेलै हैं सो गुरुवालोग कहैहैं कि तुमहूं शिकार खेलो यह नहीं जानै हैं कि रघुनाथजी तिर्यग्योनिवालेन पर दया करी कि ई ज्ञानभक्ति बैराग्य कैसे करैंगे याते मारिकै मुक्ति करिदेइ हैं इनको मारैंगे तो पाप ते हम ई दोऊ नरकै जायँगे याहीते दोऊ गुरू चेलाको परस्पर नरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरक में डारिबेको यम घींचही धरै हैं नरकमें डारि देहिंगे तब नरकमें गुह मूत्र खाइगो

और मारो जाइगो और जो जीवनको मारिकै मांस खायो है तेई वाके मांसको खायँगे और अपने अपने सींगनते खुरनते मारैंगे याते मांस खायो है वै जीवतही मांस खायँगे इहांते जो जीवनको वह मार्‍यो तिनको क्षणइमात्रको क्लेश है और उहां वे जीव वाको बारबार मारैंगे मरणको क्लेश क्षणमें होइगो और यातना शरीर लाखनवर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़पुराणादिक में प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

गाय बधै तेहि तुरुका कहिये, उनते वैका छोटा ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटा ५

जे गायको मारैहैं ते मुसलमान कहावै हैं सो इनते वैकाछोटे हैं तुरुक गाय मारैहै अरु वै भेंड़ा भैंसा मारैहैं आत्मा तो सब एक हीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहेते कि जे शास्त्रको नहीं समझैं तेतो मूढ़ही हैं वे खोटकर्म करोई चाहैं परन्तु जे शास्त्रको समझैहैं तिनहूंको समुझाइकै खोट कर्ममें लगाइदेइ हैं अपनी पाण्डित्यके बलते ब्राह्मण जो कह्यो ताको या अर्थ है सबको यही समुझावैहैं को काको मारैहै सर्वत्र तो एकई ब्रह्म है और कोई या समुझावै है कि बलिदान दै देवीको प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञान दै ब्रह्म बनाइदेइँगे ॥ ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्द समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां शब्द ॥ १२ ॥

सन्तो मते मात जनरङ्गी। पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवाले सतसङ्गी १ अर्द्धऊर्ध्वलै भाठीरोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी। मूंदे मदनकर्म कटि कसमल, संततचुवै अगारी २ गोरखदत्त बशिष्ठ व्यासकबि, नारदशुकमुनिजोरी। सभाबैठिशम्भू सनकादिक तहँ फिरि अधरकटोरी ३ अम्बरीष औ याज्ञ जनकजड़, शेषसहस मुख पाना। कहँलोंगनों अनन्तकोटिलै, अमहल महल देवाना ४ ध्रुव प्रह्लाद विभीषणमाते, माती शिवकी नारी।

सगुण ब्रह्ममाते बृन्दाबन, अजहुँ न छूटि खुभारी ५ सुरनरमुनि जेते पीर औलिया, जिनरे पिया तिन जाना। कहैकबीर गूंगेको शक्कर, क्योंकर करै बखाना ॥ ६ ॥

सन्तो मतेमातजनरङ्गी ॥

पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवाले सतसङ्गी १

सन्तो मते कहे सन्तन के जे मत हैं तिनमें रङ्गी जे जन हैं तेई मात कहे मातिरहेहैं 'रंगच्छतीति रङ्गःरङ्गोस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरङ्गी' रकार बीजको जो कोई प्राप्त होइ है सो रङ्ग कहावै सो रकार बीज रामोपासकनके होइ है ते रामोपासक जाके गुरु होइ सो कहावै रङ्गी अथवा सुरति कमल बैठे जे परम गुरु हैं ते रकार बीजको उच्चार करै हैं सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइके सुने सो रङ्गी है सोई रङ्गी सन्तनके मतमें माते है और कबीरऊ रकारई बीज को जपत रहे हैं सो बंशावली में लिख्यो है श्रीराजा रामसिंह बाबाकबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धान्त है तब कबीरजी कह्यो "राअक्षरघटरम्योकबीरा । निजघरमेरोसाधुशरीरा" सो पीछे लिखिआये हैं अरु सुधाको मादकधर्म है सो श्रीरामचन्द्र के प्रेमरूपी प्याला में भर्यो जो है सुधा रसरूपा भक्ति ताको जे पान करै हैं तिनके सत्संगी जेहैं तेऊ मतवाले ह्वै जायहैं कहे परम सिद्धान्तवालो जो मतहै तेहिते युक्त ह्वैजाइ हैं अथवा रसरूपा भक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रसआनन्द को कहै हैं सो आनन्द में निमग्नरहैहैं तामें प्रमाण "रसोवैसःरसंह्येवायं लब्ध्वा मदी भवति" (इति श्रुतेः) उनकी कहाचली है इहां सुधारसको कह्यो ताको हेतु यह है कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जनन मरण छोड़िके अमर होयहैं औरेन को जनन मरण नहीं छूटै है अरु वह रसरूपा भक्ति माधि उत्पत्ति भयो है ताको रूपक करिके समुझावै हैं ॥ १ ॥

अर्द्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी ॥

मूंदे मदन कर्म कटि कश्मल, संतत चुवै अगारी २

उहां समेटिकै कहिआये हैं अब इहां रसरूपा भक्तिको मद को रूपक करिके कहै हैं अर्द्धकहे नीचेके लोक ऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्यन्त जो सारासार को बिचार सार कहे चित् अचित्रूप साहब को या जगत् मानिबो और असार कहे नानात्व जगत् मानिबो या जो बिचार सोई भाठी रोपतभये और तेहिते भयो जो यथार्थज्ञान कि सब सच्चिदानन्दस्वरूप है काहेते चितौ अचित साहब को रूपहै यह हेतु ते सोई ब्रह्म अगिनि उद्गारी कहे बारत भये महुवा नरमें धेरै है इहां मदन जो मनोज तौने जो है शरीर नर अर्थात् वीर्यते शरीर होइहै सो अन्तःकरण में मूंदे जे साहब की अनेक प्रकार की जो लीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुवादिक द्रव्य हैं तिन्हें जो कर्मन की बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कश्मल ताको काटिडास्यो तब निश्चयात्मक बुद्धि जे पात्र तामें रसरूपा भक्तिरूप जो अगारी सो निरन्तर चुवनलागो ॥ २ ॥

गोरखदत्त बशिष्ठ ब्यास कबि, नारद शुकमुनि जोरी ॥
सभा बैठि शम्भू सनकादिक, तहँ फिरि अधरकटोरी ३

गोरख, दत्तात्रेय, वशिष्ठ, व्यास, कवि कहे शुक्र, नारद, शुकमुनि कहे शुकाचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरत भये और सभाके बैठैया जेहैं शम्भू सनकादिक तहां रसरूपा भक्ति जो सुधारस तेहि करिके भरी जो है प्रेमरूपी कटोरी सो तिनके अधर हैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकै न वचन करिके कोई धरि सकै है अर्थात् न मनमें आवै न वचन में आवै वाके पान करत में छकि सब जाय हैं रसवाच्य में नहीं आवै है यह सर्वत्र ग्रन्थन में प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

अम्बरीष औयाज्ञ जनक जड़, शेष सहसमुख पाना ॥
कहँलों गनों अनन्त कोटिलै, अमहल महल देवाना ४

अम्बरीष व याज्ञवल्क्य व जड़भरत व शेष कहे संकर्षण और सहसमुख कहे शेषनाग ते पान करतभये सो कहांलों मैं गनों परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहल्ल महल अनन्त कोटि हैं ताहीमें लीनभये और देवाना होतभये कहे मत्त होत भये इहां अमहल महल जो कह्यो सोऊ जे अयोध्याजीके महल हैं अमहल हैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं अरु महल जो कह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्तमान बने हैं अमहल कह्यो याते निर्गुणधर्म आयो और महल कह्यो याते सगुणधर्म आयो सगुण निर्गुण में नहीं होयहै निर्गुण सगुण में नहीं होयहै उनमें दूनों धर्म बनेहैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं तिनमें जायके देवाने भये माया ब्रह्ममें जो देवाने रहे सो छोड़ि दिये अमहलमें देवाना ह्वैबोई महलन में साहबकी अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यानकैकै हंसरूप में स्थित ह्वैकै रसरूपा भक्ति पानकैकै छकिरहे रसरूपा भक्ति शान्तशतक के तीसरे खण्ड में औ रामायणादिकमें हम लिखेन है सो देखिलेहु ॥४॥

ध्रुव प्रहलाद बिभीषण माते, माती शिवकी नारी ॥
सगुणब्रह्म माते वृन्दाबन, अजहुँ न छूटि खुमारी ५

और ध्रुव, प्रहलाद, विभीषण और पार्वती मातिगई और सगुण ब्रह्म जे साक्षात् नारायण श्रीकृष्ण हैं तेऊ वृन्दावन में मातिगये अबहूं भर खुमारी नहीं छूटी कि भाव यह है कि जिन के शरीर छूटे तेतो साकेतहीमें जाय देवानेभये कहे प्रेम में छके और जिनके शरीर बने हैं तिनहूंकी खुमारी नहीं छूटि कहे अबहूं भर श्रीरामचन्द्रही की उपासना करेहैं ताते प्रमाण "पूजितो नन्दगोपाद्यैः श्रीकृष्णेनापि पूजितः । भद्रया महिषीभिश्च पूजितो रघुपुङ्गवः" यह वह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौने को प्रमाण सब आचार्य दियो है ॥ ५ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया, जिनरे पिया तिन जाना ॥

कहै कबीर गूंगे को शक्कर, क्योंकरि करे बखाना ६

और सुर नर मुनि जेते पीर औलियाहैं तिनमें जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियो है तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है और तेई मन वचनके परे हैं जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है सो जिन जान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूंगे को शक्कर है काहेते वह मन वचनके परे है जब वही भांति उहो ह्वै जाय तब वाको स्वाद पावै काहू सों वाको कोई बखान नहीं करि सकैहै सो कबीरजी कहैहैं कि जो कोई कहै यह अर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला कबीर जीव ब्रह्मको कहिआये हैं वहीको पीपीकै सब मतवार ह्वैगयेहैं सांच पदार्थ नहीं जान्यो तो हम यह कहै हैं जिनको कबीरजी आगे वर्णन करि आये हैं तेई नहीं जान्यो तो तुमहीं कैसे जान्यो जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीको कह्यो तो तुमहीं झूठ कहौहो जो कहो पारिख करिके जान्यो तो पारिखकिये तो मन वचनके परे और निर्गुण सगुण के परे जे शुद्धजीवात्मा सदा रघुनाथजी के निकटवर्ती ते और श्रीरामचन्द्र येई आवै हैं वेदशास्त्रमें प्रमाण मिलैहैं तुम पारिख कहिके मन वचनके परे कौन पदार्थ राख्यो है जो कहो हम जीवात्माको मानैहैं और कोई ब्रह्मको मानै हैं तो आत्मा और ब्रह्म येहू नामहै वचनमें आयगयो और तुम जो विचार करौहो सो मनमें आयगयो जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्र को मन वचन के परे कहौहो वोऊ तो मन वचन में आयजाय हैं तो हम पूर्व लिखिआये हैं कि नारायण राम अवतार लेइ हैं तिनके नामरूप लीलाधाम के वर्णन करिके वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सपरिकर लक्षितकरै हैं वे मन वचन के परे हैं और यह आगे लिखि आये हैं कि "ऐसीभांति जो मोकहँ ध्यावै। छठयें मास दरश सो पावै" सो अपनी इन्द्रिय हैं आपे देखेपरेहैं जो कोई उनके प्रसन्न करिबेको उपाय करै है सो साहिबै के जनाये जानै है तामें प्रमाण कबीरजी की साखी सागरकी

चौपाई "जानै सो जो महीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लै आऊं॥ बीजकों में लिखी है साखी बहुबन्धनते बांधिया एकबिचारा जीव। काबल छूटै आपनो जो न छुड़ावै पीव" उनको वर्णन कोई जीव नहीं करिसकै है तेहिते जो पारिख हम कियो सोई सांच है जो तुम पारिख करौहौ सो झूंठ है तुम श्रीकबीरजी को अर्थ जानते नहींहो भ्रम में लगेहो अनामा उनहीं को नाम है अरु वोई हैं तामें प्रमाण "अनामा सोप्रसिद्धत्वादरूपो भूत-वर्जनात्" (इति वायुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति बारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवां शब्द ॥ १३ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै। गति मति वाकी समुझि परै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १ कासेमरकेशाखाबढ़ये, फूल अनूपम बानी। केतिकचात्रिकलागिरहे हैं, चाखतरुवाउड़ानी २ कहाखजूरबड़ाई तेरी, फलकोई नहिंपावै। ग्रीषमऋतु जब आयतुलानी, छायाकाम न आवै ३ अपनाचतुरऔरकोसिखवै, कामिनिकनक सयानी। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरणरतिमानी ॥ ४ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै ॥
गति मति वाकी समुझिपरै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवो! राममें जो तिहारी माया जो कपट सो दुन्दि मचावैहै कैसी माया है कि जाकी गति मति नहीं समुझि परै सुर नर मुनि जे हैं तिनहूं को नचावै अर्थात् उनहूं को लागिहै सो साहब को न जानिबो रूप कारण जगत् को आदि-मङ्गलमें कहि आये हैं ॥ १ ॥

का सेमर के शाखा बढ़ये, फूल अनूपम बानी ॥
केतिक चात्रिक लागिरहे हैं, चाखत रुवा उड़ानी २

सो हे जीवो! तुम द्वन्द्वमाया को त्यागौ साहब को जानो

या संसाररूप सेमर को वृक्ष तामें नाना वासना नाना देवतनकी उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै जौने वृक्षमें अनुपम कहे साहब के जाननेवारे विशेषकर ज्ञानवारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी बाणी सोई फूल है ताहीते भयो जो धोखाब्रह्म को ज्ञान सोई फल है तामें केतको चात्रिकरूप जीव लागिरहे हैं इहां चात्रिकै कह्यो और पत्ती न कह्यो सो चात्रिक पियासो रहैहै और इनहूं के मुक्तिकी चाह रहैहै पक्षी रस नहीं पावैहै इन मुक्ति नहीं पावैहै चाखत में रुवा उड़ैहै पक्षीके जीभमें लपटिजाय है जीभहुको रस सूखि जाय है इहां वा ज्ञानको जब अनुभव कियो तब गुरुवालोग बताये कि तुमहीं ब्रह्म हौ तुम्हारई जीवात्मा मालिक है सब को राम सबको खाय लेयहै रामको भजो रामतो मायिक है सो जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें वासना रही सोऊ छूटिगई यही गुरुवा है पक्षी वा रस नहीं पावै है तब खेद होइ है और या वही ज्ञानमें दृढ़ताकरिके उड़त उड़त नरकहीमें गिरैहै नरकमें दुःखपावैहै॥२॥

कहा खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै॥
ग्रीषमऋतु जब आय तुलानी, छाया काम न आवै ३

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टान्तदैके कहैहैं खजूर की बड़ाई लै कहा करै फल तो कोई पावतै नहीं है ग्रीष्मऋतु में छाया काहू के काम नहीं आवैहै वाके तरेही रहैहै आतप तपतै रहै है ऐसे हे गुरुवालोगो! तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि मैंही ब्रह्म हौं मोते बड़ो कोई नहीं है आत्मै मालिक है सो न कोई ब्रह्मभयो न आत्मै मालिकभयो या फलो कोई नहीं पायो जो कोई तुम्हारे मत में आवै है सो जनन मरणरूप ग्रीष्म ताप नहीं छूटै है या तुम्हारो उपदेशरूप छाया काहू के काम नहीं आवैहै॥३॥

अपना चतुर औरको सिखवै, कामिनि कनकसयानी॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरण रति मानी ४

गुरुवालोग कनककामिनी के मिलिबे को आप चतुर ह्वैरहे हैं

कनक सुवर्ण कहावैहै सो आत्मा को सुवर्ण जो है स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनी में लपट्यो है तेहिते शुद्ध नहीं है अथवा कनक जो है सुवर्ण सो शुद्ध है और सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्या हैं ऐसे और सबको मिथ्या मानिके एक ब्रह्महीको मानिबो और कामिनीमें सयानी कहे ज्ञानकरिके बिचारै है कि कामिनी माया हई नहीं है मिथ्या है यह सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखैहै व औरहूको सिखवैहै जनन मरण होतई जायहै माया नहीं छूटैहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! याही ते मैं ये बखेड़न को छोड़िके परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चरणनमें रति मान्यो है इहां सन्तन को साखी दैके जो कह्यो ताको हेतु यह है कि सन्त समुझैंगे कि सांच कहै हैं कि झूठ कहैहैं अथवा हे जीवो! मेरो सिखापन सुनो श्रीरामचन्द्रके चरणमें रति मानिके जैसे सब भयो है नानामत कियो है तैसे एकबार मेरो वचन सुनि रामचरण में रति मानिके सन्त होउ व्यङ्ग्य यह है कि जो सन्तहोउगे तो जनन मरणते रहित ह्वैजाउगे औरी भांति न छूटौगे अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अपनो चतुर नहीं है माया ही में परेहैं और और को कनककामिनी में सयानी कहे विचार करावै है कि कनककामिनीरूप माया को विचार कै देख्यो या मिथ्या है सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेश में कनकामिनी माया कब त्यागैंगे ॥ ४ ॥

इति तेरहवां शब्द समाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवां शब्द ॥ १४ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै। ताते पकरि पकरि यम लूटै १
ह्वै मसकीन कुलीन कहावै तुम योगी संन्यासी। ज्ञानी गुणी शूर कबिदाता ईमति काहु न नासी २ अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब अनुभव भाव न दरशै। लोह हिरण्य होय धौं कैसे जो नाहिं

पारस परशै ३ जियत न तरे मुये का तरिहौ जियतै जो न तरे। गहि परतीति कीन जिन जासों सोई तहँ मरे ४ जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना। कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै ॥
तातें पकरि पकरि यमलूटै १

ह्वै मसकीन कुलीन कहावे, तुम योगी संन्यासी ॥
ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता, ई मति काहु न नासी २

राम रा कहे रकार जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिन को अभाव है रामोपासक नहीं हैं तिनकी संशयकी गांठि नहीं छूटै है तेहिते पकरि पकरिके यम लूटिलेइहैं अर्थात् याको मारि कै नरकमें डारिदेइँहैं फिरि फिरि शरीर पावैहै फिरि लूटिजाय है मारो जायहै १ मसकीन कहे ग़रीब फ़क़ीर ह्वैके कुलीन कहावैहै कहे भये तो फ़क़ीर परन्तु कुलाभिमान नहीं छूटै है कहै हैं कि हम फलाने गद्दी के मुरीद हैं सो तुम योगी हौ संन्यासी हौ ज्ञानी हौ गुणी हौ शूर हौ कबि हौ दाता हौ इत्यादिक जो भेदकी मति हैं सो कोई न नाश कियो काहेते कि हे सन्तो! ये परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो यह कोई नहीं जानै है और यह जगत् चित् अचित् विग्रह करिके साहब को रूप है भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है ॥ २ ॥

अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब, अनुभव भाव न दरशै ॥
लोह हिरण्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परशै ३

स्मृत्ति, वेद, पुराण सबै पढ़ै हैं परन्तु परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूको नहीं दरशैहै जो पारसको स्पर्श न होय तो लोह हिरण्य कहे सोन कैसे होय न होय तैसे स्मृति वेद पुराणन को तात्पर्य श्रीरामचन्द्र हैं

तिनके चरण को जौलौं न परशै तौलौं मुक्ति नहीं होय है पार्षद-रूपता वाको प्राप्ति नहीं होय है ॥ ३ ॥

जियत न तरे मुये का तरिहौ, जियतै जो न तरै ॥
गहि परतीति कीन जिन जासों, सोई तहैं मरै ४
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना, सोई समुझि सयाना।
कहै कबीर तासों का कहिये, देखत दृष्टि भुलाना ५

सो जियत में जो न तुम तरोगे तो मुये कैसे तरोगे सो हे जीवो ! जियतै काहे नहीं तरि जाउहौ जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्श किये जीव शुद्ध ह्वै जाय है तौने साहब सों जो कोई जहैं साहब को मत गहिके परतीति कहे विश्वास कीन है सो जानत है कहे संसारही में अमर ह्वै गयो है ४ सो कबीरजी कहै हैं कि ये जीव ज्ञान करै हैं कि अज्ञान करै हैं ताही को सब कुछ मानिके आपने को सयान मानैहैं तिनसों कहा कहिये जो अपनी दृष्टिते देखत देखत भुलाय दियो स्मृति, वेद, पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही को कहै हैं उनहीं के भक्त हनुमान् विभीषणादिक अमर भये हैं सो देखतेहौ और यह नहीं समुझै हैं कि सबके मालिक बादशाह श्रीरामचन्द्र हैं इनहींके छोड़ाये छूटैंगे और के छोड़ाये न छूटैंगे ॥ ५ ॥

इति चौदहवां शब्द समाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवां शब्द ॥ १५ ॥

रामराचली बिनावनमाहो। घर छोड़े जात जोलाहो १ गज नौगज दशगज उनइसकी, पुरिया एक तनाई। सात सूत नौ गाड़बहत्तरि, पाटलागु अधिकाई २ तापट तूलन गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई। तामें घटै बढ़ै रतिओ नहिं, करकच करघरहाई ३ नित उठि बैठ खसम सों बरबस, तापर लागतिहाई। भीनी पुरिया काम न आवै, जोलहा चलारिसाई ४ कहै कबीर

सुनोहो संतो, जिन्ह यह सृष्टि उपाई । छांड़ि पसार रामभजु बौरे, भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

रामराचली बिनावन माहो । घर छोड़े जात जोलाहो १

रामराकहेरा जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिनके अभाव है साहब को नहीं जानें ऐसे जे समष्टिजीव तिनके इहां मा जो है कारणरूपा माया सो बिनावन को कहे बिनवावन को चली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली इहां बिनबो न कह्यो बिनवाइबो कह्यो सो विना चैतन्यब्रह्म और जीवके लपेटे याको बनायो नहीं बनै है काहेते कि यह जड़ है अर्थात् ब्रह्मजीवको संयोग करिके बनवावनको चली ब्रह्मजीवके पास सों जोलाहा जो यह जीव है सो घरको छोड़देयहै अर्थात् यह शुद्ध जीव रमा आपनो जो घर है साहब के लोकको प्रकाश जहां शुद्ध रहे है तौने घरको छांड़िकै माया के लपेटमें परिके आपने बन्धनको आपने मनकरिके संसाररूपी पटको बनावै है ॥ १ ॥

गज नौ गज दश गज उनइसकी, पुरिया एक तनाई ॥ सात सूत नौ गाड़ बहत्तर, पाट लागु अधिकाई २

प्रथम एकगजकी कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथम जीव वाणी प्रणवरूप एकगजकी पुरिया अनुमान ब्रह्म बनायो अर्थात् मन भयो पुनि नौगज की पुरिया तनावत भई सो नवौ व्याकरण बनावत भई अर्थात् नवौ व्याकरण में शब्दब्रह्म को वर्णन है सो शब्द बनावत भई पुनि दशगज की पुरिया तनावतभई सो चार वेद औ छःशास्त्रई दशगज की पुरिया तनभयो पुनि उनइसगज की पुरिया तनावतभयो सो अठारहौं पुराण उनीसौं महाभारत ये उनइसगज की पुरिया बनावतभयो पुनि सातसूत कहे सप्तावरण पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अथवा सातसो सूत जाग्रत् महाजाग्रत् बीजजाग्रत् स्वप्नजाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति ये सात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनि नव

गाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तरहज़ार नस बनावत भयो ॥ २ ॥

तापटतूल न गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई ॥
तामें घटै बढ़ै रतिबो नहिं, करकच कर घरहाई ३

तापटकहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रमरूप तूलरह्यो तबतो गज़में नहीं अमात रह्यो कहे अप्रमेय रह्यो है और सेर कहे सिंहरूप रह्यो है संसारको नाशकैदेनवारो रह्यो है सो संसारी ह्वैके जैसे सूत पैसाको अढ़ाईसेर बिकाय है तैसे यहजीवात्मा विषयरूप पैसाको चाहिंके अढ़ाईसेर ह्वै गयो एकै पृथ्वीको विषय सुख चाहै है एकै यज्ञादिक करिके स्वर्गको विषय सुख चाहै हैं आधे मुमुक्षु ह्वैके ईश्वरन के लोकको सुख चाहै हैं और ब्रह्ममें लीन ह्वैबो चाहै हैं इनमें पूरी विषय भोग नहीं है याते आधा कह्यो अहंब्रह्म तूलते नानाशरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो जो पट संसारमें बिनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभर न घटै है न बढ़ै है घरहाई जो है जीवैकी नारी माया सो यही जीवको कच आपने करमें करिलियो है अर्थात् यह जीवकी चूंदी गहिलियो है मायाको भोक्ता जीव है याते जीवहीकी स्त्री माया है ॥ ३ ॥

नितउठि बेठ खसमसों बरबस, तापर लागतिहाई ॥
भीनी पुरिया काम न आवै, जोलहा चला रिसाई ४

खसम जो जीव है तासों नित उठिउठिके बरबस कहे जबरदस्ती बेठकहे बेगारिलेयहै सो एकतो संसारमें माया तो बेगारि लेयहै दूसरो जो भागनते यह संसार उठो तो आत्मा को तिहाई लगी कहे त्रिकुटी में धोखाब्रह्म को ध्यान लगायो जौने में बिनि जाय है तौन पुरिया कहावै है सो जब भीजि जाय है तब नहीं काम आवै है ऐसे यह संसार पुरिया है नाना पदार्थ ते जो है राग तेहिकरिके जब शरीर भीज्यो तब यह संसार को असार जानि

के कहे संसार कुछ कामको न जानिके जोलाहा जो है जीव सो रिसायचल्यो धोखाब्रह्म में लगतभयो सोऊ ब्रह्म तो ताहीको अनुभव है वह अनुभव ब्रह्म में कछु न पावतभयो ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जिन यह सृष्टि उपाई ॥
छांड़ि पसार राम भजु बौरे, भवसागर कठिनाई ५

सो कबीरजी कहैहैं कि जामें तुम लग्यो है सोतो तिहारोई मन को अनुभव है अरु यह संसारऊको तुम्हारो मनहीं रच्योहै सो जिन सृष्टिवाली उपाय कियोहै तेहि मायाब्रह्म ते छांड़ि पसार परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को भजन करु काहेते कि यह भवसागर परमकठिन है उनहीं के भजनकिये छूटैगो औरीभांति न छूटैगो और तो सब याहीमें परे हैं अथवा यह कठिन भवसागर में आयके श्रीरामचन्द्रही को भजन करि मनते छूटैगो ॥४॥

इति पन्द्रहवां शब्द समाप्तम् ॥ १५ ॥

अथ सोरहवां शब्द ॥ १६ ॥

रामराझीझीजन्तरबाजै । करचरणबिहूनाराजै १ करबिनबाजै श्रवण सुनै बिनु श्रवणै श्रोता सोई । पाटन स्वबशसभा बिनु अवसर बूझो मुनिजन लोई २ इन्द्रिय बिनु भोग स्वाद जिह्वा बिनु अक्षर पिण्डबिहूना । जागत चोर मँदिरतहँमूसै खसमअछत घरसूना ३ बिजबिन अँकुर पेड़बिनु तरुवर बिनु फूले फल फलिया । बांझाकि कोखि पुत्र अवतरिया बिनुपग तरुवर चढ़िया ४ मसि बिनु द्वाइत कलम बिनु कागज बिनु अक्षर सुधि होई सुधि बिनु सहज ज्ञानबिनज्ञाता कहै कबीर जन सोई ॥ ५ ॥

पूर्वमायाको वर्णन करिआये तीनी मायाते छूटिके जौने उपाय ते साहब को पावैहै सो उपाय कहैहैं ॥

रामराझीझीजन्तरबाजै ॥
करचरणबिहूनाराजै १

हे जीव ! राम कहे रकार तोको मरा है अर्थात् रकार बीज को तोको अभाव है याहीते तैं अपने को ब्रह्म मानिके संसारी ह्वै गयोहै झीझी कहावै झिझिया जो कुवार शुक्लचतुर्दशी अनेक छिद्र कै जो मटुकी होय है ताके मध्य में दीप बारिके धरै है सो झिझिया नांवढेढिया को कबि संप्रदायहू में है "रन्ध्रजाल मग ह्वै कढ़ै, तियतन दीपति पुञ्ज । झिझिया के सो घट भयो, दिनहू में बनकुञ्ज" सारी मूलामलसी फलकान्ति झरोखनकी झँझरी झिझियासी सो झिझियारूप नव दुवार को अथवा रोम रोम में छिद्रहै जामें बोई छिद्रन ह्वै पसीना निकसैहै यहि प्रकारको झींझीं जो है शरीर तौने जन्तर बाजै है कहे ताहीको यह सोहंशब्द हैं काहेते कि श्वासा कहै हैं सो वही श्वासके कहेते करचरण बिहून जो निराकार ब्रह्म है सो तेरे आगे राजै कहे शोभित होन लग्यो अथवा आंखिन के आगे नाचन लग्यो सर्वत्र ब्रह्मही देखि परनलग्यो अथवा तैंहीं कर चरण बिहून कहे निराकार ब्रह्म ह्वैके नाचन लग्यो अथवा राजै कहे शोभित भयो सो तुम तो शरीरते भिन्न हो जैसे ढेढिया ते दीप भिन्न रहै है वह 'सोहं शब्द' तो शरीरको है वाको कहे तुम काहे धोखा में परेहौ तुम निर्गुण सगुणके परे जो है साहब ताके हौ तिनमें लगौ निर्गुण सगुणके परे कैसे साहब हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

कर बिन बाजै श्रवण सुनै, बिन श्रवणै श्रोता सोई ॥
पाटन स्ववश सभाबिनु अवसर, बूझौ मुनिजन लोई २

साहब के लोकके जे बाजा हैं ते बिन कर बाजै हैं काहेते कि वहां के जे बाजा हैं ते पञ्चभौतिक नहीं हैं और उहांके जे बासी हैं तिनके शरीर पञ्चभौतिक नहीं हैं अर्थात् मन वचन के परेहौ और प्राकृत जेहैं प्रकृतिसम्बन्धी पदार्थ साकार और अप्राकृत जो हैं निराकार ब्रह्मलोक प्रकाश ताहूते विलक्षण है कर बिन कह्यो याते साकारो नहीं है और बाजै है याते निराकारो नहीं है और

सोई श्रोता जे हैं लोकबासी ते श्रवणते सुनै हैं और श्रवण नहीं हैं याते साकारौ नहीं है और श्रवणते सुनै है याते निरकारौ नहीं है माया ब्रह्म जीव को जो अरुझा लाग्यो है सो जो जीव साहब को स्मरणकरे ताके पाटन कहे पटाइलीबे को साहब स्वबश हैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखि देइहैं सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहुबचन है सो जे जीव उनके शरण जाय हैं तिनको पाटनके लिखि दीबे में अपनायलीबे में स्वबशहैं तामें प्रमाण " सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभय सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम" और बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहै है वहां कालकी गति नहीं है और बाजन सदा बाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां होता रहैहै सो हे मननशील, मुनि लोगो! तुम उनहीं को समुझौ और उनहीं को मनन करो वह धोखा ब्रह्म के मनन कीन्हेते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो ॥ २ ॥

इन्द्रियबिनुभोगस्वादजिह्वाबिनु, अक्षय पिण्ड बिहूना॥
जागत चोर मँदिर तहँ मूसै, खसम अछत घरसूना ३

तुम वह साहब को कैसे समुझौ इन्द्रिय बिना ह्वैके साहब के लोक को जो है भोग सुख है ताको लेउ और बिना जिह्वा ह्वैके अनिर्बचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेउ और पिण्ड बिहूना कहे पांचौ शरीरते बिहीन ह्वैके कहे पांचौ शरीरनको छोड़िके हंस स्वरूपमें स्थित ह्वैके अक्षय कहे अच्चय ह्वै जाउ तुम्हारे अन्तःकरण-रूपी घरको चोर जोहै धोखाब्रह्म सो मूसे लेयहै अर्थात् साहब को ज्ञान चोराये लेयहै तुमहीं अहंब्रह्म बुद्धिकराये देयहै काहे ते कि खसम जेहैं साहब ते अछत बने हैं और तुम अपनो हृदय घर सून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहब को नहीं जान्यो ॥ ३ ॥

बिजबिनु अंकुर पेड़बिनुतरुवर,बिनफूलै फल फलिया ॥

बांझकिकोखिपुत्रअवतरिया, बिनपगतरुवरचढ़िया ४

इहां काकु अर्थ है बीज बिना कहूं अंकुर होय हैं और पेड़ बिना कहे बिना जर कहूं तरुवर होइहैं और बिनाफूल कहूं फल होइहैं अरु बांझके कोखिमें कहूं पुत्र होइहैं व बिनापग कोई तरुवर में चढ़े है सो बीज तो वह ब्रह्मको कहोहौ सो तो शून्य है कोई पदार्थ नहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसे माया शबलित ब्रह्म भयो और पेड़जरि मायाको कहौ सो तो मिथ्याहै संसार तरुवर कैसे भयो और ज्ञानरूप जों फूल है ताहू को तो मूलाज्ञान कहौहौ सोऊ मिथ्या है कहो तो मुक्तिरूपी फल कैसे फस्यो और मनको तो जड़ कहौहौ ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो और आत्मा को तो अकर्ता कहौ हौ मन बुद्धि चित्तते भिन्नहै सो बिना पांव संसार वृक्षको चढ़िके कैसे चैतन्याकाश को पहुँच्यो ॥ ४ ॥

मसिबिनुद्वाइतकलमबिनुकागज, बिनु अक्षर सुधि होई॥
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता, कहै कबीर जन सोई ५

विना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौहौ मनको अनुभव कैसे रहैगो वह मिथ्यई होइगो और विना कागज़क़लम कहाकरौगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अन्तःकरण तो मिथ्यै कहौहौ ज्ञान केहिके आधार होइगो जहांबुद्धिरूपी क़लम ते लिखौगे निश्चय करौगे और जो यह पाठ होइ बिन अक्षर सुधि होय तो यह अर्थहै कि जो एकआत्माही को सत्य मानौगे तो साहब को विना अक्षरकहे विना अनादि माने सुधि कहे सुरति तुमको कैसे होयगी और कौन सुरति देयगो और सुधिबिन कहे जो सुधि न भई तो सहज कहे सोहं सो कैसे होयगो तेहिते विना ज्ञाताको ज्ञानकरुकहे अबैते अपने को ज्ञाता मानि रहे हैं कि मैं अपनो विचार करत करत और सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जायहै ताहीको मानिलेउँगो कि यही तत्त्व है सो यह भ्रम छांड़े तेरेजानेते साहब न जानि परेंगे साहब मन वचन

के परे हैं सो जौन विना ज्ञाता को ज्ञानकौनहै जो साहब देय हैं काहेते कि वह ज्ञान काहूको नहीं जानोहै जब साहब आपनोरूप देयहैं तब वह रूपते जानिपरै साहबहीके रूपको जानो परै है वाको ज्ञाता कोई नहींहै सो ज्ञान करु अर्थात् रकारधुनि श्रवणरूप साधन करु तब साहबई तोको हंसस्वरूप देकै आपने नामरूप लीलाधाम को स्फुरित करायदेयँगे तौने हंसस्वरूप की आंखीते श्रवणते साहब को देखु और साहबके गुण सुनु सो कबीरजी कहै हैं कि यहि तरह ते जाके विना ज्ञाताको ज्ञान है सोई मेरो जनहै अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थिति है तौनेही लोकको वह जनहै विना ज्ञाताको ज्ञान कौन कहावैहै जो साहब देयहैं तामें प्रमाण "तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते (इति गीतायाम्) ॥ ५ ॥

इति सोलहवां शब्द समाप्तम् ॥ १६ ॥

अथ सत्रहवां शब्द ॥ १७ ॥

राम गाइ औरेन समुझावै हरिजाने बिन बिकलफिरै १ जा मुख वेदगायत्रीउचरै तासु बचन संसारतरै। जाके पांव जगत उठिलागै सो ब्राह्मण जिउबद्धकरै २ अपनाऊंचनीचकरै भोजन घीणकर्मकरिउदरभरै। ग्रहणअमावसढुकिढुकिमाँगै करदीपक लिये कूप परै ३ एकादशीब्रतौ नहिं जानै भूतप्रेतहठि हृदय धरै। तजि कपूर गांठी बिषबांधे ज्ञानगमाये मुगुध फिरै ४ छीजै शाहु चोरप्रतिपालै सन्तजनन की कूटकरै। कहैकबीरजिह्वाकेलम्पट यहिबिधि प्राणी नरक परै ॥ ५ ॥

रामगाइ औरनसमुझावै, हरिजानेबिन बिकलफिरै १

जामुख वेदगायत्री उचरै, तासु बचन संसार तरै ॥

जाकेपाँवजगत उठिलागै, सो ब्राह्मण जिउ बद्धकरै २

श्रीरामचन्द्रको गावै हैं व औरेनको समुझावै हैं व सबके कलेश हरनवारे जे साहबहैं तिनको नहीं जानै कि येई क्लेशहरि हैं

हरियेई हैं सो या नानादेवता नाना उपासना खोजत बिकल फिरैहैं १ अरु जाके मुखते वेदगायत्री जो वचन हैं सो उचरै हैं वही को तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिन्हैं जानि संसार तरै हैं ताको अर्थ न जानिके कि वेदगायत्री तात्पर्यार्थ ते श्रीरामचन्द्रहीको कहैहैं तामें प्रमाण "सर्वे वेदाः सघोषाश्च सर्वे वर्णाः स्वरा अपि। स मात्रास्तु विसर्गाश्च सानुस्वाराः पदानि च॥ गुणास्तान्द्रे महाविष्णौ महातात्पर्यगौरवात्" (इति महाभारते) जे ब्रह्मादिक में विष्णु हैं ते विष्णु हैं और महाविष्णु श्रीरामचन्द्रही कहावै हैं तिनको तो नहीं जानै हैं वेदगायत्रीपढ़ै हैं और वहीमुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादन करै हैं समुझावै हैं और आपही हिंसा करै हैं तिनहीं के पांय सब जगत् उठिलागै हैं अरु वाही को कहा सब सुनै हैं ॥ २ ॥

अपना ऊंच नीच घर भोजन, घीणकर्म करि उदर भरै॥
ग्रहण अमावस ढुकिढुकिमाँगै, कर दीपक लिये कूपपरै ३

आप तौ जातिमें ऊंच हैं परन्तु नीचके घर भोजन करै हैं और जौन कर्म अपनेको उचित नहीं है तौन घिनहा कर्मकैकै पेटभरै हैं और ग्रहण में अमावस म ढुकि ढुकि माँगै हैं कि यह कुदान आन न लैजांय हमैं लेइँ और रामनाम मुँहते कहै हैं सो नामरूपी दीपक लीन्हें भ्रमकूप में परै हैं ॥ ३ ॥

एकादशी व्रतौ नहिं जानै, भूत प्रेत हठि हृदय धरै ॥
तजि कपूर गाँठी बिषबांधे, ज्ञान गमाये मुगुंध फिरै ४

और एकादशीव्रत उपलक्षणमात्र है अर्थात् साढ़े अट्ठाइस जे व्रत हैं चौबीस एकादशी और रामनवमी, कृष्णाष्टमी, वामनद्वादशी, नरसिंहचतुर्दशी, आधाअनन्त ये जे वैष्णवाव्रत हैं तिनको नहीं जानै हैं अर्थात् वैष्णवी उपासना नहीं करै और मुँहते राम राम कहै हैं और भूत प्रेत याक्षिणी आदि जे उपासना हैं तिनको करै हैं तामें प्रमाण "अन्तःशाक्ता बहिश्शैवाः सभामध्ये

च वैष्णवाः। नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले" सो राम नाम जो कपूर है ताको छोड़िके नाना पाखण्डमत जो विषय है ताको धारण कीन्हे ज्ञान गमाय के मूर्ख चारों ओर फिरै हैं ॥ ४ ॥

छीजै शाहु चोर प्रतिपालै, सन्तजनन की कूट करै॥
कहै कबीर जिह्वाके लम्पट, यहि विधि प्राणी नरकपरै ५

तेहिते शाहु जो आत्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को अंश सदाको दास या जीव को स्वरूप है सो जे हैं ते छीजै हैं अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलि जाय है गुरुवन के बताये जे नाना पाखण्ड मत तेई चोर हैं तिनको प्रतिपाल कियो कहे संग कियो तेई ज्ञानको चोराय लेय हैं और जे साहब के ज्ञानके बतैया संत हैं तिनहींकी कूट करै हैं कि ये मुड़ियन को मत वेदशास्त्र के बहिरे हैं सो कबीरजी कहै हैं ऐसे जिह्वाके लम्पट प्राणी हैं ते नरकही में परै हैं ॥ ५ ॥

इति सत्रहवां शब्द समाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अठारहवां शब्द ॥ १८ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो। अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार बिचारो १ केते रामचन्द्र तपसी सों, जिन यह जग बिटमाया। केते कान्ह भये मुरलीधर, तिनभी अन्त न पाया २ मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया। केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिनभी अन्त न पाया ३ केतिक सिद्ध साधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया। केते मुनिजन गोरख कहिये, तिनभी अन्त न पाया ४ जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई, शिवसनकादिक हारे। ताको गुण नर कैसे पैहौ, कहै कबीर पुकारे॥ ५॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो ॥
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार बिचारो १

परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण न्यारे न्यारे हैं इहां तीनबार जो कह्यो ताते या आयो कि साहब के गुण माया के गुणते जीवात्मा के गुणते ब्रह्मके गुणते न्यारे हैं कौनी रीतिसे न्यारे हैं कि मायाके गुण नाशवान् हैं विचार किये मिथ्या हैं और साहबके गुण नित्य हैं साँचहैं और जीवात्माके गुण अणु हैं और साहब के गुण विभु हैं और ब्रह्म निर्गुणत्व गुण ब्रह्ममें है और साहब निर्गुण सगुण के परे है सो या प्रमाण पीछे लिखि आये हैं "अपाणिपादो जवनो गृहीता" इत्यादि और ब्रह्मसम्बन्धी अनुभवानन्दजीव को होइ है और साहब अनुभवातीत हैं याते साहब के गुण सबते न्यारे हैं सो वा बात अबुझालोग कहांलौं बूझैं कोई बूझनहार तो विचारते जाउ ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसीसों, जिन यह जग बिटमाया ॥
केते कान्ह भये मुरलीधर, तिन भी अन्त न पाया २

केतन्यो रामचन्द्र हैं कौन रामचन्द्र जे तपस्वी ब्रह्मा हैं तिनसों जगत् बिटमाया कहे बनायो है अर्थात् जे नारायण रामावतार लेइहैं सो ब्रह्माते कैसे जग बनवायो सो कथा पुराणन में प्रसिद्ध है कि कमल में ब्रह्मा भये तब आकाशवाणी भई "तप तप" तब तपस्या कियो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि जगत् बनावो तब बनावतभये नारायण जे रामावतार लेइ हैं तामें प्रमाण "यदा स्वपार्षदौ जातौ राक्षसप्रवरौ प्रिये। तदा नारायणः साक्षाद्रामरूपेण जायते॥ प्रतापी राघवसखा भ्रातृभिः सह रावणः। राघवेण तदा साक्षात्साकेतादवतीर्यते" ते नारायण अन्त न पायो ते नारायण रामचन्द्र क्षीरशायी श्वेतदीपनिवासी बहुत हैं जिनके गुण को अन्त कोई नहीं पावै हैं अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचन्द्र एकई हैं और केते कान्ह मुरलीधर भये तिन भी अन्त नहीं पायो काहेते कि उनके अनन्त गुणहैं॥ २॥

मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया ॥

केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिन भी अन्त न पाया ३
केतिक सिद्धसाधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया ॥
केते मुनिजन गोरख कहिये, तिन भी अन्त न पाया ४

और केतन्यो मत्स्य, कच्छ, वाराह, वामन, बौद्ध, कलङ्की-रूप भये तिन भी अन्त नहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिन में वामन नरसिंह आदिक अवतार आइगये तेऊ अन्त नहीं पायो है ३ और केतन्यो सिद्ध साधक संन्यासी भये जे वन में बास करतभये और केतन्यो मुनि गोरख इन्द्रिन के रखवार भये तेऊ ताको अन्त नहीं पायो ॥ ४ ॥

जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई, शिव सनकादिक हारे ॥
ताके गुण नर कैसे पैहौ. कहै कबीर पुकारे ५

और जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि तिनके अनन्तगुण हैं सो हे नर ! तुम कैसे पावोगे ? जे गुरुवन के कहे कहौहो कि महीं राम हौं सो मिथ्या है वे राग के गुण न तुम्हारे गुरुवा पायो है न तुम पावोगे व्यङ्ग यह है कि ते वे पाखण्डी गुरुवनको संग छांड़िकै रामोपासकनको संगकरौ तब जैसी भजनक्रिया वे करै हैं सो करिके निर्गुण सगुणके परे साहबके लोक जाउ तब तिहारो जनन मरण छूटैगो ये गुरुवालोग जौने में सिद्धान्त करि राखेहैं ते सब याही कैतीहै निर्गुण सगुणमें है और परम पुरुष पर साहबको लोक सब के पर है तामें प्रमाण कबीरजी को रेखता झूलनाछंन्द पिङ्गल में कहेहैं ॥ "चला! जब लोकको शोक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु बनाई। भृङ्ग ज्यों कीटको पलटि भृङ्ग किया आप समरङ्ग दै लै उड़ाई॥ छोड़ि नासूतमलकूत को पहुँचिया विष्णुकी ठाकुरी दीखजाई। इन्द्रकुब्बेरजहँ रम्भको नृत्य है देव तेंतीसकोटिक रहाई १ छोड़ि बैकुण्ठको हंसआगे चला शून्य में ज्योति जगमग जगाई। ज्योतिपरकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भयहुआ भयामिटाई ॥ अलख निर्गुण जेहि

वेद अस्तुति करै तीनहूँ देवको है पिताई। भगवान तिनके परे श्वेत मूरतिधरे भाग को आन तिनकोरहाई २ चारमुक्कामपरखण्डसो-रहकहैं अण्डको छोर ह्यांतेरहाई । अण्डकेपरे अस्थान आचिन्त को निरखिया हंस जब उह्यांजाई ॥ सँहस औ द्वादशै रूह हैं सङ्गमें करतकिल्लोल अनहद बजाई । तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छाई ३ महल कञ्चन बने माणिक तामें जड़े बैठ तहँ कलश आखण्ड छाजै । आचिन्तके परे अस्थान सोहंगका हंस छत्तीस तहँवाँ बिराजै ॥ नूरका महल औ नूरका भुम्य है तहाँ आनन्द सो द्वन्दभाजै । करत किल्लोल बहुभांतिसे संग यक हंससोहंग के जो समाजै ४ हंस जब जात षट्चक्रको बेधिकै सातमुक्काममें नजर फेरा । सोहंगके परेसुरति इच्छा कही सहसबामन जहँ हंस हेरा ॥ रूपकी राशिते रूप उनको बना न्हीं उपमा हिन्दूजी निवेरा । सुरति से भेटिकै शब्दको टेकि चाढ़ि देखि मुक्कामअंकूर केरा ५ शून्यके बीचमें बिमल बैठक जहां सहज अस्थान है गैवकेरा । नवो मुक्काम यह हंस जब पहुँचिया पलक बेलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ तहाँसे डोरिमक्रतारज्यों लागिया ताहि चाढ़ि हंसगो दै दरेरा । भये आनन्दसे फन्दसब छोड़िया पहुँचिया जहां सतलोक मेरा ६ हंसिनी हंस सबगायबज्जायकै साजिकै कलश वहिलेन आये । युगनयुग बीछुरे मिले तुम आइकै प्रेमकरि अङ्कसों अँगलगाये ॥ पुरुषने दर्श जबदीन्हिया हंसको तपनिबहु जनमकी तब नशाये । पलटिकै रूप जब एकसेकीन्हिया मनहुँ तब भानु षोडश उगाये ७ पुहुपके दीप पीयूष भोजन करै शब्द की देह जब हंसपाई । पुहुप के सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्र छाई ॥ दिपैं बहुदामिनी दमक बहुभांतिकी जहां घन शब्द को घुमड़लाई । लगे जहँ बरसने गरज घन घेरि कै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहाई ८ सुनै सोइ हंस तहँ यूथके यूथ ह्वै एकही नूरयकरङ्गरागै । करत बाहार मनभामिनी मुक्तिभै कर्म औ भर्म सबदूरिभागै ॥ रङ्क औ भूप कोइपरखि आवै नहीं करत

किल्लोल बहुभांतिपागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखण्ड सतशब्दलागे ९ पुरुष के बदनकी कौन महिमा कहौं जगत् में उभय कछु नाहिंपाई। चन्द्र औ सूरगण ज्योति लागैनहीं एकहीनख्यपरकाशभाई। पानपरवानजिनवंश का पाइया पहुँचिया पुरुषके लोकजाई। कहैं कबीर यहि भाँति सोपाइहौं सत्यकी राह सो प्रकट गाई १०" और वह लोकको वर्णन वेदसारार्थ जो सदाशिवसंहिताहै ताहूमेंहै (श्रीसौमित्रिरुवाच) "महर्लोकःक्षितेरूर्ध्वमेककोटिप्रमाणतः। कोटिद्वयेन विख्यातजनलोकं व्यवस्थितः १ चतुष्कोटि प्रमाणं तु तपोलोको विराजितः। उपरिष्टात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः २ आयुःप्रख्यातकौमारं कोटिषोडशसंभवम्। तदूर्ध्वोपरिसंख्यातमुमालोकं सुनिष्ठितम् ३ शिवलोकं तदूर्ध्वं तु प्रकृत्या च समागतम्। विश्वस्य पुरतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो बहिः ४ एतस्माद्बहिरावृत्तिः सतावरणसंज्ञका। तदूर्ध्वं सर्वतत्त्वानां कार्यकारणमानिनाम् ५ निलयं परमं दिव्यं महावैष्णवसंज्ञकम्। शुद्धस्फटिकसंकाशं नित्यस्वच्छमहोदयम् ६ निरामयं निराधारं निरम्बुधिसमाकुलम्। भासमानं स्ववपुषा वयस्यैश्च विजृम्भितम् ७ मणिस्तम्भसहस्रैस्तु निर्मितं भवनोत्तमम्। वज्रवैदूर्यमाणिक्यग्रथितं रत्नदीपकम् ८ हेमप्रासादमावृत्य तरवः कामजातयः। रत्नकुण्डैरसंख्यातपुरुषैर्मलयवासिभिः ९ स्त्रीरत्नैः परमाह्लादैः संगीतध्वनिमोदितैः। स्तुतं च सेवितं रम्यरत्नतोरणमण्डितम् १० कारुण्यरूपं तन्नीरं गङ्गा यस्माद्विनिःसृता। अनन्तयोजनोच्छ्रायमनन्तयोजनायतम् ११ यत्र शेते महाविष्णुर्भगवाञ्जगदीश्वरः। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् १२ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतं व्यवस्थितम्। इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणां च सहस्रशः १३ उद्भवन्ति विनश्यन्ति कालज्ञानविडम्बनैः। यदंशेन समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १४ कार्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः। यत्र आवर्तते विश्वं यत्रैव च प्रलीयते १५ तद्वेदा परमं धाममदीयं पूर्वसूचितम्।

एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातु वाञ्छितं हि नः१६ तदूर्ध्वन्तु परं दिव्यं सत्यमन्यद्व्यवस्थितम्। न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवद्भावितात्मनाम् १७ महाशम्भुर्मोदतेऽत्र सर्वशक्तिसमन्वितः। तदूर्ध्वं तु स्वयंभातं गोलोकं प्रकृतेः परम्१८" अरु सहस्रशीर्षापुरुष जो लिख्यो है तहँ शुद्धजीव समिटेरहे हैं वे समष्टि हैं ताके रोमरोम में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड हैं तहँते अनेक ब्रह्माण्ड उत्पत्ति होइ हैं और तहँ महाप्रलय में लीन होइ हैं और दूसरे सत्यलोक में जो महाशम्भुको वर्णनकियो सो परमगुरु को रूप है तामें प्रमाण "वन्देशम्भुजगद्गुरुम्" और गुरुसों व साहबसों अभेद तामें प्रमाणहै॥ "आचार्यं मां विजानियान्नावमन्येत कर्हिचित्" (इति भागवते) और महाशम्भु सों व महाविष्णुसों अभेदहै तामें प्रमाण "शिवस्य श्रीविष्णोर्यइह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामाहितकरः" (इतिस्कन्दपुराणे) और नारायण जे वर्णन करिआये तेऊ श्रीरामचन्द्रई के रूप हैं तामें प्रमाण (सदाशिवसंहितायाम्) "वासुदेवो घनीभूतं तनतेजो महाशिवः" और गोलोक में श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं और गोलोकके मध्य साकेतमें रामरूप ते रघुनाथजी विहारकरै हैं तामें प्रमाण सदाशिवसंहिता के विस्तारते वर्णन करि आये कि पश्चिमद्वार वृन्दावन है, उत्तरद्वार जनकपुर है, पूर्वद्वार आनन्दवन है, दक्षिण द्वार चित्रकूट है ताके आगे यह लोक है तेहिते इहां प्रयोजन मात्र लिख्यो है "तेषां मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् इति" और साकेत के ऊपर कछु नहीं है और साकेत, अयोध्या और सत्यासत्य लोक इत्यादिकनाम सब उस लोकके पर्याय हैं तामें प्रमाण "साकेतान्न परं किंचित्तदेवाहि परात्परम्" और गोलोक जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तेई श्रीरामचन्द्रईके महत् "सीतारामात्मकं युग्मं प्राविशन्नातिपूर्वकम् १" श्रीजानकीजी ने श्रीरघुनाथजी सों कह्यो कि वृन्दावनमें विहार करिये तब रघुनाथजी ने कह्यो जब तुमकह्यो तें एक दूसरा विहारस्थल बनाइये तब हम वृन्दावन

बनायो राधिका तुम भई कृष्ण हम भये सो विहार करते भये सो हमारई तुम्हाररूप राधाकृष्ण है या कहिकै आकर्षण करिकै वृन्दावन बोलाइलियो राधाकृष्ण आइगये तबराधिकाजी जानकी-जी में लीनभई श्रीकृष्णचन्द्र रामचन्द्र में लीनभये अरु पुनि विहारकियो जब विहार करिचुके तब जानकी रघुनाथ ते निकसि-कै वृन्दावन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको सो यह कथा शुकसंहिता में है ताको एकश्लोकलिख्यो है और विस्तार से देखिलीजियो तेई श्रीकृष्णके नखको प्रकाश ब्रह्महै वही प्रकाश को मुसल्मान लामकान कहे हैं और जे दशमुक्काम रेखता में कहिआये और दशवोई मुक्काम सदाशिवसंहितामें वर्णनकरिआये तिनमें पांच मुक्काम मुसल्माननके कहे हैं और पांच मुक्काम छोड़िदेइहैं तिनको उनहींमें गतार्थ मानिलेइहैं मुसल्माननमें वोई पांचमुक्कामके दुइनाम हैं नासूतको आलम अजसाम कहे शरीर-धारी याते यह लोकके सब आइगये और मलकूत को आलम मिसाल फिरिस्तनकै दुनिया देवलोक और जबरूतको आलम अर्थात् कहे पृथ्वी, अप, तेज, वायु, तत्त्वरूप है और लाहूतको आलम कर्व कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाश जो है ब्रह्म वहीको वही लोकप्रकाश लिख्यो है और हाहूतको मुक्काम मह-म्मदी कहे जहांभर महम्मद पहुँचैहै श्रीकृष्णके लोक अब इनके मन्त्रऊ लिखे हैं "जिकिरिनासूतलाईलाहइलाहू जिकिरमलकूत-इल्लिलाहू जिकिरजबरूतअल्लाह अल्लाह जिकिरलाहूत अल्लाहजि-किरहाहूतहूंहू" सो इनको राति दिन पांचहज़ार बारकरै जब पांचहज़ार होय तब ध्यानकरै और ध्यान में गड़ै और आपको भूलै फिरि जहानको भूलै पुनि जिकिरकहे मन्त्रको भूलै तब क्रमते मजकूरको पहुँचै अर्थात् अल्लाही जे श्रीकृष्णचन्द्र हंसस्व-रूपदेइँ तामें स्थित ह्वैकै जिनको प्रकाश निराकार जोहैं ऐसे जे श्रीकृष्ण हैं तिनके पास होत उनके बताये मन वचनके परे जे खुद खाविन्द सब के बादशाह जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके पास

जाता है सो यह मत महम्मद जे साहब के बन्दे हैं तिनको साहब भेजा तब जे साहब के पास पहुँचनवारे रहे तिनको महम्मद भेद बताइद्वियो सो बिरले कोई कोई यह भेद जानैहैं ते साहब के पास पहुँचैहैं अब याको क्रम बतावै हैं जौनीभांति साहब के पास पहुँचै तामें प्रमाण पीरानपीरसाहब के पासपहुँचे ऐसे जेहैं सलोलके मालिक पनाहअता तिनको कबित्त "देहनसूतसुरैमलकूतऔ जीवजबूतकीरूहबखानै। अर्बीमेंनिराकारकहैंजेहिलाहुतैमानिकै मंजिलठानै॥आगेहाहूतलाहूतहैजादुतिखुदखामिन्द्रजाहूतमेंजानै। सोईश्रीरामपनाहसबैजगनाहपनाहअतायहगानै १" (दोहा) "तजैकमैणासूलहि निरखैतबमलकूत। पुनिजबरूतौछोड़िकै दृष्टि परै लाहूत २ इन चारोंतजि आगेहीपनाहआताहाहूत। तहां न मरै न बीछुरै जात न तहँयमदूत३" और जुलजलालअव्वल एक राम मुसल्मानोंके कहे हैं किताबन में प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका साहब बख्शीश का अर्थात् वह सबते बुजुर्गी कहे बड़ा है उससे बड़ा कोई नहीं है और वही गुनाहका बकसनेवालाहै और के छोड़ाये न छूटैगो जब श्रीरामचन्द्र जीवको छोड़ावैंगे तबहीं छूटैगो और खोदाके सौ नाम हैं निन्नानबे सगुणनाम हैं और मुक्तिको देनवारो निर्गुण अल्लाह नामहीहै वहीहै वही खुदखामिन्दका नामहै तौनै बात वेदशास्त्र में सिद्धान्त कियोहै कोई कोई जे साहब के पहुँचेहैं ते वे ग्रन्थजानै हैं सो लिख्योहै कि और देवतनके नामते अधिक और सब नाम भगवान्‌केहैं और भगवान्‌के सब नामते अधिक रामनाम है सो महादेवजी पार्वतीजी ते कह्यो है "सहस्रनामतत्तुल्यं रामनामवरानने। सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्त-विभ्रमकारकाः॥ एकएव परो मन्त्रोरामइत्यक्षरद्वयम्। विष्णो-रेकैकनामापि सर्ववेदाधिकं मतम्॥ तादृग्नामसहस्रेण रामनाम-समं स्मृतम्" (इति पाद्मे) और गोसाईंजीनेहू लिख्यो है "राम सकल नामनते अधिका" सो यही रामनाम ते अल्लाह नाम निकस्यो रामनाम के मकार को रकार भये आगे का पीछे

आया तब अर भया सो अर राके पीछे आया तब 'अरराम' भयो रलके अभेदसे 'अल्ला' भयो व्याकरण वर्णविकार, वर्ण नाश, वर्णविपर्यय पृषोदरादिपाठ से सिद्धशब्द को साधनके वास्ते प्रसिद्ध है और जो सदाशिवसंहिता में दश मुक़ाम लिखि आयेहैं और पहिले रेखतामें लिखिआयेहैं सो कबीरजी पुनि खुद खामिन्दको दूसरे रेखतामें वही बात लिख्योहै "जुलमतनासूत मलकूतमें फिरिस्ते नूरजल्लाल जबरूतमेजी। लाहूतमें नूरजम्माल पहिंचानिये हक्क मक्कानहाहूतमेजी॥ बका बाहूत साहूत मुर्सिद वारहै जो रब्यराहूमेंजी। कहत कब्बीर अबिगाति आहूत में खुद खामिन्द जाहूतमेजी १" सो वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण सबते न्यारे हैं और उनका धाम सबते परे है वाको कोई अन्त नहीं पायो सो तिनके गुण हे जीवो! तुम कैसे पावोगे ॥ ५ ॥

इति अठारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवां शब्द ॥ १९ ॥

एतत रामजपोहो प्राणी, तुम बूझोअकथकहानी। जाको भाव होत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १ डाइनि डारे सो नहाडोरे, सिंहरहे बन घेरे। पांच कुटुँबमिलि जूझनलागे, बाजन बाजघनेरे २ रोहु मृगा संशय बन हाँके, पारथ बाना मेलै। सायर जरै सकल बनडाहै, मक्षअहेरा खेलै ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै। जो यहिपदको गाइ बिचारै, आप तरै अरु तारै ॥ ४ ॥

एतत राम जपोहो प्राणी, तुम बूझौ अकथ कहानी॥
जाको भावहोत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १

एतत कहे ई जे निर्गुण सगुण के परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो कैसे जपो कि अकथ कहानी कहे मन बचनके पेर

जो है रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थबूझि कै जपो श्रीरघुनाथजीके ऊपर जाको भाव होयहै ताको यह संसाररूपी जो है निशा बिहानई ह्वै जायहै सोवततै जागि उठैहै ताते यह ध्वनित होयहै जाको रघुनाथजीके ऊपर भाव नहीं है ताको यह संसाररूपी निशा बनी रहैहै बिहान नहीं होयहै जागै नहीं है कहे ज्ञान नहीं होयहै भ्रमरूपी निशामें सोवतैरहैहै यहि संसारमें जीव कैसे घेरे रहतेहैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

डाइनि डारे सोनहा डोरे, सिंह रहे बन घेरे ॥
पांच कुटुँब मिलि जूझनलागे, बाजन बाज घनेरे २

डाइनि जेहैं गुरुवालोग छालाके डारनेवाली जे वाके कानमें अपनी विद्या डारिदियो इहां गुरुवालोग डाइनिहैं जे सिंहको मन्त्र ते बांधि देय हैं वा बन त्यागि और बन नहीं जायहैं औ सोनहा जो है सोहंहंसमन्त्रतौने मो डोरा बांध्यो अर्थात् यह कह्यो कि तहीं ब्रह्म है और कहां खोजै है तैं वा है वा तैं है यह मन्त्रको अर्थ बतायो सो सिंह जो है जीव या सामर्थ्य है सो उनहीं बाणीरूप वन में घेरिरह्यो कहे बँधिरह्यो तब पांचो जे ज्ञानेन्द्रिय हैं पांचो जे कर्मेन्द्रिय हैं अथवा पांचो जे प्राण हैं प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान तेई कुटुम्बहैं तिनमें मिलिकै जूझैंलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पञ्चआनन जब सिंहको मारन जाय है तब झुनका बाजा बजावै है तैसे यहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजा हैं ॥ २ ॥

रोहुमृगा संशय बन हांकै, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बन डाहे, मच्छ अहेरा खेलै ३

रोहु कौन कहावै कि जो कमरी में आगी बारत जाय है झुनका बजावत जाय है तामें मृगा मोहि जाय हैं सो वाही की छायामें पीछे धनुष बाणकी बांस की बंदूकादि आयुधलिये खड़ो रहै है शिकारी सोई मारै है यही रोह है सो मृगराज जो है जीव

ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यास कैकै धोखाब्रह्म को प्रकाश बतायो तामें रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहो हाँकि कौन लायो तो संशयरूप हँकवैया है जैसे आगी बरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृग मृगराज जाय है या कैसो बाजा बाजै है या कैसी टेम है या संशय जो है ज्ञान मिलन की चाह सो याको हाँकिलै आयो ऐसे गुरुवालोगनकी जो बताई वाणी वन है जौन अनहद सुनिबेकी युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनि सुनिकै और जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्म देखिकै जीव या संशय कैकै निकट जाय है और या बिचारै है कि या ज्योतिरूप ब्रह्म महीं हौं कि मोते भिन्न है तब शिकारी जैसे दुको रहै है ऐसो मूलाज्ञानरूप शिकारी अहंब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि वा जीवको अनुभव करायदेयँ कि महीं ब्रह्म हौं वाके जीवत्वको नाश कै देयहै यही मारिबो है और जैसे बाण लागे मृगराज को अन्तःकरण जर उठै है अधिक कोपै है वनमें जोई आगे वृक्ष परै है तौने पर चोट करैहै जो मारनवाले को देखै है तो वाहूको धरिखाय है ऐसे जब आपने को ब्रह्म मान्यो तब सायर जो संसार है सो जरै है अर्थात् संसार याको मिथ्या जानि परै है और बन डाहै है कहे वा दशा में बाणीरूप बन सोऊ भूलि जाय है ऐसे बधिक मार्‍यो बधिक को बाघ मार्‍यो बधिकको जब मारिकै दोऊ गलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो अथवा मरिकै दोऊ बहेरहे कीड़ापरे जब बाढ़को जल आयो तब मछरी खायो ऐसे ब्रह्महुमें लीन है अठईं अवस्था को प्राप्त भये तब न जीवत्व रह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसेहू भये तथापि साहब को विना जाने मच्छ जो काल है सो खायलेइ है फिरि संसार में परैहै तामें प्रमाण "येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः। आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं ततः पतन्त्यधो नादृतयुष्मदङ्घ्रयः" (इति भागवते) कबीरजी को प्रमाण "कोटिकरमकटपलमें, जो राचै यकनाम

अनेक जन्म जो पुण्यकरै, नहीं नाम बिनु धाम "॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै॥
जो यहि पदको गाइ बिचारै, आपु तरै अरु तारै ४

सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! जो यह पदको निरधारै कहे सारासार बिचार करै और जौन ब्रह्मपद कहिआये तौने को गाइ बिचारै कहे माया विचारै सो आपु तरिहि और आनहू को तारै है अर्थात् साहब को वा जानै व औरहू को जनाइदेइ॥ ४ ॥

इति उन्नीसवां शब्द समाप्तम्॥ १९ ॥

अथ बीसवां शब्द॥ २० ॥

कोई रामरसिक रसपियहुगे। पियहुगेसुखजियहुगे १ फल अमृतै बीजनहिंबोकला, शुकपक्षीरसखाई। चुवै न बुन्दअङ्गनहिं भीजै, दासभँवरसँगलाई२निगमरसाल चारिफललागे,तामेंतीनि समाई। एक है दूरिचहै सब कोई, यतन यतन कोई पाई ३ गयउ बसन्तग्रीष्म ऋतुआई, बहुरि न तरुवर आवै। कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राममगन ह्वै पावै॥ ४ ॥

कोइ रामरसिक रस पियहुगे। पियहुगे सुख जियहुगे१
फल अमृतै बीज नहिं बोकला, शुक पक्षी रस खाई॥
चुवै न बुन्द अङ्ग नहिं भीजै, दासभँवर सँग लाई २

हे जीवो! कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिक ह्वैकै रामरस पिऔगे जो रामरसिकनतें रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्ममरणते छूटोगे अरु आनन्दरूप होउगे १ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके खाये ते जन्म मरण नहीं होइ है और तौनेफल में बीज बोकला नहीं है अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहीं है और न मीठो फल होइ है ताही फल में सुवा चोंच चलावै है यह लोकमें प्रसिद्ध है यहां शुकाचार्य रामरस को मुक्त ह्वै आस्वादन कियो

है ताते यह व्यञ्जित भयो कि रामरसते ब्रह्मानन्द कमही हैं अर्थात् श्रीमद्भागवत में है “ वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ” ऐसो कहि शुकाचार्य परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रही के चरणनको बन्दनाकियोहै और श्रीरघुनन्दनही के शरणगये हैं यह वर्णन श्रीमद्भागवतहीमें है “तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टं पादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये” (इति भागवते) और श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्व तात्पर्यते वर्णन कियो है सो कोई बिरला सन्तजन याको अर्थ जानै है और जो यह पाठहोइ “फल अंकृते बीज नहिं बोकला” तो यह अर्थ है कि फलकी अंकृति कहे आकृति तो है परन्तु बीजबोकला जे निर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवै हैं इनते भिन्न हैं सो रामरसरूपी फल है तो रसरूपई है परन्तु वाको रस बुन्दहू नहीं चुवैहै अर्थात् अन्त कबहूं नहीं होइ है अनादि अनन्त है और काहूके पांचौ शरीर के अङ्ग नहीं भीजे हैं अर्थात् कोई पांच शरीर ते भिन्न नहीं होइ है जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवर हैं ते वाके संग लगे रहैंहैं अर्थात् रामरसपान करतई रहैं हैं ॥ २ ॥

निगमरसाल चारि फल लागे, तामें तीनि समाई ॥
यकै है दूरि चहै सब कोई, यतन यतन कोइ पाई ३

सो कबीरजी कहै हैं कि निगम जो है रसालकहे आमको वृक्ष तामें चारिफल लागे हैं अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष तिनमें तीनिफल तहैं समात हैं कहे नष्ट ह्वैजाइहैं अर्थात् तीनिऊं अनित्यहैं और एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरि है यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावै है अर्थात् निगमतौ रसाल है रसमय है तात्पर्यवृत्ति करिके साहबई को बतावै है सो वह तो कोई जानै नहीं है यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ॥ ३ ॥

गयउ बसन्त ग्रीष्मऋतु आई, बहुरि न तरुवर आवै ॥
कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राम मगन ह्वैपावै ४

अरु जो कोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फलपायो है वाको

पायो है ताको बसन्तऋतु जाइरहै है ग्रीष्मऋतु ह्वैजाइ है कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलिगयो सुखको आस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीं ब्रह्म हौं ग्रीष्मऋतुमें प्रकाश बढ़ै है सो यही प्रकाशमें समाइगयो सो फेरि जोचाहै कि रामोपासनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छाया मिलै तौ नहीं मिलै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सुखसागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके रामनाम रस में जब मग्न होय है तबहीं पावैहै जीवको स्वरूप " आत्मदास्यंहरेस्स्वाम्यंस्वभावं च सदास्मर " और शुकाचार्य या फलको चाखिन है तामें प्रमाण "निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमालयं मुहरहोरसिका भुविभावुकाः ५ " (इति भागवते) ॥ ४ ॥

इति बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २० ॥

अथ इक्कीसवां शब्द ॥ २१ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहै अभागा १ कोइ तीरथकोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २ विद्यावेदपढ़ि करहंकारा । अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३ दुखितसुखितसबकुटुँब जेंवइबे । मरणबेरयकसरदुखपइबे ४ कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ॥ ५ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहैअभागा १

सबको दण्डछोड़ाय देनवारे जे सबते परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें जो तैंनहीं रमैहै सो तोको गुरुवालोगनको कौन दण्ड चबावलगाहै यह तो सब यहींके साथी हैं साहबके भुलायदेनवारे हैं जे उपदेश करनवारे गुरुवनके कहे माया ब्रह्मआत्माको ज्ञानरूपी दण्डचबावमें जोते परे हैं सो हे अभागा ! जब तैं मरिजैहै तब वे गुरुवा तोको न बचासकेंगे तब क्या करोगे ॥ १ ॥

कोइतीरथ कोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २

तीर्थन में जाइकै कोई चहौहौ कि बिना ज्ञानही मुक्ति ह्वै जाइ है और कोई मूड़मुड़ायकै बेषबनाइकै संन्यासीह्वैकै और अपने आत्माही को मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तिह्वैजायँ और कोई नास्तिकादिकनके जे नानापाखण्ड मतहैं तिनमें लागिकै जानौकि मुक्ति ह्वैगये और कोई भ्रम जो धोखाब्रह्म है तामें लागिकै आपने को ब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हम मुक्तह्वैगये और कोई और और देवतन के मन्त्रउपदेश पायकै जानौहौ कि हम मुक्त ह्वै गये ॥२॥

बिद्या बेद पढ़ि कर हंकारा। अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३

अरु कोई वेदबाह्य जे नानाविद्या अपने अपनेगुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै व कोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र और चौंसठकलादिक सब आइगये अहंकार करोहो कि हम मुक्त ह्वैगये सो मुक्ति तो जिनको वेदतात्पर्य करिकै ऐसे जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके बिना जाने न होइगी होयगो कह्यो कि जब अन्तकाल तेरो होइगो तब यहो मुख में क्षार फांकैगो और पुनि जब पुण्यक्षीण होइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरबे करोगे क्षारई फांकौगे ॥ ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुँबजेंवइबे। मरणबेरयकसरदुखपइबे४

दुःखसुख में सबकुटुम्बनको जेंवावैहै ते मरणसमय कोई काम नहीं आवै हैं तें अकेलही दुःख पावैहै परन्तु सहाय तेरी कोई नहीं करिसकै है ॥ ४ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोटी। जोरहकरवानिकसलटोटी ५

कलि नाम झगड़ाको है सो कबीरजी कहैहैं यह मायाब्रह्मको झगड़ा बहुत खोट है अथवा यह कलिकाल अतिखोट है जो वस्तु करवामें रहै है सोई टोटीते निकसैहै तैसे जो कर्म यह जीव करैहै सोई दुःख सुख वह जन्म भोगकरै है अरु नाना देवतनकी उपासना अब करै है ताही की बासना बनीरहै है तेहिते पुनि वोई देवतनमें लागै है अरु जो ब्रह्मबिचार अब करै है सोई ब्रह्मबिचार पुनि जन्म लैकै करै है अर्थात् विना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र के

जाने जन्म मरण नहीं छूटै है जो वासना अन्तःकरणमें बनीरहै है सोई पुनि होय है ॥ ५ ॥

इति इक्कीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवां शब्द ॥ २२ ॥

अबधू छोड़ो मन बिस्तारा। सोपदगहहु जाहिते, सद्गति परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरिहजरत तब नाहीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असी सहस पैगंबर नाहिं, सहसअठासी मूनी। चन्द्रसूर्यतारागण नाहीं, मच्छकच्छ नहिं दूनी ३ वेद किताब अस्मृति नहिं संयम, नहीं यमन परसाही। बांगनेवाज कलिमा नहिं होते, रामोनहीं खोदाही ४ आदिअन्तमन मध्य न होते, आतश पवन न पानी। लख चौरासी जीवजन्तु नहिं, साखी शब्द न बानी ५ कहै कबीर सुनोहो अबधू, आगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतमकिन उपचारा॥ ६ ॥

अबधू छोड़ो मनबिस्तारा। सोपदगहहुजाहि ते संद्गति, परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरि हजरत तब नाहीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असीसहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी। चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी ३ वेद किताब अस्मृति नहिं संयम, नहीं यमन परसाही। बांगनेवाजकलिमा नहिं होते, रामो नहीं खोदाही ४ आदिअन्तमनमध्य न होते, आतश पवन न पानी। लखचौरासी जीव जन्तु नहिं, साखीशब्द न बानी ५ कहैकबीरसुनोहोअबधू, आगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतम किन उपचारा ॥ ६ ॥

हे अवधू जीवो! तुम्हारे तो बधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात् तुम तौ मायाते भिन्न हौ जेतनो तुम देखो हौ सुनो हौ ताको माया में मिलिकै तुम्हारे मनही विस्तार कियो है सो यह मनको विस्तार छोड़िदेउ अरु जितने सद्गति कहे समीचीन गति है मन वचनके परे धोखाब्रह्म के पार ऐसो जो लोक प्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पद गहौ कबीर जी कहे हैं कि हे जीवो! विचार तो करौ जो जो बात यह पदमें स्पष्ट वर्णन करिगये ते ये कोऊ तब नहीं रहे अरु वासों भिन्न जो तुम कहौहौ कि पूर्णब्रह्म है कहे सर्वत्र ब्रह्मही है वासों भिन्न दूसरो नहीं है सो यह धोखा कहांते प्रकट भयो है और किरितम जो माया है ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह शुद्धसमष्टि जीवको मनहीं किरितम जो माया है ताको आरोपण कियो है और मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियो है ताहीको कियो राम खोदाय आदि जे मन वचन में आवै हैं जे वर्णन करि आये हैं तेई विस्तारहैं सो पूर्व मङ्गल में और प्रथम रमैनी में वर्णन करिआये हैं और यहां राम कोउ हरिको जो कहै हैं सो नारायण जे रामावतार लेइहैं तिनको कहै हैं नहीं यमनपर साही कहे चौदहो यमनके परे जे निरञ्जनहैं तिनहूँकी साही नहीं रही परम पर पुरुष श्रीरामचन्द्र को नहीं कहै हैं काहेते कि वेतौ मन वचन के परे हैं सो पूर्व लिखि आये हैं सो बांचि लेहुगे सो जब मन को त्यागो तब परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूप देइँ तामें प्रमाण "मुक्तस्य विग्रहो लाभः" यह श्रुति तौने स्वरूपते साहब को अनिर्वचनीय रामनाम नामादिक तुमको स्फुरित होइँगे तामें प्रमाण "वाङ्मनो गोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः। तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाश्यते" (इति महारामायणे) ॥६॥

इति बाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवां शब्द ॥ २३ ॥

अबधू कुदरतिकी गति न्यारी । रङ्कनिवाजकरैवह राजा, भूपति करै भिखारी १ येतेलवँगहि फलनाहिंलागै, चन्दन फूल न फूलै ॥ मच्छशिकारी रमै जँगलमें, सिंहसमुद्रहिभूलै २ रेड़ारूखभयामलयागिरि, चहुँदिशिफूटीबासा । तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्डमें, देखै अन्धतमासा ३ पंगुलमेरुसुमेरुउलंघै, त्रिभुवनमुक्ताडोलै । गूंगा ज्ञानविज्ञान प्रकाशै, अनहदबाणीबोलै ४ बांधि अकाशपताल पठावै, शेषस्वरगपरराजै । कहै कबीर रामहैंराजा, जो कछुकरैं सो छाजै ॥ ५ ॥

जो पूर्व यह कहिआये कि रामौ नहीं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीचीन गति होइ है तिनके पद गहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै बतावै हैं ॥

अबधूकुदरतिकी गतिन्यारी ॥
रङ्कनिवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी १
येते लवँगहि फल नहिं लागै, चन्दन फूल न फूलै ॥
मच्छ शिकारी रमै जँगलमें, सिंह समुद्रहि भूलै २

हे अबुध, जीवो! परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्य की गति न्यारी है सुग्रीव जे पुत्र कलत्र ते हीन भिखारीकी नाईं बन बन पहाड़ पहाड़ बागतरहे तिनको निवाजिकै राजा बनाइ दियो और सब राजनके जीतनवारे जे क्षत्रिय तिनको मारिकै पृथ्वी भूसुरन दै डारेउ नारायण के दशौ अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो १ लवङ्गमें फल नहीं लागै सोऊ लागै चन्दनमें फूल नहीं फूलै सोऊ फूलै है जाकी सामर्थ्य ते सो बाल्मीकीय में लिख्यो है जब श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं तब जे वृक्ष फलै फूलैवाले नहीं रहे सूखेरहे तेऊ फलि फूलि आये हैं और मच्छ जो मत्स्योदरी सो शिकारी जो शन्तनु ताके साथ भय ते रमनलगी सिंह समर्थ को कहै हैं सो

समर्थ जे बड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें बसेजाय ॥ २ ॥

रेड़ारूख भया मलयागिरि, चहुँदिशि फूटी बासा ॥
तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्ड में, देखै अन्ध तमासा ३

रेड़ा रूख जेहैं शबरी वानर निषादादिक जिनको वेदका अधिकार नहीं रह्यो तेऊ चन्दन ह्वैगये उनकी बास चारिउ दिशा फूटी कहे उनको यश सबकोई गावैहै चन्दन औरौ वृक्ष को चन्दन करैहै ऐसे औरहूको साधुन बनाबनवारे ये सब भये तामें प्रमाण "न जन्म नूनं महतो न सौभगं न वाक् न बुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः। तैर्यद्विसृष्टानपि नो वनौकसश्चकार सख्ये बतलक्ष्मणाग्रजः" (इति भागवते) और आँधर जे हैं धृतराष्ट्र तिनको कृष्णचन्द्र ब्रह्माण्डभरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्यते शरीरही में देखायदियो नारायण और कृष्णचन्द्र साहबकी सामर्थ्यते करैहैं तामें प्रमाण "यस्य प्रसादाद्देवश ममसामर्थ्यमीदृशम् । संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ धाता सृजति भूतानि विष्णुर्द्धारयते जगत्" (इति सारस्वततन्त्रे) कृष्णचन्द्रको अवतार विष्णुहीते होइ है सो पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै, त्रिभुवन मुक्ता डोलै ॥
गूंगा ज्ञान बिज्ञान प्रकाशै, अनहद बाणी बोलै ४

और जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगु जे हैं अरुण ते पृथ्वी के कीला जे हैं सुमेरु कुमेरु तिनको रोज उलंघै हैं नाकैहैं अथवा पंगु जो हैं राहु जाके शिरैभर है गोड़ हाथ नहीं है सो सुमेरु कुमेरु का नाकतरहै है और मुक्त जे हैं नारद, शुक, कबीर आदिक जे संसार ते मुक्त ह्वैके मनादिकनको छोड़िकै साहब के पास गये हैं और यह शास्त्र में लिखैहै कि वहांके गये पुनि नहीं आवैहै परन्तु तेऊ साहब की सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलैं हैं संसारबाधा नहीं करि सकै है और जब शुकाचार्य निकसे हैं तब व्यास पछुआनजात रहे हैं तब गूंगे जे वृक्ष हैं तेऊ व्यास को समुझायो है और

मध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तब बरदा शिष्यनको पढ़ायो है और जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उन के दासनके ह्वैगई कि वोई अनहद बाणी को बोलै हैं जाकी हद नहीं है ॥ ४ ॥

बाँधि अकाश पताल पठावै, शेष स्वरगपर राजै ॥
कहै कबीर राम है राजा, जो कुछ करै सो छाजै ५.

और आकाश जो है आकाशवत्ब्रह्म तौने को जो मानैहै कि वह ब्रह्म मैंहीहौं ताको साहब अपनो ज्ञान कराइकै धोखाज्ञानको बाँधिकै पतालमें पठैदेइहै अर्थात् जेहि जीवको मूलाज्ञान निर्मूलई करि देयहै जैसे लोकमें या बात कहै हैं कि या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़ादियो फिरि वा अज्ञान को अंकुर नहीं होय है और शेष कहे भगवत् शेष जो है जीव सो जे साहब की सामर्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जो है साहब को लोक तहाँ राजैहै स्वर्गपद को अर्थ जो दुःखते भिन्न स्थान होय है सो कहावै स्वर्ग और जो लोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहब तहाँ राजैहै दुःखरहित स्थानको स्वर्ग कहै हैं तामें प्रमाण " यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनन्तरम्। अभिलाषोपनीतं च तत्पदं स्वः पदास्पदम् इति" सो कबीरजी कहै हैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परम परपुरुष श्री रामचन्द्रहा हैं वे राजा हैं वे जो कुछ करैं सो सब छाजैहै चाहे रङ्कको राजा करैं चाहे राजाको रङ्ककरैं चाहे लौंगमें फल लगावैं चाहे चन्दनमें फूल फुलाय देयँ चाहे मछरीको वंनमें रमावैं चाहे सिंह को समुद्रमें रमावैं चाहे रेंड़ारूखको चन्दन करैं चाहे अन्धा को तीनउलोक देखायदेयँ चाहे पंगु को सुमेरु कुमेरु नँघाय देयँ चाहे गूंगाको ज्ञान कहवायदेयँ चाहे आकाशको बाँधिकै पाताल पठावैं चाहे पातालवासी जे शेष तिनको स्वर्गपर राखैं या सामर्थ्य उनमें है श्रीरामचन्द्र तो राजा हैं तामें प्रमाण "राजाधिराजस्सर्वेषां रामएवनसंशयः" और उनहीं की भयते सूर्य चन्द्रमा

अवसर में उयेहैं और मृत्यु जब समय आवैहै तब खाय है तामें प्रमाण "यद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति यद्भयात्। वर्षतीन्द्रोद-हत्यग्निर्मृत्युश्चरतिपञ्चमः" (इति श्रीमद्भागवते) ॥ ५८॥

इति तेईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥ २४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा। जोई पदको करै निबेरा १ तरुवर एक मूलबिनठाढ़ो, बिन फूले फललागा। शाखापत्र कछू नहिं वाके, अष्ट गगनमुखजागा २ पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै। गावनहारके रूप न रेखा, सतगुरु होइ लखावै ३ पक्षी खोज मीनको मारग, कहे कबीर दोउभारी। अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरतिकी बलिहारी ॥ ४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा। जोई पद को करै निबेरा १
तरुवर एक मूल बिन ठाढ़ो, बिन फूलै फल लागा ॥
शाखा पत्र कछू नहिं वाके, अष्टगगन मुख जागा २

बधू जाके न होइ सो अवधू कहावै सो हे अवधू जीवो! जो यह पदके अर्थको निबेरा करिके जानै सो योगी गुरु कहे श्रेष्ठ है और मेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौ हौं १ एक जो तरुवर है सो विना मूल ठाढ़ो है अरु वामें विना फूल फल लागो है सो यहां तरुवर मन है सो जड़ है अरु आत्मा चैतन्य है शुद्ध है जो कहिये आत्मा उत्पत्ति है सो जो आत्मा उत्पत्ति होतो तो आत्मा चैतन्यहै मानो होतो तातै आत्मा ते नहीं उत्पत्तिभयो यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो विचारै तो वाको मूल भगवत् अज्ञान सत् नहीं है विना मूल ठाढ़ो भयो है अरु विना फूले फल लागोहै कहे जगत् उत्पादक क्रियामन नहीं कियो मिथ्या संकल्पमात्रते जगद्रूप फल लागवई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अङ्ग नहीं है चित्त बुद्धि अहंकार येऊ मिथ्याहैं निराकार हैं

अरु यह मनैके मुखते आठौ गगन जागतभये सात सप्तावरणके आकाश अथवा चैतन्याकाश ॥ २ ॥

पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै ॥
गावनहार के रूप न रेखा, संतगुरु होइ लखावै ३

अब श्रीकबीरजी जीवात्मा को वृक्षरूप ह्वैकै वर्णन करैहैं पौ बिनु कहे आत्माको जगत् को अंकुर नहींहै मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्र दुइ लागबेई कियो और करहू जो कर्म है सो नहीं रह्यो आत्मामें जगत्रूप तुम्बा लागबेई कियो यह जीवात्माकी दशा काहेतेभई कि बिनु जिह्वा जो है निराकार ब्रह्म ताके जे गुण हैं देश काल वस्तु परिच्छेद ते शून्यत्व सो आपने में लगावन लग्यो ये गुण मोहीं में हैं मेरो स्वरूप यहीहै सो जो या आपने को ब्रह्म मान्यो तौ आत्मा के ब्रह्मके रूप को रेख नहीं है काहेते याको देश बनो है समष्टि जीवलोक प्रकाश में रहै है और काल बन्यो है जौनेकाल में समष्टिते व्यष्टि होइहै और या देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते सहित है काहेते अणु है भगवद्दास है तामें प्रमाण “बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च। भागो जीवः सविज्ञेयः सचानन्त्यायकल्पते” (इति श्रुतिः) अंशोनाना-व्यपदेशात्ते ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीन को मारग, कहे कबीर दोउ भारी ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरति की बलिहारी ४

ताते मीनकी नाईं संसारते उलटीगति चलिकै पक्षी जो हंस-स्वरूप आप सो ताको खोज कबीरजी कहै हैं ये दोऊ भारीहैं संसारते उलटी गति होइबो यह भारीहै आपनो हंसरूप पाइबो यहू भारी है सो संसारते उलटी गतिकरि हंसरूपपाइकै परमपर जो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय भाव यह है तब तेरो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति चौबीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवां शब्द ॥ २५ ॥

अबधूवोततुराबलराता। नाचै बाजन बाज बराता १ मौर के माथे दूलहदीन्हों, अकथाज़ोरिकहाता। मड़ये के चारन समधी दीन्हों, पुत्रविवाहलमाता २ दुलहिनिलीपिचौकबैठाये, निरभयपद परभाता। भातहि उलटि बरातहिखायो, भली बनी कुशलाता ३ पाणिग्रहण भये भवमण्डौ, सुषुमनि सुरति समाता। कहै कबीर सुनोहो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ॥ ४ ॥

अबधू वोततुंरा बलराता। नाचै बाजन बाज बराता १

हे जीवो! आप तौं अबधूरहेहो कहे आपके बधू जो है माया सो नहीं रही है परन्तु रौरे अब वह तत्त्व में रातेहैं अथवा हे अबधू! यह शरीर को राजा है जीव सो अब वह तत्त्व में राता है कौनतत्त्व में राता है सो कहै हैं जहां बाजन नाचैहै बरात बाजैहै सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचै है कहे जाग्रत्अवस्था में स्थूल स्वप्न अवस्थामें सूक्ष्म और सुषुप्ति में कारण तुरीयामें महाकारण येई नाचैहैं तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उनमुनी मुद्राआदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तईबाजैहैं कहे तिनको जो संघट्ट ह्वैबोहै इन्द्रियनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकी ध्वनि सुनि परती हैं तामें प्रमाण "उठतशब्द घनघोर, शंखध्वनि अतिघना। तत्त्वोंकी झनकार, बजतझीनीझना ॥ १ ॥

मौर के माथे दूलह दीन्हों, अकथा जोर कहाता ॥ मड़ये के चारन समधी दीन्हों, पुत्र बिवाहल माता २

नाभीमें चक्र है तामें नागिनीको बास है चक्रके द्वारमें मूड़ दिये परीहै आत्मा नीचे है सो वह आत्मा दूलह है ताही की नागिनी मौर ह्वै रही है सो जब पांचहज़ार कुम्भक कियो तब नागिनी जागी सो ऊपर को चढ़ी तब चक्रको द्वार खुलिगयो तब आत्मा तो दूलह है सो चढ़िकै मौर जो नागिनी है ताके माथेपर

गैबगुफा में बैठ्यो जाइ और बरातन में जो नहीं कहिबे लायक झूठीबात सो गारी में कहैहैं इहां शरीर में ब्रह्म ह्वैजैबो अकथ है कहिबे लायक नहीं है सो कहै हैं कि हम ब्रह्म ह्वैगये और मड़ये के चारनको नेग समधी देइहैं इहां मड़येके चारनके नेगनमें समधीही दीन्हो है माया को पिता जो मन है सो एक समधी है और मनके समधी साहब हैं काहेते कि यह जीव भगवद्वात्सल्य को पात्र है जब यह आत्मा विषयन में रह्यो है तब बेजाने कबहूं कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्माण्ड मड़वा में गयो तबते कबीर जी यह कूट करै हैं कि मड़ये के चारन में समधी को देराख्यो है कहे समधी जो साहब ताको कहिबो सुनिबो मिटिगयो सो जानै तो यह है कि हम मायाते छूटिगये पै नागिनी को जै बुन्द सुधा देइ है तै वर्ष वहां समाधि लागै है सो नागिनी ही वहां गहिराखै है सो पुत्र जो जीव है सो माता जो माया है ज्योतिरूप आदि-शक्ति ताको विवाहि लेय है कहे वाही के संग ज्योति में लीन ह्वैके वहां रहै है ॥ २ ॥

दुलहिन लीपि चौक बैठाये, निर्भय पद परभाता ॥
भातहिं उलटि बरातहि खायो, भली बनी कुशलाता ३

चौक लीपिकै दुलहिनि बैठावै हैं यहां दुलहिन जो है माया जो जगत्‌रूप करिकै नानारूप है ताको लीपिकै एक करिडार्‌यो कहे एक ब्रह्महीं मानत भयो ताके ऊपर चौक बैठायो कहे चौक देत भयो अर्थात् अन्तःकरणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावै है वृत्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाण चैतन्य कहावै है विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय चैतन्य कहावै है स्फूर्त्यवच्छिन्न चैतन्य फूल चैतन्य कहावै है सो ये चारों चैतन्यको चौक बैठायो कहे चौक पूर्‌यो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थित कियो विवाह होत होत भिनसार होइजाय है तब यह मन भयो कि हम निर्भयपद को पहुँचिगये प्रभात ह्वैगयो मोहरात्री व्यतीत ह्वैगई नागिनको जो अमृत सरोवर में अमृत पिआवैहै सोई भात है सो नागिनी

जब अमृत पियो तब वहै भात बरात जो आगे वर्णन करि आये पांचतत्त्व पचीस प्रकृति ताको खाइ लियो अर्थात् कुछ सुधि न रहगई सो कबीरजी कहै हैं कि भली कुशलात बनी है कि तब तो कुछ सुधिहू रही अब कछू सुधि नहीं रहिगई ॥ ३ ॥

पाणिग्रहण भये भवमण्ड्यो, सुषमनि सुरति समाता ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ४

वहां मंडवपरेपर पाणिग्रहण होय है इहां पाणिग्रहण भये पर भवमण्ड्यो अर्थात् जब पाणिग्रहण माया को ह्वै चुक्यो कहे नागिनी को जब सुधा पिआइचुक्यो तब जे मुँह नागिनी को पानी दियो एक मुँहदियो तो महीना भरेकी समाधिलगी व दुइ मुँह दियो तो तीन महीनाकी समाधिलगी व चारि मुँह दियो तो छः महीनाकी समाधिलगी व पांच मुँह दियो तो वर्ष दिनकी व छः मुँह दियो तो तीन वर्ष की व सात मुँह दियो तो बारह वर्ष की समाधिलगी और जो हजारन वर्ष समाधि लगावा चाहै तो और मुँह देय सो जब नागिनी को सुधा पिआयो तब जे मुँह दियो तेतनेनादिनभर सुषुमनिसुरति समाता अर्थात् सुषुम्णा में जीव की सुरति समाइ है पुनि जब समाधि उतरी तब फिर भवमण्ड्यो कहे संसारी भयो अर्थात् पुनि ब्रह्माण्डमण्ड्यो कि शरीरकी सुधि भई सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, हे ज्ञातापण्डितो ! तुम सुनौ तौ बूझौ तौ वे कहां मुक्ति भये नहीं भये फेरि तो संसारही में उलटि आवै हैं ॥ ४ ॥

इति पचीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ छब्बीसवां शब्द ॥ २६ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये। गाठन भजन सवारै सोई, ज्यों राम रखै त्यों रहिये १ आसन पवन योग श्रुति संयम, ज्योतिषपढ़िबैलाना। छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, ये कल काहु न जाना २ आलम दुनी सकल फिरि आये, कलि जीवहि

नहिं आना। ताही करिकै जगत उठावै, मनमें मन न समाना ३
कहै कबीर योगी औ जंगम, फीकी उनकी आसा। रामै रामरटै
ज्यों चातक, निश्चय भगतिनिवासा ॥ ४ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये ॥
गाठन भजन सवारै सोई; ज्यों राम रखै त्यों रहिये १

कबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ, जीवो! और और बहुत मत-वारे तो बहुत जीव हैं तिनको कहा कहिये रामोपासक हमारो दोस्त जैसे हम गाठ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहे हैं ऐसे ऐसे वह गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देखे रहै और जैसे हम को राम राखै है तैसेही रहै हैं ऐसे वहू रहै क्षणभरि न भूलै ऐसा कोई बिरला है ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुतिसंयम, ज्योतिष पढ़ि बैलाना ॥
छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, एकल काहु न जाना २

अब बहुत मतवारे जे बहुत हैं तिनको कहैहैं कोई आसन दृढ़ करैहै कोई पवन साधैहै कोई योग करै है कोई वेद पढ़ैहै कोई संयम करैहै कोई व्रत करै है कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब बैकलाइगये जो बैकल होइहै सो झूठको साँच जानैहै और साँच को झूँठ मानै है सो छःदर्शन छानबे पाखण्डवारे जे ये सब हैं एकल कहे एक स्वामी सब के परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो अथवा एकल कहें जौने करने में उपासना करौहौं सो कोई नहीं जानै है ॥ २ ॥

आलमदुनी सकल फिर आये, कलि जीवहिं नहिं आना ॥
ताही करिकै जगत उठावै, मनमें मन न समाना ३

आलम कहे सब जीव दुनिया में फिरि आये गुरुवालोगन के यहां याकल जौने करते मैं उपासना श्रीरामचन्द्र की करौहौं सो आपने जियमें न आनत भये जाते संसार छूटि जाय साहब मिलैं जे नानामत आगे कहिआये ताही करिकै जगत् को उठावै है कि

जगत् उठिजाय मरिहि जाइ सो यह जगत् तो मनरूपही है सो उनके मनमें मनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनको मिथ्या कियो न करिगयो अथवा धोखाब्रह्म ताको मन कहे विचार उन के मनमें समाइ रह्यो है ताही करिकै जगत् को उठावै है कि जगत् न रहिजाय सोऊ न उठ्यो ॥ ३ ॥

कहै कबीर योगी औ जङ्गम, फीकी उनकी आसा ॥
रामै नाम रटै ज्यों चातक, निश्चय भक्ति निवासा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि योगी, जंगमन की सबकी आशा फीकी है काहेते धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्या नहीं होइ है जीवन के ब्रह्म होबेकी आशा फीकी है सो जो रामनाम निशिवासर लेब है और जैसे चातक एक स्वाती ही की आशा करै है तैसे परम-पुरुषपरश्रीरामचन्द्रकी आशा करै है ताही के हृदयमें उनकी भक्ति को निश्चय कै निवास होइहै भक्तिरसरूप है याते इनकी आशा सरिस है अर्थात् सफलै है और सोई संसारसागर ते उबरै है सो आगे रमैनीमें कहिआये हैं "कहै कबीर ते ऊबरे जो निशिवासर नामहिलेव" ॥ ४ ॥

इति छब्बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥ २७ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूपकथाहै, कहौं तो को पतिआई। जहँजहँ देखो तहँतहँ सोई, सबघट रह्यो समाई १ लछि बिन सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै। जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक, रतन बिहूनारोवै २ भ्रम बिनु ज्ञान मने बिनु निरखे, रूप बिना बहुरूपा। थितिबिनुसुरति रहस बिनु आनँद, ऐसो चरित अनूपा ३ कहै कबीर जगतबिनु माणिक, देखो चित अनुमानी। परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब, भजहु न शारँगपानी ॥ ४ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूप कथाहै, कहौं तो को पतिआई ॥

जहँ जहँ देखौं तहँ तहँ सोई, सब घट रह्यो समाई १

जातिकरिकै सबजीव एकही है ताते जीवन को भाई कह्यो कि हे भाई; जीवो! वे जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुत-रूप है अरु वाहि रूप की अनूप कथा है सो मैं जो वाको दृष्टान्त दैकै समुझाऊंहौं कि वाकोरंग दूर्वादलकी नाईं है अरसी कुसुमकी नाईं नीलकमलकी नाईं तौ येई सबमें भेद परै एक एककी तरह नहीं है वह तो मन वचन के परेहै ऐसे नामरूप लीलाधाम सब है वाको तो कैसे समुझाऊँ काहेते जो मैं वाको समुझाइकै कहौं तो कैसे कहौं और जो कहबऊ करौं तो कोई पतिआय कैसे सो यहितरहको जो याको रूपहै सो जहां जहां देखो हौं तहां तहां वहै रूप देखायहै काहेते कि सबघटमें समायरह्यो है यहां सब घटमें समान्यो जो कह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइरह्यो है यह अर्थ्यो जो व्यङ्ग्यपदार्थ है जीव ब्रह्म माया काल कर्म स्वभाव ताहीको सब देखैहै और जो व्यापकपदार्थ है ताको कोई नहीं देखै है जो चितहू अचित में जो कहो वही धोखाब्रह्मको तुमहूं कहतेहौ जो सर्वत्र फैलिरह्योहै तो वाको कोई नहीं कहते हैं काहेते कि अद्वैतवादी कहै हैं कि सब पदार्थ वहां ब्रह्मही है वाते भिन्न दूसरो पदार्थ नहीं है और हम कहै हैं कि सब पदार्थ चित अचित रूपते व्याप्य है और हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको विश्वास होइ ताको वे साहब साकेतनिवासी परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सहजही प्रकट ह्वैजाय हैं सो जो मैं कहौ हौं ताको नहीं प्रतीत करै हैं चित जो है जीव और ब्रह्म ताहू में श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं तामें प्रमाण "ॐयो वै श्रीरामचन्द्रस्य भगवान् द्वैतपरमानन्दात्मा यः परंब्रह्मेति रामतापिन्याम्" जीवहू में व्यापक हैं तामें प्रमाण "य आत्मनि तिष्ठन् यमात्मानं वेद यस्यात्मा शरीरमिति" मायादिक सबमें व्यापक हैं तामें प्रमाण "यस्य भासा सर्वमिदं विभाति" (इति श्रुतिः) ॥ १ ॥

लक्ष्मिबिनुसुख दरिद्रबिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै ॥

जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक, रतनविहूना रोवै २

कैसे साहब सर्वत्र पूर्ण है सो बतावै हैं लाछिबिनु सुख वह जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुख नहीं होइ है देखो तो नहीं परै है साहब पै जो कोई स्मरण करै है सर्वत्र ताको सुख होय है साहब को कौनो बात को दरिद्र नहीं है जो चाहे सो करिडारै समर्थ है परन्तु नाना जीवनको अज्ञान में परे देखिकै साहिबेको यही दुःखहै कि मेरे अंश जीव माया में परिकै नरक स्वर्ग जाय हैं काहेते यह दुःख है कि साहब अतिदयालु हैं तामें प्रमाण "तावत्तिष्ठन्तिदुःखीवयावद्दुःखं न नाशयेत् । सुखीकृत्यपराभक्तान् स्वयम्पश्चात्सुखीभवेत् इति" ध्वनि यह है कि साहब दयालु हैं ते सर्वत्र पूर्ण हैं यह विचारिकै कि जीव मोको जहैं स्मरणकरै मैं तहैं उबारिलेउँ फिरि कैसो साहब है कि मोहनिद्रा नहीं है सदा जगै है अपने भक्तनकी रक्षा करिबेको ऐसेहूस हबके सम्मुख जो जीव नहीं होइ हैं तिनकी ओर सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात् कबहूं नहीं देखै है फिर कैसो साहब है जाकी ज्योति जो ब्रह्म है अर्थात् जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो विना कौनो कथै है वा कौनो लीलै कियो अकथ है ऐसे साहब के बिना रूपमें आशिकभये साहब को ज्ञानरत्नविहीना जीव संसार में जनन मरण पाइ पाइ रोवै है ॥ २ ॥

भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखै, रूप बिना बहुरूपा ॥
थितिबिनुसुरतिरहसबिनुआनँद, ऐसो चरित अनूपा ३
कहै कबीर जगत बिनु माणिक, देखौ चित अनुमानी ॥
परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब, भजहु न शारँगपानी ४

फिर कैसो है साहब भ्रम बिना है अर्थात् कबहूं माया शबलित ह्वैकै जगत् मेंही उत्पत्ति कियो सदाज्ञानगुण सदाज्ञानस्वरूप है तौने साहब को मानै बिनु निरखे कहे मन विना ह्वैकै हंसस्वरूप पाइकै तैं देखै कैसेहैं साहब कि चित् अचित् जे रूप हैं तेहि

विनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करिसकै हैं और चित् अचित् के शरीरी है बहुतरूपो हैं सब उन्हीं के रूप हैं फिरि कैसे हैं जब साहब सुरति दीन है तब जीवनकी स्थिति भई है और सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वा लोक में बनी है और आनन्द जो मन वचन में आवै है सो नहीं है वहां आनन्द बनो है ऐसे साहब के अनूप चरित हैं अर्थात् जो रहस कहि आये सोऊ मन वचन के परे है सो कबीरजी कहै हैं कि जो चित्त में अनुमान करि देखौ तो यावत् उपासना व ज्ञान तुम करौ हौ. जगत् मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी ऐसी मुक्ति के लाभ को लोभ त्यागिकै व सब कुटुम्ब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिके शारंगपानी कहे धनुष को लीन्हे साहब तिनको काहे नहीं भजौ हौ अर्थात् भजौ ॥३।४॥

इति सत्ताईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥ २८ ॥

भाईरेगैयाएकबिरंचिदियो है, भारअभरभोभाई। नौनारीको पानिपियतिहै, तृषा तऊ न बुताई १ कोठाबहत्तरि औ लौलाये, बज्रकेवांरलगाई। खूंटागाड़िडोरीदृढ़बांधो, तेहिवोतोरिपराई २ चारि वृक्षछौशाखावाके, पत्रअठारहभाई। एतिकलै गैया गम कीन्हो, गैया अतिहरहाई ३ ईसातौअवरणहैंसातौ, नौऔचौदह भाई। एतिक गैयेखाइबढ़ायो, गैया तौ न अघाई ४ खूंटामेंराती है गैया, श्वेतसींग हैं भाई। अवरणवरण कछूनहिंवाके, भक्ष अभक्षौखाई ५ ब्रह्माविष्णु खोजकै आये, शिवसनकादिकभाई। सिद्धअनन्त वहि खोजपरे हैं, गैयाकिनहुँनपाई ६ कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जो या पदअरथाई। जो या पदको गाइबिचरिहै, आगेह्वैतरिजाई ॥ ७ ॥

भाईरे गैया एक बिरंचि दियोहै, भार अभरभो भाई ॥
नौ नारीको पानि पियति है, तृषा तऊ न बुताई १

हे भाई, जीवो! एक वाणीरूप गैया तुमही सबको बिरंचि जे ब्रह्मा हैं ते दियो है सो गैया को जो तात्पर्य दूध है ताको तुम न पायो गैयाको भार अभर ह्वैगयो तुम्हारो सँभारो न सँभारिगयो अर्थात् जो जो वाणीमें विधि निषेध लिखेहै सो तुम्हारो कियो एको नहीं ह्वै सकैहै सो ये मायिक विधिनिषेध तो तुम्हारेकिये ह्वै नहीं सकैहै वाणी जो तात्पर्य वृत्तिते बतावै है सो तो अमायिकहै कैसे जानौगे? वह गैया कैसी है सो बतावै हैं नौ कहे नवो जे व्याकरण हैं तिनकी जो नारी कहे राह है तिनकर जो शब्दरूपी जल है ताको पियेहै अर्थात् वोहीके पेटते वेद शास्त्र सब निकसैहैं और वहीके पेटमेंहैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरण के शब्दरूपी जलते शोधे जायहैं अर्थात् वही वाणी में जल समाइहै परन्तु तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवो व्याकरण करिकै शोधै है शास्त्रार्थ करतही जाय है बोध नहीं होइ है कि शुद्ध ह्वैगयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेय है ॥ १ ॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये, बज्र केवाँरि लगाई ॥
खूँटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो, तेहि वो तोरि पराई २

पातञ्जलिशास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लौ लगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरीमुद्राकरि घेटीके ऊपर वज्र कपाट जो लग्यो है ताको जीभते टार्‍यो तब वहां अमृत स्रवो तब नागिनी उठी श्वासके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूंटा जो ब्रह्माण्डहै ब्रह्मज्योति तहां पहुँच्योजाइ सो ज्योतिरूप ब्रह्म खूंटा है तामें प्रणागिनी जो गैया है ताको बांध्यो तेहि वो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तब फिरि जसको तस संसारी ह्वैगयो नागिनीशक्ति उतरि आई पुनि जीवन को संसार में डारिदियो ॥ २ ॥

चारि बृक्ष छौ शाखा वाके, पत्र अठारह भाई ॥
एतिक लै गैया गम कीन्हो, गैया अति हरहाई ३

पातञ्जलिशास्त्र में योगाक्रिया है सो कायाते होय है ताते अलग कह्यो अब सब मेटिकै कहै हैं चारि वेद जे हैं तेई वृत्त हैं और छउ शास्त्र जे हैं तेई शाखा हैं अठारहौ पुराण पत्र हैं सो एकलै कहे यहां लगे गैया गमनकेजातभई कहे प्रवेश कै जातभई सो गैया बड़ी हरहाई है अर्थात् जहां जहां आरोप कियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियो है तौन वाके पेट ते बाहर नहीं है भीतरही है ॥ ३ ॥

ई सातौ अवरण हैं सातौ, नौ औ चौदह भाई ॥
एतिक गैया खाय बढ़ायो, गैया तउ न अघाई ४

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र और सातौ सहस्रार जहां ब्रह्म ज्योति में जीव को मिलावै है अरु सातौ आवरण जे हैं पृथ्वी अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अथवा सातौ बार काल अरु नौखंड जे हैं अरु चौदहौ भुवन जे हैं सोई सबन को गैया खाइकै बढ़ाइ डार्‌यो तऊ न अघातभई अर्थात् सब वाणीमय ठहरे ॥ ४ ॥

खूंटा में राती है गैया, श्वेत सींग हैं भाई ॥
अवरण बरण कछू नहिं वाके, भक्ष अभक्षो खाई ५
ब्रह्मा बिष्णु खोज कै आये, शिवसनकादिक भाई ॥
सिद्धअनन्त वहिखोज परे हैं, गैया किनहुँ न पाई ६

सो वह गैया खूंटा जो धोखाब्रह्म है तामें रातीहै अर्थात् ब्रह्म माया शबलित है अरु यहि गैयाके सींग श्वेत हैं कहे सत गुणी हैं सोई ब्रह्म में बांधिबो है और अवरणकहे असत औ वरणकहे सत ई वाके कोई नहीं हैं अर्थात् सत असतते बिलक्षण है अथवा अवरण कहे नहीं है वरण जाके ऐसो निरक्षर ब्रह्मनाम रूपादिक नहीं है जाके और वरण कहे अक्षर ब्रह्म जीव ई दोनों नहीं हैं वाके अर्थात् ई दोनों ते विलक्षण है और भक्ष अभक्षो खाइ है कहे जो कर्म करावनलायक है सो करावै है और जो कर्म

करावनलायक नहीं है सोऊ करावै है अर्थात् विद्यारूप ते शुभकर्म और अविद्यारूप ते अशुभकर्म करावै है सोऽवाको शिवसनकादिक ब्रह्मा विष्णु महेश अनन्त सिद्ध खोजमरे पै गैया कोऊ न खोजे पायो कि सत् है कि असत् है तात्पर्यऊ न जाने ॥ ५ । ६ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो या पद अरथाई ॥
जो या पद को गाइ बिचरि है, आगे ह्वै तरिजाई ७

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनौ जो यह पदको अर्थहै कहे अर्थ विचरि है और जौन पद हम वर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सतावरण आदिदैकै जे पद हैं कहे स्थान तिनको जो कोई गाइ कहे मायाको रूपही विचारैगो कि यहांभर तौ मायाही है सो मायाके आगेह्वैकै साहब को लोक विचारैगो सोई तरैगो॥७॥

इति अट्ठाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २८ ॥

अथ उन्तीसवां शब्द ॥ २९ ॥

भाईरे नयन रसिकजोजागै । परब्रह्म अबिगत अबिनाशी, कैसेहुकैमनलागै १ अमलीलोग खुमारीतृष्णा, कतहुँसँतोष न पावै । काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरिभरिप्यावै २ ब्रह्म कलारचढ़ाइनिभाठो, लैइन्द्रीरसचाखै । सँगहिपोचह्वै ज्ञानपुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३ संकटशोच पोचयाकलिमों, बहुतक ब्याधि शरीरा। जहँवांधीर गँभीर अतिनिर्मल, तहँ उठि मिलहु कबीरा ॥४॥

यहां मायाके परे जे साहब हैं तिनको बतावै हैं ॥

भाईरेनयनरसिकजोजागै ॥
परब्रह्म अबिगत अबिनाशी, कैसे कै मन लागै १

हे भाइउ ! नयनरसिक जो है संसारी चर्मचक्षु ते भिन्न भिन्न देखि बिषयरस लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षुहोइ तो ब्रह्मके पार व अबिगत कहे बिगत नहीं सर्वत्र पूर्ण व अबिनाशी कहे जाको नाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं

तिनमें कैसेकै मनलागै जो कैसेहुकै पाठ होय तो यह अर्थ है जो कैसेहुकै मन लगबो करै तो बीचमें बहुत अवरोध हैं ॥ १ ॥

अमली लोग खुमारी-तृष्णा, कतहुँ सँतोष न पावै ॥
काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरि भरि प्यावै २

सबलोग अमली हैं बिषय छांड्यो पै तृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं संतोष को नहीं पावै है फिरि काममत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो मुद्राराक्षसादि ग्रन्थन में प्रतिपाद्य जे मत हैं तेई प्याला हैं तिनको काम क्रोधरूप जो मद सो माया भरि भरि उनको पिआवै है ॥ २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी, लै इन्द्री रस चाखै ॥
सँगहि पोच ह्वै ज्ञान पुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३

प्रथम तो काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तो ब्रह्म जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धिकरै हैं गुरुवा लोग ते भाठी चढ़ाइन ज्ञान सिखवै लगे कि तुहीं ब्रह्म है ताही में इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मि को रस चाखनलग्यो अर्थात् ब्रह्मानन्द को अनुभव करनलग्यो जो मद पियै है ताको ज्ञान भूलिजाय है यहै कहैहै कि महीं मालिक हौं सो जो गुरुवालोगन को संगकियो ब्रह्मानन्द पानकियो सो मैं साहब को हौं यहअक्ल भूलिगई वही गुरुवालोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि महीं ब्रह्महौं जो चतुराई होइ सो विघ्नन को नाकि जाइहै ॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमों, बहुतक ब्याधि शरीरा ॥
जहँवां धीरगँभीरअतिनिर्मल, तहँ उठि मिलहु कबीरा ४

पोच कहे अज्ञानी जे जीव हैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झगड़ा में बहुत संकट शोच व व्याधिशरीर को है सो जहां अतिधीर है कहे चलायमान नहीं है निश्चलपदहै व गंभीर कहे गहिर है व निर्मल कहे मायाब्रह्म को लेश नहीं है सो हे कबीर कायाके बीर जीवो ! मायाब्रह्म के तुम परे हौ तहांते उठिकै

कहे मायाब्रह्म के विघ्नते निकासिकै साहब को मिलौ तबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति उन्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २९ ॥

अथ तीसवां शब्द ॥ ३० ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया। अल्ला रामकरीमकेशव हरि, हजरतनाम धराया १ गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा। कहन सुननको दुइकरिथापे, यक नेवाज यक पूजा २ वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये। कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये ३ वेद किताब पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े। बिगत बिगतकै नाम धरायो, यक माटीके भांड़े ४ कह कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनहुं न पाया। वे खसिया वे गाय कटावैं, बादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

अब यहां यह बर्णन करै हैं कि दूसरो जगदीश नहीं है परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तेई जगदीश हैं ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया ॥
अल्ला राम करीम केशव हरि, हजरत नाम धराया १
गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा ॥
कहन सुनन को दुइकरि थापे, यक नेवाज यक पूजा २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ! दुइ जगदीश कहांते आये तोको कौने भरमायो है अल्ला राम करीम केशव हरि हजरत ये तौ सब नामभेद हैं कहते तौ एकही को हैं १ जैसे एक गहना को सुवर्ण ते गहना कहे गाहिलेइ कहे सुवर्ण विचारिलेइ तामें भाव दूजा नहीं है वह सुवर्ण है जैसे कोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिक नाम कहे हैं परन्तु है सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबे को दुइ करि थाप्यो है यक नेवाज यक पूजा परन्तु है सब साहब की बंदगीही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रही को सेवै हैं ॥ २ ॥

वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ॥
कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये ३

वोही परम पर पुरुष श्रीरामचन्द्र को महादेव व महम्मद व ब्रह्मा व आदम सबकहिये कहे कहत भये कोई राम कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरान में लिखे है कि सब नामन में अल्लाह नाम ऊपर है और यहां वेद पुराण में लिखे है कि सब नामन में रामनाम ऊपर है तामें प्रमाण "सर्वेषामपि मन्त्राणां राममन्त्र-फलाधिकमिति" "सहस्त्रनाम तात्तुल्यं राम नाम वरानने" याते सबके मालिक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही जगदीश हैं दूसरो जगदीश नहीं है उनहीं के अल्लाहनामको सब नामनतेपर महम्मद कुरान में लिख्यो है व उनहीं नामको महादेवने तन्त्र में लिख्यो है और ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताब में कहतभये अरु इहां तो एकजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींके जिमींमें कहे जगत् में रहतभये नामके भेदते कोई हिन्दू कोई मुसलमान कहावै है ॥३॥

वेद किताब पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े ॥
बिगत बिगत कै नामधरायो, यक माटी के भांड़े ४

जिनके पोथी जमा होय हैं ते कहावैं कुतुबा वे वेद पुराण जमा कैकै पढ़हैं वे किताब जमाकैकै पढ़े हैं वे पण्डित कहावहैं वे मोलाना कहावै हैं वेद पढ़िकै पण्डित किताब पढ़िकै मोलना कहावैं बिगत बिगतकहे जुदा जुदा नाम धराय लेते भये हैं एकई माटीके भांड़े कहे हैं सब पञ्चभौतिक ही हैं ॥ ४ ॥

कह कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनहुँ न पाया ॥
वे खसिया वे गाय कटावैं, बादै जन्म गँवाया ५

श्रीकबीरजी कहेहैं कि हिन्दू तो बोकरा मारिके मुसलमान गाय मारिके नाना प्रकार के बाद बिवाद करिके अथवा बादै कहे वृथा ही दोऊ भूलिके जन्म गँवाइ दियो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावत भये हिन्दू तुरुक के खुदखाविन्द एकई है कोई

बिरले जानैहैं ते वहां पहुँचै हैं तामें प्रमाण "छोड़ि नासूतमलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाजी। और साहूत राहूत इहां डारिदे कूदि आहूत जाहूत जाजी॥ जाय जाहूत में खुदखाविन्द जहँ वही मक्कान साकेत साजी। कहै कब्बीर ह्वां भिश्त दोजख थके वेद कीताबकाहूत काजी॥ ५॥

इति तीसवां शब्द समाप्तम्॥ ३०॥

अथ इकतीसवां शब्द॥ ३१॥

हंसा संशयं छूरी कुहिया। गैया पियै बछरुवै दुहिया १ घर घर सावजखेलै अहेरा, पारथ वोटा लेई। पानीमाहिंतलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरादेई २ धरती बरसै बादलभीगै, भींट भया पैराऊ। हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बीधापाऊ ३ जौलगि कर डोलै पगु चलई, तौलगि आश न कीजै। कह कबीर जेहि चलत न दीखै, तासु बचन का लीजै॥ ४॥

हंसा संशय छूरी कुहिया, गैया पियै बछरुवै दुहिया १ घर घर सावज खेलै अहेरा, पारथ वोटा लेई॥ पानीमाहिं तलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरा देई २

कबीरजी कहहैं कि हे हंसा! संशयरूप छूरीते मारिगयो तोको उलटो ज्ञान है गयो बछरुवा जो है तेसो तेरोस्वरूप ज्ञानरूप जो दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो १ सावज जो या मन है सो घर घर में कहे शरीर शरीर में शिकार खेलै है पारथ कहे शिकारी जो तैं सो वोटालेइहै अर्थात् नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरै है पै मन तोको नहीं छोड़ै है साउज ते नहीं बचैहै वाणीरूप जो है पानी नानाशास्त्र तौनेमें भूभुरि जो सूर्यन के तापते तपित भूमिहोय है सो भूभुरि कहावै है ऐसे संसार तापते तपित जो तेरा अन्तःकरण सो तलफिगयो अर्थात् अधिक अधिक शङ्का होत भई तिनते अधिक तप्तभयो शीतल न भयो

काहेते कि धूधुरि जो सूखा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्यो कहे शास्त्रन में वही धोखाब्रह्महो देखपरनलग्यो शास्त्रनको तात्पर्य जे साहब तिनको न जान्यो ॥ २ ॥

धरती बर्षै बादल भीजै, भीट भया पैराऊ ॥
हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बीधा पाऊ ३

बुद्धि जो है सो धरती है काहेते सब मंतनको आधार यही है वाणीरूप पानी बरसै है कहे नानामतनको निश्चय कै कै प्रकट करै है अरु यह वाणी जीवही ते प्रथम निकसी है सो जीव बादल है सो भीजै कहे वोई मतन को ग्रहण कियो यह लोकोक्ति है कि फलाने फलानेमें भीजिरहेहैं कहे आसक्त ह्वैरहे हैं भीटचारयो वेदहैं मर्यादा ते पैराउह्वैगये कहे उनकी थाह कोई न पावतभयो अर्थात् तात्पर्य करिकै जो परमपुरुषश्रीरामचन्द्र को वर्णनकरै है सो कोई न पावतभयो ताल सूखे हंस उड़े है यहां हंस उड़े ताल सूखे हैं जब हंस उड़ोकहे यह जीव निकसिगयो तब ताल जो शरीर है सो सूखि गयो तब बासना जे हैं तेई चहला हैं तिनमें पाँउ बँधिरह्यो जैसे तलाउ जबसूखेउ और पुनि चौमासे में जब जल बरस्यो तब जस को तस ह्वैगयो तैसे बासना में पाँउ फँसिरह्यो है दूसर शरीर जब पायो तब फिर वही शरीर में तलाउ में हंस जीव बूड़न उतरान लग्यो है सो भाव यह कि उड़नको तो करै है शरीर तालते अन्तै नहीं जाइसकै है कोई योनिमें रहै ॥ ३ ॥

जौं लगि कर डोलै पग चलई, तौलागि आशं न कीजै ॥
कह कबीर जेहि चलत न दीखै, तासु बचन का लीजै ४

जबलग पाँव चलैहै कर डोलै है कहे शरीर बनो है तबलागि गुरुवालोगनकी आंश न करिये जो आश करैगो तो याही भांति बँधिरहैगो सो कबीरजी कहैहैं जे गुरुवालोग नानापदार्थन में आंश लगाइ देइ हैं तिनहींते नहीं चलत बनैहै तौ तिनको कह्यो वचन कैसे लीजिये कहे कैसे मानिये अर्थात् उनके यहां न जाइये

काहेते कि वे साहबको भुलाइकै औरे में लगाइदेइँगे संसारही में फँसो रहैगो यामें धुनि यह है कि जे संसारते छूटे हैं रामोपासक हैं तिनहीं को वचन मानिये तिनहीं के यहां जाइये ॥ ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवां शब्द ॥ ३२ ॥

हंसा हो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १ पाखण्डरूप रच्यो इन्हतिरगुण यहिपाखण्ड भूल संसारा । घरको खसम बधिक भो राजा परजा काधौं करै बिचारा२ भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत बिष कैलियसारा । आगे बड़े ऐसही भूले तिनहूँ न मानल कहा हमारा ३ कहल हमारा गांठी बांधो निशिबासरहि होहु हुशियारा । ये कलिके गुरु बड़ परपञ्ची डारि ठगौरी सबजग मारा ४ वेदकिताब दोय फन्द पसारा ते फन्देपर आप बिचारा । कह कबीर ते हंस न बिछुड़े जेहि में मिल्यो छोड़ावनहारा ॥ ५ ॥

हंसाहो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १
पाखण्डरूपरच्योइन्हतिरगुण,तेहिपाखण्ड भूलसंसारा॥
घरको खसम बधिकभोराजा, परजा काधौं करै बिचारा २

हे हंसा, जीवो ! सबेरेते कहे तबहीं ते चित्तमें चेत करो सबेरेते कह्यो ताको भाव यह है कि जब काल नियराइ आवैगो तब कछू न करत बनैगो तिहारे फांसिबेको यह माया बहुत परपञ्च कियो है १ पहिले पाखण्डरूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जे सत, रज, तम हैं तिनको तिहारे फांसिबेको प्रकट कियो सो तीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवता हैं अरु पाखण्ड रूप जो धोखाब्रह्म है तामें सब भूलिगये घरको खसम जब स्त्री को बधिक कहे दुःख देनलाग्यो मारनलाग्यो तब स्त्री कहाकरै तैसै जो राजा प्रजा को बधिक कहे मारनलाग्यो दुःख देनलाग्यो तब

बिचारे प्रजा कहा करैं सो यह मनतो सबको मालिक ह्वैरह्यो है सो यही जो सबको दुःख देनलाग्यो तौ जीव कहाकरै ॥ २ ॥

भक्ति न जानै भक्त कहावै, तजि अमृतबिषकैलियसारा॥
आगे बड़े ऐसही भूले, तिनहुं न मानल कहा हमारा३

भक्तिको तो जानै नहीं हैं भक्त कहावै हैं अमृत जो है परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै बिष जो है और और की भक्ति ताको सार मानि लियेहै सो आगे जे बड़े-बड़े ह्वैगये हैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहब की भक्ति छोड़िकै और और की भक्ति करिकै संसारही में परतभये ॥३॥

कहलहमारागांठीबाँधौं, निशिबासरहिहोहुहुशियारा ॥
येकलिकेगुरुबड़परपञ्ची, डारि ठगौरी सब जग मारा४

सो हमारो कहो गांठी बांधो जो अबहूं हमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करौगे तौ संसारही में परौगे कलियुग के जे गुरुवा हैं ते बड़े परपञ्ची हैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्ति को छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइ हैं सो निशिबासर हुशियार रहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवालोगनको कहा न मानो ॥ ४ ॥

बेद किताब दोयफन्द पसारा, ते फन्देपर आप बिचारा॥
कहकबीर ते हंस न बिछुरे, जेहि मैं मिलो छोड़ावनहारा ५

वोई जे गुरुवालोगहैं ते आइ ये वेद किताबको फन्दा पसारि कै नानामतमें करतभये सो वहीफन्द में आप परतभये व औरहू को वहीफन्दमें डारिकै नानामतमें लगाय देते भये वेद किताब को तात्पर्य न जानतभये सो कबीरजी कहै हैं कि जौने जीवको मैं फन्दते छोड़ावनहार मिल्योहौं और परमपुरुष में लगाइ दियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंगे सो तुमहूं पारिखकरिके मेरो

कहो मानिकै हे हंस, जीवौ ! तुमहूं फन्द छोड़ि परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगौ ॥ ५ ॥

इति बत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३२ ॥

अथ तेतीसवां शब्द ॥ ३३ ॥

हंसा प्यारे सरवरते जे जाय। जेहि सरवर बिच मोतिया चुनते बहुबिधि केलि कराय १ सुखेताल पुरइनि जल छोड़े कमलगयो कुँभिलाइ। कह कबीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कबआइ॥ २॥

हंसा प्यारे सरवरते जे जाय ॥

जेहि सरवर बिच मोतियाचुनते, बहुबिधिकेलि कराय१
सुखे ताल पुरइनि जल छोड़े, कमलगयो कुँभिलाइ ॥
कह कबीर जो अबकी बिछुरै, बहुरि मिलै कबआइ २

हे प्यारे, हंस ! सरवर जो शरीरहैं ताते जे जाय कहे जिनके शरीर छूटिजाय हैं जौने सरवर शरीर को प्राप्त होइकै मोतिया चुनै हैं कहे ज्ञानयोगादिक साधन करिकै मुक्ति की चाहकरै हैं और बहुबिधकी केलिकरै हैं जो त्याजे पाठ होय तो या अर्थ है हे हंसा, जीव ! प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जाय है जौन सरवर शरीर में नाना देवतनकी उपासनारूप मोती चुने नानाबिषयन को भोग कीन्हे सो छोड़े जाय है १ सो शरीररूपी ताल जब सूख्यो कहे रोगकरिकै ग्रस्तभयो तब पुरइनिजल छोड़िदियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो अरु अनुभव जो तुम करतरह्यो सोई कमल है सो कुँभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि याहितरहते जो अबकी बिछुरै कहे शरीर छूटि जाय तब पुनि कबै ऐसो शरीर पावैगो चौरासीलाख योनि भटकैगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीरछूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजाय हैं तेहिते मानुषशरीर पायकै साहब को जानै वह

शरीरहू छूटे नहीं भूले है काहेते कि साहबही आपनो ज्ञान देइ है और हंसस्वरूप देइ है ॥ २ ॥

इति तेंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवां शब्द ॥ ३४ ॥

हरिजन हंसदसा लियेडोलैं । निर्मल नाम चुनी चुनि बोलैं १ मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै । मौनरहैकी हरिगुण गावै २ मानसरोवर तटकेबासी । रामचरणचित अन्तउदासी ३ काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै । प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै ४ नीर क्षीर को करै निबेरा । कहै कबीर सोई जन मेरा ॥ ५ ॥

जे साहबको नहीं जानै हैं तिनको कहि आये अब जे साहब को जानै हैं तिनकी दशा कहै हैं ॥

हरिजनहंसदशालिये डोलैं । निर्मलनामचुनीचुनिबोलैं १

हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनके जे जन हैं ते हंसदशा जो है शुद्ध जीव पार्षदरूपता तौनी दशा के लिये सर्वत्र डोलै हैं कहे फिरै हैं यहां हरि जो कह्यो ताको हेतु यह है कि अपने भक्तन की सिगरी बाधा हरै सो हरि कहावै है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरि लेइ हैं तब तिनके जन सुखपूर्वक संसार में फिरै हैं उनको संसार स्पर्श नहीं करै है अरु जो नाम माया शबलित है तिनको छोड़ि देइ है और निर्मल जो नाम रामनाम है मन बचन के परे अमायिक ताको चुनि चुनि कहे साहबमुख अर्थ ग्रहण करिके और संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलै है कहे रामनाम उच्चारण करै है यहां मन वचन के परे जो नाम है ताको कैसे बोलै है ऐसो जो कहो तो ये हंसदशा लिये डोलै है कहे जब शुद्धजीव रहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्रिय देइ है तिनते तौने नाम को बोले है जैसे सूमा जरिजाय है तब वाकी ऐंठनभर रहिजाय है तैसे यह शरीर की आकृतिमात्र रहिजाइ है वह पार्षदही शरीर में

स्थितरहै है जब शुद्ध शरीर ह्वैजाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावै है यह आगे लिखि आये हैं ॥ १ ॥

मुक्ताहललिये चोंचलोभावै। मौनरहै की हरिगुणगावै २

हंस मुक्ताहल चोंच में लिये बच्चन को लोभावै है जौन बच्चा माँगै है ताके मुँहमें डारिदेइ है ऐसे साधुन के मुखमें पांच मुक्ति हैं सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सालोक्य, साष्टर्य तिनते जीव को लोभावै है कहे सब यह जानैहै कि इनहीं की दई दैजाइ है जो जौन मुक्तिकी चाह करिकै उनके समीप जाइ है ताको श्रीरामनामं के उपदेश करिकै तौन भावं बताइकै मुक्ति देइ हैं और आप मौनहीं रहै हैं कि साहब के गुणगाइकै छकेरहै हैं ॥ २ ॥

मानसरोवर तटकेबासी। रामचरण चित अन्त उदासी३

और हंस जे हैं ते मानसरोवर के तटके बासी हैं अरु वे साधु कैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवर है ताके तटके बासी हैं कहे मनते भिन्न ह्वैरहे हैं जामें हंसकी दशा है साहबकी दीन ऐसो जो चिन्मात्र आपनो स्वरूप है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहींके चरणन में लगाइ राखै हैं अरुअन्त उदासी कहेजो वह धोखाब्रह्म में "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै आत्माको अन्त ह्वैजाइ है आपै ब्रह्म मानिलेइ है वह जो है आत्माके अन्त ह्वैबेको मत धोखा तेहिते उदासी कहे उदास ह्वै रहे हैं अथवा अन्त जो है संसार ताते उदास रहै हैं ॥ ३ ॥

कागकुबुद्धि निकट नहिं आवै। प्रतिदिनहंसादर्शनपावै ४
नीर क्षीर को करै निबेरा। कहै कबीर सोई जन मेरा ५

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यह अज्ञान सो निकट नहीं आवै है तौ और मत कैसे आवै सो कबीरजी कहै हैं कि यह भांति जो चलै है सो हंस शुद्धजीव प्रतिदिन श्रीरामचन्द्र को दर्शन पावत रहै है सर्वत्र साहब को देखत रहै है ४ जैसे हंस नीर चीर को निबेरा करै हैं तैसे हंस जे साधु हैं ते असार जो

है नाना उपासना नाना ज्ञान तामें अमीसी जो वेद शास्त्र पुराणादिकन में साहब की उपासना ताको ग्रहण करै हैं और सब असार को छोड़िदेय हैं सो कबीर जी कहै हैं कि सोई जन मेरो है अर्थात् जे रामोपासक हैं तेई कबीरपन्थी हैं और सब पाखण्डी हैं जौने स्वरूप में हंसदशा है तौनेस्वरूप में साहब के स्फूर्ति कराय नाम जपैहैं तामें प्रमाण " माला जपौं न कर जपौं जिह्वा जपौं न राम । मेरा साईं हरि जपै मैं पावों विश्राम ॥ ५ ॥

इति चौंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवां शब्द ॥ ३५ ॥

हरि मोर पीव मैं रामकी बहुरिया । राम मोर बड़ा मैं तनकी लहुरिया १ हरि मोर रहँटा मैं रतन पिउरिया । हरिको नाम लै कातल बहुरिया २ छः मास ताग बर्षदिन कुकुरी । लोग बोले भल कातल बपुरी ३ कहै कबीर सूत भलकाता । रहँटा न होय मुक्ति को दाता ॥ ४ ॥

हरिमोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया१

मोर पीव हरि हैं पीवकहे वे मोको पियार हैं मैं उनकोऊ पियार हौं अरु मैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र की बहुरिया कहे नारी हौं यहां नारीकह्यो सो यह जीव साहब की चित्शक्ति है तामें प्रमाण कबीरजीके आदिटकसार ग्रन्थ को ॥ आतम शक्ति सुबश है नारी । अमरपुरुष जेहि रची धमारी १ औ दूसरो प्रमाण सायरबीजकको । दुलहिनि गाऊ मंगलचार । हमरे घर आये रामभतार॥ तन रतिकरि मैं मन रतिकरिहौं पांचौंतत्त्व बराती । रामदेव मोरे ब्याहन ऐहैं मैं यौबन मदमाती ॥ सरिर सरोवर वेदीकरिहौं ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेवसंग भांवरिलेहौं धनिधनिभागहमारा । सुरतैंतीसो कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कह कबीर हम ब्याहचले हैं पुरुष एक अबिनाशी २ अरु श्रीरघुनाथजी मोर बड़े हैं अरु मैं तनकी लहुरिया हौं कहे उनके शरीर सर्वत्र ब्यापक

बिभु हैं औ मैं अणु हौं तामें प्रमाण "अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहं व्याप्यतिष्ठति" (इतिस्मृतिः) ॥ १ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया २

अरु हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मोर रहँटा कहे चित् अचित्रूप ते जगत् वोई हैं अरु मैं रतनपिउरिया हौं यह जगत् जीवंही के वास्ते बन्यो है तामें प्रमाण ॥ जीव सूत ह्वैकै लपटि रहे हैं मैं रतनकी पिउरिया हौं ताते मैं नहीं लपटो हौं हरि जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नामलैकै बहुरियाकहे उलटिकै मैं कात्यो अर्थात् जगत् को जगद्रूप करिकै नहीं देख्यो जगत् को चित् अचित्रूप करिकै देख्यो है रामनाम में बहुरिकै साहब मुखअर्थ देख्यो जगत् मुखअर्थ नहीं ग्रहण कियो ॥ २ ॥

छःमासतागबर्षदिनकुकुरी।लोगकहलभलकातलबपुरी ३

छःमहीना में एक ताग कात्यो छःमहीना में एक ताग और कात्यो तब वर्षदिनमा एक कुकुरी भै दोनों ताग मिलाय कै अर्थात् छःमहीनामें मैं आपनो स्वरूप समुझयो कि मैं साहब की नारी हौं और छःमहीनामें मैं साहब को स्वरूप समुझयो वर्षदिन में साहब को मिल्यो सो मैं तो इतनी देर करिकै मिल्यो साहब तो हजूरही रहैं ताहूमें लोग कहे हैं कि बपुरी भलकात्यो जो अनन्तकोटि जन्मते नहीं जाने है सो साहब को बपु आपनो बपु बर्षोदिना में समुझयो ॥ ३ ॥

कहैकबीरसूतभलकाता। रहँटा न होय मुक्तिको दाता ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जौनेरहँटा जगत्ते सूत भल कात्यो है कतवैया कबीरजीको विवेक है सो रहँटा न होय यह मुक्ति को दाता है काहेते कि जब शुद्धआत्मा रह्यो है याको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं न तिनको ज्ञान रह्यो और न संसार को ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्यो है तामें प्रमाण " नित्यःसर्वगतस्स्थाणुरचलोयंसनातनः" (इति गीतायाम्) जब यह याके मनभयो

तब संसार को कात्यो है और संसार में परिकै दुःख सुख भोग कियेहै और जब पूरा गुरु मिल्यो है तब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको पाइकै संसार ते छूटिगयो है और पुनि संसार में नहीं आयो सो कबीरजी कहै हैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्ति को दाता है जो संसार बुद्धि करिकै देखै है सो संसार में रहै है और जो संसार को साहबको चित् अचित्रूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिही देइ हैं या संसारै में आये मुक्ति भयो है ॥ ४ ॥

इति पैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवां शब्द ॥ ३६ ॥

हरि ठग जगत् ठगौरीलाई। हरिवियोग कस जियहुरे भाई १
को काको पुरुष कौन काकी नारी। अकथ कथा यमजालपसारी २
को काको पुत्र कौन काको बापा। को रे मरै को सहै संतापा ३
ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा। रामठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना। गई ठगौरीठगपहिंचाना ॥५॥

हरिठगजगतठगौरीलाई। हरिवियोगकसजियहुरेभाई १

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्य के चोरावनहारे गुरुवालोग ते जगत् में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइ हैं और और में लगाइकै सो हे जीवो! हरिके वियोगते तुम कैसे जिऔहौ ॥ १ ॥

कोकाकोपुरुषकौनकाकीनारी। अकथकथायमजालपसारी २
कोकाकोपुत्रकौनकाकोबापा। को रे मरै को सहै संतापा ३

यह संसार में जब सांचे साहबको भूल्यो तब को काको पुरुष है को किसकी नारी है अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासना करैहैं आपन स्वामी मानैहैं तिनके स्वामी कबहूं होय है वोई या की नारी होय है दास होइहै कबहुं स्त्री पुरुष होय है पुरुष स्त्री होय है सो या यमकहे दोऊ विद्या

अविद्या के जालपसास्यो है २ को काको पुत्र है को काको बाप है को मरै है को संताप सहै है तुम को तो सुखै सुख है तुमहीं साहब हौ तुमहीं भोगी हौ ॥ ३ ॥

ठगिठगिमूलसबनकोलीन्हा।रामठगौरीबिरलैकीन्हा ४
कहकबीरठगसोमनमाना। गईठगौरी ठग पहिंचाना ५

सो यह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूल जो है साहब को ज्ञान सो ठगि लेतभये और जो यह पाठ होइ ठगि ठगि मूड़ सबन को लीन्हा तो यह अर्थ है कि सब जगको ठगि ठगि मूड़ि लियो कहे चेला करि लियो है सो यह ठगौरी जो रामकै परी है कि रामको ज्ञान सब जीवनको गुरुवालोग ठगेलेय हैं जैसे कोई रुपयाको कपड़ाको घोड़ा को ठगै है तैसे गुरुवालोग रामको ठगै हैं तामें प्रमाण "शास्त्रं सुबुद्ध्वातत्त्वेन केचिद्वादबलाज्जनाः। कामद्वेषाभिभूतत्वादहंकार वशंगताः॥ याथातथ्यं च विज्ञाय शास्त्राणां शास्त्रदस्यवः। ब्रह्मस्तेनानिरारम्भा दम्भमोहवशानुगाः ४" सो कबीरजी कहे हैं कि तुम्हारो मन ठग है जे गुरुवालोग तिन हीं सो मान्यो है ते तुमको ठगिलीन्हे हैं सो जब तुम ठगको पहिंचानि लेउगे कि ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी॥ ५॥

इति छत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३६ ॥

अथ सैंतीसवां शब्द ॥ ३७॥

हरिठग ठगत सकल जगडोला। गवनकरतमोसोंमुखहू न बोला १ बालापनके मीत हमारे। हमें छोंड़ि कहँ चले सकारे २ तुम अस पुरुष हौं नारि तुम्हारी। तुम्हरि चालपाहनहुंते भारी ३ माटिकदेह पवन को शरीरा। हरिठग ठगत सो डरल कबीरा॥ ५॥

हरिठगठगतसकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीव कहे हैं कि हरिको ठग जो गुरुवा है सो ठगहारी करिकै सब जीवन को ठगत कहे हरिते बिमुख करत जगडोला कहे

संसार में फिरै है अरु जब गवन करनलगे यम घेरिलियो तब मोसों मुखहू ते न बोले कि येतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्म में अथवा जीवात्मा में ते न बचायो यह खबरि कहि समुझाय न दियो कि हम को धोखा ह्वै गयो तुमहूं धोखा में न परो ॥ १ ॥

बालपन के मीत हमारे। हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे ॥

तुमअसपुरुषहौंनारितुम्हारी। तुम्हरिचालपाहनहुतेभारी३

सो तुम बालापन के हमारे मीत हो जबभर रह्यो जियो तबभर हमको धोखाहीमें लगायेरहे.अब हमैं छोड़िकै सकारे कहे हमहीं ते आगे कहां जाहुगे काहेते कि तुम तो काहूको रक्षक मान्यो नहीं वही धोखा में लगेरहे आपही को मालिक मानेरहे अब तुम्हारी रक्षा कौनकरै सो जब तुम्हारी कोई न कियो यम लैही गये तो जौन ज्ञान हमको दियो है तौनेते हमारी रक्षा कौन करैगो २ तुम ऐसो हमारे पुरुष है तुम्हारी हम नारी हैं काहेते कि बीजमन्त्र हमको उपदेश दियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौ ते भारीहै कहे पाहनौ ते जड़है तेहिते साहब को भुलाइ दियो ॥ ३॥

माटिकिदेहपवनकोशरीरा।हरिठगठगतसोडरत्नकबीरा४

माटी की यह देह है सो स्थूल शरीर नाशवान् है और पवन को शरीर सूक्ष्म शरीर है सो मनोमय चञ्चल है ज्ञानभये वहौ नाशवान् है तामें स्थित जे कबीर कहे काया के बीर जीव हैं ते हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं सबके क्लेशहरनवारे तिनको ठग जे गुरुवालोग हैं तिनके ठगत में कहे रक्षक को छपायदेत में जीवडरै है कि हमारी रक्षा अब कौन करैगो वह ब्रह्म तो धोखई है वातो गुरुवनहीं की रक्षा नहीं कियो और तेई मालिक होतो तौ माया के वश कैसे होते और यम कैसे धरिलैजाते॥४॥

इति सैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवां शब्द ॥ ३८ ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा। जहँ जहँ गये अपनपौ खोये

तेहिंफन्दे बहुफन्द। १ योगी कहै योगहै नीको द्वितिया और न भाई। चुण्डित मुण्डित मौनजटाधरि तिनहुं कहां सिधि पाई २ ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं। जहँ से उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तबहीं ३ बायें दहिने तजे बिकारै निजुकै हरिपद गहिया। कह कबीर गूंगे गुरखाया पूछे सों का कहिया ॥ ४ ॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवालोगन को उपदेश लग्योहै तिन को कहैहैं और गुरुवालोगन को कहैहैं ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा ॥

जहँ जहँ गये अपनपौ खोये, तेहिफन्दे बहु फन्दा १

मलीनबुद्धि जाकी होइहै ताको गन्दा कहैहैं सो गन्दा जो यह जीव है सो बिना जाने भर्मते बिगरि जातभयो ताते चिन्मात्र हरि को अंश जो यह जीव ताकी नीचबुद्धि होइगई जहां गयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साहब को हौं यह ज्ञान खोयकै तौने फन्दा में परिकै तौने मतमें लगिकै बहुत फन्दा जे चौरासी लाख योनि हैं तिनमें भटकत भये ॥ १ ॥

योगी कहै योग है नीको, द्वितिया और न भाई ॥
चुण्डितमुण्डितमौनजटाधरि, तिनहुं कहां सिधिपाई २
ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता, ये जो कहहिं बड़हमहीं ॥
जहँ से उपजे तहँहिं समाने, छूटिगये सब तबहीं ३

जिनको जिनको यह पद में कहिआये ते ते आपने मत को सिद्धान्त करतभये कि हमारही मत सिद्धान्त है परन्तु रक्षकके बिना जाने जहांते उपजे तहँ पुनि समाइ जातभये अर्थात् जा गर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनिगये जनन मरण नहीं छूटैहै जब दूसर अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धान्त करि राख्यो तैं ते मत सब छूटिगये अथवा जहांते उपजे कहे जौने

लोकप्रकाश ते उपजे हैं तहैं समाने महाप्रलय में तब सब बिसरिगयो ॥ २ । ३ ॥

बायें दहिने तजो बिकारे, निजुकै हरिपद गहिया ॥
कह कबीर गूंगे गुर खाया, पूछे सों का कहिया ४

सो मन्त्रशास्त्र में जे बाममार्ग दक्षिणमार्ग हैं ते दोऊ बिकारई हैं तिनको दुहुन को छोड़िदेउ और हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकै कहे आपनमानिकै गहौ अथवा निजुकै कहे विशेषिकै तिनके पदको गहौ जो कहो उनको बताइदेउ वे कैसेहैं तो वेतो मन वचन के परेहैं उनको कोई कैसे बताइसकै जो उनको जान्यो है ताको गूंगे कैसो गुरभयो है कछू कहि नहिं सकै है इशारहिते बतावै हैं वेदशास्त्र को तात्पर्य करिकै जो सज्जनलोग साहबको समुझावै है सो तात्पर्य वृत्तिही करिकै बतावै हैं ऐसे तुमहूं जो भजनकरौगे तो तुमहूं उनको जानि लेउगे कि ऐसे हैं ॥ ४ ॥

इति अड़तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३८ ॥

अथ उनतालीसवां शब्द ॥ ३९ ॥

ऐसे हरिसों जगत् लरतुहै । पण्डुर कतहूं गरुड़ धरतुहै १ मूस बिलारी कैसे हेतू । जम्बुककर केहरिसों खेतू २ अचरजयक देखा संसारा । सोनहा खेद कुंजर असवारा ३ कह कबीर सुनो सन्तो भाई । यह सन्धी कोई बिरलै पाई ॥ ४ ॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पण्डुरकतहूं गरुड़धरतुहै १

जैसे पूर्ब कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत् लरतुहै कहे बिरोध करतुहै और जे उनके भक्त उनको बतावै हैं तिनके मत को खण्डन करै हैं सो हे मूढ़ ! पण्डुर कहे पनिहां पियरसर्प कहूं गरुड़को धरतु है जो डुण्डुभ पाठहोय तो डुण्डुभ पनिहां सर्प का नामहै सो रामोपासना गरुड़ है सो और मत जे सर्प हैं तिनको

कहां खण्डन कीन होइहै वही सबको खण्डन करनवारी है जो वाको रामोपासना को मत अच्छीतरहते जानौ होइ है ॥ १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू। जम्बुक कर केहरि सों खेतू २

सो हे जीवो! तुम्हारो ज्ञान तौ मूस है और गुरुवालोगन को ज्ञान बिलारी है जे और और मत में लगावै हैं तुमको और और मत में लगाइकै खाइ लेइँगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो जम्बुक जो सियार सो केहरि जो सिंह है तासों खेत करैहै वह लरैहै सो जम्बुक अज्ञान है सो सिंह जो तुम्हारो जीव सो लरै है वह सिंह जीव कैसो है अज्ञानको नाश कै देनवारो है अर्थात् जब आत्मा को ज्ञान होइ है तब अज्ञान नाश ह्वै जाइहै ॥ २ ॥

अचरजयक देखासंसारा। सोनहाखेदकुंजर असवारा ३
कह कबीर सुनो सन्तो भाई। यह सन्धी कोइ बिरलेपाई ४

सो हम यह बड़ो आश्चर्य देख्यो है सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवार को खेदै है सो नाना मतवारे जेहैं तेई कुत्ते हैं ते कांउं कांउं कहे शास्त्रार्थ करिकै कुंजर के असवार जे हैं रामोपासना के साधक तिनको खेदै हैं कहे उनसों वे कल नहीं पावैहैं यहां कुंजर मन है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदिये हैं और आप असवार हैं ३ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, भाई! तुम सुनो मनते भिन्न ह्वैके साहब के मिलबे की जो है सन्धि भेद ताको कोई बिरला पाये है अर्थात् जबभर मन बनो रहै है तबभर वाको भूलिबेकी सन्धि बनीही रहै है मनते भिन्न ह्वैकै वाके भजन करिबेको उपाय कोई बिरला जानै है ॥ ४ ॥

इति उनतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३९ ॥

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४० ॥

पण्डित वाद बदौ सो झूठा। रामके कहे जगतगति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १ पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा

बुझाई। भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २ नरके संग सुवाहरि बोलै हरिप्रताप नहिं जानै। जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३ बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नामलिये का होई। धनके कहे धनिक जो हो तो निर्धन रहत न कोई ४ सांची प्रीति बिषय माया सों हरिभगतन की हासी। कह कबीर यक राम भजे बिन बांधे यमपुर जासी ॥५॥

पण्डित बाद बदौ सो झूठा ॥

राम के कहे जगत गति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १

सो हे पण्डितो ! जो बाद बदौ हौ सो झूठा है काहेते कि पण्डित तो वह कहावै है जाके सारासार बिचारिणी बुद्धि होई है सो सारासार बिचारिणी बुद्धि तो तिहारे है नहीं पण्डित भर कहावौ हौ काहेते कि सारशब्द को झूठा कहौहौ यह बाद बदिकै राम के कहे ते जो गति पावतो तौ खांड़ौ कहे मुख मीठ ह्वै जातो ॥ १ ॥

पावक कहै पाव जो दाहै जल कहै तृषा बुझाई ॥
भोजन कहै भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २
नरके संग सुवा हरिबोलै हरिप्रताप नहिं जानै ॥
जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३

जो पावक के कहे दाह पावतो तो जीभ जरिजाती और जल के कहे तृषा बुझाइ जाती और भोजन के कहते भूख भाजि जाती तौ राम के कहेते दुनियां तरि जाती २ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहै हैं और श्रीरामचन्द्र को प्रताप नहीं जानैहै काहेते कि जब कबहूं जङ्गल में उड़िजाय है तब राम की सुरति नहीं करै है ऐसे जो तुम रामनाम कहि हरि को प्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ॥ ३ ॥

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु, नामलिये का होई ॥
धनके कहे धनिक जो होतो, निरधन रहत न कोई ४

बिना देखे बिना स्पर्श किये नाम लिये कहा होइ है अर्थात् जो कोई दूर होइ और देखै न स्पर्श न होइ और जो वाको नाम लेई तौ का जानि लेइहै नहीं जानै है धन के कहेते कोई धनिक ह्वै जातो तो निर्द्धनी कोई न होतो ऐसे नामलिये जो मुक्ति होत तो सब मुक्ति होइजात सो हे पण्डितो! तुम ऐसे असंगत दृष्टान्त देकै यह बाद बदौ हौ सो झूठा है काहेते कि रामनाम तो मन बचन के परे है और ये सब मन बचन में आवै हैं और वह राम नाम साहब के दियेते स्फुरित होइ है यहै रामनाम जपेते और ये सब अनित्थ ह्वैजाइ हैं ॥ ४ ॥

सांची प्रीति बिषय माया सों, हरिभक्तन की हासी ॥
कह कबीर यक रामभजे बिनु, बांधे यमपुर जासी ५

सो कबीरजी कहैहैं कि हे नास्तिक पण्डितो! बिषय माया सों सांची प्रीति करौहौ और ऐसे ऐसे कुबाद बदिकै हरिभक्तन की हासी करौहौ नामरूप लीलाधाम को खण्डन करिकै सो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नाम के बिना भजन किये बांधे मोगरनकी मार सहत यमपुरहीको जाहुगे जे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते बिमुख हैं ते सब लोकनमा निन्दित हैं तामें प्रमाण " यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति। निन्दितस्सर्वलोकेषु स्वात्मात्येनं विगर्हते" ॥ ५ ॥

इति चालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४० ॥

अथ इकतालीसवां शब्द ॥ ४१ ॥

पण्डित देखौ मनमो जानी। कहुधौं छूटि कहांते उपजी तबहिं छूति तुम मानी १ नादे बिन्दु रुधिर यकसंगै घटहीमें घट सज्जै। अष्टकमलकी पुहुमी आई यह छूति कहां उपज्जै २ लख-चौरासी बहुत बासना सो सब सरिभो माटी। एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेतधौं काटी ३ छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन

छूतिहि जगउपजाया । कह कबीर ते छूति बिवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

पण्डित देखो मनमोजानी ॥

कहुधौं छूति कहांते उपजी, तबहिं छूति तुम मानी १

हे पण्डित ! तुम मन में जानिकै कहे बिचार कै देखौ तो और कहौ तो यह छूति कहांते उपजी है जो छूति तुम अपने मनमें मान्यो है ॥ १ ॥

नादे बिन्दु रुधिर यक संगै, घटही में घटसज्जै ॥
अष्टकमलकी पुहुमी आई, यह छूति कहां उपज्जै २

नाद ते पवन बिन्दुते बीर्य रुधिर के संगते घटहीमें घट सजै है बुद्बुदा होइहै सो अष्टदल को कमलहै तामें अटकिकै लरिका होइ है सो पुष्ट परै है सो लरिकौ के वाही भांति को अष्टदल कमल होइहै तौने अष्टदलकमलके दलदल में वाको मन फिरत रहैहै ताते तैसे नाना कर्म में लागिकै नाना स्वभाव वाके होइ हैं और जहां जहां की बासना करिकै मरै है तौनी तौनी योनि में प्राप्त होइहै एकै जीव बासनन करिकै सर्वत्र होइहै यह छूति कहां ते उपजैहै ॥ २ ॥

लखचौरासी बहुत बासना, सो सब सरिभो माटी ॥
एकै पाट सकल बैठारे, सींचि लेत धौं काटी ३

यह जीव बहुत बासनन में परिकै चौरासीलाख योनिन में भटकैहै शरीर सरिकै माटी है जाय है एकै पाट में कहे जगत् में नाना बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करतभई अरु ये शरीर सब माटिही आईं और माटी में मिलि जाइँगे और जीव सबके एकही है और एकही पाटमें बैठेहैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेत हैं का जल सींचे छूति मिटिजाय है नहीं मिटै ॥ ३ ॥

छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन, छूतिहि जग उपजाया ॥
कह कबीर ते छूति बिबर्जित, जाके संग न माया ४

सो वही छूति जो है बासना सो जब उठी तब जेंवन कियो और वही बासना उठी तब अँचयो और कहां लौं कहैं वही बासना ते जगत् उपज्यो है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि जाके संग माया नहीं है सोई बासनारूपी छूतिते बिबर्जितहै सो हे पण्डित! माया को जो तुम छोड़्यो नहीं छूति तिहारे भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ बड़ी छूति कियेहै बासनैते चित्तकी वृत्ति उठैहै तब यह मानैहै कि हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं ॥ ४ ॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४१ ॥

अथ बयालीसवां शब्द ॥ ४२ ॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई। जाते आवागमन नशाई ॥ अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १ उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पताल के माहे। बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं नरकजात धौं काहे २ अनजाने को नरक स्वर्ग है, हरिजाने को नाहीं। जेहि डरको सबलोग डरतहैं, सो डर हमरे नाहीं ३ पाप पुण्य की शङ्का नाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

ते बासना माया के योग ते होइ हैं सो माया जौनी प्रकार ते छूटैहै सो उपाय कहैहैं अरु आचार को वहां खण्डन करि आये सो अब जौनी दशा में आचार नहीं है सो कहैहैं ॥

पण्डितशोधि कहहुसमुझाई, जातेआवागमन नशाई ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पताल के माहे ॥
बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं, नरकजात धौं काहे २

हे पण्डित ! तुमतो सारासार को बिचार करौ हौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाय कहो जाते यह जीवात्मा को आवागमन नशाइ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये फल कौनी दिशा में रहे हैं १ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहां सर्वत्र मैं ढूंढ़िडास्यों परन्तु बिना गोपाल कहूं ठौर न देख्यो गोपाल कहेगो जो इन्द्रिय जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं को सर्वत्र देखत भयो बिषय इन्द्रिनते देवता मनते मन जीव ते जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ते चैतन्य है सो जीव उनको चित् शरीर अरु माया काल कर्म स्वभाव उनको अचित् शरीर है तेहिते बिना गोपाल कहूं ठौर नहीं है जीव नरक स्वर्ग जाय है सो अब बतावै हैं ॥ २ ॥

अनजाने को नरक स्वर्ग है, हरिजाने को नाहीं ॥
जेहि डरको सबलोग डरत हैं, सो डर हमरे नाहीं ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनजाने को नरक स्वर्ग है कहे जो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको न स्वर्ग है न नरक है और जो कोई हरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरक है न स्वर्ग है जौन डर को सबलोग डराय हैं माया ब्रह्म नरक स्वर्गादिकन को तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबै को देखैहैं ॥ ३ ॥

पाप पुण्यकी शङ्का नाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं ४

और न उनको पाप पुण्य की शङ्का है काहेते कि जो कोई बद्ध होइ सो न मुक्त होइ तेहिते न वे बद्धही हैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण (श्रीभागवते) "बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः । गुणस्य मायामूलत्वान्न मे मोक्षो न बन्धनम्" हम तो सर्वत्र साहबही को देखै हैं वे नरक स्वर्ग को नहीं जाइ हैं सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो ऐसी भावना जे नर करै हैं

ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के अंश हैं सो तिनहीं के स्थान में जाइ हैं ॥ ४ ॥

इति बयालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तेंतालीसवां शब्द ॥ ४३ ॥

पण्डित मिथ्या करौ बिचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूल स्थूल पवन नहिं पावक, रबिशशि धरणि न नीरा । ज्योति स्वरूपी काल न उहवां, बचन न आहि शरीरा २ कर्म धर्म कछुवो नहिं उहँवां, ना कछुमन्त्र न पूजा । संयम सहित भाव नहिं एकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहँवां, ना ह्वां भेद बिचारा । हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरु जाके नाहीं, सो दूजा कि अकेला । कह कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ५ ॥

पण्डित मिथ्या करौ बिचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजन-हारा १ थूलस्थूलपवन नाहिंपावक, रबिशशिधरणि न नीरा । ज्योतिस्वरूपी काल न उहँवां, बचन न आहिश-रीरा २ कर्मधर्म कछुवोनहिं उहँवां, ना कछु मन्त्र न पूजा । संयमसहित भावनाहिंएकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहवां, नाह्वांभेदबिचारा । हरिहर ब्रह्म नहीं शिवशक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरु जाकेनाहीं, सो दूजा कि अकेला । कहकबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हमचेला ॥ ५ ॥

हे पण्डित ! तुमतौ वह ब्रह्म को मिथ्यै बिचार करो हो जो यह पद में वर्णन करिआये सो वह में एकउ नहीं है वह तो धोख ही है सो कबीरजी कहै हैं कि सो वह आत्मा ते दूसर है कि अकेल वह ब्रह्म है जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञानभयेपर समुझै

कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को हौं वह ब्रह्म धोखा है सोई गुरू है मैं चेलाहौं काहेते कि मोहिं तो धोखई नहीं भयो है जो आपने को ब्रह्ममानिकै और साहब को समुझै है और वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरू है और मैं वाको चेला हौं अर्थात् सोई मोसों अधिक है काहेते कि वह धोखा में परिकै निकस्यो है यह प्रशंसा कियो ॥ ५ ॥

इति तेंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चवालीसवां शब्द ॥ ४४ ॥

बूझहु पण्डित करहु बिचारी पुरुष अहै की नारी १ ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होती योगी के घर चेली । कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलिमें रहैअकेली २ बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई पुत्र जन्म हो निहारी । कारे मूड़े यकनहिं छांड़ै अबहूं आदिकुवांरि, ३ मायिक न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै । कह कबीर वे युगयुग जीवैं जातिपांति कुल खोवै ॥ ४ ॥

यह मायाही सब जगत् के जीवनको भरमायो है सो कहै हैं ॥

बूझहु पण्डित करहु बिचारी, पुरुष अहै की नारी १
ब्राह्मण के घर ब्रह्मणी होती, योगी के घर चेली ॥
कलिमा पढ़ि·पढ़ि भई तुरुकिनी, कलि में रहै अकेली २

सो हे पण्डित ! तुम बूझौ व बिचारिकै कामकरो यह माया पुरुषरूप है कि नारीरूप है यह माया सबको लपेटिलियो है १ विद्या माया ब्राह्मण के तौ ब्राह्मणी ह्वैकै बैठीहै ब्राह्मण कहैहैं कि हम ब्रह्म को जानै हैं "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" अरु घरमें ब्राह्मणी बैठाये रहैहैं वाको स्त्रीको भाव करैहैं बेटीसों बेटी को भाव बहिनी सों भगिनीको भाव मानै हैं सो कहो तो ब्रह्मभाव कबभयो जो कहो जिनके स्त्री नहीं है तिनको तो ब्रह्मभाव ठीक है तो उन के ब्रह्मजानपनीरूप ब्राह्मणी की गरूरी बनी है संयोगिन के तो

चली ह्वै बैठी है और योगिन के योगीरूप ह्वै बैठाहै योगी महामुद्रा साधन करिकै वीर्य की उलटी गति करदेइहैं सो जब वृद्ध भये तब षोड़श कन्या एक घर में आतिभरि राखिकै संभोग करि के उनको वीर्य लिंगद्वारते खैंचिकै कपार में चढ़ाइ लेइ हैं तब आप तरुण ह्वै जाइ हैं वे षोड़शौ कन्या मरि जाइ हैं एतो बड़ो अनर्थ करैहैं जे प्राणायाम करिकै प्राण चढ़ाय लैजाइहैं तिनके कुण्डलिनी ह्वै बैठीहैं औ मुसलमानन के जब बिवाह होइ है तब निगाह सों निगाह पढ़िकै कलिमा पढ़िकै तुरुकिनी होइ है और मुसलमान होइहै सो ये उपलक्षणौहै अर्थात् ब्राह्मण में स्त्री के साथ कर्मरूप ह्वै के और योगिनके दशमुद्रारूप ह्वैकै और मुसलमानन में निगाह कलमा आदिदैकै सरारूप ह्वैकै अकेली मायही रहत भई साहब के काम ये एको नहीं हैं ॥ २ ॥

बर नाहिं बरै ब्याह नाहिं करई, पुत्रजन्म हो निहारी ॥
कारे मूड़े यक नहिं छांड़ै, अबहूं आदि कुवांरी ३

बर कहे श्रेष्ठ जे हैं साहब के जाननवारे भक्त तिनको नहीं बरयो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या ये दोनों को नहीं है अरु खसम ब्रह्म है सो ब्याह नहीं करै है काहेते कि धोखा की भँवरी नहीं परै और माया को पुत्र जगत् है जाको गर्भधारण करै है सो कारे कहे जिन के शिखा है हिन्दूलोग और मूड़े कहे जिनके शिखा नहीं है मुसलमान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़यो अब हूं भर वह आदिकहे आद्या जो माया है सो कुवांरी ही बनी है अर्थात् हिन्दू मुसलमान को आपही बशकैलियो है इनके बश नहीं भई ॥ ३ ॥

मायिक न रहै जाइ न ससुरे, साईं संग न सोवै ॥
कह कबीर वे युग युग जीवैं, जाति पांति कुल खोवै ४

अरु मायिक जो है शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्तिभई है माया तहां तो रहत नहीं नहीं है वहां तो जीव के साहब को अज्ञानरूप

कारणमात्र रह्यो है और सासुर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म जहां जीव मान्यो है कि ब्रह्म मैंही हौं सो धोखा है तहां नहीं जाइ है और वही साईं कहे पति है काहेते कि वही माया शबलित होइ है तब जगत् होइ है ताके सङ्ग नहीं सोवै है काहेते कि वह तो धोखई है और वह माया धोखा है जो कछु बस्तु होइ तब न वाके संग सोवै श्रीकबीरजी कहे हैं कि सब जगत् को माया लपेटि लियो है जे जीव साहब और साहब की जाति आप को मानै हैं और अपनी जातिपांति कुल खोवै हैं सोई माया ते बचे हैं और युग युग जियै हैं और सबको माया खाइही लियो है अर्थात् उनहीं को जनन मरण नहीं होइहै ॥ ४ ॥

इति चवालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवां शब्द ॥ ४५ ॥

कौन मुवा कहु पण्डितजना। सो समुझाय कहौ मोहिं सना १ मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा। पार्बतीसुत मुये गणेशा २ मूये चन्द्र मुये रबि केता। मुये हनुमत जिन्ह बांधी सेता ३ मूये कृष्ण मुये करतारा। यक न मुवा जो सिरजनहारा ४ कहै कबीर मुवा नाहिं सोई। जाको आवागमन न होई ॥ ५ ॥

कौनमुवाकहु पण्डितजना। सोसमुझायकहौमोहिंसना १
मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा। पार्बतीसुत मुये गणेशा २
मूये चन्द्र मुये रबि केता। मुयेहनुमतजिन्हबांधीसेता ३
मूये कृष्ण मुये करतारा। यकनमुवाजो सिरजनहारा ४
कहै कबीर मुवा नाहिं सोई। जाको आवागमन न होई ५

जिनको जिनको या पदमें वर्णन करिआये ते ते सब महाप्रलय में लीन होइहैं एक कहे सम अधिकते रहित जो साहब नहीं मुवा और सिरजनहार जो समष्टिजीव सो नहीं मुवा है अर्थात् सो रहि जाय है और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावै हैं जीव तो

मरै नहीं है शरीरही मरै है सो जे जे देवतनको मुवा कहिआये ते जौन रूप ते साहब के समीपरहे हैं सो स्वरूप उनको नहीं मुवै है पार्षद शरीर ते बनेरहे हैं यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआये हैं ॥ १ । ५ ॥

इति पैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४५ ॥

अथ छियालीसवां शब्द ॥ ४६ ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई । यक मरमुये अन्न नहिं खाई । यक मर सीझ रसोई १ करिअसनानतिलककरि बैठे, नौगुणकांध जनेऊ ॥ हांड़ीहाड़हाड़थारीमुख, अबषटकर्मबनेऊ २ धरम कथै जहँजीवबधै, तहँअकरमकरमेरेभाई । जोतोहरेकोब्राह्मणकहिये, तौकेहिकहिय कसाई ३ कहै कबीर सुनोहोसन्तो, भरमभूलिदुनिआई । अपरमपार पारपुरुषोत्तम, यह गति बिरलैपाई ॥ ४ ॥

अब जे षट्कर्मी पण्डितलोग बलिदान करिकै मांस खाइ हैं तिनको कहै हैं ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई ॥

यक मरमुये अन्न नहिं खाई, यक मर सीझ रसोई १ करि असनान तिलक करि बैठे, नौगुण कांध जनेऊ ॥ हाड़ी हाड़ हाड़ थारीमुख, अब षट्कर्म बनेऊ २

हे पण्डित ! एक बड़ो आश्चर्य होइ है एक मरैहै ताके मरेते कोई अन्न नहीं खाय है और वाके छुयेते अशुद्ध ह्वै जाइहै अरु एक जीवको मारिलेआवै हैं तौने मुर्दाको रसोई मं सिझवै हैं १ और नौगुणको जनेऊ कांधे में डारिकै स्नान करिकै बड़ो वेदना ऐसो तिलक दैकै बैठहैं सो कबीरजी कूटकरै हैं कि अब षट्कर्म बानि परयो कि हाड़ है थारी में हाड़ है मुखमें हाड़ है वही षट्कर्म ब्राह्मणके ये हैं पढ़ै पढ़ावै दानदेइ लेइ यज्ञ करै यज्ञ करावै इहां

ये षट्कर्म करे हैं एक हँड़िया दूजे हाड़ तीजे थारी चौथे हाड़ पाँचौ मुख छठों हाड़ अब ये षट्कर्म बनिपस्यो ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव बधै, तहँ अकरम कर मेरे भाई ॥
जो तोहरे को ब्राह्मण कहिये, तौ केहि कहिय कसाई ३
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, भरम भूलि दुनिआई ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, यह गति बिरलै पाई ४

जहां धर्मको कथै है किया यज्ञ है देवपूजन पितर श्राद्ध है या धर्म है तहँ जीवनको मारे है सो हे भाइउ! जो करिबेलायक कर्म नहीं है सोऊ करेहैं ऐसे जे तुम्हारे कर्म हैं तिनको तो ब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे कसाई काको कहैंगे ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलिरही है अपरमकहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्म है ताहूते पारपुरुष समष्टिजीव हैं जाके अनुभवते ब्रह्म भयो है ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्र हैं काहेते कि वे बिभु सर्वज्ञ हैं और जीव अणु अल्पज्ञ है ते श्रीरामचन्द्र जीकी जो यह गति है ज्ञान सो कोई बिरलै पाई है अर्थात् कोई बिरला जान्यो है कि सबते पर साहबई है उनते सम औ अधिक कोई नहीं है तामें प्रमाण " सकारणकारणकारणाधिपो नचास्य कश्चिज्जनिता नचाधिपः । न तस्य कार्यं करणं च विद्यते नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते" (इति श्वेताश्वतरोपनिषदि) "समो न विद्यतेतस्यविशिष्टः कुत एव तु" इतिबाल्मीकीये) और कबीरोजी को प्रमाण " साहब कहिये एकतौ, दूजा कहो नजाइ । दूजा साहब जो कहैं, बादबिडम्बनआइ ॥ जननमरणतेरहित है, मेरा साहब सोय । मैं बलिहारी पीउकी, जिन सिरजा सब कोय" ॥ ४ ॥

इति छियालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४६ ॥

अथ सैंतालीसवां शब्द ॥ ४७ ॥

पण्डितबूझिपिवोतुमपानी। जामाटीके घरमें बैठे, तामें सृष्टि समानी १ छपनकोटि यादव जहँबिनशे, मुनिजनसहसअठासी। परगपरगपैगम्बरगाड़े, तेसरिमाटीमासी २ मत्स्यकच्छघरियार बियाने, रुधिरनीरजलभरिया। नदियानीरनरकबहिआवै, पशु मानुष सबसरिया ३ हाड़झरीझरि गूदगली गलि, दूध कहांते आवै। सो तुम पाँड़े जेंवनबैठे, मटिआहिछूतिलगावै ४ वेदकिताब छोड़िदिहुपांड़े, ई सबमनकेकर्मा। कहैं कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

जे दम्भकरिकै बड़ो आचार करै हैं जिनको चिद्अचिद् साहब को रूप है यह बुद्धि नहीं है ॥

पण्डित बूझि पियो तुम पानी ॥
जा माटी के घर में बैठे, तामें सृष्टि समानी १
छपनकोटि यादव जहँ बिनशे, मुनिजन सहस अठासी॥
परग परग पैगम्बर गाड़े, ते सरि माटी मासी २

सो हे पण्डित! ज्ञानतो तिहारे है नहीं आचार करौहो सो तुम कहां को पानी पियौ हौ भला बूझिकै कहे बिचारिकै तौ पानी पियौ जौने माटी के घरमें अर्थात् पृथ्वी में तुम बैठेहौ तौने में सब सृष्टि समाइरहीहै १ और जौनी पृथ्वी में छप्पनकोटि यादव और अठासी हज़ार मुनि ये उपलक्षण हैं अर्थात् सब जीवन के शरीर वही माटी में मिलि मिलिकै सरिगये अरु परग परग में पैग़म्बर गाड़े हैं ते सब सरिकै माटी ह्वैरहेहैं तेहिते माटी मासी है कहे मांस में मिलिरही है और माटी मासी कहे मधुकैटभ के मांस की आइ ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया॥
नदिया नीर नरक बहि आवै, पशु मानुष सब सरिया ३

हाड़ झरीझरि गूद गली गलि, दूध कहांते आवै ॥
सो तुम पांड़े जेंवन बैठे, मटि आहि छूति लगावै ४

अरु नदिया के जल में मत्स्य कच्छ घरियार बियाने कहे होयहैं और रुधिर नीर मल इत्यादिक वही नदिया के जल में मिलिजाइ है और पशु मानुष जे सरिजाय हैं ते वही पानी पियो हौ और आचार करोहौ ३ दूधो हाड़ते झरि झरि गूदते गलि गलिकै लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैकै हे पण्डित! तुम जेंवन बैठौहौ और माटी जो मांस है ताको छूति लगावो हौ कि मांस बड़ो अपवित्र है याको जे खाइ हैं ते बड़ो निषिद्धकर्म करै हैं सो कहो तो वह दूध मांसते कैसे भिन्न है ॥ ४ ॥

वेद किताब छोड़ि दिहु पांड़े, ई सब मन के कर्मा ॥
कहै कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ५

सो हे पांड़े! शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जाने जाइहैं ते वेद किताब को तुम छोड़िदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करौ हौ ते तौ सब तुम्हारे मन के कर्म हैं आपने मनहींते ये सब तुम बनाइ लियो है इनते तुम न निबहौगे श्रीकबीरजी काकुकरैहैं कि, हे पांड़े! बिचारिकै देखौ ये सब तुम्हारे धर्म हैं अर्थात् नहीं हैं तुम्तौ साहबकेहौ अथवा कबीरजी कहै हैं एते सब कर्म करौहौ अपने मनके बनाये और वेद किताबौ के कहेते ये सब तुम्हारे धर्म कहे तुम्हारे शरीरैमाहैं तेहिते शरीरते भिन्न ह्वैकै आपने स्वरूप को जानौगे तब आपने सांचे कर्मन को जानौगे यह व्यंग्य है ॥५॥

इति सैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥ ४८ ॥

पण्डित देखौ हृदयबिचारी। कौनपुरुषकोनारी १ सहजसमाना घटघटबोलै, वाको चरितअनूपा। वाकोनामकहाकहिलीजै, ना वह बरण न रूपा २ तैं मैं काहकरै नरबौरे, क्यातेरा क्यामेरा।

रामखोदायशक्तिशिवएकै, कहुधौंकाहिनिवेरा ३ वेदपुराणकुरान-किताबा नानाभांति बखानी । हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकल काहु न जानी ४ छःदरशन में जो परवाना, तासुनाम मनमाना । कहै कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सब खलकसयाना ॥ ५ ॥

पण्डित देखो हृदय बिचारी । कौन पुरुष को नारी १ सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा ॥ वाको नाम कहा कहि लीजे, ना वह बरण न रूपा २

हे पण्डित ! तुमतौ सारांसारको बिचार करौहो हृदय में बिचारिकै देखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मा तो न पुरुष न नारी है १ जो कहो घट घट में सहजजीव ब्रह्म समाइ रह्यो है वाको चरित्र अनूप है सोई हमारो स्वरूप है तो वाको नाम कहा कहिलीजै वाको तो न वर्ण है न रूपहै वह तो धोखा है ॥ २ ॥

तैं मैं काह करै नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा ॥ राम खोदाय शक्ति शिव एकै, कहुधौं काहि निवेरा ३

और जो तैं मैं कहौहौ कि तैं मैं आह्यो मैं तैं आह्यो एकही ब्रह्म तो है तैं मैं कहाकरै है विचारिदेखु तौ क्या तेरा है क्या मेरा है सब साहबका तौ हैं जो तैं साहब होइ तब न तेरा होइ रामखोदाय और शक्ति शिव जे हैं तिनमें कहुधौं तैं काको निवेरा कियो है कि एक यह जगत्को मालिक है और वही मैं हौं अर्थात् इनकी सामर्थ्य तोमें एकऊ नहीं देखि परैहै तातें इनमें तैं कोई नहींहै ॥ ३ ॥

वेद पुराण कुरान कितेबा, नाना भांति बखानी ॥ हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकलकाहु न जानी ४

वही साहब को नाना नामलैकै कहै हैं सो वेद पुराण कुरान किताब में वही साहबको सबते परे नानाभांतिते नाना नाम लैकै वर्णन कियो है यही हेतुते हिन्दू, तुरुक, जैनि, योगी एकल कहे एक नामकरिकै कोई नहीं जान्यो कि एक यही सिद्धान्तहै यही

सबको मालिक है अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपाय ते मैं मन वचनके परे साहब को जान्यो है सो कोई नहीं जान्यो॥४॥

छःदरशन में जे परवाना, तासु नाम मन माना ॥
कह कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सब खलक सयाना ५

छइउ दर्शन में अरु जेते सब हिन्दू तुरुक आदि वर्णन करि आये तिन सबमें जौने धोखाब्रह्म को प्रमाण परे है तौनेही को नाम सब के मन में मानैहै कहत तौ मन वचनके परे हैं परन्तु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाही को सब मानै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि सब खलक सयाना है काहेते कि कहते तो यह बात हैं कि वह तो मन वचन में आवते नहीं है और जे मन वचन में आवै हैं तिनहीं में फिरि लागे है ताते हमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहै हैं कि साहब आपही ते कृपा करिकै अनिर्वचनीय रामनाम स्फुरित करि देइहैं ताहीके मिलन को उपाय बतावै हैं यह काकु करै हैं ॥ ५ ॥

इति अड़तालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवां शब्द ॥ ४९ ॥

बुझ बुझ पण्डित पद निर्बाना। सांझपरेकहँवांबसभाना! १ नीचंऊँचपर्वतठेलानभीत। बिनागायनतहँवांउठगीत २ ओसन प्यासमँदिरनहिंजहँवां। सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३ नितैअमावस नित संक्रांति। नितनितनवग्रहबैठपांति ४ मैंसोहिंपूछौंपण्डित जना। हृदयाग्रहणलागुकेहिखना। ५ कहकबीरयतनौनहिंजान। कौनशब्दगुरुलागाकान ॥ ६ ॥

अब योगिनको कहै हैं ॥

बुझबुझपण्डितपदनिरबाना॥सांझपरेकहँवांबसभाना १
नीचऊँचपर्वत ठेलानभीत। बिनगायनतहवांउठगीत २

हे पण्डित! तुम वह निर्बाणपद को बूझो तो जो त्रिकुटी में

ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखौ हौ सो सूर्य सांझ परे कहे जब शरीर छूटिगयो तब कहां बसैहै १ नीचेते ऊंचे को कहे कुण्डलिनीतेगैबगुफामें जब आत्मा जाइ है तौने पर्वत में न ठेला है न भीति है और बिना गायन तहँवां गीतउठैहै कहे अनहद की ध्वनि सुनिपरै है ॥ २ ॥

ओसनप्यासमँदिरनहिंजहँवां।सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३

ओस जो वहां परै है कहे अमृत जो वहां झरै है ताको पान करिकै न प्यास ह्वैजाइहै कहे पियास नहीं लगै है अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो मानि राखे हैं कि अमृत पीकै हम अमर ह्वैजाइँगे सो अमर न होउगे और जो गैबगुफा—पर्वतमें घर मानि राखे हैं सो वहां तेरो मंदिर कहे घर नहीं है अर्थात् वहां तो शून्य है तहां सहस्रदल में धेनु दुहावै हैं कहे धेनु जो है गायत्री ताको अर्थ जो है वह दूध ज्ञानस्वरूप ब्रह्म ताको बिचार करै हैं आपने को ब्रह्म मानै हैं जब शरीरसरिजाइहै तब गैबगुफौ जरिजाइहै और फिरि शरीर धारणकरैहैं ॥ ३ ॥

नितअमावसनितसंक्रांति । नितनितनवग्रहबैठेपांति ४

और तहां नित अमावसरहैहै चन्द्रमा सूर्यन के ओट ह्वैजाइ सो अमावस कहावैहै सो यहांते आत्मा जाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीन ह्वै जाइ है ताते नित अमावस रहै है और फिरि जब समाधि उतरी तब शङ्का में परिगयो वही वाको नित संक्रान्ति है व नित नवग्रह पांति जो है दुवार जामें ऐसो जो है ग्रह शरीर तौने की पांति बैठैहै कहे इतना योग साधैहै तऊ शरीर धारण करिबो नहीं छूटै है ॥ ४ ॥

मैंतोहिंपूछौं पण्डितजना। हृदयाग्रहणलागुक्यहिखना ५

कहकबीरइतनौनहिंजान। कौन शब्द गुरुलागाकान ६

हे पण्डित ! तुमसों हम पूछै हैं कि जब समाधि उतरिआवैहै तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइहै औ निर्बाणपद कहतहौ

हौ सो निर्बाणपद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते और कैसे नाना शरीर पावते सो देखतेहौ बूझते नहीं हौ यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमा को कब ग्रहणकियो ५ श्रीकबीरजी कहै हैं कि इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीर के साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीर के साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरे कान में लागिकै गुरुवालोग कौन सो हंसशब्द को उपदेश कियो है जाते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को भूलि गये ॥ ६ ॥

इति उनचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ४९ ॥

अथ पचासवां शब्द ॥ ५० ॥

बुझबुझपण्डितबिरवा न होई। अधबस पुरुष अधाबसजोई १ बिरवा एक सकल संसाला। स्वर्ग शीश जर गयल पताला २ बारह पखुरी चौबिस पाता। घनबरोह लागी चहुँघाता ३ फलैनफुलै वाकिहै बानी। रैनिदिवस बिकारचुवपानी ४ कहकबीरकछु अछलोन जहिया। हरिबिरवाप्रतिपालत तहिया ॥ ५ ॥

बुझबुझपण्डितबिरवा न होई। अधबसपुरुषअधाबसजोई १
बिरवाएक सकलसंसाला। स्वर्गशीशजरगयलपताला २

हे पण्डित! यह संसाररूपी वृक्षको जो तैं बूझिराखैहै कहे मानि राखे है तैं बूझतौ जितने बिचार होइहैं तिनको यह मिथ्याही है हरिके चिद्अचिद्रूप ते सत्य है यह संसारवृक्ष आधा पुरुष है आधा प्रकृति है अर्थात् चित्पुरुष जीव और अचित् मायादिक इनहींते सम्पूर्ण जगत्है १ पुनि कैसो है संसाररूपी बिरवा याको स्वर्ग शीश कहे ब्रह्माण्ड को जो खपराहै सो शीशहै अरु याकी जर पाताल में गई है ॥ २ ॥

बारहपखुरीचौबिसपाता। घनबरोह लागी चहुँघाता ३
लैनफुलैवाकिहैबानी। रैनिदिवस बिकार चुव पानी ४

व बारहमहीना जे हैं ते बारे पंखुरी हैं अर्थात् काल और चौबिस तत्त्व वाके चौबिस पात हैं और घन कहे नाना कर्मन की बासना तेई घनबरोह चारों ओर लगी हैं ३ या संसाररूपी वृक्ष साहब को ज्ञानरूप फल नहीं फूलै और साहब को भक्तिरूप फल नहीं लगै है या संसार के बाहर भये ते होय है और रातिदिन बिकाररूप पानी चुवैहै ॥ ४ ॥

कहकबीरकछुअछलोनजहिया।हरिबिरवाप्रतिपालतताहिया ५

सो कबीरजी कहै हैं कि जहां हरि परमपुरुष श्रीरामचन्द्र जाके अन्तःकरण में भागवतधर्मरूपी बिरवनकी बाग़ प्रतिपालै हैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छो नहीं है ब्यंग यह है कि माली जो होइहै सो कांटावाला पेड़निष्काम अलग कै देइहै इहां हरि संसाररूपी बिरवा अलग कैदेइ है भागवतधर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी रेखता में कह्यो ॥ धर्म की बाग़ फुलवारि फूलीरही शीलसंतोष बहुतकसोहाई। भक्तिका फूल कोउसंतमाथेधरै,ज्ञानमतभेदसतगुरुलखाई ॥ बिबेक बिचारसोइबाग़देखनचले, प्रेमफलपाइटोरैचखाई। पराहै स्वाद जब और भावै नहीं, तजैगाप्राण की बहवई ॥ ५ ॥

इति पचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवां शब्द ॥ ५१ ॥

बुझबुझपंडितमनचितलाय। कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १ खनउबैखनडुबैखनअवगाह। रतननमिलैपावनाहिं थाह २ नदिया नाहिंसरसबहैनीर। मच्छनमरैकेवटरहैतीर ३ कह कबीर यह मन को धोखा। बैठारहैचलाचहचोखा ॥ ४ ॥

बुझबुझपण्डितमनचितलाय।कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १

हे पण्डित! सारासारके बिचार करनवाले तेतो विवेक कहावैं हैं चित्तलगाइकै यह मनको बूझि तौ कबहूं भरलकहे कबहूं तौ तैं

आपनेको मानिलेइहै कि मैंहीं ब्रह्म हौं आनन्दते भरिजाय है औ कबहूं वह ज्ञान बहिजाय है तब सुखाइजाइहै अर्थात् वह आनन्द नहीं रहिजाइहै ॥ १ ॥

खनउबैखनडुबैखनअवगाह।रतननमिलैपाव नहिंथाह २
नदियानाहिंसरसबहैनीर। मच्छ न मरै केवट रहै तीर३

तब क्षण में संसार ते मन ऊबि उठैहै कहे वैराग्य ह्वै आवै है और च्चण में वही मनरूपी नदी हिलै है बूड़िजाय है अर्थात् संसार के विषय में बूड़िजाय है और च्चण में अवगाह्र है कहे नाना मत में बिचार करैहै कि संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदी की थाह नहीं पावै है तेहिते रत्न जो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है बिचारही करत रहिजाय है २ सो मनरूपी नदिया है नहीं जो तैं बिचार करै तू तो मनके बाहरहै परन्तु सरसनीर सङ्कल्पबनै है अब मच्छ को मारनवालो केवट ज्ञान तीर में बनै है परन्तु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरै हैं ॥ ३ ॥

कहकबीर यहमनकाधोखा। बैठा रहै चलाचहचोखा ४

सो कबीरजी कहै हैं कि नानामत में परिकै संसार छूटिबे को नहीं उपाय करौहौ व चोखे कहे नीके चला चाहौ हो परन्तु हौ बैठे कहे साहब के मिलिबे को उपाय ये एकऊ नहीं हैं काहेते कि पश्चिम को ग्राम नगीचऊ होइ और तहां जाइबो चाहै व जस जस पूर्ब को मेहनत करिकै मंज़िलकरै तौ तस तस दूरिही परतु जाइहै यह संसार मनको धोखा मिथ्या है सो मनते भिन्न ह्वैकै साहब में लगै तबहीं साहब मिलैंगे ॥ ४ ॥

इति इक्यावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवां शब्द ॥ ५२ ॥

बूझिलीजै ब्रह्मज्ञानी। घोरि घोरि बर्षा बरषावै, परियाबुन्द न पानी १ चींटीकेपगहस्तीबांधे, छेरीबीगैखायो। उदधिमाहँते

निकासिछांछरी, चौड़ेगेहकरायो २ मेढुकसर्परहैयकसंगे, बिल्लीश्वान बियाही। नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अदभुत कथो न जाही ३ संशयमिरगातनबनघेरे, पारथबानामेलै। सायरजरैसकलबनडाहै, मच्छअहेराखेलै ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै। बिनु पंखे उड़िजाहिअकाशै, जीवहि मरण न सूझै॥ ५॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी॥

घोरि घोरि बर्षा बरषावै, परिया बुन्द न पानी १

हे ब्रह्मज्ञानी! आप बूझिये तौ घोरि घोरि कहे नये नये ग्रन्थन को बनाइकै कहे माया ब्रह्म जीव एकैमें मिलाइडार्यो कि एक ही ब्रह्म है वही बाणी शिष्यनके श्रवण में बर्षा ऐसो बर्षावो हौ परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानी को बुन्दहू न उनके पर्यो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल ह्वैरह्यो है॥ १॥

चींटी के पग हस्ती बाँधे, छेरी बीगै खायो॥
उदधिमाहँ ते निकसि छांछरी, चौड़े गेह करायो २

चींटी कहिये बुद्धि को काहेते कि सूक्ष्म होइ है कुशाग्रवर्ती शास्त्र में कहै हैं ताके पाइँ में मतङ्गरूप जो मन है ताको बांधि दियो मन बड़ा है व दुर्वारमत है याते हाथी कह्यो तब छेरी जो है माया सो बीगा जो है जीव ताको खाइलियो जीवको बीगा काहेते कह्यो कि जो जीव आपनेस्वरूप को जानै तौ छेरी जो है माया ताको नाशकैदेइ सो छेरी मायही बीगा जीवको आपने पेट में डारिलियो अरु छेरी माया को कहै हैं तामें प्रमाण "अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णाम्" इत्यादि सो लोक प्रकाश जो उदधि तहां ते निकारिकै चौड़ी छांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर माया ते बनवायो अर्थात् संसारी ह्वै गयो॥ २॥

मेढुक सर्प रहै इकसंगे, बिल्ली श्वान बियाही॥

नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अदभुत कथो न जाही ३

वह कैसो संसार है जहां मेढुकजीव और सर्प काल एकैसंग रहै हैं नाना शरीरन को काल खात जाइ है पुनि पुनि शरीर होत जाइ है अरु बिल्ली जो है मानसीवृत्ति सो श्वान भवानन्द ताको विवाही गई अर्थात् वाही में लगिगई वृत्तिको बिल्ली काहेते कह्यो कि बिल्ली जहां गोरस देखैहै तहैं जाइहै और यह वृत्ति जो है सोऊ जहैं रस जो है सुख सो देखै है तहैं जाइहै सो श्वान भवानन्द में बहुत सुख देख्यो याते वाही को विवाही गई तब नित उठिकै सिंह जो ज्ञान सो सियार अज्ञान ते मारो जाइ है जो कह्यो ज्ञान तो अज्ञान को नाश करनवारो है अज्ञान ते ज्ञान कैसे नाश होइ है सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि हम ब्रह्म हैं सो अद्भुत है कहिबे लायक नहीं है नेति कहै हैं अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराण में नहीं कह्यो कि फलानो जीव ब्रह्म ह्वैगयो याही ते मूलाज्ञान में ठहराये हैं ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बनडाहै, मच्छ अहेरा खेलै ४

येई दुइतुक अधिकसे जानेपरैहैं परन्तु पोथी में लिखो लख्यो अर्थ करिदियो सो शरीरवनको संशय जो मिरगा है सो घेरे है व पारथ जे हैं गुरुवालोग ते संशयरूपी मृगा के मारिबे को बाण जो है नाना प्रकार को उपदेशरूप वाणी ताको मेलैहैं सो उनको वाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै कहा है सो कहैं हैं सायर जो है विवेकसागर सो जरिजाइहै व नाना शरीर जे वनहैं ते लाइ देइहैं अर्थात् गुरुवनकी वाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवन को उपदेश कियो तब उनको सबको साहब को विवेक जरिजरि गयो और और में लागिगये विवेक करिकै साहब को ज्ञान जो ह्वैबे को रहै सो न भयो तब संसारसमुद्र में मच्छ जो है काल सो अहेर खेलै है अर्थात् जीवनको खाइ है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै॥
बिन पंखे उड़ि जाहि अकाशै, जीवहि मरण न सूझै ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह संसार अद्भुत है और ब्रह्म अद्भुत है इन दूनों को ज्ञान जिनको है कि ये धोखा है ऐसो कोहै अर्थात् कोई नहीं है परन्तु जो कोई बिरला बूझनवारो होइ और मन माया ये दोनों धोखा हैं येई तहँ उड़ै हैं नाना पदार्थन को स्मरण होइ है नानायोनि पावै है संसार में तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही को हेरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़ि कहे निकसिकै साहब के यहां पहुँचै जाइ जो कहो विना पखना कैसे उड़िजाय सो यहां उपासना दुइ प्रकार की हैं एक बांदरकैसो बच्चा भजन करै है कि बांदर को बच्चा अपनी माता को आपही धरे रहैहै सो यह जीव नाना प्रकार केशास्त्रादिकनते विचार करिकै व असांच मत खण्डन करिकै आपही अपने साहब को धरे रहै है भ्रम में नहीं परै है और दूसरी उपासना बिलारी के बच्चा कीसी है बिलारी को बच्चा और सबकी आशा तोरे माता की आशा किये रहै है सो वह बिलारी अपने बच्चाको जहां सुपास देखै है तहां आपही उठाइ लैजाइ है तैसे यह जीव वेदशास्त्र को छोड़ि कै न काहूके मत के खण्डन करिबे को सामर्थ्य है न अपने मत के मण्डन करिबे की सामर्थ्य है साहब को जानै है कि मैं साहब का हौं दूसरो मत सुनतही नहीं है सो जब सब पक्ष को छोड़िकै साहब को हेरह्यो तब याको साहबही हंसस्वरूप दैकै अपने लोक को उठाइ लैजाइहै ॥ ५ ॥

इति बावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५२ ॥

अथ तिरपनवां शब्द ॥ ५३ ॥

गुरुमुख ॥ वह बिरवा चीन्है जो कोई। जरामरणरहितै तन होई १ बिरवा एक सकलसंसारा। पेड़ एक फूटल तिनडारा २ मध्यके डारि चारि फललागा। शाखापत्रगनतकोबागा ३ बेलि एक

त्रिभुवन लपटानी । बांधेतेछूटिहिनहिंपानी ४ कहकबीरहमजात पुकारा । पण्डित होय सो करै बिचारा ॥ ५ ॥

वहबिरवा चीन्है जो कोई । जरामरण रहितै तन होई १

जो बिरवा को आगे वर्णनकरै हैं ताको जो कोई चीन्है व असार मानि लेइ व सार जो साहब हैं तिनको जानै सो पार्षद स्वरूप ह्वैजाइ व जन्म मरण ते रहित ह्वैजाइ ॥ १ ॥

बिरवा एक सकल संसारा । पेड़ एक फूटल तिन डारा २
मध्यकेडारचारिफललागा । शाखापत्र गनतकोबागा ३

सो एक बिरवा सब संसार है तौने बिरवा को पेड़ कहे मूल बिराट् पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा—विष्णु—महेश तीनि डार फूटयोहै २ सो मध्यकी डार जे विष्णु हैं तिनमें अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये चारि फल लागत भये चारिफल के देवैया विष्णु हैं सो जो कोई विष्णु का उपासक होइ सो चारों फलको पावै है डारन जो डरैया कहै हैं ते शाखा कहावै हैं सो ब्रह्मा—विष्णु—महेश जे तीनि डारै हैं तिनते नाना देव नाना मत भये तेई शाखा हैं तिनको को गनत बागा है अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो व सतोगुणी, रजोगुणी व तमोगुणी जे नाना बासना होत भई तेई पत्र हैं॥३॥

बेलिएक त्रिभुवन लपटानी । बाँधेतेछूटिहिनाहिं पानी ४
कहकबीर हमजातपुकारा । पण्डितहोयसोकरै बिचारा५

वृक्ष में बेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्ष में आशारूपी बेलि लपटि गई है तामें बाँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ४ साहब कहैहैं कि हे कबीर ! कहेजीव, ताको संसार जातमें हम पुकारा है राम नाम को सो पण्डित होई तौ विचार करिलेई अर्थात् असार जो राम नाम में जगतूमुख अर्थ ताको छांड़ि राम में सार जो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पास आवै ॥ ५ ॥

इति तिरपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५३ ॥

साईंको संग बन है यह जो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनै है वह अहंब्रह्म को बिचार मिटिगयो ॥ ३ ॥

भयो बिवाह चलीबिनुदूलह, बाटजातसमधीसमुझाई ॥
कह कबीर हम गौने जैबे, तरब कन्तलै तूर बजाई ४

सो इसतरहते बिवाह भयो कहे इसतरहते संसारी भयो और पुनि बिन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्ति ह्वैकै चित्शक्ति जीव साहब के पास जाइबेकी गैललियो सो वह बाट जातमें समधी जो है शुद्ध समष्टिजीव सो याको समुझावत भयो कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध हो अर्थात् जब जीव साहब के लोक प्रकाशको बाधिकै साहब के लोकको चल्यो तब यह समुझत भयो कि जैसे ये शुद्ध रहे हैं तैसे हमहूं शुद्ध रहे हैं यह बीचही में धोखा भयो है उनको देखिकै यह ज्ञान भयो यही उनको समुझाइबो है यही समुझबोहै सो कबीर जो है काया को बीर जीव सो कहैहै कि मन वचन के परे जो साहब के ऊपर दूसरो साहब नहीं है जासों हमारो बिवाह ह्वैबो नहीं है वह हमारो सदा को कन्तहै तहां हम गवने जाइ हैं अर्थात् तहां को हम गवन करेंगे अरु वाही कन्त को लैकै कहे पाइकै तरिजाब और कन्त को लैकै न तरैंगे व तहैं परम मुक्तिरूपी तूर बजावैंगे अर्थात् और ईश्वरन में लागे व आपने को ब्रह्ममाने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार व सब उपासना और ब्रह्म ह्वैजाइबो ये सब तूरिकै साहब के पास जाइकै अर्थात् डङ्कादैकै जाइगो ॥ ४ ॥

इति चौवनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५४ ॥

अथ पचपनवां शब्द ॥ ५५ ॥

नलको ढाढ़स देखो आई। कछु अकथ कथा है भाई १ सिंह शार्दुल यकहर जोतिनि, सीकस बोइनि धाना। बनकी भलुइया चाखुरफेरै, छागरभयेकिसाना २ कागा कपरा धोवन लागे, बकुल।

किरैं दांता । माछी मूड़ मुड़ावनलागी, हमहूं जाब बराता ३ छेरी बाघहि ब्याह होतहै, मङ्गलगावैं गाई । बनके रोझधैदाइज दीन्हो, गोह लोकंदै जाई ४ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै । सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

जिनको सद्गुरु मिले तिनको या भांति उद्धार ह्वैगयो व जिनको सद्गुरु नहीं मिले जे सद्गुरु को नहीं मान्यो तिनको गुरुवालोग और और मत में लगाइ देइ हैं वे साहब को नहीं जानैहैं सो कबीरजी कहैहैं ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई १

साहब कहतेहैं कि हे भाई, हे सन्तो ! ढाढ़स देखो यह जीव मेरो अंश है सो मोको नहीं जानैहै और और में लागिकै खराब होइहै नाना दुःख सहैहै मोको जानिकै दुःख नहीं त्याग करैहै बड़ो ढाढ़सी है सो हे भाइउ ! ढाढ़स करिकै जौनेके लिये जामें यह लागैहै सो ब्रह्म अकथ कथाहै कहिबे लायक नहीं है वह ब्रह्म विचार झूठा है वहां कछू प्राप्ति नहींहै सो अकथकथा कहैहैं॥१॥

सिंह शार्दुल यकहरजोतिनि, सीकस बोइनि धाना ॥
बनकी भलुइया चाखुर फेरै, छागर भये किसाना २

यहां सिंह जो है जीव शार्दूल जो है मन येई दोऊ बैल हैं कर्म जो है सोई हर संसार सीकस भूमि है कहे ऊसर भूमि है अजा कहावै है माया सोई छेरी ताको पति बोकरा है सो छागर कहावै तेई माया में लपटे किसान गुरुवालोग सो जोतिकै उपदेशरूप धान बोवत भये व तौने नवानावके जे भलुइया कहे भुलावनहारे पण्डित तेई चाखुर फेरै कहे निरावै हैं अर्थात् ताते वृत्ति करिकै वेद जो साहब को बतावै है ताको अर्थ फेरिडारैहै॥ २॥

कागा कपरा धोवन लागे, बकुला किरैं दांता ॥
माछी मूड़ मुड़ावन लागी, हमहूं जाब बराता ३

नाना पाखण्ड मतमें परे ऐसे जेहैं मलिन पाखण्डी जीव तेई

काग हैं ते कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करैहैं कि हमारे मतमें आवो तो हम तुम्हारो अन्तःकरण शुद्धकरिदेइँ व रूपक पक्षमें जब बरात जाइहै तब सबुनीकरिके लोगजाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो अरु जिनके अन्तःकरणरूपी धोवनको वे उपदेश कियो तेई बकुलाभये कहे ऊपर ते तो वेष बनाये चन्दन टोपीदिये हैं और अन्तःकरण मलीन है विषय में चित्त लगाये रहैहैं जहां कोई सन्तमत कहन लगैहै ताको खण्डन करिडारे हैं दांत किररैं हैं कहे कोप करै हैं जैसे बकुला ऊपरते तो स्वच्छ है और नदी के तीर मछरी खाइबे को बैठ है भीतर बासना मलीन भरी है हंस आवै है तिनको डेरवाय कै बैठन नहीं देइ है दांत किरैंहै तैसे बरात जब चलैहै तब कारिंदा कामकाजी सफ़ेद कपरा पहिरि दांत किररैं हैं कि यह काम करो वह काम करो कहां बैठे हो यह रिस करै हैं व माछी कहे जो माया ते क्षीण ह्वैबेको बिचार करै हैं ते माछी कहवावै हैं अर्थात् मुमुक्षु ते नाना मतके जे गुरुवालोग हैं तिनके यहां मूड़ मुड़ावै हैं कि हमहूं बरातजाब कहे हमहूं मुक्ति होब सो वहां मुक्ति तो पायो नामहि पररूपी मीठी बाणी में परिकै आपने को ब्रह्म मानतभये तेहिते स्वस्वरूप को ज्ञान न रहिगयो माया में फाँसि गये और रूपकपक्षमें दुलहा के संगती जे हैं ते बार बनवावै हैं ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होत है, मङ्गल गावै गाई ॥
बनके रोझधै दाइज दीन्हो, गोह लोकन्दै जाई ४

अब ब्याह को रूपक कहै हैं गुरुवालोग जेहैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करनवारे ते छेरी जो है माया ताको और बाघ जो है जीव ताको ब्याह होतहै अर्थात् जीवको माया में डारि देइहैं और छेरी जो है माया ताको बाघ जो है जीव सो खाइलेनवारो है अर्थात् जो जीव आपने स्वरूप को जानै तौ माया को नाशकरिदेइ अरु तहां गायरूपी जो गायत्री है सो मङ्गल गावै है अर्थात् सब जीव को कर्तव्य गायत्री गावै है वेद गायत्री ते कह्यो है और बन कहे

बाणीको रोझ जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हों यहां रोझको प्रणव काहेते कह्यो कि रोझ गवय कहावै हैं काहेते कि गोकी सदृश होइ है सो गैया जो है गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवही ते निकसी है प्रणव ब्रह्म है ताको दाइज दीन्हों कहे ब्रह्म मैंही हौं यह प्रणव को अर्थ समझाइ दीन्हों कन्या के साथ जो डोलहाई जाइ हैं ते लोकन्दी कहावै हैं सो यह लोकोक्ति है मिथिलाकैनी कहे हैं सो गोह जो है सो लोकन्दे जाइ है कहें डोलाके साथ जाइहै कहां गोह कहे गो जो इन्द्रिय हैं जब जीव माया में लपटै तब और चञ्चल ह्वैजाइ है नाना शरीररूप डोला में चढ़ा जीव ताही के साथ साथ जाइहै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै ॥
सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै ५

सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे सन्तो! तुम सुनो इस पद में जे भ्रम बर्णन कियो तिनको छोड़िकै यह पद को अर्थ सांच जो साहब ताको जानै असांच को छोड़ै सोई पण्डितहै सोई ज्ञाता है सोई भक्तहै ॥ ५ ॥

इति पचपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५५ ॥

श्रीकबीरजी साहब की उक्ति में कहेहैं गुरुमुख ॥

अथ छप्पनवाँ शब्द ॥ ५६ ॥

नलको नहिं परतीति हमारी। झूठे बनिज कियो झूठेसन, पूंजी सबै मिलिहारी १ षटदर्शन मिलि पन्थ चलायो, तिरदेवा अधिकारी। राजादेश बड़ो परपंची, रइअतरहत उजारी २ इतते उत औ उतते इतरहु, यमकी सांटसवारी। ज्यों कपिडोर बांधि बाजीगर, अपनेखुशी परारी ३ यहैपेठउत्पत्ति प्रलय को, बिषया सबै बिकारी। जैसे श्वानअपावनराजी, त्योंलागी संसारी ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, मानो बचन हमारो। अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों, जो घटसुरति सँभारो ॥ ५ ॥

नल को नहिं परतीति हमारी ॥

झूठे बनिज कियो झूठे सन, पूंजी सबै मिलि हारी १

सबते गुरु परमपरपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकहै हैं कि नरको हमारी परतीति नहीं है सबलोग झूठेसों झूठो बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्ममें जे लगावै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं सौदागर तिनसों झूठी बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्ममें लगावै हैं ऐसे जे गुरुवालोगहैं सौदागर तिनसों झूठी बनिज करतभये अर्थात् जो वे उपदेश कियों कि तुमहीं ब्रह्महौ सो झूठा है तासों बनिजकरिकै पूंजी सब हारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलिगयो कौन ज्ञान भूलिगये कि यह आत्मा तो मेरो सदाको दास है बद्धहु में मुक्तहूमें है तामें प्रमाण "दासभूताःस्वतःसर्वेह्यात्मनःपरमात्मनः। नान्यथा लक्षणन्तेषां बंधे मोक्षे तथैवच" (इति पद्मपुराणे) जो कहौ भुलवाइकौन दियो ॥ १ ॥

षट दर्शन मिलि पंथ चलायो, तिरदेवा अधिकारी ॥
राजा देश बड़ो परपंची, रइअत रहत उजारी २

औ षट्दर्शन जे हैं ते मिलिकै नानापंथ चलावतभयो कोई योगीह्वैकै योगधारण करनलग्यो औ कोई अनुभव कथिकै शून्य ज्ञान पंथ चलायो अरु कोई नाना प्रकार के कर्म करने लगे औ कोई नाना उपासना करने लाग्यो औ कोई मैं ब्रह्महौं यह कहने लग्यो औ कोई कर्त्ता न्यारा है यह कहने लग्यो औ कोई मत छोड़िकै आत्मामें स्थितभयो या ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा विष्णु महेश अधिकारी हैं ते सब मतनके अधिष्ठाताहैं या हेतुते सत रज तमते कोई नहीं छूट्यो औ ओई राजा जे हैं ब्रह्मा विष्णु महेश औ उनको देश जो है सत रज तम सो बड़ो परपञ्ची है याहीते रइअत जे सब जीव हैं तिनके अन्तःकरण उजारि रहे हैं मोर जो है भक्ति मोरे जो हैं ज्ञान जो उनको अन्तःकरण में नहीं होन पावे है ॥ २ ॥

इतते उतरहु उतते इतरहु, यम की सांटसँवारी ॥

ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर, अपने खुशी परारी ३

मोहिते इतउत कहे कहूं स्वर्ग जाइ है कहूं नरक जाइ है कहूं आपने उपास्यदेवतनके लोकजाइ फिरि इहां आयके उनहींकी उपासना करैहै औ पुनि जब उपासना भूले तब पुनि पापकरिकै नरक जाइहैं तिनके वास्ते यमकी सांटसँवारी कहे यमके दंडते नहीं बचैहै जौने कपि कहे बाँदर को बाजीगर आपनी डोरी ते बांधे है औ वह बांदर बाजीगरके बश ह्वैगयो तब अपनी खुशी ते वाके बंधन में परो रहै हैं नानानाच नाचैहै प्रथम चित्शक्ति में जगत् को कारणरूप बनो रह्यो ताते याही भांति सब जीव माया ब्रह्मके बश ह्वैगये तब वहो बंधन में अपनी खुशी ते परे रहै हैं वही ब्रह्मको ज्ञान करैहैं मोको नहीं जानैहैं ॥ ३ ॥

यहैपेठ उत्पत्ति प्रलय को, बिषया सबै बिकारी ॥
जैसे श्वान अपावन राजी, त्यों लागी संसारी ४

यहै मायाब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै अरु संसारमें जे संपूर्ण बिषयहैं तेई बिकारहैं याते मोहिते व्यतिरिक्त जे पदार्थ संसारमें ज्ञान योग वैराग्य भक्ति आदिक जेहैं ते सब बिषयहैं या हेतु ते कि जामें जामें मन लगैहै ते तब मनकी बिषयहैं ते सब बिकारई हैं औ जो यहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको सौदा सबै बिकारी ऐसो पाठ होइ तौ यह अर्थ पेठ नाउँ हाटको यह देशभाषा है सो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनके उत्पत्ति प्रलय को माया ब्रह्म दोनों तरफ की पेठ कहे बजारैंहै सो यह जगत् शहर है बिषयरूपी सौदा जो है ताके संसारी जीव लगनवारे हैं सो जैसे श्वान कुत्ता सो अपावन जो हाड़ है ताको चाटैहै तब वोहीके दांतते लोहू निकसैहै सो हाड़ में लगैहै सोऊ चाटतै जाय है वही में राजी रहै है तैसे यह आत्मा अपने भ्रममें परा है वहीको भ्रम नाना बिषय में सुखरूप देखो परै है सो बिषय तो जड़ है बिषय में सुख नहीं है याहीको सुख बिषयन में जाइरहैहै आपने सुख बिषयमें पावैहै अरु मानै

यह है याही को सुख बिषयन में जाइ रहैहै आपनो सुख बिषय में पावै है अरु मानै है कि मैं बिषय को सुख पाऊं हौं अरु वह ब्रह्म को अनुभव कियो तहां वाके आरमै को सुख मिलै है जानै यहहै कि मोको ब्रह्मानन्द भयो है काहेते कि जबभर अहंब्रह्म बुद्धिरहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइहै जब सबको निराकरण ह्वै गयो एक आत्माही को ज्ञान रहिगयो सो ब्रह्मानन्दरूप होइ है तेहिते वह ब्रह्मानन्द आत्माही को आनन्दहै सो जैसे श्वान आपने ही लोहू के स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यहौ आपनो सुख बिषय ब्रह्म में पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लागिरह्यो है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, मानो बचन हमारो ॥
अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारो ५

सो हे कबीर, कायाके बीर जीवो ! हम तुमसों यह अद्भुत ज्ञान कहैहैं हमारो वचन मानौ जो अपने घट में सुरति सँभारो और वह सुरति मोमें लगावो तो अबहूं कहे माया ब्रह्म में तुम परेहौ ताहू पर तुमको मैं कालते छोड़ाय लेउँ अथवा अजहूं को भाव यहहै कि कालकी डाढ़ में तुम परिचुके हौ सो कालते तुम को छोड़ाइ लेउँगो ॥ ५ ॥

इति छप्पनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवां शब्द ॥ ५७ ॥

नाहरिभजै न आदतछूटी । शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं, अंधरेभये हियो की फूटी १ पानीमाहँ पषानकी रेखा, ठोंकत उठैभभूका । सहसघड़ानितहो जलढारै, फिरि सूखेका सूका २ सेतेसेतेसेत अङ्गभो, शयनबढ़ीअधिकाई । जोसानिपातरोगिअहिमारै, सोसाधुन सिधिपाई ३ अनहदकहत कहतजगबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी । निकट पयानायमपुरधावै, बोलहिएकहिबानी ४ सतगुरुमिलेबहुत सुखलहिया, सतगुरुशब्दसुधारै । कहकबीरसो सदासुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ॥ ५ ॥

नाहरि भजै न आदत छूटी ॥
शब्दै समुझि सुधारत नाहीं, अँधरेभयेहियोकीफूटी १

ना तैं हरि भजैहै अरु ना तेरी आवागमनकी आदत कहे स्वभाव छूट्यो यह अर्थ साहब के कहे शब्दको सुनिकै व बिचारिकै जो आपनो नहीं सुधारै है सो काहे नहीं सुधारै है काहेते कि साहब कहतई जाइहै कि जो मोको अबहू जीव जानै तो कालते छोड़ाय लेउँ ताते आंधर भये हियो की तिहारी फूटि गई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुँची इन्द्रियन जवाब दियो तामें प्रमाण "नेह गये नैना गये, गये दांत औ कान । प्राण छँरीदा रहिगये, तेऊ कहतहैं जान" अबहूँतौ जानौ भजन करिकै छूटिजाउ ॥ १ ॥

पानीमाहँ पषान की रेखा, ठोंकत उठै भभूका ॥
सहसघड़ा नितही जल ढारै, फिरि सूखेका सूका २

हे जीवौ! तुम बड़े जड़ हौ जैसे पानी में पाषाण की रेखा कहे छोटी शर्बती पथरी डारिराखै तो और भभूका आगी को उठन लगैहै चकमक में ठोंकेते तैसे जस जस साधुलोग उपदेश करत जाइ हैं तस तस साहब को भजन तौ नहीं करौहौ व काम क्रोध आदिक जे आगी हैं ते तुम को जोर करत जाइ हैं अर्थात् जब उपदेश करन लगै है तब अधिक रिस करनलगैहौ जैसे पाषाणमें नित हजारन घड़ा जल डारै पै पाषाण भीतर सूखे रहै है तैसे केतऊ ज्ञान उपदेशकरै परन्तु हे जीवो! तुमजड़के जड़ही बनेरहौहौ॥ २॥

सेते सेते सेत अङ्गभो, शयन बढ़ी अधिकाई ॥
जो सनिपात रोगिअहि मारै, सो साधुन सिधिपाई ३

सेत सेत जो ब्रह्म है तामें लगे लगे तुम भीतर बाहर सफ़ेद ह्वै गये अर्थात् बुढ़ायंगये ऊपरौके रोमाबुढ़ायगये ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनो स्वरूप भूलिगयो तब शयन में कहे सोवन में अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे अपनी आत्मा को ज्ञान व साहब को ज्ञान व जगत् भूलिगयो

पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरी दशा ह्वैगई सोई लक्षणसान्निपातमें होइ है सो तोको सान्निपात भयो है सान्निपातरोग याको मारै है व उनको आत्माको ज्ञानभूलिजाइहै ब्रह्म ह्वैबो साधुलोग सिद्धि पाई हैं कि हम सिद्ध हैं यह मानि लेइहो आत्मा को ब्रह्म ह्वैबो असिद्ध है सो आगे कहै हैं सीते सीते पाठ होइ तौ ज्ञान करत करत कि संसारताप हमारो छूटिजाइ शीत अङ्ग ह्वैगये वहे सान्निपात की अधिकाई तुम्हारे अङ्ग में बाढ़िआई अर्थात् सन्निपात्त में खबरि देह की भूलिजाइ है व रोगियन को मारै है सोई साधुलोग सिद्धि पाई हैं कि हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्ध ह्वैगये ॥ ३ ॥

अनहद कहत कहत जगबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै, बोलहि एकहि बानी ४

वह जो ब्रह्म है ताकी हद नहीं है ताको अनहद कहत कहत कहे नेति नेति कहत २ संसार बिनाशिगयो अनहद जो ब्रह्म है तामें सृष्टि के सबलोग समाइगये और सृष्टि में वह अनहदब्रह्म समाइगयो सो मानत तो यह है कि सब ब्रह्महो में समाइहै कहे ब्रह्मै ह्वै जाइ है परन्तु निकट पयाना यमपुरही को धाइबो है अर्थात् आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म नहीं होइ है यमपुरही को चलेजायँ हैं तेऊ एकही बाणी बोलै हैं कि एक ब्रह्म ही है दूसरा नहीं है तामें धुनि यह है कि अरे मूढ़ ! एक तो ब्रह्म है नरकै कौन जाय है ॥ ४ ॥

सतगुरु मिले बहुतसुख लहिया, सतगुरु शब्द सुधारै ॥
कह कबीर सो सदा सुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ५

हे जीवौ ! तुमको सतगुरु मिलें तो वे रामनामरूपी पद म साहबमुख अर्थ बताइदेइँ तौनेको जो तुम बिचारौ तौ बहुत सुख पावौ श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थ अर्थ बताइकै गुरुवा लोगन बिगारिडारयो है ते शब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थ

अर्थ खण्डन करिकै वे वेदशास्त्रादिकन के शब्द के तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहबमुख अर्थ बताइदेइहैं सो जो वा शब्द जो रामनाम ताको जगत्मुख अर्थ बताइ देइ है सो जो कोई रामनामरूपी पद में साहब मुख अर्थ बिचारै सो सदा सुखी रहै है ॥ ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥ ५८ ॥

नरहरलागीदवबिकाराबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा। मैं जानोंतोहींतेब्यापै, जरतसकलसंसारा १ पानीमाहँअगिनिको अंकुर, मिलनबुझावनपानी। एकनजरैजरैनौनारी, युक्ति न काहू जानी २ शहर जरै पहरूसुखसोवै, कहैकुशलघरमेरा। कुरिया जरै बस्तुनिजउबरै, बिकलरामरँगतेरा ३ कुबिजापुरुषगलेयक लागी, पूजिनमनकीसाधा। करताबिचारजन्मगोखीसा, ईतनरहल असाधा ४ जानिबूझिजोकपटकरतहै, तेहि असमंद न कोई। कहकबीरसबनारिरामकी, मोते और न कोई ॥ ५ ॥

नरहरलागीदवबिकाराबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा ॥
मैं जानों तोहीं ते ब्यापै, जरत सकल संसारा १

हे नरहर ! दवलागी कहे तेरे स्वरूपकी हरनवारी मायारूपी दवारि लगी है तैं कैसाहै बिकार बिन तौ माया मोको काहे को लगीहै तौ बिना ईंधन को बुझावनवारो तोको नहीं मिल्यो जो तोको समुझाइ देइ कि तैं बिनाबिकारको है जो मिलाहै सो नाना उपासना नाना मतरूप ईंधन डारनवारो मिला है साहबको ज्ञान-रूप जलडारै मायारूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानौ हौं या मायारूपी दवारि तोहींते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोहीं ते भये ताही में सब संसार जरो जाइ है ॥ १ ॥

पानीमाहँ अगिनि को अंकुर, मिलन बुझावन पानी ॥
एक न जरै जरै नौ नारी, युक्ति न काहू जानी २

सो वह मायारूपी अग्नि को अंकुर पानी में है कहे नाना वेद शास्त्रादिक बाणीमें हैं ते वेदशास्त्रादिकन के अर्थ को बदलिकै साहबको छिपाइकै मायारूपी अग्नि को प्रकटकियो और ताको औरे औरे में लगाइ दियो अर्थात् वे सब मतन को फल ब्रह्म है जाइबो बताइ दियो वह आग्नि के बुझावन को वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थ है जल सो नहीं मिलै है अथवा जे वेद शास्त्रादिकन के सांच अर्थ मुनिजनलोग बनाइ गयेहैं वशिष्ठसंहिता, शुकसंहिता, हनुमत्संहिता; अगस्त्यसंहिता, सदाशिवसंहिता, सुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ और वेदशिरोपनिषद्, विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मत के कहनवारे ते जल नहीं मिलै है सो जब वह आगि लगी तब अद्वैत करिकै बहुत समुझावै है परन्तु एक वह आत्मा नहीं जरै और साहब में जे नवधाभक्ति हैं ते नवनारीहैं ते जरै हैं सो यह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहीं होइहै और साहब को जानै तो वे नवधाभक्ति न जरैं ॥ २ ॥

शहर जरै पहरू सुख सोवै, कहै कुशल घर मेरा ॥
कुरिया जरै बस्तु निजउबरै, बिकल राम रँगतेरा ३

और शहर कहे साहब के मिलिबे के जेते ज्ञान हैं जीवात्मा के ते जरजाइ हैं और पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवै है कहे साहब के बतावनवारे सन्त नहीं दुरै हैं जे आपने बाणीरूप जल सों माया ब्रह्मरूपी आगी बतावै सोवतै रहैहै और यह कहै है कि, मैं सच्चिदानन्द हौं सो मेरो घर जो है सच्चिदानन्द सो कुशल है यह नहीं जानै है कि ये सब तो जरिहीगये सो मैंहूं जरिजाउँगो एक माया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजाइगी वही आगि में तेरी कुरिया जो है स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजाइगी अर्थात् जब 'ब्रह्मास्मि' में सुषुप्ति होयगी तब मैं सच्चिदानन्दरूप हौं यहू ज्ञान न रहिजाइगो याही ते तैं बिकल है सो यह करु जाते तेरी बस्तु जो है साहब में नवधाभक्ति सो उबरै और औरे रङ्ग में लागिबो तेरो

रङ्ग नहीं है श्रीरामचन्द्रके रङ्ग में रँगै यही तेरो रङ्ग है ॥ ३ ॥

कुबिजा पुरुष गले यकलागी, पूजि न मन की साधा ॥
करत बिचार जन्मगो खीसा, ईतन रहल असाधा ४

कुबिजा पुरुष कहे अङ्गभङ्ग पुरुष जो वह ब्रह्म है नपुंसक ताको एक मानिकै कि एक ब्रह्महो है ताके गलेमें साहब की जीवरूपा शक्ति तैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषके सङ्ग स्त्री की साध नहीं पूजै है तैसे वह ब्रह्म में लगे तुम्हारी साध नहीं पूजैहै कहे वामें आनन्द नहीं मिलैहै वही ब्रह्म को विचार करत जन्म खीस कहे वृथा जाइ है तन कहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाध रहे है कहे साहब के मिलनको सुख नहीं पावै है ॥ ४ ॥

जानि बूझि जो कपट करत है, तेहि अस मन्द न कोई ॥
कह कबीर सब नारि रामकी, मोते और न कोई ५

सो जानिबूझिकै जे लोग कपट करै हैं कहे वह धोखाब्रह्म में लगैहैं तिन ऐसो मन्द कहे मूढ़ कोई नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि जहांभर चित्शक्ति जीव हैं ते सब श्रीरामचन्द्रकी नारी हैं सो मैं जानौ हौं याते मोते और पुरुष साहबै है सो जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़ि और पुरुष करै हैं ते छिनारि हैं सो जो छिनारि हैं तिनके ऊपर संसाररूपी मार परोई चाहै तामें व्यङ्ग्य यह है कि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को पतिमानै हैं तेई माया ब्रह्माग्नि ते बचै हैं ॥ ५ ॥

इति अट्ठावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवां शब्द ॥ ५९ ॥

मायामहाठगिनिहमजानी । तिरगुणफांसलियेकरडोलै, बोलै मधुरीबानी १ केशवके कमला ह्वैबैठी, शिवके भवन भवानी । पण्डा के मूरति ह्वैबैठी, तीरथ में भइ पानी २ योगीके योगिनि ह्वैबैठी, राजाके घर रानी । काहूके हीरा ह्वैबैठी, काहूके कौड़ी कानी ३ भक्तन

के भक्तिनि ह्वैबैठी, ब्रह्माके ब्रह्मानी । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथकहानी ॥ ४ ॥

माया महाठगिनि हम जानी ॥

तिरगुण फांसालिये करडोलै, बोलै मधुरी बानी १
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी ॥
पण्डा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भइ पानी २
योगी के योगिनि ह्वै बैठी, राजा के घर रानी ॥
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी ३
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथ कहानी ४

माया महाठगिनि है हम जानी यह माया माधुरी बानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवन को बांधिलियो और सबके घर में नानारूप करिकै बैठी है केशव के कमला ह्वैके बैठी है व शिवके भवन भवानी ह्वैकै बैठीहै और पण्डाके मूरति ह्वै बैठी है व तीरथ में पानी ह्वै रही है व योगी के घर में योगिन ह्वै बैठी है व राजाके रानी ह्वै बैठी है व काहू के हीरा ह्वै बैठी है व काहूके कानी कौड़ी ह्वैकै बैठी है और ब्रह्माके ब्रह्मानी ह्वै बैठी है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो सुनो यह सब माया को चरित्र अकथ कहानी कहाँलों वर्णनकरैं यह माया सत् असत् ते विलक्षण है कहिबे लायक नहीं है अरु याको अन्त नहीं है ॥ १ । ४ ॥

इति उनसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ५९ ॥

अथ साठवां शब्द ॥ ६० ॥

मायामोहहि मोहित कीन्हा । ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा १ जीवनएसोसपना जैसो, जीवनसपनसमाना । शब्दगुरू उपदेशादियों तैं, छांड़्योपरमनिधाना २ ज्योतिहिदेखिपतंगहूलसै, पशुनाहिंपेखै

आगी। कामक्रोधनलमुगुधपरे हैं, कनककामिनीलागी ३ सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डितशास्त्र बिचारै। सतगुरुके उपदेश बिना तुम, जानिकैजीवहिमारै ४ करौ बिचार बिकारपरिहरौतरनतारनै सोई। कह कबीर भगवन्त भजनकरु, द्वितिया और न कोई॥५॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा। ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा १

पूर्व जो वर्णन करि आये सो मायाजीव को मोहित करतभई सांचमें असांचकी बुद्धि होयहै मोहको लक्षण सो यह आत्मा तो शरीरनते भिन्न सांच है ताको शरीर की बुद्धि भई कि शरीर मैं हौं मन आदिक मेरे हैं यह असांच बुद्धि भई याही ते माया में परिगयो तब याको माया मोहते मोहित करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ज्ञानरतन जो रहै कि मैं उनको अंश हौं वे बड़ेरतनहैं मैं कनी हौं अल्पज्ञ हौं परन्तु जाति उनहीं की हौं वे विभु आनन्द हैं जैसे उनमें मन आदिक नहीं हैं तैसे मैं जो उनको जानौं तौ महू मन आदिक नहीं हौं यह जीवको ज्ञान रत्नमाया हरिलीन्हो॥ १ ॥

जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना॥ शब्दगुरू उपदेश दियो तैं, छांड़्यो परम निधाना २

यह जीवन ऐसो है स्वप्न है यह शरीरते दूसरे शरीर में गयो तब यह शरीर स्वप्न ह्वैगयो और वह जीव स्वप्न जे सम्पूर्ण शरीर हैं तिनमें नहीं समान्यो वह शरीर ते भिन्न है काहेते मरिबो जीबो शरीर को धर्म है सो अपने स्वरूप को नहीं जानै है स्वप्न समान जे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियो है गुरू कहे सबते गुरुपरमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते शब्द जो रामनाम ताको उपदेशदियो कि तैं मेरो है सो मेरे पास आउ सो तैंने शब्द में परमनिधान कहे तिनके रहिबेको पात्र जो साहबमुख अर्थ है ताको शब्द छोड़ि दियो औ संसारमुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो॥ २॥

ज्योतिहि देखि पतङ्ग हूलसै, पशु नहिं पेखै आगी॥

काम क्रोध नल मुगुध परे हैं, कनककामिनी लागी ३

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतङ्ग हूलसै कहे ज्योति में मिलिबेको जाय है परन्तु वहै पशु जो है अज्ञानी पतङ्ग सो नहीं देखै है कि या आगी है यामें जरिजैहैं सो वही धसिकै जरिजाय है तैसे काम क्रोधादिकन में जीव मुगुधपरे हैं या नहीं जानै हैं कि यामें जरिजायँगे ॥ ३ ॥

सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डित शास्त्र बिचारै ॥
सतगुरु के उपदेश बिनातुम, जानि कै जीवहि मारै ४

सो हे सय्यद, शेखौ! तुम किताब देखिकै नानाकर्म करौहौ और हे पण्डितो! तुम नाना शास्त्र पुराण पढ़िकै सुनिकै नानाकर्म करौ हौ सतगुरु को उपदेश तौ तुम लियो न असतगुरुन के पास जाइ जाइ उनहींको उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुम अपने जीव को मारौ हौ कहे जनन मरणरूप दुःख देउहौ साहब के जानन-वारे जे हैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहब को बताइदेइँ और जन्म मरण तुम्हारो छूटि जाय जानिकै आपनी आत्मा को मारौ हौ तामें प्रमाण "नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्ण-धारम्। मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा।" (इति श्रीभागवते) ॥ ४ ॥

करौ बिचार बिकार परिहरौ, तरन तारनै सोई ॥
कह कबीर भगवन्त भजन करु, द्वितिया और न कोई ५

सो विचार करौ व सम्पूर्ण जे विकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ौ तरण तारण एक पुरुषपर श्रीरामचन्द्रहीहैं श्रीकबीरजी कहै हैं कि तिनहीं को भजन करु उनते और दूसरो तेरो छोड़ावन-वारो नहीं है इहां तरण तारण दुइ कह्यो सो तरण जो है मुक्ति ह्वैवे की इच्छा ताते तारणवारो कोई नहीं है वोई हैं वही मुक्ति की इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरोपासना-दिक नाना उपासना करिकै तरन को चाहै हैं परन्तु कोई तरै

नहीं हैं जब तरनकी चाह छूटि जाइहै तब मुक्ति होइहै सो यह तरन की इच्छाते एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही तारि देइहैं अर्थात् उनहींकी दीनमुक्ति देजाइहै और की मुक्ति नहीं दीनदैजाइ है जबभर तरनकी इच्छा होइ है तबभर मुक्ति नहीं होइ है तामें प्रमाण "भुक्तिर्मुक्तिस्पृहा यावत्पिशाची हृदि वर्तते । तावद्भक्तिसुखस्पर्शः कथमभ्युदयो भवेत्" (इति भक्तिरसामृतसिन्धौ) ॥ ५ ॥

इति साठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६० ॥

अथ इकसठसवां शब्द ॥ ६१ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटै बाहर लै धरिहौ १ कायबिगुरचन अनवनिबाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी २ हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दुनोघरछाड़ै ३ कर्मफांस यमजाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहिमारा ४ रामबिनानल ह्वैहौकैसा । बाटमास गोबरौरा जैसा ५ कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घर सों जब वा घर जैहौ ॥ ६ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटै बाहर लै धरिहौ १
कायबिगुरचनअनवनिबाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी २

हे जीवो ! तुम मरिहौ तौ फिर तन लेहौ तौनेको लैकै का करिहौ का या तनते कियो है का वा तनते करिहौ जब प्राणछूटैगो तब वाहू शरीर को लैकै बाहेर धरोगे १ सो या काया जो है ताको बिगुरचन कहे छूटै में आनि आनि बाटि है कोहेउ कोई तो या काया को जारै है और कोई माटी में गाड़ैहै सो जो गाड़ै है और जारै है तिनको अब कहै हैं ॥ २ ॥

हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दूनौ घरछाड़ै ३
कर्मफांस यमजाल पसारा । ज्योंधीमरमछरीगहिमारा ४
रामबिना नल ह्वैहौ कैसा । बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५

सो हिन्दू जे हैं तेतो जारै हैं और तुरुक जे हैं ते गाड़ै हैं सोई

दूनौ घरमें जो परपञ्चहै ताको तू छाड़े ३ संसार में यमराज कर्म-फांसरूपी जाल पसारिराख्यो है जाही शरीर में जीव जायहै तहैं मारिडारै हैं जैसे धीमर जौनेडावरमें मछरी जायहै तौनेही डावरते खैंचिकै मारिडारै है तब शरीरकी नाना बांटि होइहै भस्म होयहै कीरा होय है विष्ठा होय जाय है ४ सो हे जीवो! बिना साहबके जाने तुम कैसे होउगे बाटमें जैसे गोबरौरा जोई आवै जाय सोई कचरि देइहै मरिजाय है ॥ ५ ॥

कह कबीर पाछे पछितैहौ। या घरसों जब वा घर जैहौ६

सो कबीरजी कहै हैं कि जब या घरसों वा घर जाउगे अर्थात् जब यह शरीर ते दूसरो शरीर धरौगे गर्भबास होइगो तब पछिताउगे गर्भवास में साहब की सुधि होइ है सो जब गर्भ वास को क्लेश होइगो तब कहौगे कि हे साहब! अबकी बार जो छूड़ावो तौ फिर न ऐसे काम करैंगे सो गर्भस्तुति श्रीमद्भागवतादिकन में प्रसिद्ध है तेहिते यह व्यङ्ग है कि परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो ॥ ६ ॥

इति इकसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवां शब्द ॥ ६२ ॥

माई मैं दूनौ कुल उजियारी। बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी १ सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरा परलो गारी। जारों मांग मैं तासु नारिकी, सरिवररचल हमारी २ जना पांच कोखिया में राखौं, औ राखौं दुइचारी। पार परोसिनि करों कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३ सहजे बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी। आउँ न जाउँ मरों ना जीवों, साहब मेट्यो गारी ४ एक नाम मैं निजकै गहिल्यो, तो छूटल संसारी। एक नाम मैं बदिकै लेखौं, कहै कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

माई मैं दूनों कुल उजियारी ॥
बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी १

चित्शक्ति कहै है कि हे माई कहे हे माया ! मैं दूनों कुल उजियार करनवारी हौं कहे मोहींते जीवकुल उजियार हैं जीव छःप्रकार मुक्ति मुमुक्षू विषयी बद्ध नित्यबद्ध नित्यमुक्त और ब्रह्मकुल उजियार है सब ईश्वर ब्रह्मकुलही में हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो महीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै और महीं सब जीवकी चैतन्यता हौं सो बारह खसम को नैहर में खायो ते बारह खसम कौन हैं तिनको कहै हैं अष्टप्रधान जे हैं काली, कौशिकी, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, भैरव और नवों परमपुरुष जिनके ई आठौ प्रधान कहे मन्त्री हैं इनको महातन्त्र में वर्णन है और पांच ब्रह्म आदि मङ्गलमें वर्णन करिआये हैं तिन में रेफरूप जो है सो मन्त्ररूप है और पराशक्ति है ताको शक्तिमान में अन्तरभाव है और शब्दब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता नहीं है विचार करिबे लायक है तेहिते पांचब्रह्म में तीनि ब्रह्म उपासना करिबे लायकहैं सो अष्टप्रधान और नवौं परमपुरुष और तीनि ब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समष्टि जो है सोई नैहर है जहांते व्यष्टि होइ है सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां मैं इनको खाइलियो है कहे पेट में डारिलियो है मोहिंते भिन्न नहीं है और जब मैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्म में लग्यो वहीको खसम मान्यो तब षोडश कलात्मक जो है जीव ताको खाइलियो कहे पेटमें डारिलियो ॥ १ ॥

सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरा परलोगारी ॥
जारों मांग मैं तासु नारि की, सरिवर रचल हमारी २

सासु जो है जगत्मुख सुरति ताके व मनके संयोग ते ब्रह्म को अनुभव होइ है तेहिते वह सुरति ब्रह्मकी महतारी है और ननँदि जो है विद्या माया काहे ते कि पहिले जब विद्या माया

उत्पत्ति होइहै और जब ब्रह्म को अनुभव होइहै सो सासु जो है जगत्मुख सुरति और ननँदि जो है विद्या सो ये दूनौ को संसाररूपी खटिया के पटिया जे हैं उत्पत्ति प्रलय तिनमें बांध्यो और भसुर जेठको मिथिला में कहे हैं सो भसुर जो है ब्रह्म ते जेठ विज्ञान काहे ते कि विज्ञान पहिले ह्वै लेइहै तब ब्रह्म को अनुभव होइहै याते ब्रह्म ते विज्ञान जेठ है सो मोको गारी पस्यो कहे मैं तो साहब की चित्शक्ति हौं सो मोको ब्रह्म में लगाइ दियो यही मोको गारी परी सो जगत् कारणरूपा जो वह मायारूपी नारि है तौनेकी मैं भँगुवा जारौंहौं तो आप जड़ व चित्त शुद्ध जीवको गहिकै हमारी सरिवर रच्यो है कहे जीवन को जड़को जड़ कै दियो अर्थात् साहब को ज्ञान भुलाइ दियो ते हिते जगत्मुख ह्वैकै चैतन्य मानैहै कि हम ब्रह्महैं व आपको कर्त्ता भोक्ता मानै है सो शुद्ध जीव को मिलि कै कारणरूपा साहब की अज्ञानरूप माया ही मानै है मायाही को खराब कियो शुद्धजीवहै ताकी मैं भँगुवाजारौं ॥ २ ॥

जना पांच कोखियामें राखौं, औ राखौं दुइ चारी ॥
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३

वही माया को मिलिकै जना पांच जे पांचौं इन्द्रिय हैं व पांचौं तत्त्व हैं व पांचौं शरीर हैं तिनको कोखि में राखौ हौं और दुइ जे निर्गुण सगुण हैं व चारि जे अन्तःकरण चतुष्टय हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तिनको कोखिमें राखौं हौं और पार जो है ब्रह्म अथवा मोक्ष ताके परोसी कहे बतवैया जे हैं गुरुवालोग तिनको मैं कलेवा करौंहौं कहे उनको मतखण्डन करौंहौं शुद्धबुद्धि जो महतारी है मेरी ताको संग ह्वैकै अर्थात् शुद्धबुद्धि जब मोको होइ है तब उनको सब मिथ्या मानिलेउहौं एक साहबै की ह्वैरहौंहौं ॥ ३ ॥

सहजै बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी ॥
आउँ न जाउँ मरौं ना जीवौं, साहब मेट्यो गारी ४

अब हे भाई ! तोको मैं छोड़यो मैं बपुरी गरीबिनि हौं मेरे

निकट न आउ अब मैं सहज सेजबिछायो कहे सहज समाधि मैं साहब को कियो अरु पाउँ पसारिकै सोउंहौं कहे मोको तेरी भय नहीं है यह जगत् मोको बिसरिगयो चितशक्तिमात्र रहिगई व ब्रह्म में मैं लागिरहिउँ नाना उपासना में लागिरही तिनकी मैं नहीं हौं यह गारी मोको परीरही सो साहब मेरीगारी मेट्यो कहे अपनो हंसस्वरूप मोकोदियो तौने स्वरूप ते अपनो रूप देखायो सो साहबकी मैं रहौं सो साहबकी मैं ह्वैगई न आउंहौं न जाउंहौं जो कहौ मेरी गारी साहब कैसे मिटायो ॥ ४ ॥

एक नाम मैं निजकै गहिल्यो, तौ छूटल संसारी ॥
एक नाम मैं बदिकै लेखौ, कहै कबीर पुकारी ५

व एक रामनाम को निजकै कहे आपन करिकै गहिलीन्ह्यो कि यही उद्धारकर्ता है और सब नरकही डारनवारे हैं तब यह संसार छूटिगयो यह हेतु ते कबीरजी कहै हैं कि मैं बदिकै लेखौं हौं कहे पाउं रोपिकै मानौं हौं कि यही एक रामनाम को जो बिश्वास करिकै विचार करिकै जपैगो तौ संसारते छूटिही जाइगो सो यह सबलोग सुनत जाउ मैं पुकारिकै कहौंहौं तामें प्रमाण "राम न जपौकहांभोमन्दा। रामबिनायममेलैफन्दा॥ सुतदारा को कियापसारा। अन्तकेबेरभये बटपारा॥ मायाऊपरमाया माड़ी। साथ न चलैखोबरीहाड़ी॥ जपोरामजोजियतउबारै। ठाढ़ी बांह कबीरपुकारै" ॥ ५ ॥

इति बासठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवां शब्द ॥ ६३ ॥

मैं कासों कहौं को सुनै को पतिआय। फुलवाके छुवतभवँर मरिजाय १ गगनमँडलबिच फूलयकफूला। तरभोडारउपर भो मूला २ जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ। बिनडारबिनापातफूल यकहोइ ३ फुलभलफुललमालिनि भलगूंथल। फुलवाबिनाशि

गयलभवँरनिरासल ४ कह कबीर सुनो सन्तोभाई । पण्डितजन फुलरहे लुभाई ॥ ५ ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय।फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय१

कबीरजी कहै हैं कि, मैं जासों कहौंहौं सो तो सुनतई नहीं है औ जो सन्यो तौ शङ्का कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडास्यो सांचे को स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलैहै तऊ यह कहैहै कि यह जोलहा को कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ बिचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है ये तो सब धोखामें अटके हैं मैं कासों कहौं को सुनै कौन बात कहौं हौं कि वह धोखाब्रह्म आकाशको फूल है ताके छुवत में भवँर जो है तिहारो जीवात्मा सो मरिजाय है कहे तुम नहीं रहिजाउहौ वह धोखाब्रह्मई रहिजाय है वाके आगेकी बात तुम कैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो वे जब अपनी इन्द्रिय देइँगे तब वह ब्रह्मके ऊपर की बात जानि परैगी जौन हंस-शरीरी देइ है सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्यस्वरूप ना पाइकै ब्रह्ममाया के परे मन बचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है सो मेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखा में लगै है जो धोखाते जगत् होत है कैसो होइ है कि ॥ १ ॥

गगनमँडलबिचफुलयकफूला।तरभोडारउपरभोमूला २

गगनमण्डल कहे लोकप्रकाश चैतन्याकाश में एकफूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्ममाया शबलित होत भयो अर्थात् आकाश फूल को मिथ्या कहैहैं सो वह मिथ्याही फूल भ्रमते फूलत भयो जीव को भ्रम भयो ताके अनुमानते प्रकट ह्वैजातभयो सो मूल तो वह ब्रह्म है सो ऊपर भयो और तरे वाकोडारैं फूटत भईं चौदहों लोक संसाररूप वृक्ष तैयार भयो ॥ २ ॥

जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ।बिनडारबिनापातफूलयकहोइ३

फुलभलफुलत्तमालिनिभलगूँथल।
फुलवाबिनशिगयो भवँरनिरासल ४ ॥

वह न जोति गयो न बोयगयो और न सींचिगयो बिना डार पात है ऐसो बिरवा चैतन्याकाश जो लोकप्रकाश है तामें धोखा ब्रह्मरूप फूल फूल्यो ताहीते संसाररूप बिरवा तैयार भयो ३ तब मालिनि जो माया है सो भल गूंथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नानावाणी सो खूब वर्णन करिकै वहीको आरोप करत भई तब यह जीव सब छोड़िकै वही ब्रह्म में नानावाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहाँ कुछ न पायो वह धोखही ह्वैगयो तब भवँर जो जीव सो निराश ह्वैगयो ॥ ४ ॥

कह कबीरसुनोसन्तोभाई। पण्डितजन फुलरहेलोभाई ५

श्रीकबीर जी कहै हैं कि, हे सन्तो, भाइउ! सुनो वही ब्रह्मफूल में पण्डित जन जे हैं ते लोभाय रहेहैं यह विचार नहीं करै हैं कि जगत् को तो हम मिथ्यई कहैहैं और वही ब्रह्म ते जगत् की उत्पत्ति कहैहैं सांचते सांच झूंठेते झूठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तो वासो झूठा जगत् कैसे उत्पत्ति होतो और वही ब्रह्म को निराकार अकर्ता निर्द्धर्मिक कहौहौ कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन अरु वाको निर्वस्तु कहौहौ कि वह कुछु वस्तु नहीं है देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते शून्यहै कहो तो वह धोखई रहिगयो कि कुछु वस्तु रहिगयो सो तिहारेहि बात में वह धोखा जान्यो परैहै कि कुछु नहीं है शून्यहै तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र में लागो जाते माया ब्रह्म के पार है उनहींके पास पहुंचौ जाइ और आवागमन ते रहित ह्वैजाउ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६३ ॥

अथ चौंसठवां शब्द ॥ ६४ ॥

ज़ोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैं ध्याना। ताना

तनैकोअउठालीन्हेचर्खीचारिहुबेदा सरखूंटीयकरामनरायण पूरणकामहिमाना १ भवसागरयककठवतकीन्हातामेंमाड़ीसानी माड़ीकोतनमाड़िरहोहै माड़ोबिरलाजाना । त्रिभुवननाथ जो मञ्जन लागे श्यामसुररियादीना चांदसूर्यदुइगोड़ाकीन्हो मांझ दीपकियताना २ पाईकरिकै भरनालीन्हो वे बांधैकोरामा वे ये भरितिहुंलोकै बांधै कोइनरहैउबाना । तीनलोकएककरिगह कीन्हो दिगमगकीन्होताने आदिपुरुष बैठावनबैठे कबिराज्योति समाना ॥ ३ ॥

(श्रीकबीरजी रामानन्दके शिष्यहैं सो अपनी संप्रदाय बतावै हैं)

जोलहा बीनेहु हो हरिनामा जाके सुर नर मुनि धरैं ध्याना। ताना तनैको अउठालीन्हे चर्खी चारिहुवेदा सर खूंटी यक रामनरायण पूरणकामहिमाना॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जोलहा जो मैंहौं सो हरिके नामको बिनौ हौं वे हरि कैसे हैं कि जिनको सुर नर मुनि ध्यानधरे हैं कौनी तरह ते बिनौहौं सो उपाय कहौहौं कोरिन के यहां ताना तनिबे को अउठाते नापिलेइ हैं और इहां अउठा जो शरीर है ताको साढ़ेतीनिहाथ को नापलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिङ्गशरीर है सो मनोमय है ताको मैं हरिनाम बिनिबेको धारणाकियो है नहीं तौ मैं मनके परे रह्यो हैं और कोरिन के इहां चर्खी ते सूत खींचिकै कैंड़ाकरि लेइ हैं और इहां चारो वेद जे हैं तेई चर्खी हैं तिनके तात्पर्यते आत्माको स्वरूपकी तें परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको है यह सूत जीवात्माको निकास्यो और कोरिनके इहां सर व खूंटीते तानाको पूरे हैं अरु इहां श्री इहां वैष्णव है रूप के मन्त्र पावैहै रघुनाथजी को षडक्षर और नारायण को द्व्यक्षर और अष्टाक्षर सो सर खूंटी राम और नारायण ये नाम हैं एक नाम को सर बनायो एक नाम को खूंटी बनायो इनहीं को नाम लिये हरि नामरूपी कपरा बिनिबे को मैं अधिकारी भयो यह मैं मान्यों कि

में पूरिदेहौं रामनाम दुइ खूंटी हैं नारायण नाम सर है ॥ १ ॥

भवसागर यक कठवत कीन्हो तामें माड़ीसानी । माड़ी को तन माड़िरहोहै माड़ो बिरलाजाना । त्रिभुवननाथ जो मञ्जनलागे श्याममुररियादीना चाँदसूर्यदुइगोड़ा कीन्हो मांझदीपकियताना २ ॥

कोरिनके इहां माड़ी सानी जाइहै तब एक कठौता में धरे हैं सो इहां भवसागर कठौता है और चारों शरीर माड़ी हैं तामें जीव सूत सनो है इहां साधन अवस्था में चार्यो शरीर में वह नामको भावना करिके जो जपिबो है मुमुक्षुदशा में सोई सानिबो है सो नाम उच्चारणकी बिधि कोई बिरला जानै है सो रामानुजाचार्य आपने राममन्त्रार्थ में लिख्यो है यह नाम स्मरण को शरीर धारणकियो सो जब नामस्मरण न कियो सोई शरीररूपी माड़ी याके माड़ि रह्यो है कहे लपटि रही है और कोरिनके जब वाको मांजे हैं तब माड़ीसम ह्वैजाइहै और मैल छूटि जाइहै और इहां त्रिभुवननाथ जो मन है सो रेचक, कुम्भक, पूरक जे कूचा हैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नाम को जपनलग्यो और जीव को माड़ी जो है चार्यो शरीर तिनको सम कै दियो कहे एक करि दियो और कोरिनके मांजत में जब तागा टूटि जाइहै तौनेको मुररिकै जोरिदेइहै सो मुररिया कहावैहै इहां नामके स्मरण में जब बीचपरैहै तब कहीं श्याम कहीं गोपाल कहीं कृष्ण इत्यादिक नाम लैकै धागा जोरि देइहै और कोरिनके दुइगोड़ा कहे दुइघोरियाके बीच में ताना तनै हैं और इहां चांद सूर्य जे इड़ा पिंगला तिनके बीच में दीप जो सुषुम्णा नाड़ी है ताको तानाकियो ताना वाको काहेतेकह्यो कि वह साहब के लोकते लै मूलाधारचक्रलौं रश्मिरूप तनी है जीवही सुषुम्णा नाड़ी ह्वै भक्तनको जो उतरै चढ़ै है ॥ २ ॥

पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधे को रामा वे ये भरि तिहुँलोकैबांधे कोइ न रहैउबाना । तीनलोकयककरिगह

कीन्हो दिगमगकीन्होतानै आदिपुरुष बैठावनबैठे कबिरा ज्योतिसमाना ३ ॥

कोरिन के इहां पाई साफ़ करिबेको कहे हैं और कमाठिनके बीचते सूत निकासिलेइहै सो भरना कहावैहै सो इहां चास्योशरीर झाड़ी मांजिके कहे चास्यो शरीर छोड़ायके जीवको साफ़ करिकै कहे सूक्ष्म विचारते जीवको स्वरूप निकस्यो कि रामही को औरे को नहीं है और कोरिनके राछकी जो कमटी ताके छिद्रहै सब सूत को निकासिलेइ है और दुइ सूत बांधिदेइहै सो वे कहावैहै और तीनि फेरी करिकै सूतको गांसि देइ है सो 'तिलोक' कहावैहै और उबान वह कहावै है जो बाहर सूत रहिजाइ है सो उबान न रहिगयो सो इहां दूनों कुम्भकमें राम जे दुइ वर्णहैं रकार-मकार तिनको बांधिदियो बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थँभिकै लौटैहै सो कुम्भक कहावैहै तहां रकार जपैहै तब सूर्य के प्रकाश को भावनाकरै है और जब भीतर श्वास जाइहै व थँभिके लौटै है तहां मकार जपै है तब चन्द्रमा को प्रकाश की भावना करै है 'सो जौन साधारण श्वास चलै है नासिका ते बारह आंगुर भीतर जाय है बारह आंगुर बाहर जाय है जहां जहांते थँभि थँभिके लौटैहै तहां रकार मकार को जपिकै वे आंगुरनको घटाइ बूझै दूनों कुम्भकनको घटावनलगे इस तरहते वे जो हैं श्वास ताके बांधत में जब श्वासके क्रमते घटाइकै तिहुँलोकै बांधे कहे त्रिकुटी में बांधिदेइ अर्थात् एक आंगुर भीतर जान पावै न एक आंगुर बाहर जान पावै और एक आंगुर बीच में राखै सो यहि तरह ते जो कोईकरै हैं सोई उबान नहीं रहैहै कहे संकल्प बिकल्प मिटि जाइहै जप करतमें काहेको ऊबैगो ताको रामनामही तीनों लोक देख परै है वोते बाहर नहीं देखपरै है जहां कोरी बीनन को बैठे है सो करिगह कहावै है जब कपरा बीनिचुके तब तहां तीनि घरीकरिकै कपरा धरि देइहै और ताना को दिगमग कहे जहां

तहां डारिदेइहै इहां तीनि लोक में फैली जो जीवकी वृत्ति है ताको जहां अपनेस्वरूप में, आत्मा की स्थिति है तहां कैवल्य में राख्यो तीनि आंगुर श्वासा करिकै जो स्मरणकरत रह्यो सो मन पवन को एक घरकैदियो तब संकल्प बिकल्प सब मिटिगयो यह ताना शरीरमें तन्योरह्यो ताको दिगमग कियो कहे पृथ्वीको अंश पृथ्वी में जलको अंश जलमें तेजको अंश तेजमें वायुको अंश वायुमें आकाशको अंश आकाशमें मिलाइदियो ये पंच भये और मनको बुद्धिमें बुद्धि को चित्त में चित्तको अहंकार में अहंकार को जीवात्मा में मिलाइदियो ये पांचभये ये सब ताना दशौदिशा में फैलाइदियो तब याको सुधि भूलिगई एक जीवात्मा भर रहिगयो और जब कपरा तैयार ह्वै जाइहै तब कोरीके यहां मालिक को पयादा आवै है तब पयादाके साथ मालिक के यहां कपरा कोरी लै जाइहै और यहां आदिपुरुष जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं ते बैठावनदेइ हैं कहे याको हंसस्वरूप देइहैं सोई पयादा है ताके साथ ह्वैकै कहे तामें स्थितह्वैकै कबीर जो मैं हौं सो वह जो है कैवल्यरूप ताते छूटिकै पार्षदरूप पाइकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र के लोकको प्रकाशरूप जो है ब्रह्म तौने ज्योति में समाइकै कहे वाको भेद परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के धामको गयो भाव यह है जैसे कोरीथान मालिक के नजर कैदेइ है तैसे अपने आत्मा को शुद्ध करिकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र को अरपिदीन्ह्यो जाइ ज्योतिभेदिकै साहब में समाइगयो तामें प्रमाण "तज्ज्योतिभेंदनेसक्तारसिकाहरिवेदिनः" इति ॥ और श्रीकबीरहूजी को प्रमाण "जैसे माया मन रमै तैसे रामरमाय । तारामण्डल भेदिकै तबै अमरपुरजाय" ॥ ३ ॥

इति चौंसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६४ ॥

अथ पैंसठवां शब्द ॥ ६५ ॥

योगियाफिरिगयो नगरमँझारी । जायसमानपांचजहँनारी १

गये देशान्तर कोइ न बतावै । योगिया गुफा बहुरि नहिं आवै २
जरिगो कन्थ ध्वजा गो टूटी । भजिगो दण्ड खपर गो फूटी ३
कह कबीर यह कलि है खोंटी । जो रह करवा निकसल टोंटी ॥४॥

योगियाफिरिगयोनगरमँझारी । जायसमानपांचजहँनारी १

जौने ब्रह्माण्ड में पांच नारी जे बयारि हैं नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय ई जिनमें समाइ हैं ऐसे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ते जामें समाइगयेहैं तौन जो है नगर ब्रह्माण्ड ताके मांझते योगिया जो है योगी सो फिरिजाइहै कहे फिरिफिरि ब्रह्माण्डको प्राण चढ़ाइ लैजाइहै ॥ १ ॥

गयेदेशान्तरकोइनबतावै । योगियाबहुरिगुफानहिंआवै २
जरिगोकन्थध्वजागोटूटी । भजिगो दण्ड खपरगोफूटी ३

जब वह योगी शरीर छोड़यो तब कोई नहीं बतावैहै कि कौन देशान्तर को गयो कौने लोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोकको तौ मानतै नहीं है ते हेते यही शरीर पुनि पावैहै तब वह योग की सुधि बिसरिजाइ है पुनि नहीं गुफा में आवै है कहे पुनि नहीं प्राण चढ़ावत बनैहै २ कन्थ जो है शरीररूपी गुदरी सो जरिगयो तब ध्वजा जो है पवन तौनेकी धारा टूटिगई तब मेरुदण्ड भंजित ह्वैगयो कहे टूटिगयो और खप्पर जो है ब्रह्माण्ड की खपरी सो फूटिगई ॥ ३ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोंटी । जोरहकरवानिकसलटोंटी ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह कलि बड़ो खोंटोहै अथवा यह कालि जो है झगड़ा सो बड़ो खोंट है यह कोई नहीं बिचारै है कि जब शरीरही नहीं गयो तब ब्रह्माण्ड कहां रहिगयो जहां ब्रह्माण्ड में लीनह्वैके बनो रह्यो सो यह बात ऐसी है कि जे ब्रह्माण्ड में प्राण चढ़ावै हैं तिनके जब शरीर छूटिजाय हैं तब उन के गैवगुफा सब जरिजायँ हैं तब गैवगुफारूपी करवा में जो प्राण चढ़ो रहै है सो जब दूसर शरीर धस्यो तब नासिका जो है टोंटी तहां ते वहै

पवन निकसै है वही बासना लगीरहै है तेहिते फिरि गुरुसों पूछिकै अभ्यास करनलगै है ॥ ४ ॥

इति पैंसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६५ ॥

अथ छांछठवां शब्द ॥ ६६ ॥

योगिया कि नगरी बसै मति कोइ। जो रे बसै सो योगियां होइ १ वह योगियाको उलटाज्ञाना। काराचोला नाहीं म्याना २ प्रकट सो कन्थागुप्ताधारी। तामें मूलसजीवनि भारी ३ वा योगिया की जुगुति जो बूझै। रामरमैसोत्रिभुवनसूझै ४ अमृत-बेलीक्षणक्षण पीवै। कहकबीर सो युगयुग जीवै ॥ ५ ॥

योगियाकिनगरीबसैमतिकोइ। जोरेबसै सो योगियाहोइ १

योगिया जो है योगी ताकी नगरी जो है ब्रह्माण्ड गैबगुफा तहां कोई न बसौ अर्थात् हठयोग कोई न करो काहेते कि जो कोई वह नगरी में बसैहै अर्थात् हठयोग करै है सो योगियै होइहै कहे फिरि फिरि वही बासना करिकै योगिया होइहै योग साधैहै जन्म मरण नहीं छूटै है ॥ १ ॥

वह योगियाकोउलटाज्ञाना। काराचोला नाहींम्याना २

सो वह योगी को उलटा ज्ञान है कहे उलटे पवन चढ़ावैहै अर्थात् या शरीर को वेदान्तशास्त्रमें निषेधकरै हैं कि यही शरीर ते आत्मा भिन्न है तौनेही शरीर को योगी प्रधानमानै हैं कि यही शरीर ते मुक्त ह्वै जायँगे सो इनको चोला जो है मन जौनेते शरीर पावै है और मनै गैबगुफा में समाइजाइ है नाना प्रकार के जे कुत्सितकर्म हैं तिनते मलिन ह्वैरह्यो है याते ताको काराकह्यो और म्याना छोटा को फ़ारसी में कहै हैं सो वह मन छोटा नहीं है बड़ो है सब संसार अरु चारों शरीर मन में भरा है ॥ २ ॥

प्रकट सो कन्था गुप्ताधारी। तामें मूलसजीवनि भारी ३

अरु जो बहुत योग करिकै ब्रह्माण्ड में प्राण चढ़ाइकै प्राणको

गुप्तकियो है सो प्रकटै है ते वे योगी कन्था जो है शरीर ताको धारण किये रहै हैं बहुत दिन जियै हैं ताको हेतु यह है कि मूल-सजीवनि अमृत है सो भारीकहै बहुत है सो चुवतरहै है जैसे संजीवनी औषध महाप्रलय भये नहीं रहिजाइहै सो याको वह जियावैहै सोऊ नहीं रहिजाइ है तैसे जो कोई मूड़काटि डास्यो अथवा कोई शरीर को खाइलियो तब न वह अमृत रहिजाइ न वे रहिजाइँ ॥ ३ ॥

वायोगियाकीजुगुतिजोबूझै। रामरमैसो त्रिभुवनसूझै ४
अमृतबेली क्षणक्षण पीवै । कह कबीर सो युगयुग जीवै ५

सो ये जो हैं योगी ते जुगुति करिकै जियै हैं आखिर में इनको जन्म मरण नहीं छूटै सो या योगिया को हठयोग छोड़िकै जो कोई वा योगी की जुगुति बूझै जे राजयोग करनवारे हैं सो रामरमैं तब वाको त्रिभुवन में रामई सूझिपरै ४ अरु श्रीकबीरजी कहै हैं कि अमृतबेलि जो है रामनाम ताको क्षणक्षण में पिये कहे श्वास श्वास में राम नाम स्मरण करै है सोई हनुमान् बिभीषणादिक के तरह युगयुग जियै है और जनन मरण ते रहित है जाइ है ॥ ६६ ॥

इति छाछठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सरसठवां शब्द ॥ ६७ ॥

जोपै बीजरूप भगवाना । तौपण्डितकाबूझौआना १ कहँमन कहां बुद्धिॐकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २ बिषअमृतफल फलैअनेका । बहुधाबेदकहैतरबेका ३ कहकबीरतेमैं काजानो । कोधौंछूटल को अरुझानो ॥ ४ ॥

जो आगे कहिआये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जनन मरण ते रहित होइहै सो कहै हैं ॥

जोपै बीजरूप भगवाना । तौ पण्डित का बूझौ आना १

कहँमनकहांबुद्धिॐकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २

जीव जो है रामनाम सो भगवान् है जनन मरण छोड़ाइ देबे को तौ हे पण्डित ! तुम आन आन जगत्कारण ब्रह्म, ईश्वर, प्रकृति, पुरुष काल शब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौहौ यह नामही जगतूमुख अर्थ करि जगत्कारण है १ सो रामनामै जो सबको बीज ठहस्यो तो मन को बुद्धि को प्रणवको कारण कहां रह्यो एते सत रज तम जे गुण हैं तिनके तीनि तीनि प्रकार ह्वैके जगत् कियो है प्रथम मन बुद्धि ॐकार कहां रहे कोई नहीं रहे भाव यह है कि प्रथम साहबते सुरति पाय कै रामनाम को जगतुमुख अर्थ करिकै जीव समष्टि ते व्यष्टि ह्वैकै संसारी भयो है तबहीं ये सब भये हैं ॥ २ ॥

बिष अमृत फलफूल अनेका । बहुधा बेद कहे तरबेका३

कोई सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी उपासनाते विष अमृत अनेक फल फलत भये कहे नाना दुःख सुख जीव पावत भये कोई वे देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइकै सुख पायो और कोई विषय आदिक करिकै दुःख पायो येई वे गुणन में फल फले हैं सो सबके फल स्तुति बहुधा वेद तरिबे को लिख्यो है " शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता । शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः" इत्यादिक सब ॥ ३॥

कह कबीर ते मैं का जानो । कोधौं छूटल को अरुझानो४

सो कबीरजी कहै हैं कि वेद तो फलस्तुति में तरिबे को कहै हैं कछू सांच नहीं कहै हैं ये सब जीव आपनी आपनी उपासना में लगे कहै हैं कि हम मुक्त ह्वै जाइँगे सो सब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुणमय हैं सो मैं कहा जानों को बद्ध है को छूट है तुमहीं बिचार करि लेउ कि हमारी उपासना माया के भीतर है कि माया के बाहिरे है अर्थात् वेद में यह देखायो कि सबको मूल रकार बीजहै जो सबको परमकारण

है सबते पर है सो थाही रामनामको जो कोई साहबमुख अर्थ करिकै जपैगो सोई परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास जाइगो और नहीं तरैहैं ॥ ४ ॥

इति सरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६७ ॥

अथ अड़सठवां शब्द ॥ ६८ ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै। मैं कातौंसूत हजार चरुखला नाजरै १ बाबाब्याहकरायदे अच्छाबरहितकाह। अच्छा बर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं बिवाह २ प्रथमे नगर पहूँचते परिगो शोक सँताप। एकअचंभौ हौं देखा बेटीब्याहैबाप ३ समधीकेघरलमधी आया आये बहूकेभाय। गोड़चुल्हौंनेदैरहे चरखा दियोडढाय ४देवलोक मरिजाहिंगे एकनमरैबढ़ाय। यहमनरञ्जनकारने चरखा दियोदढ़ाय ५ कहकबीरसन्तोसुनो चरखालखै न कोइ। जाकोचरखालखिपरो आवागमन न होइ ॥ ६ ॥

नानाउपासना में लगे जीव संसार ते नहीं छूटैहैं सो काहेते नहीं छूटै हैं सो कहे हैं।

जो चरखा जरिजाय, बढ़ैया ना मरै॥
मैं कातौं सूत हजार, चरुखला ना जरै १
बाबा ब्याह करायदे, अच्छा बरहित काह॥
अच्छा बर जोनामिलै, तुमहीं मोहिंबिवाह २

यह स्थूल शरीर चरखा है सो जरिजाय है कहे छूटिजाय है और बढ़ैया जो मन है सो नहीं मरै है वह चरखा शरीर गढ़ि लेइ है कहे बनाइलेइहै सो जीव कहे हैं कि मैं हजारसूत कातौहौं कहे कर्म छूटन के लिये बहुत उपाय करौहौं बहुत उपासना बहुत ज्ञान इनहीं शरीरनते करौहौं परन्तु चरुखला जे चार्यो शरीर हैं ते नहीं जरै हैं १ जीव गुरुवन के इहां जाइकै कहै है कि हे बाबा गुरुजी! अच्छा बर हितकरनवारो तो है तासों ब्याह कराइदेउ अर्थात् हितकरनवारो जो अच्छा देवताकी उपासना कराइदेइ

अरु आछो देवता जो तुम्हैं न मिलै कहे मुक्ति करि देनवारो देवता जो तुम्हैं न मिलै तो तुमहीं मोको बिवाहौ कहे ज्ञान उपदेश करिकै अपनो मेरो जो भेद है ताको मेटवाइ देउ ॥ २ ॥

प्रथमै नगर पहूंचतै, परिगो शोकसँताप ॥
एक अचम्भौ हौं देखा, बेटी ब्याहै बाप ३ ।

प्रथम साधन बतायो गुरुवालोग कि ईश्वर की उपासनाकरौं जामें अभेद ज्ञान होय सो प्रथम नगर पहुंचतै कहे जब गुरुवा देवताकी उपासना बताइदियो ताही प्रथमहीं शोक संताप परिगयो कहे तौने देवदेवता को बिरहभयो सो जरन लग्यो अरु दूसरो ज्ञान उपदेश जो मांग्यो तामें बड़ो आश्चर्य भयो कि बेटी बाप को बिवाह्यो जब उन उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्म हो तुमहीं सर्वत्र पूर्ण हो सो जीवतौ कबहूं ब्रह्म होतई नहीं है सो ब्रह्म तो न भयो वन वामें ब्रह्मके लक्षण आय भयो कहा कि आपने को ब्रह्म मानि कर्म धर्म सब छोड़िदियो सो ज्ञान अज्ञान जीवही को होइ है सो माया जीवही ते भई है सोई बेटी है सो बाप जीव को बिवाह लियो कहे बांधि लियो ॥ ३ ॥

समधी के घर लमधी आयो, आयो बहू को भाइ ॥
गोड़ चुल्हौने दैरहे, चरखा दियो डढाइ ४

जीवको ब्याही माया जो होइ है सो मनते होइ है सो मन ससुर भयो अरु शुद्ध ते अशुद्ध भयो सो अशुद्ध जीव को बाप शुद्ध जीव ठहर्यो सोई समधी ठहर्यो तौने जीव के घर में लमधी जो है मन को भाई चित्त सो आयो नाना स्मरण देवायो तबहूं जो माया है ताको भाई काल आयो चूल्हा जो है तामें दुइपल्ला होइ हैं सो पुण्य पाप जे हैं ते दूनों पल्ला हैं तौने चूल्हा में गोड़ दैकै चरखा जो शरीर है तिनको डढाइ दीन्ह्यो कहे लाइदियो काहू को पुण्य करायकै काहूको पाप करायकै शरीर खाइलीन्ह्यो ॥ ४ ॥

देवलोक मरि जाहिंगे, एक न मरै बढ़ाय ॥
यह मनरञ्जन कारने, चरखा दियो दृढ़ाय ५
कह कबीर सन्तो सुनौ, चरखा लखै न कोइ ॥
जाको चरखा लखि परो, आवागमन न होइ ६

देवलोकको नरलोकको सबको काल खाइलेइहै यह बढ़ैया जो मन है सो नहीं मारा मरै है और जब वह चरखा टूटै है तब बढ़ईही बनाइदेइ है ऐसे वह बढ़ई जो मन सो कीलके रञ्जनकरिबे को शरीररूपी चरखा को दृढ़ करत जाइ है नाना शरीर कालको खवावतजाय है ५ श्रीकबीरजी कहै हैंकि चरखा जे चार्‍यो शरीर हैं तिनको कोई नहीं लखैहै जाको चार्‍यो शरीर लखि पर्‍यो अरु पांचौ शरीर कैवल्य में प्राप्त भयो कहे केवल चिन्मात्र रहिगयो तब वह चरखा को गढ़ैया जो मन है तेहिते जीव भिन्न ह्वै गयो तब छठवों अंश स्वरूप साहब देइ है तामें स्थित ह्वैकै साहब के लोकको जाइ है आवागमन नहीं होइ है ॥ ६ ॥

इति अरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ उनहत्तरवां शब्द ॥ ६९ ॥

यन्त्रीयन्त्रअनूपमबाजै। वाके अष्टगगन मुखगाजै १ तूही गाजै तूही बाजै तुहीलिये करडोलै। एकशब्दमें रागछत्तिसौअनहदबाणी बोलै २ मुखकोनालश्रवणाके तुम्बा सतगुरुसाजबनाया। जिह्वातारनासिकाचरही मायामोमलगाया ३ गगनमँडलमाभाउजियारा उलटाफेरलगाया। कह कबीर जनभये बिबेकी जिन यन्त्री मनलाया ॥ ४ ॥

यन्त्रीयन्त्र अनूपम बाजै। वाके अष्टगगन मुखगाजै १

यन्त्री जो है जीव ताको यन्त्र जो शरीर है सो अनूपम बीन बाजै है बीन में सात स्वर बाजैहैं अरु आठवोंजीव के तार में टीप को स्वर बाजैहै और इहां यह शरीर में सात चक्र हैं सहस्रारलों

तिनके बीच बीच को जो है आकाश ये सात गगन भये अरु आठवों सहस्रार के ऊपर को जो आकाश तामें सुरपति कमल में बैठो जो गुरु नाम बतावै है सो वह आठवों गगन में जाइकै गाज्यो कहे राम नाम सुनिकै लेनलग्यो सो इहां सुषुम्णा जो नाड़ी सोई तार है मूलाधार चक्र सुरति कमल येई तुम्बा हैं ॥ १ ॥

तूही गाजै तूही बाजै, तुही लिये कर डोलै ॥
एक शब्द में राग छत्तिसौ, अनहद बाणी बोलै २

सो या बीणा को तुंही गाजै कहे सुरति कमल में तुही नाम लेइहै व तुही बाजै कहे तुही सुरति बोलैहै व तुही सुरतिको लैकै डोलै है कहे तुही सुषुम्णा ह्वै चढ़िजाइ है अर्थात् शरीर को मालिक तुही है और बीणा में छत्तिसराग बोलै है और इहां एक शब्द जो है राम नाम तामें चौंतिसबर्ण और पैंतीसौं नाद व छत्तिसौं बिन्दु ई सब हैं बिन्दुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहद है कहे वहीको हद्द नहीं है तौने रामनामरूपी बाणी सुरति कमल में गुरु बोलै है सो तहीं जपै है या अन्तर बीणा बतायो सो जानु अब बाहर को बीणा बतावै हैं ॥ २ ॥

मुखको नाल श्रवण के तुम्बा, सतगुरु साज बनाया ॥
जिह्वा तार नासिका चरही, माया मोम लगाया ३

बीणाके बीच में डांड़ी है यहां मुखै नालडांड़ी है बीणा में दुइ तुम्बा लगैहैं यहां दूनों जे श्रवण हैं तेई तुम्बा हैं बीणा को स्वर मिलावै हैं और यहां सतगुरु जे हैं ते साज बनाइ जीवन को उपदेश करै हैं व वही बीणा में तार लागैहै अरु यहां जीभ जो है सोई तार है और बीणा में चरही कहे सार लागै है और यहां नासिका चरही कहे सारहै सार में मोम जमायाजाइ है यहां माया जो है गुरु की कृपा "माया दम्भे कृपायां च" सोई मोम जमायो जैसे बीणा में जौन स्वर बजावै तौन बाजैहै तैसे सुरति कमल ते गुरु जो राम नाम को उपदेश कियो सोई जीभ ते जपै है ॥ ३ ॥

गगनमँडल मा भा उजियारा, उलटा फेर लगाया॥
कह कबीर जनभये बिबेकी, जिन यन्त्री मनलाया ४

बीणा जब स्वर ते बाजे है तब सब रागन को उजियारा ह्वै जाइ है और आछौ लगै है सबराग जानि जाइहैं और दूसरे पक्षमें जीवको उलटो ज्ञान जगत्मुख ह्वै गयो तैं ब्रह्ममुख ह्वै गयो तैं और आत्मामुख ह्वै गयो तैं कि महीं ब्रह्म हौं ताको नानाशब्द में समुझाइ कै अठयें गगन में जीवको साहबमुख करतभये तब जीवको ज्ञान ह्वै गयो सब धोखा छोड़िकै साहब में लग्यो जगत् मुख रह्यो सो उलटा रह्यो ताको सीधे में गुरुवालोग फेरि लै आये और लगायो पाठ होइ तो साहब में लगावत भये श्रीकबीरजी कहै हैं कि यन्त्री जो है बीणाकार उस्ताद तौनेते जो बीन बजावै मन लगाय सीखै है तो वाको स्वरनको रागनको वे ब्योरा आइ जाइ हैं ऐसे सुरति कमल में बैठे जे हैं परमगुरु जे रामनाम को उपदेश करैहैं तिनसों जो कोई यन्त्री जीवात्मा मन लगावै है सो बिबेकी होइहै कहै जगत् को असांच जानिकै सांच साहब में लागि जाइ है॥ ४॥

इति उनहत्तरवां शब्द समाप्तम्॥ ६९॥

अथ सत्तरवां शब्द॥ ७०॥

गुरुमुख॥ चातककहापुकारैदूरी। सोजलजगतरहाभरपूरी १
जेहि जल नादबिन्दु का भेदा। षटकर्म सहित उपान्यो बेदा २
जेहि जल जीव सीवका बासा। सो जल धरणि अमर परकासा ३
जेहि जल उपजे सकल शरीरा। सो जल भेद न जान कबीरा ४

चातक कहा पुकारै दूरी। सो जल जगत रहा भरपूरी १
जेहिजलनादबिन्दुकाभेदा। षटकर्मसहितउपान्योबेदा २

सबते गुरु परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि हे चातक! दूरि दूरि तैं कहा पुकारै है कि पियासो हौं पियासो हौं जौन स्वाती को

जल तें चाहै है जाते पियास बन्द ह्वै जाइहै सो रामनामरूपी जल स्वाती को मुख्य मुक्ति को साधन जगत् में पूरिरह्यो है तैं कहां और और मुक्ति के साधन को खोजते फिरै है १ और जौने रामनामरूपी जल में नादबिन्दु को भेद है अपने षट्मात्रन ते वेद को उपान्यो कहे उत्पत्ति कियो है ॥ २ ॥

जेहिजलजीवसीवकाबासा।सोजलधरणिअमरपरकासा ३
जेहिजलउपजेसकलशरीरा। सोजलभेदनजानकबीरा ४

जौने रामनामरूपी जल में जीव जे हैं सीव जे नाना ईश्वर तिनको बास है और सोई रामनामरूपी जल धरणि में जो कोई जपै ताको अमर करै है या प्रकाश कहे जाहिर है अथवा वा अवनी में नाशवान् नहीं होय है या जाहिर है तैं पियासो काहे मरै है ३ जेहि रामनामरूपी जलते सकल शरीर उपजे है अर्थात् संसारमुख अर्थ ते अनन्त ब्रह्मा उपजे हैं रामनाम रूपी जलको भेद कबीरा कहे कायाकेबीर जे जीव हैं ते नहीं जानैहैं अर्थात् जो रामनाम मोको बतावै है सो जो बिचार करै तो चिद्विग्रह करिकै सर्वत्र महीं देखोपरौं तो मेरी भक्ति जलपान करिकै मुक्ति ह्वै जाइ है और संसारताप बुताइजाइ है ॥ ४ ॥

इति सत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७० ॥

अथ इकहत्तरवां शब्द ॥ ७१ ॥

जसमासु नलकी तसमासु पशुकी रुधिर रुधिर यकसाराजी । पशुको मासुभखै सबकोई नलहि न भखै सियाराजी १ ब्रह्मकुलाल मेदिनी भरिया उपजि बिनशि कितगईयाजी । मासु मछरिया जोपै खैया जो खेतनि में बोइयाजी २ माटी को करिदेई देवा जीव काटि काटि देइयाजी । जो तेरा है सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो रामनाम नितलैया जी । जो कछु कियो जिह्वा के स्वारथ बदल परारा दैयाजी ॥ ४ ॥

जसमासुनरकीतसमासुपशुकी, रुधिररुधिरयकसाराजी॥
पशु को मासु भखै सब कोई, नरहि न भखै सियाराजी १

जस नरकी मासु होइ है तस पशुकी मासु होइ है अरु रुधिर भी एक तरह होइहै परन्तु पशुके मासुके मासको जे भक्षणकरै हैं ते सियारई हैं सो वे मनुष्यते और सियारते यतनै भेदहै कि सियार मनुष्यको मांस खाइहै अरु नर पशुको मांस खाइहै मनुष्य को मांस पशु नहीं खाइहै सो कहैहैं कि रुधिर मांस तो सब एकई तरह है नरको मांस काहे नहीं खायहैं ॥ १ ॥

ब्रह्मकुलालमेदिनीभरिया, उपजिबिनशिकितगइयाजी ॥
मासु मछरिया जो पै खैया, जो खेतनि में बोइयाजी २

जौनेते सब पृथ्वी जगत् भयोहै ऐसो जो है ब्रह्मा कुलाल जो कुम्हार और सर्वत्र जगत् में भरेरहा अर्थात् सब बस्तु ब्रह्मईरह्यो तो यह सब पृथ्वी उपजी और बिनशिकै कहां गई सो एक ब्रह्महो सर्व मानिकै जो मासु मछरी खाउ कि सबतो एकही है जो मन चलैगो सो करेंगे नरक स्वर्ग कर्म सब मिथ्या है ऐसो जो मानौगे तो जो खेतमें बोवनको होइहै सो तुम मुर्दे पशुकी मासकी मासु खाउ हौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुर में मांस खाइँगे जो कहौ हम देवताको बलि चढ़ाइकै खाइहैं तौने पर कहैहैं ॥ २ ॥

माटी को करि देई देवा, जीव काटि कटि देइयाजी ॥
जो तेरा है सांचा देवा, खेत चरत किन लेइयाजी ३

माटीको तो देवता बनावो हौ उसके आगे जीव काटि काटि के राखौ हो यह कैसी गाफ़िली तुमको घेरी है जो माटी को देवता सांच है तो जब बोकरी खेतमें चरती है तब तुम्हारा देवता काहे नहीं खाता क्या देवता को किसीका डर है भाव यह है कि तुम काहे को हत्यारी लेतेहो अंगुरिआयदेउ जो सांच होयगो तो खाइगो तेहिते तुम्हारो देवता मिथ्या है खेतमें चरत बोकरी को न खाइसकैगो ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, राम नाम नित लैयाजी ॥
जो कछु कियो जिह्वाके स्वारथ, बदल परारा दैयाजी ४

सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके जिनके गला को तुम काटेहौ ते सब तुम्हारो नरक में गला काटेंगे तेंहिते रामनामको नित लेउ भाव यहहै जब नामापराध छोड़ि रामनाम लेउगे और फिरि पातक न करौगे तबहीं तुम्हारे पातक जाइँगे तामें प्रमाण "हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः। यदृच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः॥ रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति" (दशनामापराधमें प्रमाण) "सतां निन्दा नाम्नः परममपराधं वितनुते यतःख्यातिं जातं कथमिह सहेद्धेलनमदः। शिवस्य श्रीविष्णोर्य इह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामाहितकरः॥ गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दनं तथार्थवादो हरिनामकल्पनम्। नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि विच्युतिः॥ श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितोधमः। अहंममादिपरमो नाम्नि सोप्यपराधकृत्" ॥ ४ ॥

इति इकहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७१ ॥

अथ बहत्तरवां शब्द ॥ ७२ ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो। दशौ द्वार नरकै में बूड़े तू गन्धी को बेठो १ फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी। काम क्रोध तृष्णाके मारे बूड़ि मुये बिन पानी २ जारेदेह भसम हैजाई गाड़ेमाटी खाई। शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बड़ाई ३ चेति न देखु मुगुध नर बौरे तुतकाल न दूरी। कोटिनयतन करै बहुतेरे तनाकि अवस्थाधूरी ४ बालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिं अयाना। कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़े बहुत सयाना ॥५॥

चलहुकाटेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो। दशोद्वारनरकैमेंबूड़ेतूगन्धीकोबेठो १

तीनबार टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो जो कह्यो सो ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड

उपासनाकाण्ड ये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी ये तीनों कर्मते टेढ़े हैं सो ये मार्ग में कहा चलौहौ दशौद्वार जे दशौ इन्द्रियहैं ते नरकही में लगी हैं कहे विषयनही में लगी हैं सो तेरे विषय की गन्धलगी है ताते तैं गन्धी है सो तोही ऐसे गन्धी को मायाबोठिलियो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइलियो अरु जो बेड़ो पाठ होइ तौ यह अर्थ है कि तोहीं ऐसे गन्धीको जाके दशौद्वार नरकहीमें बूड़े हैं ताको बेड़ो नहीं है जाते संसारसागर उतरि जाइ अथवा गन्ध जगत् जो है गन्धीशरीर ताको तैं बेड़ो कहे आधार कहा ह्वै रहेहै टेढ़ो टेढ़ो चाल चलिकै यहां कहां तेरो पार कियो होइगो संसारसागर ते न होइगो बूड़िही जाइगो ॥ १ ॥

फूटे नैन हृदय नहिं सूझै, मति एकौ नहिं जानी ॥
काम क्रोध तृष्णा के मारे, बूड़िमुये बिन पानी २
जारे देह भसम ह्वै जाई, गाड़े माटी खाई ॥
शूकर श्वान काग के भोजन, तनकी यहै बड़ाई ३
चेति न देखु मुगुध नरबौरे, तू ते काल न दूरी ॥
कोटिन यतन करै बहुतेरे, तनकि अवस्था धूरी ४

अरु ये पदनको अर्थ स्पष्ट है इनमें यही बर्णन करै हैं कि माया की फौजै तोको लूटि लियो अथवा शरीररूपी बेड़ो तेरो चलायो न चल्यो संसारसागर कामादिक तोको बोरि दियो काल दूरि नहीं है आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था दूरिही है आखिर धूरिही में मिलिजाइगो ॥ २ । ४ ॥

बालू के घरवा में बैठे, चेतत नाहिं अयाना ॥
कहकबीर यक राम भजे बिन, बूड़े बहुत सयाना ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यही शरीररूप बालूके घर में बैठिकै अरे मूढ़! चेतत नहीं है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को भजन नहीं करै है न जानै यह शरीर कब गिरिजाइ कहे छूटिजाइ सो विषय

छोड़ि बेगिही भजन करु वे समर्थ तोको छोड़ाइ लेइँगे साहब के भजन बिना बहुत सयान बहुत मतन में लगिकै बूड़िगये हैं अर्थात् माया ते छोड़ाइ लीबे में समर्थ साहबही हैं और कोई न छोड़ाइ सकैगो तेहिते परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को भजन करु वे तोको संसार ते छोड़ायही देइँगे ॥ ५ ॥

इति बहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७२ ॥

अथ तिहत्तरवां शब्द ॥ ७३ ॥

फिरहु का फूलेफूले । जो दसमास उरधमुखभूले सो दिनकाहेक भूले १ ज्यों माखी स्वादै लाहि बिहरै शोचि शोचि धन कीन्हा । त्योंहीं पीछे लेहु लेहुकर भूतरहनि कछु दीन्हा २ देहरीलौं बर नारि संगहै आगेसंगसहेला । मृतुकथानसँग दियोखटोला फिरि पुनि हंस अकेला । ३ जारे देह भसम ह्वै जाई गाड़े माटी खाई । काचे कुम्भ उदक जो भरि या तनकै इहै बड़ाई ४ राम न रमसि मोहमें माते पस्यो कालवश कूवा । कहकबीर नल आपु बँधायो ज्यों नलिनीभ्रम सूवा ॥ ५ ॥

फिरहुकाफूलेफूले । जोदशमासउरधमुखभूलेसोदिनकाहेकभूले १

औरे औरे मतन में लगिकै कहा फूले फूले फिरौ हौ कि हमहीं मालिक हैं हमहीं मुक्त हैं दशमहीना ऊर्ध्वमुख गर्भ में भूलतरहे तहां कह्यो कि हे साहब ! मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो सो दिन काहेको भूलिगये अब काहे भजन नहीं करौहौ निकसतही कहां कहां करनलग्यो जो कहो जब हम गर्भ में रहे तब हमको साहबै दयालुता करिकै सुरति लगायो अब काहे दयालुता करिकै सुरति नहीं लगावै हैं सो हम कहाकरैं हमको साहबई भुलाइ दियो अरेमूढ़ ! साहब तो गोहरावत जाइहै सब शास्त्रवेद के तात्पर्य करिकै बीजक में कि जो मोको जानि भजनकरु तो मैं तेरो उद्धार करौंगो सो गर्भबास में जो तैं भजन करिबेको कौल कियो सो भजन न कियो भुलायदियो तामें प्रमाण कबीरजीके

मुक्तिलीलाग्रन्थ को "गर्भबास में रह्यो कह्यो मैं भजि हौं तोहीं। निशिदिन सुमिरौं नाम कष्टसे काढ़ौ मोहीं॥ यतनाकियो करार काढ़ि गुरुबाहरकीना। भूलिगयोनिजनाम भयो माया आधीना" सो साहब को कौन दोष है तुहीं क्रौलते चूकि गयो साहब को भजन न कियो॥ १॥

ज्यों माखी स्वादै लहि बिहरै, शोचि शोचि धन कीन्हा॥
त्योंहीं पीछे लेहु लेहु कर, भूतरहनि कछु दीन्हा २

जैसे माखी फूलन के रसके स्वादको पाइकै बिहारकरै है और ताहीके सहतको धन जोरिजोरिकै धरै है तैसे तुमहूं बिषयभोग करिकै धन जोरि जोरि धरौहो सो जैसे कोल आइकै मछेहन को लाइकै सहत को लैजाइकै आपुस में बांटिलेइ है तैसे तोहीं पीछे कहै जब तुम न रहिजाउगे तब तिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहु लेहु करिकै बांटिलेइँगे अरु तुमको भूतकी रहनि कहे दशदिन भूत कहैंगे मरघटा में बैठावेंगे॥ २॥

देहरी लौं बर नारि संग है, आगे संग सहेला॥
मृतुकथानसँगदियोखटोला, फिरि पुनि हंसअकेला ३
जारे देह भसम ह्वै जाई, गाड़े माटी खाई॥
काचेकुम्भ उदक जो भरिया, तनकै इहै बड़ाई ४

इन चारो तुकन को अर्थ स्पष्ट है॥ ४॥

राम न रमसि मोह में माते, पर्‍यो कालबश कूवा॥
कहकबीरनलआपुबँधायो, ज्योंनलिनीभ्रमसूवा ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव! मोहमें माते राम में नहीं रमै है काल के बश ह्वैकै संसारकूपमें पर्‍यो है वाते बार बार तेरो जन्म मरण होइहै सो तो अपनेही भ्रमते नानादुःख सहै है जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ै नहीं है मारोजाइ है तैसे तैंहूं नानामतन में लागिकै अरु बिषयन में लागिकै आपहीते

यह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरे है भाव यह है संसार तोको बांधे नहीं है तैं छोड़ि काहे नहीं देइहै अरु जेहि साहबको तैं है जहां एकऊ दुःख नहीं है तिनमें काहे नहीं लगै है ॥ ५ ॥

इति तिहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७३ ॥

अथ चौहत्तरवां शब्द ॥ ७४ ॥

योगिया ऐसो है बदकरणी । जाके गगन अकाश न धरणी १ हाथनवाकेपाउँनवाकेरूपनवाकेरेखा । बिनाहाटहटवाईलावै करै बयाईलेखा २ कर्मनवाकेधर्मनवाके योगनवाके युगुती । सींगीपत्र कछुवनहिंवाकेकाहेकमांगैभुगुती ३ तैंमोहिंजानामैंतोहिंजाना मैं तोहिंमाहँसमाना । उतपतिप्रलयएकनहिंहोती तबकहुकौनको ध्याना ४ योगियाएकआनिकियठाढ़ोरामरहाभरिपूरी । औषधमूल कछुवनहिंवाकेरामसजीवनिमूरी ५ नटवतबाजीपेखनीपेखैबाजी-गरकीबाजी । कहैकबीरसुनोहोसन्तोभईसोराजबिराजी ॥ ६ ॥

योगियाऐसोहैबदकरणी । जाकेगगनअकाशनधरणी १

हाथ न वाके पाउँ न वाके, रूप न वाके रेखा ॥
बिना हाट हटवाई लावै, करै बयाई लेखा २

योगिया कहे संयोगिया को ब्रह्मसंयोग करिकै जगत् करैहै याते योगिया माया शबलित ब्रह्महै सो वह योगियाकी बदकरणी है कहे निषिद्ध करणी है जौने चैतन्याकाश में 'अहंब्रह्मास्मि' बुद्धिकैरहै तौन चैतन्याकाश मेरे लोक को प्रकाश है तहां आकाश धरणी एकौ नहीं हैं १ वह चैतन्याकाश को जो मानिलियो है कि सो महींहौं ऐसा जो समष्टिजीव चैतन्य ब्रह्मरूप सो वाके न हाथ है न पाउँ है न वाके रूप रेखाहै जहां जीव नानाकर्म करै है अरु वही कर्मनको फल पावै है जहां यही लेनदेन ह्वैरह्योहै सो जो है जगत् हाट वाके नहीं है कहे देश काल बस्तुपरिच्छेद ते शून्य है औहटवाई लगौते है कहे मायाशबलित ह्वैकै जगत् करते है

अरु बया और को अनाज और औरको नापिदेइहै अरु ब्रह्म जो है बया सो माया शबलित ह्वैके ईश्वररूपते जीवनके किये जे कर्म के फल हैं ते जीवनको देइहै ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके, योग न वाके युगुती ॥
सींगीपत्र कछुव नहिं वाके, काहे को मांगै भुगुती ३

अरु वह ब्रह्मको न कर्म है, न धर्म है और न वाके योग युगुती है और सींगी जो योगीलोग बजावै हैं सो वाके नहीं है व योगी तुम्बा लिये रहै हैं अरु वाके पात्र नहीं है सो कबीरजी कहै हैं कि वह ब्रह्म तौन योग करै न वेष बनावै सिद्धान्त में तो कछू हई नहीं है सो हे योगिउ, ज्ञानिउ! वेष बनाइकै जो कहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तो मुक्ति कहे ऐश्वर्य काहे मांगौ हौ कि हमहीं जगत् के मालिक व ब्रह्म ह्वैजाइँ हे गुरु! हमको यह युगुति बताइदेउ और जो मुक्ति पाठ होइ तो तुम पहलेहीते मुक्ति बनेरहे गुरुवालोगनते काहे मुक्ति मांगौहौ कि जामें हम मुक्त ह्वैजाइँ सो युगुति बताइदेउ जो कहो हम आपने भ्रमनिवृत्ति करिबे को मुक्ति को ज्ञान मांगै हैं तो अरे मूढ़ो! वह ब्रह्म के तो कुछ हई नहीं है वह निर्लेपहै वह ब्रह्म जो तुम होते तो अज्ञानई तुम्हारे कैसे होतो ॥ ३ ॥

तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना, मैं तोहिं माहँ समाना ॥
उतपति प्रलय एक नहिं होती, तब कहु कौनको ध्याना ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव! ज्ञान जो तैं मानिलियोहै कि केते उपासनाकरै हैं कि मैं ईश्वर हौं ईश्वर में समान हौं ईश्वर मोहीं में समान है तो उत्पत्तिप्रलय जब कुछ नहींहै तबतो बताउ कौन को ध्यान है अर्थात् काहूको ध्यान नहीं करत रह्यो भाव यह है कि तब जो ब्रह्म होते तो संसारी काहे होते ॥ ४ ॥

योगिया एक आनि किय ठाढ़ो, राम रहा भरिपूरी ॥
औषधमूल कछुव नहिं वाके, राम सजीवनिमूरी ५

सो तैंहीं यह योगिया माया शबलित ब्रह्म को अनुभव करिकै

धोखाब्रह्महीको साहब मानि ठाढ़के लीन्ह्यो है फिर कैसो है ना कछु औषद है ना वाके मूल है ताको माने हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं सजीवनिमूरि सर्वत्र पूर्ण ह्वैरहेहैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनिमूरि याते कह्यो कि नाना ईश्वर जीवत्व मिटायदेनवारे हैं व साहब जीवनको जियाय देनवारे हैं अर्थात् रूप देनवारेहैं॥५॥

नटवत बाजी पेखनी पेखै, बाजीगर की बाजी ॥
कहै कबीर सुनौहो सन्तो, भई सो राजबिराजी ६

जौन तू धोखाब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानै है सो तेरी यह पेखनी नटवत् बाजी पेखनी है अर्थात् झूंठ है बाजीगरकी बाजी है अर्थात् सांच असांच देखावै असांच सांच देखावै है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनौ उनको राजबिराजी ह्वैगई कहै सर्वत्र पूर्णसत्य जे साहब हैं ते उनको नहीं जानि परै हैं वही धोखाब्रह्म में लगे हैं असत्यही सर्वत्र देखै हैं मनमाया की राज्य ह्वैरही है साहब को राज्य नहीं है ॥ ६ ॥

इति चौहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७४ ॥

अथ पचहत्तरवां शब्द ॥ ७५ ॥

ऐसो भर्म बिगुरचिनभारी । वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी १ माटी को घट साज बनाया नादेबिन्दु समाना । घट बिनशे क्यां नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना २ एकैहाड़ त्वचामलमुत्रा रुधिरगूदयकमुद्रा । एक बिन्दुते सृष्टिरच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा ३ रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई । कहै कबीर राम रमिरहिया हिन्दू तुरुक न कोई ॥ ४ ॥

ऐसोभर्मबिगुरचिनभारी ।
वेद्दकिताब दीनं औ दोजख को पुरुषा को नारी १

ऐसो कहे यह तरहते जैसो आगे कहे हैं तैसो चिंन्मात्र जीव को बिगुरचिन कहे बिगारिबो भर्मते बहुत भारी है काहेते कि भर्म

ते दुबिधा कहिकै वह सार पदार्थ को न जान्यो हिन्दू मुसल्मान दोऊ बिगरि गये हिन्दू वेदकी राहते नाना मत बनाय लेत भये व मुसल्मान किताबन की शरा लैकै नानामत दूसरे दीन को खड़ा करत भये हिन्दू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिश्त दोज़ख कहत भये जो वेद किताब के तात्पर्यते देखौ तो न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सो जब पुरुषही नारी को भेद नहीं है तो हिन्दू मुसल्मान कैसे भेद भयो ॥ १ ॥

माटी को घट साज बनाया, नादे बिन्दु समाना ॥
घटबिनशे क्या नाम धरहुगे, अहमक खोज भुलाना २
एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा, रुधिर गूद यक मुद्रा ॥
एक बिन्दु ते सृष्टि रच्यो है, को ब्राह्मण को शुद्रा ३

नाभीके तरे जो दश आंगुरकी ज्योति है व तौने में जब प्राण-वायुको संयोग होइ है तब नाद उठै है तामें बिन्दु समाइ गयो तब माटीको घट यह पिण्डभयो ताहीको नाम धरावै है जब याको घट विनाशिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब याको क्या नाम धरोगे अर्थात् नामरूप याके सब मिथ्या हैं अहमक जो है जीव सो नाम-रूप के खोजमें भुलाइगयो ये सब जीवात्मा के नामरूप नहीं हैं २ सो एकैहाड़ादिकनते व एकैबिन्दुते कहे बीर्यते सकलसृष्टि भई है काको हिन्दू कहैं काको मुसल्मान कहैं काको ब्राह्मण कहैं काको शूद्र कहैं शरीर में यही साजु सबके हैं अरु वेद में कर्म किताब में शरा यही ते नानाभेद लगे हैं जो बिचारिकै देखो तो नामरूपही को भेद लगिरह्योहै आत्मा तो सबको चित्‌ही है व मांस चाम सब के पञ्चभौतिकही है अब जे गुणाभिमानी हैं तिनको कहै हैं ॥३॥

रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर, सतोगुणी हरि सोई ॥
कहै कबीर राम रमि रहिया, हिन्दू तुरुक न कोई ४

वही नामरूपके भेद ते ब्रह्मा रजोगुणी शंकर तमोगुणी विष्णु सतोगुणी भये और वही नामके भेदते मुसल्मान में इनहीं को

अज्राजील मैकाईल इज्राईल कबीरजी कहै हैं कि येतो सब नाम-रूपके भेद हैं इनको सबको आत्मा एकई है तिनमें अन्तर्यामी-रूप ते मनबचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रई रमिरहे हैं जो कहो रामनामौ तो नाम में आवै हैं तो रामको नाम मन बचन में नहीं आवै है आपही स्फुरित होइहै तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुण के परे हैं तिनको जानै और जो आत्मा नामरूपते भिन्न है न हिन्दू है न तुरुकहै तामें येई राम रमिरहे हैं था हेतुते सब को आत्मा इन्हीं को दासहै तेइते इन्हींको जो जानै सोई मुक्त होइहै परमपुरुष पर श्रीरामचंन्द्र निर्गुण सगुण के परे हैं तिनहींको रामनाम जाने मुक्ति होइहै तामें प्रमाण "रामकेनाम ते पिण्डब्रह्माण्ड सब रामकानाम सुनि भर्ममानी। निर्गुणनिरा-कारके पार परब्रह्महै तासुकानामरंकारजानी ॥ विष्णुपूजाकरैं ध्यानशंकर धरैं भनैं सुबिरंचि बहु विविधबानी। कहै कब्बीर कोइ पारपावै नहीं रामकानाम अकहकहानी" ॥ ४ ॥

इति पचहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७५ ॥

अथ छिहत्तरवां शब्द ॥ ७६ ॥

अपनपौ आपुही बिसरो। जैसे शोनहा कांचमँदिरमें भर्मत भूंकि मरो १ ज्यों केहरि बपु निरखि कूपजल प्रतिमा देखि परो। ऐसेहि मदगज फटिकशिलापर दशननि आनिअरो २ मर्कटमुठी स्वाद ना बिहुरै घरघर नटतफिरो। कहकबीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥

अपनपौ आपुही बिसरो॥

जैसे शोनहा कांच मँदिर में, भर्मत भूंकि मरो १
ज्यों केहरि बपु निरखि कूपजल, प्रतिमा देखि परो ॥
ऐसेहि मदगजफटिकशिलापर, दशननि आनि अरो २

अपनपौ कहे आपने जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको आपही ते यह जीव बिसरिगयो जैसे कूकुर कांचके मन्दिरमें आपनो रूप देखि देखि भर्मते भूँकि भूँकि मरैहै १ अरु जैसे केहरि कूपके जल में अपनी प्रतिमा देखिकै कूदिपरैहै अरु ऐसेही प्रतिबिम्ब देखि स्फटिकशिला में हार्थीदांत टोरि डारै है॥ २ ॥

मर्कटमुठी स्वाद ना बिहुरै, घर घर नटत फिरो॥
कह कबीर ललनी के सुवना, तोहिं कवने पकरो ३

अरु जैसे मर्कट मूठीमें जो है दाना ताके स्वाद के लिये फँसि गये बाजीगर के साथ नाचत बागैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे इनके सबके भ्रम होइहै तैसे हे जीव ! तैंहीं सब कल्पना करिलियो है अपनी कल्पनाते तोहींको भ्रम होइहै नाना उपासना नाना ठाकुर खोजत फिरै हैं बिचारिकै देख तो जब तेरे कल्पना नहीं रही तबै शुद्ध रहै है जैसे सुवा ललनीको पकरि लेइ है तैसे तैंहीं ये सब कल्पना करिकै कल्पना में बँधो है जैसे सुवा ललनी को जो छोड़िदेइ तो वृक्षमें पहुंचै जाइ तैसे तैंहूं जो कल्पना को छोड़िदेइ तो तोको कौन पकस्यो है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास पहुँचै जाइ जब सब कल्पना छोड़ि शुद्ध ह्वैजाइ है तब साहब अपनो विग्रह देइहै तामें स्थित ह्वै साहब के लोकको जाइ है तामें प्रमाण "आदत्ते हरिहस्तेन हरिपादेन गच्छति" (इति स्मृतिः) अरु श्रीकबीरऊजी को मङ्गल प्रमाण 'चलोसखी बैकुण्ठविष्णुमाया जहां। चारिउमुक्तिनिदान परमपदले तहां॥ आगेशून्यस्वरूप अलखनहिं लखिपरै। तत्त्वनिरञ्जनजान भरमजनि चित धरै॥ आगे है भगवन्त तो अक्षरनाउँ है। तौनमिटावैकोटिबनावैठाउँ है॥ आगेसिन्धुबेलंदमहागंहिरोजहां। को नैयालैजायउतारैकोतहां॥ करअजपाकीनावतोसुरतिउतारि है। लेइहौंअजरनाउँ तो हंस उबारि है॥ पार उतर पुरुषोत्तम परख्योजानहै। तहँवां धाम अखण्ड तो पद निर्वान है॥ तहँ नहिं चांहत मुक्ति तो पद डारैफिरै। सुरत

सनेही हंसनिरन्तर उच्चैर ॥ बारहमास बसन्त अमरलीला जहां। कहैं कबीर बिचारि अटल ह्वैरहु तहां ॥ ३ ॥

इति छिहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७६ ॥

अथ सतहत्तरवां शब्द ॥ ७७ ॥

आपन आश किये बहुतेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा १ इन्द्री कहां करै बिश्राम । सो कहँगये जो कहते राम २ सो कहँ गये होत अज्ञान। होय मृतक वहि पदहि समान ३ रामानन्द राम-रसछाके । कहकबीर हम कहिकहि थाके ॥ ४ ॥

आपन आश किये बहुतेरा। काहु न मर्म पाव हरि केरा १

आपने स्वरूपके चीन्हिबेकी बहुतेरा कहे बहुत आश किये कि हमारो आत्मै सबको मालिक है यही के जाने ते हम मुक्त ह्वै जाइँगे परन्तु मुक्त न भये अरु हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हरनवारे हैं तिनको मर्म न पायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो ॥ १ ॥

इन्द्री कहां करै बिश्राम। सो कहँगये जो कहते राम २

अरु यह कोई नहीं बिचार करै है कि इन्द्री कहां बिश्रामकरै है काहेते कि इन्द्री के जे देवता हैं तिनते समेत इन्द्री तो मनते चैतन्य है व मन जीवात्मा ते चैतन्य है व जीवात्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के प्रकाश ते चैतन्य है सो जे आपने स्वरूप को बिचार करै हैं कि महीं राम हौं ते वे रामभर कहाँ गये अर्थात् नहीं गये ब्रह्म में समानरहे अरु एक एकते चैतन्य है तामें श्रीगोसाईं तुलसीदास को प्रमाण "बिषयकरन सुरजीव समेता। सकल एकते एक सचेता ॥ सबकर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवधपति सोई ॥ जगतप्रकाश प्रकाशकरामू। मायाधीश ज्ञान गुणधामू" ॥ २ ॥

सो कहँगये होत अज्ञान। होय मृतक यहि पदहि समान ३

रामानन्द रामरस छाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके४

जीव ब्रह्म में समान रह्यो शुद्ध रह्यो जब मन की उत्पत्ति भई अज्ञान भयो सो कहां गयो अर्थात् तब मृतक ह्वैकै आपने स्वरूप को भुलायके यहि पदहि कहे यहि संसार में समान ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम चारोंयुग में कहि कहि थकि गये कि रामानन्द जे हैं तेई राम के रसमें छके हैं अरु तेई परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रके धामको गये हैं और कोई नहीं परममुक्ति पाई है तुमहूं रामानन्द होत जाउ अर्थात् तुमहूं रामहीं ते आनन्द मानत जाउ यह हम चारोंयुग में सबको समुझायो परन्तु कोई हमारो कह्यो न मान्यो राम सों आनन्द कोई न मान्यो सब वही मायाब्रह्म में लगिकै संसारी होत भयो ॥ ४ ॥

इति सतहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७७ ॥

अथ अठहत्तरवां शब्द ॥ ७८ ॥

अब हम जाना हो हरिबाजीको खेल । डङ्कबजायदेखायतमाशा बहुरिसोलेतसकेल १ हरिबाजीसुरनरमुनि जहँडे मायाचेटकलाया । घरमें डारि सबन भरमाया हृदयाज्ञान न आया २ बाजी झूँठ बाजीगरसांचा साधुनकी मतिऐसी । कहकबीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भइ तैसी ॥ ३ ॥

अब हम जाना हो हरि, बाजी को खेल ॥
डङ्क बजाय देखाय तमाशा, बहुरि सो लेत सकेल १

हे हरि, हे साहब ! संसाररूप बाजीके खेलको हेतु अब हम जान्यो अब जो कह्यो तामें ध्वनि यह है कि तब यह बिचारतरह कि साहब तो दयालु है शुद्ध जीव को संसाररचि अशुद्ध काहे करि दिये यह शङ्का रही सो अब जब छूटी तब साहब का हेतु जान्यो साहब जो सुरति दियो सो आपने पास लिवाय सुखलिये डङ्का बजाय कहे रामनाम शब्द सुनायकै तमाशा देखाय कहे जगत्

मुख अर्थ द्वार संसार तमाशा देखायकै बहुरि सो लेत सकेल कहे जो कोई जीव साहब के सम्मुख भयो ताको साहब मुख अर्थ बताइ कै चित् अचित्‌रूप बिग्रह जगत् देखायकै संसार सकेलि लेय है अर्थात् संसार देखि नहीं परै ॥ १ ॥

हरिबाजी सुर नर मुनि जहँडे, माया चेटक लाया ॥
घरमें डारि सबन भरमाया, हृदयाज्ञान न आया २
बाजी झूंठ बाजीगर साँचा, साधुन की मति ऐसी ॥
कह कबीर जिन जैसी समुझी, ताकी गति भइ तैसी ३

हरि जे साहब तिनकी बाज़ी जो संसार तामें साहब को हेतु न जानिकै सुर नर मुनि जेहैं ते रामनाम को संसार मुख अर्थ करिकै माया के चेटक में जहँडिगये अर्थात् भूलि गये सो माया इनको घर जो संसार तामें डारिकै भरमाय दियो हृदय में ज्ञान न होत भयो तौन हम जान्यो साहब सुरति दियो तैं अपने पास बोलावे को सो या जीव आपही ते संसार बाज़ी रचि भूलिगयो. २ बाज़ी जो संसार सो झूंठ बाज़ीगर जो जीव सो सांचहै सो साधुन की मति तो ऐसी है और जे सब हैं बद्धजीव ते जैसे समुझिनि है ताकी तैसीही गति भई है सो गति हू सब अनित्य है ॥ ३ ॥

इति अठहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७८ ॥

अथ उन्नासीवां शब्द ॥ ७६ ॥

कहो हो अम्बरकासों लागा। चेतनहारे चेतु सुभागा १ अम्बर मध्ये दीसै तारा। यकचेतै दुजे चेतवनहारा २ जोहिखोजै सो उहवांनाहीं। सोतो आहि अमरपदमाहीं ३ कह कबीर पद बूझै सोई। मुख हृदया जाके यक होई ॥ ४ ॥

कहोहो अम्बर कासों लागा। चेतनहारे चेतु सुभागा १
अम्बर मध्ये दीसै तारा। यक चेतै दुजेचेतावनहारा २

तैंतो सुभागा है साहब को है तैं काहे मन माया ब्रह्म में लागि

कै अभागा ह्वैरहे है हे चेतकरनवारे ! तैं चेत तो करु अम्बर,जो है लोकप्रकाशरूप ब्रह्म सो कहां लागाहै अर्थात् वह काको प्रकाश है वह साहब के लोक को प्रकाश है चेततो करु १ वह अम्बर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म तामें तारा देखाइ है कहे जब तैं उहां 'अहंब्रह्म' बुद्धि करै है तबहीं जगत्रूप तारा उत्पत्ति होइहै तौनेही जगत् में एकगुरु होइ है, सो चेतावै है अरु एक शिष्य होइ है सो चेत करै है ॥ २ ॥

जेहिखोजै सो उहवांनाहीं। सोतो आहिअमरपदमाहीं ३
कह कबीर पद बूझै सोई। मुख हृदया जाके यक होई ४

सो ज्यहि आपने स्वरूप को तैं खोजै है कि मैं आपने स्वरूप को जानिकै मुक्ति ह्वैजाउँ सो उहां वा गुरुवन को ज्ञान में नहीं है वन वह लोकप्रकाश में है काहेते कि जे जे देवतन में वे लगावै हैं ते ई अमर नहीं हैं तो तोको कहां मुक्ति करैंगे अरु महाप्रलय में जब लोकप्रकाश में लीन होइ है तब उहौंते उत्पत्ति होइ है तेहिते उहौं गये अमर नहीं होइ है तेहिते यह आयो कि तैं तो अमर नहीं होइहै तेहिते यह आयो कि तैंतो अमरपद में है साहब को अंशहै साहब को जानिले तो अमर ह्वैजाइ ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह अमरपद अपनो स्वरूप कोई बिरला बूझै है कौन जाके सम अधिक नहींहै ऐसो जो है एक रामनाम सो जाके मुख हृदय में होइहै सोई बूझै है ॥ ४ ॥

इति उन्नासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ७९ ॥

अथ अस्सीवां शब्द ॥ ८० ॥

बन्दे करिले आप निबेरा। आपु जियत लखु आप ठवरकरु मुये कहां घर तेरा १ यहि अवसर नहिं चेतो प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा। कहै कबीर सुनो हो सन्तो कठिन कालको घेरा ॥२॥

बन्दे करिले आप निबेरा ॥

आपु जियत लखु आप ठवर करु, मुये कहां घर तेरा १
यहि अवसर नहिं चेतो प्राणी, अन्त कोई नहिं तेरा ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, कठिन काल को घेरा २

हे बन्दे! अपनेमें तो निबेरा करिले अपने जियत अपना ठौर.तौ करु मुयेते तेरा घर कहां है अर्थात् जो सत् असत् कर्म करैगो सो सब नरक स्वर्गादिकन में भोग करैगो तेतो कर्मके.घर हैं तेरे घर नहीं हैं और जो ज्ञानकरिकै आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म प्रकाश में ह्वैकै शुद्धजीवन के रहैगो सो ब्रह्म होना तो धोखा है जब फेरि उत्पत्तिसमय होइगो तब माया धरिलैआवैगी पुनि संसारी ह्वै जाइगो अरु और और देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइ जो तेऊ तेरे घर नहीं हैं जब माया धरि लै आवैगी तब संसारी ह्वै जाइगो जब मरैगो और ये घरन में जाइगो तब बिचार करने की सुधि न रहिजाइगी तेहिते जीतही आपनो घर बिचारु तेरो घर वह है जहां के गये फिरि न आवै सो तैं साहब को अंश है सो साहबके पास घर करु कहे ठौर करु जाते फिरि न संसार में आवै १ सो कबीरजी कहै हैं कि हे प्राणिउ! यहि अवसर में कहे मनुष्य शरीर में जो साहब को नहीं जानौ हौ तो हे सन्तो सुनो! तुमको अन्तकाल में यह कठिन जो काल को घेरा है ताते कौन बचावैगो अर्थात् जहां जहां जाहुगे तहां तहां ते काल तोको खाइ लेइगो साहब बचावनवारे खड़े हैं ताको प्रमाण आगे लिखिही आये हैं "अजहूं लेहुं छँड़ाइ कालसों जो घट सुरति सँभारे" सो साहब को जानिकै साहब के पास जाय जनन मरण छूटि जाय ॥ २ ॥

इति असीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८० ॥

अथ इक्यासीवां शब्द ॥ ८१ ॥

तूतो ररा ममाकी भांति हो सन्त उधारन चूनरी १ बालमीकि

बनबोइया चूनिलिया शुकदेव। कर्म बेनौरा ह्वैरह्यो सुत कातै जय-देव २ तीनलोक ताना तनो ब्रह्माबिष्णु महेश। नामलेत मुनिहारिया सुरपति सकल नरेश ३ जिन जिह्वा गुण गाइया बिन बस्ती का गेह। सूने घर का पाहुना तासों लावै नेह ४ चारिवेद कैंड़ाकियो निरंकार किय राक्ष। बिनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दाक्ष॥ ५॥

तूतो ररा ममा की भांति हौ, सन्त उधारन चूनरी १

जो तुम मन माया ब्रह्ममें लागि रह्यो है सो तुम इनके नहीं हौ तुम तो ररा ममाकी भांति हौ अर्थात् राम जो मैं हौं तिनकी भांति हौ जैसे मैं विष्णु चैतन्य हौं तैसे तुम अनु चैतन्य हौ मेरे अंश हौ सो मेरो जो रामनाम है ताको उधारननाम की चुनरी कबीर सन्त मेरो बनायो है यही रकारबीज मों मकारहू है यहि हेतुते साहब रकारही को कहै हैं अर्थात् जब रामनाम में जपौगे तब यह जानि जाहुगे कि मकार मेरो स्वरूप है रकार साहब को स्वरूप है व कबीर सन्त असार जो है जगत्मुख अर्थ ताको त्यागिकै सार जो है साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण करिकै चूनरी बनाई है सो कहै हैं॥ १॥

बाल्मीकि बनबोइया, चूनिलिया शुकदेव॥
कर्म बेनौरा ह्वै रह्यो, सुत कातै जयदेव २

माटीको है बहुत छिद्र हैं याते शरीर बल्मीक कहे बेमौरि है तामें जो रहै सो बाल्मीकि कहावै सो बाल्मीकि आत्मा है सो वाणीरूपी जो बन कहे कपास है ताको बोवत भयो अर्थात् वही के इच्छाशक्ति भई है और 'शुच शोके' धातु है तेहिते शुक शब्द होइहै ताको जो देव होइ सो शुकदेव कहावै है सो शोच मनके होइहै अर्थात् संकल्प विकल्प मन के होइ है सो शुकदेव मन है सो आत्मा ते जो वाणीरूपी कपास के ढेढ़ा को अनुसार भयो ताको चुनिलियो अर्थात् वाणी मनै ते निकसो है अरु जय करिकै क्रीड़ाकरे अथवा जय विषय क्रीड़ाकरे सो जयदेव कहावै सो

सबको जीति लियो है अज्ञान सो मूलाज्ञान जयदेव है तौने में कर्म बेनौरा ह्वैरह्यो है। विद्या अविद्यामाया सोई सून है जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्मबुद्धि तौन है जाके ऐसो जो जीव जयदेव सो कातै है अर्थात् अहंब्रह्म बुद्धि जब समष्टि जीव कियो है तबहीं मन की उत्पत्ति भई कर्म भयो है संसार प्रकट भयो ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
नाम लेत मुनि हारिया, सुरपति सकल नरेश ३

तीनलोक जो है सोई ताना तन्यो है ताको तीनि खूंटा हैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोक के सतोगुण विष्णु आकाश के तमोगुण महेश पाताल के अरु अनेक जे नाम हैं अनेक जे मत हैं अनेक जे ज्ञान हैं वेद में सोई कपरा तयथार भयो तिनको नाम लेत मुनि और इन्द्र व सब राजा हारिगये वही ब्रह्मरूपी कपरा के गठिया में कसे रहिगये वासों निकसिकै मुक्ति न पावत भये अर्थात् मोको न जानत भये ॥ ३ ॥

बिन जिह्वा गुण गाइया, बिन बस्ती का गेह ॥
सूने घर का पाहुना, तासों लावै नेह ४

कहत का भये कि बिन जिह्वा जो गुण गावै है कहे अजपा जो है सोहं तौने अजपा को साथ गाइकै कहे जपि जाकै बिन बस्ती को गेह जो है ब्रह्म झूठा तौने कपराके गठिया के भीतर बँधि जात भये कहे यह मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं सो वह घर तो देश काल वस्तु परिच्छेद ते सूनहै सो जैसे सूनेघर में पाहुना जाय व कुछ न पावे तैसे जीव उहां कुछ न पावत भयो येतो रामनाम को जगत् मुख अर्थ करि सब यह कपरा बिनो अरु श्रीकबीरजी साहब मुख अर्थ करि कौन कपरा बिनै हैं सो कहे हैं ॥ ४ ॥

चारि वेद कैंड़ा कियो, निरंकार किय राक्ष ॥
बिनै कबीरा चूनरी, पहिरैं हरिके दाक्ष ५

चारि वेदको कैंड़ा करिकै और निरंकार को राक्ष बनाइकै वही

निरंकार के भीतरते निकासि लैजाइकै अर्थात् प्रकाशरूप ब्रह्म कौनको प्रकाश है तब यह बिचारेउ साहब के लोक को प्रकाशहै लोक कौनकोहै यही बिचारकरिबो ब्रह्म ते वेदको तात्पर्य निकसिबो है सो चारिउवेद को कैंड़ा करिकै ब्रह्म जो है राक्ष तौनेते वेद को तात्पर्य निकासि रामनाम की चूनरी श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं बिनौ हौं ताको हरिके जानिबे में दाक्ष कहे दक्ष जे कोई बिरले दासहैं ते पहिरै हैं अर्थात् रामनाम जपिकै साहब को जानै हैं यह पदमें बाल्मीकि को शुकदेव वो जयदेव को जो अर्थ हम कियो है सोई अर्थ है काहे ते कि जई बाल्मीकि, शुकदेव, जयदेव को अर्थ करै हैं तिनको यह ज्ञान नहीं रह्यो कि तीनिलोक जब ताना तनि गये हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश खूंटा भये हैं तब बाल्मीकि, शुकदेव, जयदेव नहीं रहेहैं ॥ ५ ॥

इति इक्यासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८१ ॥

अथ बयासीवां शब्द ॥ ८२ ॥

तुम यहिविधि समझौ लोई गोरीमुख मन्दिर बजोई १ एक सगुण षटचक्रहि बेधै बिनु बृष कोल्हू मांजै । ब्रह्मै पकरि अग्नि में होमै मक्ष गगन चाढ़िगाजै २ नितै अमावस नितै ग्रहण होइ राहुग्रास नित दीजै । सुरभीभक्षणकरै वेदमुख घनबरसै तन छीजै ३ पुहुमिक पानी अम्बरभरिया यह अचरज का कीजै । त्रिकुटी कुण्डल मधि मन्दिर बाजै औघट अम्बर भीजै ४ कहै कबीर सुनोहो सन्तो योगिन सिद्धि पियारी । सदारहै सुखसंयम अपने वसुधा आदि कुँवारी ॥ ५ ॥

तुम यहिविधि समुझौ लोई, गोरीमुख मन्दिर बजोई १
एकसगुण षटचक्रहि बेधै, बिनु बृष कोल्हू मांजै ॥
ब्रह्मै पकरि आग्निमें होमै, मक्ष गगन चाढ़ि गाजै २

वह लोई जो है लपट कहे ज्योति सो ब्रह्माण्ड में है ताको

यहि त्रिधिते तुम समुझौ अथवा लोई कहे हे लोगो ! तुम यहि विधिते समुझौ गोरी जो है कुण्डलिनीशक्ति नागिनी ताही के मुख शरीररूपीमन्दिर कहे मृदङ्ग अथवा मन्दिर कहे घर बाजै है अर्थात् पराबाणी उहैं ते निकसै है सोई पश्यन्ती ते मध्यमा आइ बैखरी में प्रकट होइ है षट्चक्र को बेधिके कुण्डलिनी शक्ति नागिनी जाय है ताके साथ त्रिगुण ते युक्त जो एक सगुणजीव है सो जाय है सो वाकी विधि आगे लिखि आये हैं सो वृषभ तौ उहां नहीं चलैहै और कोल्हू जो कुण्डलिनीशक्ति सो मांजै कहे देह मांजिकै उठैहै सो पांच हज़ार कुम्भक कियो तब श्वासन ते तपित होइहै अथवा खेचरीते सुधाबिन्दु वाके ऊपर पस्यो ताकी शीतलता पाइकै उठै है सो ब्रह्माण्ड में जाइकै अर्थात् जेतने रोज़ समाधि लगायो तेतने दिन रही ताके साथ जीवहू गयो सो कहैहैं कि ब्रह्माण्ड जो रजोगुण है ताको योगाग्नि में होमि दियो सो रजोगुण जस्यो तो तमोगुण जरै है अरु मच्छ जो जीवहै सो नाभी के जल में रह्यो तहांते चलिकै गगन जो ब्रह्माण्ड है तहां गाजै है कहे यह कहै है कि महीं मालिकहौं ॥ १ । २ ॥

नितै अमावस नितै ग्रहण होय, राहुग्रास नित दीजै ॥
सुरभी भक्षण करै बेदमुख, घन बरसै तन छीजै ३
पुहुमिकपानी अम्बरभरिया, यह अचरज को कीजै ॥
त्रिकुटीकुण्डलमधिमन्दिरबाजै, औघट अम्बर भीजै ४

खचरी की दृष्टि तीनहै तामें एक पूर्णिमा है कहें सर्वत्र पूर्ण देखै है व ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा है और अन्तरदृष्टि अमावसहै सो जब अन्तर खेचरी चढ़ी व कालपूतरी आकाश में बंधी कहे ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदामें बधी तब अन्धकार अविद्या ग्रहण ह्वैकै चैतन्यको छाइ लियो अर्थात् प्रथम अन्धकार देखो परो और कछु न देखि पस्यो पुनि बिजली ऐसी चमकी तब तारागण बीर्य है ताकी गति मालूम भई तब प्रथम सूर्यमण्डल पुनि चन्द्रमण्डल देखो पस्यो सो वही

ज्योति में लीनरहै हैं समाधि लगी रहै हैं जब समाधि उतरी तब जीवको अमावस भई तममें पर्‍यो आइ तब सूर्य प्रकाश देखत रह्यो ताको मायारूपी राहु ग्रासिलियो अथवा जब नागिनि को सुधा पियावै है तब बहुतदिन की समाधि लगैहै अब जौन पुरुष रोज़ समाधि लगावैहै और उतारै है सो वहहैं जब समाधि चढ़ाय लैगयो तब याको अमावस ह्वैगयो पुनि तम में पर्‍यो और नित्य ग्रहण होइ है वे चन्द्रमा और सूर्य दुइ नाड़ी हैं तिनको सुषुम्णारूपी राहु ग्रास देइ है अर्थात् ग्रसन करावै है वही सुषुम्णा में लीन कै देइहै जब समाधि लगी तब सुरभी जो है गायत्री मायाकुण्डलिनी शक्ति सो वेदमुखवाणी भक्षण कैलियो अर्थात् वाणीरहित ह्वैगयो और तन छीजैहै कहे दूबर ह्वैजाइ है सो घन बरसै है कहे सुधा बरसैहै याते बनोरहै हैं पुहुमी का पानी जब अम्बर में भरनलगैहै कहे नीचे को बीर्य ब्रह्माण्डमें चढ़ावन लगे है तब शीशे की सराई बनाइ कै लिङ्गद्वारमें डारैहै पानी खैंचै है जब राह साफ़ ह्वैजाइ हैं तब पवनके साथ बीर्य चढ़ै है तब पवन बीर्य के साथ जीवात्मा चढ़िजाइ है त्रिकुटी में त्रिवेणी को स्नान करिकै दशौ अनहद सुननलाग्यो तामें मन्दिर कहे मृदङ्गहै सो बाजै है व घटते कहे बङ्कनाल की राहते जब जीवात्मा जाइहै तब अम्बर जो है गैबगुफा को आकाश सो भीजै है अर्थात् उहां वीर्य पहुँचि जाइहै सो यह आश्चर्य का कीजै ॥ ३ । ४ ॥

कहै कबीर सुनौहो सन्तो, योगिन सिद्धि पियारी ॥
सदा रहै सुखसंयम अपने, बसुधा आदि कुँवारी ५

सो कबीरजी कहै हैं किहे सन्तो ! यह ही तरहकी जो सिद्धि है सो योगिन को पियारि है सो प्रथम तो सिद्धिहो नहीं होइ है जो घुणाक्षरन्यायते सदा सुख संयम में रहै और सिद्धि भई समाधिलगी ताते फेरि वैसही योगी भये अथवा पुहुमीपति भये योग करिकै हम यह शरीर के मालिक ह्वैगये मनादिक हमारे

वश ह्वैगये परन्तु जब यह शरीर छूटिजाइ है और शरीर होइ है तब वह सुधि सब भूलिजाइहै अरु जब पुहुमीपति भयो आपने को राजा मानिलियो सो जब मरि गयो तब पुहुमी आनही की ह्वैजाइहै पृथ्वी कुमारिही रहिजाइ है ॥ ५ ॥

इति बयासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८२ ॥

अथ तिरासीवां शब्द ॥ ८३ ॥

भूला बे अहमक नादाना। तुम हरदम रामहिं ना जाना १ बरबस आनिकै गाय पछारा गला काटि जिउ आप लिया। जीता जिव मुरदा करिडारै तिसको कहत हलाल किया २ जाहि मासुको पाक कहत हैं ताकी उतपति सुनु भाई रजबीरजसों मासु उपानी मासु न पाक जो तुम खाई ३ अपनो दोष कहत नहिं अहमक कहत हमारे बड़ेन किया। उसकी खून तुम्हारी गर्दन जिन तुमको उपदेश दिया ४ स्याही गई सफ़ेदी आई दिल सफ़ेद अजहूं न हुआ। रोज़ा नेवाज़ बांग क्या कीजै हुजरै भीतर बैठि मुआ ५ पण्डित वेद पुराण पढ़ै औ मोलना पढ़ै सो कुरराना। कह कबीर वे नरक गये जिन हरदम रामहिं ना जाना ॥ ६ ॥

भूला बे अहमक नादाना, तुमहरदमरामहिंनाजाना १
बरबसआनिकैगाय पछारा, गलाकाटि जिउआपलिया॥
जीताजिवमुरदाकरिडारैं, तिसको कहत हलालकिया २
जाहि मासुको पाक कहतहैं, ताकी उतपति सुनु भाई॥
रज बीरजसों मासु उपानी, मासु न पाक जो तुम खाई ३
अपनोदोषकहतनहिंअहमक, कहत हमारे बड़ेन किया॥
उसकी खून तुम्हारी गर्दन, जिन तुमको उपदेश दिया ४
स्याही गई सफ़ेदी आई, दिल सफ़ेद अजहूं न हुआ॥
रोज़ा नेवाज़ बांग क्या कीजै, हुजरै भीतर बैठि मुआ ५

पण्डित वेद पुराण पढ़ै, औ मौलना पढ़ै सो कुरराना ॥
कह कबीर वे नरक गये, जिन हरदम रामहिं ना जाना ६

यह पद को अर्थ स्पष्टई है अन्त के तुक को अर्थ करे हैं सब समेटिकै जे हरदम कहे हरसाइत श्वास श्वास में राम को नहीं जानते हैं ते नादान कहे बेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हर-एकके दम कहे प्राण में अन्तर्यामीरूप ते व्यापक परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जे बेवकूफ नहीं जानते हैं ते मौलना पण्डित भूलिगये जो वे आपने हजरामें बैठिकै रोज़ा नेवाज़ किया और कुरान किताब पढ़ा और जो पण्डित अपने घरकी कोठरी में एकान्त बैठिकै बहुत वेद शास्त्र को पढ़ा तौ का किया आखिर नरकही में गये भाव यह है कि काहूको न सुन्यो कि बिना राम को जाने मुक्त ह्वैगये ॥ १ । ६ ॥

इति तिरासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८३ ॥

अथ चौरासीवां शब्द ॥ ८४ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना। झंखतब कतरह्यो निशिबासर मति एकौ नाहिं जाना १ शक्ति न मानै सुनति करतहौ मैं न बदौंगा भाई। जो खोदाय तुवसुनति करनि है आपु काटि किन आई २ सुनति कराय तुरुक जो होना औरतकी का कहिये। अर्धशरीरी नारि बखानै ताते हिन्दूरहिये ३ घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरी को क्या पहि-राया। वो तो जन्म कि शूद्रिनिपरुसा सो तुमपांड़े क्यों खाया ४ हिन्दू तुरुक कहांते आया किन यह राह चलाई। दिलमेंखोज खोजुदिल हीमें भिश्त कहां किन पाई ५ कहे कबीर सुनो हो सन्तो जोर करतु हौ भारी। कबिर न ओट रामकी पकरी अन्तचला पचिहारी ॥६॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ॥
झंखत बकतरहौ निशिबासर, मति एकौ नाहिं जाना १

हे काजी तुम कौन किताब को बखानत रहौहौ निशिबासर

वहीं किताब को बकत रहौहौ अरु वाही में भंखत कहे शङ्का करत रहौहौ सो कुरान किताब तात्पर्यते जो एक साहबको वर्णनकरै है ताको जो तुम्हारी मति न जानत भई तौ तुम कुरान किताब की एकऊ बस्तु न जानत भये ॥ १ ॥

शक्ति न माने सुनति करत हौ, मैं न बदौंगा भाई ॥
जो खोदाय तुव सुनति करति तौ, आपु काटि किन आई २
घालि जनेऊ ब्राह्मण होना, मेहरीको क्या पहिराया॥
वोतो जन्म की शूद्रिनि परुसा, सोतुम पांड़े क्यों खाया३

सुनति किये जो मानते हौ कि हम मुसलमान हैं और या नहीं मानतेहौ कि शक्ति जे माया सोई करै है सो हे भाई! मैं न बदौंगा जो खोदाय तेरी सुनति करतो तौ पेटहीते कटी आउती २ सो हे पण्डित! आपनी आत्मा को साहबकी शक्ति न मान्यो अरु ब्रह्म-साहब को न जान्यो जनेऊ पहिरिकै तुमतौ ब्राह्मण भये और अपनी मेहरी को कहा पहिरायो है जाते वह ब्राह्मणी भई सो तिहारी स्त्री तो जन्म की शूद्रिनि है सो परुसै है और हे पांड़े! तुम खाउ हौ ताते तुम कैसे ब्राह्मण भये ब्राह्मण तो ब्रह्म जाने ते कहावैहै ॥ ३ ॥

हिन्दू तुरुक कहांते आया, किन यह राह चलाई ॥
दिलमें खोज खोजु दिलही में, भिश्त कहां किन पाई ४

आत्मा तो एकईहै हिन्दूं तुरुक ये शरीर के भेद हैं यह शरीर कहां ते आयो है और यह राह कौन चलायो है अर्थात् बीचै ते आये हैं बीचै ते जायँगे सो दिलमें तुम खोजौ उसका खोज दिलही में है और कौन भिश्त पायो है अर्थात् खोदायका बन्दा जो तिहारो जीवात्मा है जो हिन्दू तुरुक में एकईहै सो तिहारे दिलही है उसको जानो तो जानिपरै उसके मिलन को खोज कहे राह वही आत्मा है जब आपने स्वरूप को जानोगे तब वाको पावोगे ॥ ४ ॥

कहैं कबीर सुनो हो सन्तों, जोर करतु है भारी ॥

कबिरन ओट राम की पकरी, अन्त चला पचिहारी ५

कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! सुनौ यह जीव आपने छूटि जाइबे को बड़ो ज़ोर करैहै कहे बहुत उपाय करैहै नानामतन करिकै ते कबीर काया के बीर जे जीव हैं ते औरे औरे मतन में लगिकै राम अल्लाहके ओटके ओर पकरत भये कहे और २ जे मत हैं ते राम अल्लाह के ओटकै देनवारे हैं तिनको पकरिकै अथवा कबीर जे जीव हैं ते रामकी ओट न पकरत भये अर्थात् आपने जीवात्मा को साहब को बन्दा न जानत भये राम अल्लाह को बिसरिगये ताते अन्तमें पचिकै कहे मरिकै अरु वे मतनते हारिकै चले गये जो यह मानिराख्यो तैं कि हमको स्वर्ग बिहिश्त होइ हम ब्रह्म होइँगे सो एकऊ न भये जौनकर्म करि राख्यो तैसोई कर्म नरक स्वर्गन में भोग करनलग्यो ॥ ५ ॥

इति चौरासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८४ ॥

अथ पचासीवां शब्द ॥ ८५ ॥

भूलालोग कहै घर मेरा। जा घरवा में फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा १ हाथी घोड़ा बैल बाहनो संग्रहकियो घनेरा। बस्ती में से दियो खदेरी जङ्गलकियो बसेरा २ गांठीबांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा। बीबी बाहर हरम महलमें बीच मियांको डेरा ३ नौमनसूत अरुभि नहिं सुरझै जन्म २ अरुझेरा। कहै कबीर सुनो हो सन्तो यह पद करो निबेरा ॥ ४ ॥

भूलालोगकहैघरमेरा॥जाघरवामेंफूलाडोलैसोघरनाहींतेरा १

साहबको पार्षदरूप जो है हंसस्वरूप आपनो सांच शरीर ताको भूले लोग कहैहैं कि यह मिथ्या जो स्थूल शरीर सो हमारा है सो जा घर स्थूल शरीरमें तैं फूला डोलै है मेरो शरीर है सो तेरा घर कहे शरीर नहीं है ॥ ४ ॥

हाथी घोड़ा बैल बाहनो, संग्रह कियो घनेरा ॥

बस्ती में से दियो खदेरी, जङ्गल कियो बसेरा २
गांठीबांधी खरच न पठयो, बहुरि कियो नहिं फेरा॥
बीबी बाहर हरममहलमें, बीच मियां को डेरा ३

बहुत हाथी, घोड़े, बैल इत्यादिक बाहन को संग्रह कियो परन्तु जब तैं शरीररूपी बस्ती ते खदेरि जाइगो कहे शरीर छूटि जाइगो तब जङ्गल में कहीं पीपर के तर भूत ह्वैकै बसेर कहे बास करैगो अरु वह शरीरहु को बाहर खदेरिलै श्मशान में जारि देइँगे तब वह हाथी घोड़े औरहीके ह्वैजाइँगे २ गांठी बांधि धस्यो अरु खर्च न पठयो कहे पुण्य न कियो जो वह लोक में मिलिकै बहुरिकै फेरा न कियो कहे यह शरीर में नहीं पावैहै सो बीबी जो है साहब की दई सुरति सो बाहर है कहे संसार मुख ह्वै रही है और हरमकहे लौंड़ी जो है माया सो महल में है कहे सब शरीरन में है ताके बीच में मियां जो है जीव ताको डेरा है ताको वह माया घेरे है॥ ३॥

नौमन सूत अरुझि नहिं सुरझै, जन्म जन्म अरुझेरा॥
कहैं कबीर सुनोहो सन्तो, यह पद करो निबेरा ४

सो नौमन कहे नित्यही नवीन जो मन है अर्थात् मनके दिये नाना शरीर होय हैं सो नाना कर्म नानामत जे सूत हैं तिनमें अरुझिकै सुरझै नहीं है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो! यह पदको निबेरा करो कहे पांचों शरीर में अरुझो जो है मन ताते भिन्न होउ तो तुम शरीरन सें भिन्न ह्वैजाउ॥ ४॥

इति पचासीवां शब्द समाप्तम्॥ ८५॥

अथ छियासीवां शब्द॥ ८६॥

कबिरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना। गुरुकी कही करत नहिं कोई अमहलमहलदेवाना १ सकलब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा। मनमतकर्मधरैसबदेही नादबिन्दु बिस्तारा २

सकल कबीराबोलैबानी पानीमें घरछाया। लूटिअनन्तहोतिघट-भीतर घटकामर्म नपाया ३ कामिनिरूपी सकलकबीरा मृगाचरिंदा होई। बड़बड़ज्ञानी मुनिवर थाके पकरिसकै नहिं कोई ४ ब्रह्मा बरुणकुबेरपुरन्दर पीपा प्रहलदचाखा। हिरणाकुशनख उदरबिदारा तिनहुंक काल न राखा ५ गोरखऐसोदत्तदिगम्बर नामदेव जयदेव-दासा। उनकीखबरि कहतनहिं कोई कहांकियेहैं बासा ६ चौपरखेल होत घटभीतर जन्मकेपांसा ढारा। दमदमकी कोइ खबरि न जानै करि न सकै निरवारा ७ चारि दिशा माहेमण्डरचोहै रूमसामबिच दिल्ली। ताऊपर कछु अजबतमाशा मौरहैं यमकिल्ली ८ सब अवतार जासुमहिमण्डलअनन्तखड़ोकरजोरे। अद्भुतअगमअथाह रचो है ई सब शोभा तोरे ९ सकलकबीरा बोलै बीरा अजहूं हो हुशियारा। कह कबीर गुरु सिकिलीदर्पण हरदम करो पुकारा॥ १० ॥

कबिरा तेरो घर कँदला में, या जग रहत भुलाना॥
गुरुकी कही करत नहिं कोई, अमहल महलदेवाना १

कबीरजी कहै हैं कि हे कबिरा! काया के बीर, जीव! तेरो घर तो कँदला में है कहे आनन्दको कन्द कहे सारांश जो है साहब को धाम तहां है तेरो घर या जगत् में नहीं है तैं नाहक भुलान रहैहै यहां गुरु कहे सबते श्रेष्ठ जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि अबहूं जो मोको जानो तो मैं कालते छोड़ाइलेउँ तिनको कह्यो कोई न मानिकै अरु आनन्दको कन्द उनको धाम छोड़िकै अमहल महल कहे जो कछु बस्तु नहीं है ऐसो जो है धोखाब्रह्म तामें अरु कोई माया के प्रपञ्चमें देवाना ह्वैरह्योहै॥ १ ॥

सकल ब्रह्म में हंस कबीरा, कागन चोंच पसारा॥
मन मत कर्म धरै सब देही, नाद बिन्दु बिस्तारा २

हे हंस, कबीर कायाके बीर जीव! ते साहब को ब्रह्महीं कहैहैं तिनको कहिबो कागन कैसी चोंच को पसारिबो है जैसे कागनके आगे जो दूध भात व आमिष धरिदेउ तो दूध भात न खाय

आमिषही खाय तैसे साहब पुकारतई जाय हैं कि तुम मेरे पास आवो मैं तुमको हंसरूप देउँ ताको छोड़िकै जीव मायाब्रह्म के धोखा में लगो कागई होइ है नाना कर्म के बासनन ते शरीर छूटत में जहां जहां मन को मत होइहै कहे जहां जहां मन जाइ है तहां तहां सब देह धरै है नादबिन्दु के बिस्तारते सो नादबिन्दु को बिस्तार लिखि आये हैं ॥ २ ॥

सकल कबीरा बोलै बानी, पानी मों घर छाया ॥
लूटि अनन्त होति घटभीतर, घटका मर्म न पाया ३

अरु ज्ञानी जे सब जीव हैं ते यह बाणी बोलै हैं कि यह शरीर पानी को घर छाया है कहे पानी को बुल्ला है न जानो कब बिनशिजाय कहे छूटिजाय सो मुखते तो यह कहै है अरु घट कहे शरीर के भीतर अनन्त कहे बिना अन्त को जो है साहब ताकी लूटि होइ जाइ है ताको नहीं देखै है यह आत्मा साहबको है ताको भुलाइकै औरे औरे मतन में लगाइ देइ है वाको मर्म नहीं पावै है ॥ ३ ॥

कामिनिरूपी सकल कबीरा, मृगाचरिन्दा होई ॥
बड़बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके, पकरि सकै नहिं कोई ४

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनिरूपी है कहे मृगारूपी है तामें जो चलै सो चरिन्दा कहावै है सो चरिन्दा कहे चलनवारो जो है मन सो मृगा है जब यह जीवात्मा को यमदूत एक पुतरा देखावै हैं तब वह पुतरा में मनोमय जो लिङ्ग शरीर है सो जात रहै अरु वहीके साथ जीव प्रवेश करिजाइ है तब यमराज नाना कर्म भोग करावै हैं जौने शरीर में मन लोभ्यो मरतमें वाको स्मरण भयो सोई शरीर कर्म भोगकरिकै धारण कियो सो मारि तो यह भांति ते जाय है वह मन्त्र को और आत्मा के स्वरूप को कोई न पकरि पायो अर्थात् कोई न जान्यो ॥ ४ ॥

ब्रह्मा बरुण कुबेर पुरन्दर, पीपा प्रहलाद चाखा ॥

हिरणाकुश नखउदरबिदारा, तिनहुँक काल न राखा ५
गोरख ऐसो दत्तादिगम्बर, नामदेव जयदेवदासा ॥
उनकीखबरि कहत नाहिं कोई, कहां किये हैं बासा ६

ये चारि तुकनमें जिनको कहि आयेहैं तिनको काल जब खाइ लियोहैं कहे इनके शरीर जब छूटिगये हैं तब ये कहां बास कियो है यह कोई खबरि न जानत भयो सो जहां गये हैं अरु जहां के गये नहीं आवैहैं तौने लोक को मूढ़ जीव न जानत भये इहां नरसिंहो जी को लिख्यो तामें धुनि यह है कि उपासक आपने आपने उपास्यन के साथ साहबही के लोक जाइ हैं उपास्य उपासक दोऊ जहां परम मुक्तावस्था में जायँ सो वह साहब के लोक को ये बद्धविषयी जीव कैसे जानैं ॥ ५ । ६ ॥

चौपर खेल होत घट भीतर, जन्मके पांसा ढारा ॥
दम दमकी कोइ खबरि न जानै, करि न सकै निरुवारा ७

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये अन्तःकरणचतुष्टय हैं सोई चौपरि है ताको खेल घटके भीतर ह्वैरह्यो है इनहीं के योग ते नाना जन्म होइ हैं सोई पांसा ढारिबो है सो दम दम कहे आपने श्वास श्वास की खबरि तो कोई जानै नहीं है कि आवत जातमें रकार मकार विना जपे कब अन्तःकरण शुद्ध ह्वैसकै है अरु को निरुवार करिसकैहै अर्थात् कोई निरुवार नहीं करिसकै है अर्थात् या नहीं जानै है कि हमारो जीवात्मा कहां जपै है रकार मकार जीवात्मा सदा जपै है तामें प्रमाण "रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः । रामरामेति वै मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा" ॥ ७ ॥

चारिदिशा महिमण्ड रचो है, रूमसाम बिच दिल्ली ॥
ता ऊपर कुछ अजबतमाशा, मारे है यम किल्ली ८

महिमण्डल जो है शरीर तामें नाभि, हृदय, कण्ठ, त्रिकुटी ये चारि दिशा रचत भये अरु रूम कहे सहस्रदलकमल है अरु साम सुरतिकमल है तौने सुरतिकमल के बीच में दिल्ली है परन्तु

गुरुको स्थान ता स्थानके ऊपर अजब तमाशा है सो कौन योगी प्राण चढ़ाइके सहस्रदलकमल लों जाइ है कोई परमयोगी प्राण चढ़ाइके सुरतिकमललों जाइ है परमपुरुष स्थानके ऊपर जहां अजबतमाशा है तहां कोई नहीं जाइसके है काहे तेकियम किल्ली मारेहै कहे दशवां दुवार बन्द कियेहै अजबतमाशा वह कैसे देखै सो कहै हैं कि यह ब्रह्मरन्ध्र ते साकेतलोक जाको कहै हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को धाम वही साकेतलोक को दशवां स्थान फ़क़ीरलोग जाहूत कहै हैं तहांलों ब्रह्मज्योति की डोरि लगी है वही डोरी को मक्रतार कहै हैं सो वह मक्रतार सुषुम्णा में लगो है जब परमगुरु रामनाम बताई है तब वही सुषुम्णा ह्वै कै मक्रतार की डोरी ह्वैकै साहब के लोक जाय है तहां अजब तमाशा कौनहै कि उहां के त्रिगुण गुल्मलता देखे तो पञ्चभौतिक से परेहै पै पञ्च-भौतिक नहीं है आनन्दरूप है ॥ ८ ॥

सब अवतार जासु महिमण्डल, अनँत खड़ो करजोरे ॥
अद्भुत अगम अथाह रचोहै, ई सब शोभा तोरे ९

सकल अवतार व ईश्वर अनन्त जिनके आगे करजोड़े खड़े हैं वह साहबलोक कैसोहै अद्भुतहै कहे आश्चर्यहै बचनमें नहीं आवै है व अगम है कहे उहां काहूकी गम नहीं है व अथाह है कोई बर्णन करिकै थाह नहीं पायो कि यतनै है सो हे जीव! यह सब शोभा तोरे साहबकी हैं तेरे देखिबे योग्य है काहेते कि साहबौ द्विभुज हैं और तैंहूं द्विभुज है और तो सब ईश्वर अवतार कोई अष्टभुज कोई चतुर्भुज मत्स्य कूर्म इत्यादिक हैं अथवा साहब के लोकमें जे ईश्वर अवतार आदिक हैं ते सब अपनी शोभा को मण्डल तोरे हैं अर्थात् उनकी शोभा साहब की शोभाते मन्द देखी परैहै ॥ ९ ॥

सकल कबीरा बोलै बीरा, अजहूं हो हुशियारा ॥
कह कबीरगुरुसिकिलीदर्पण, हरदम करो पुकारा १०

हे सबके बीरौ कायाके बीर जीवो ! वही बीरा लेउ अर्थात् परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बीरा लेउ अजहूं हुशियार होउ जे मतन में गुरुवालोग समुझाइ समुझाइ लगाइ दिये हैं तिन मतन में जब भर तुम्हरे रहौगे तब भर तुम्हारो जन्म मरण न छूटैगो ताते मतन को छोड़ि दे सुरति कमल में जे परम गुरु हैं ते सिकिलीगर हैं तुम्हारे अन्तःकरण साफ़ करिबेको ते राम बतावै हैं सो या राम नाम सुनिकै हरदम पुकार करो तब साहबके इहां पहुँचौ अरु सब अवतार ईश्वर उनके द्वारे हाथ जोरे खड़े हैं ताभें प्रमाण शिवसंहिता में हनुमान्जी प्रति अगस्त्यजी कहै हैं "आसीनं तमयोध्यायां सहस्रस्तम्भमण्डिते। मण्डपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥ मत्स्यः कूर्मकिरिनैंको नारसिंहोऽप्यनेकधा। वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च। देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च ॥ पृश्णिगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च। वासुदेवोपरोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः ॥ प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपि सर्वदा। रामं सदोपतिष्ठन्ते रामदेहा व्यवस्थिताः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूलत्वान्निरीश्वरः ॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिः प्रभुः। विष्णुस्स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदान्तकृद्विभुः ॥ ब्रह्मास ब्रह्मणां कर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणां स पती रुद्रो रुद्रकोटिनियामकः ॥ चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च। अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च। महाभैरवकादिकोट्यर्बुदशतानि च ॥ गन्धर्वाणां सहस्राणि देवकोटिशतानि च। सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीराम इतीरितः" (इति) और कबीरहूजी को प्रमाण "जहँ सतगुरुखेलैंऋतुबसन्त। तहँपरमपुरुषसबसाधुसन्त ॥ वहतीन लोकते भिन्नराज। तहँअनहदधुनिचहुँपासबाज ॥ दीपकबरैजहँ निराधार। बिरलाजनकोई पावपार॥ जहँकोटिकृष्णजोरेदुहाथ।

जहँकोटिविष्णुनावैंसुमाथ ॥ जहँकोटिनब्रह्मापढ़पुरान । जहँकोटि महादेवधरैंध्यान ॥ जहँकोटिसरस्वतिकरैंराग । जहँकोटिइन्द्रगावनेलाग ॥ जहँगणगन्धर्बमुनिगनिनजाहिं । सोतहँवांपरकटआगुआहिं ॥ तहँचोवाचन्दनअरु अबीर । तहँपुहुपबासभरिअतिगँभीर ॥ जहँसुरतिसुरङ्गसुगन्धलीन । सबवहीलोकमेंबासकीन ॥ मैंअजरदीपपहुँच्योसुजाइ । तहँअजरपुरुषके दरश पाइ ॥ सो कह कबीरहृदया लगाइ । यह नरक उधारण नामजाइ " ॥ १० ॥

इति छियासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८६ ॥

अथ सत्तासीवां शब्द ॥ ८७ ॥

कबिरातेरोघरकन्दलमें, मनैअहेराखेलै। बपुबारीआनन्दमीर्गा रुचीरुचीशरमेलै १ चेततरावलपावनषण्ढासहजाहिमूलैबांधै। ध्यानधनुषधरिज्ञानबानबनयोगसारशरसाधै २ षटचक्रबेधिकमलबेध्योजबजाइउज्यारीकीन्हा। कामक्रोधअरुलोभमोहयेहांकिसाउजनदीन्हा ३ गगनमध्यरोंक्योसोद्वारा जहांदिवसनहिंराती। दासकबीरजायसोपहुँच्योसबबिछुरेसंगसँघाती ॥ ४ ॥

कबिरा तेरो घर कन्दलमें, मनै अहेरा खेलै ॥
बपुबारी आनन्द मीर्गा, रुची रुची शरमेलै १

कबीरजी कहै हैं कि हे कबीर कहे काया के बीर जीव ! तेरो घर कन्दलामें है कहे आनन्द को कन्द कहे सार जो साहब को धाम है तहां है जो कहो संसार कैसे भयो तौ तेरो बपु शिकारी बपुरी जो है नाना शरीर तेई बारी हैं शिकारी जहां हांकै है सो बारी कहावैहै तहां जाइकै विषयानन्द ब्रह्मानन्द जे हैं मृगा को शिकार खेलेहैं कोई विषयानन्दरूप मृगा में वृत्ति शर मारि भोग करेहैं कोई शिकारी मन ब्रह्मानन्दरूप मृगा को वृत्ति शर मारि भोग करै हैं ॥ १ ॥

चेतत रावल पावन षण्ढा, सहजाहि मूलै बांधै ॥

ध्यान धनुषधरि ज्ञानवान बन, योगसार शर साधे २
षटचक्र बेधि कमल बेध्यो, जब जाइ उज्यारी कीन्हा ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह ये, हांकि साउजन दीन्हा ३

जो शिकार खेलबो कैसे छूटै या मनको तौ रावल कहे सबके राजा ताके पावन कहे पायन की चेतकरत कहे स्मरण करत अथवा पावन कहे पवित्र ह्वैकै षण्ढ कहे नपुंसक ब्रह्म तद्रूप जो जीव सो सहज समाधि लगाइकै मूलबन्ध करै यहै ध्यान जो है धनुष् तौनेको धरिकै साहब में आत्मा को लगाय दीबो जो बाण यही योगसाररूप शर साधे २ सोई योग बतावै हैं जे हठयोग करै हैं ते कुण्डलिनी उठायकै छइउ चक्र बेधे हैं इहां कुछ कुण्ड-लिनी उठाइबे को प्रयोजन नहीं है वह जो ब्रह्मज्योतिकार की मूलाधार चक्रतेलै ब्रह्माण्ड ह्वै साकेत में लगी है सो छइउ चक्र को बेधिकै लगी है सुषुम्णा नाड़ी ह्वैकै ता ज्योतिरूपी डोरी में गुरु जो युगुति बतावै है तौनी युगुति ते सुरतिके साथ जब जीव को साजि दियो तब छइउ चक्र को आपही वह ज्योति बेधे है सो वह ज्योति के भीतर ह्वैकै षट्चक्र बेधिकै सहस्रदलकमल को बेध्यो तब उहां उजियारी देख्यो जाइ ब्रह्म प्रकाश की तब काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरई जे सावज हैं तिनको हांकि दीन्ह्यो कहे दूरिकै दीन्ह्यो ॥ ३ ॥

गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा, जहां दिवस नहिं राती ॥
दासकबीर जाय सो पहुँच्यो, सब बिछुरे संग सँघाती ४

जहां सुरति कमल में परमगुरु रकार मकार कहै हैं और दशौ द्वार बन्द हैं तहां न दिवस है न राति है वह प्रकाशरूप ब्रह्मई है सो उहां परमगुरुते रामनाम सुनिकै वही नाम ते दशवों द्वार खोलिकै वही डोरी ह्वैकै दास जो कबीर जीव है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोक को पहुँचे जाइ हैं तब संगके सँघाती जे हैं चारिउ शरीर अरु प्रकाशरूप ब्रह्म जो है कैवल्य शरीर ताहू को

बिछोह ह्वै जाइ है अथवा कबीरजी कहै हैं कि मैं जो हौं साहब को दास सो अनिर्बचनीय पार्षद शरीर जो है हंसशरीर ताको पाइकै वोही डोरी ब्रह्मज्योति ह्वैकै अनिर्बचनीय जो है साहबको धाम तहां पहुँच्यो जाइ तहां हे जीवो ! तुमहूं पहुँचौ यह भ्रम में काहे परेहौ तुमतौ साहब के आनन्दकन्द धामके हौ साहब के दास ताते रहित और जौन तुम मानौ हौ सो तुम नहीं हौ ॥ ४॥

इति सत्तासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८७ ॥

अथ अट्ठासीवां शब्द ॥ ८८ ॥

गुरुमुख ॥ सावज न होइ भाई सावज न होइ । वाकी मांसु भखै सबकोइ १ सावजएक सकलसंसारा अबिगत वाकी बाता । पेट फारि जो देखियेरेभाई आहिकरेज न आँता २ ऐसीवाकीमांसु रेभाई पलपलमांसुबिकाई । हाड़गोड़लैघूरपँवारै आगिधुवां नाहिं खाई ३ शिर औ सींग कछू नहिं वाके पूंछ कहां वह पाई। सब पण्डित मिलि धन्धेपरिया कबिर बनौरी गाई ॥ ४ ॥

सावजनहोइभाईसावजनहोइ। वाकीमांसुभखै सबकोइ १

साहब कहै हैं कि जेहि शब्दब्रह्म में तुम लगेहौ त तुमको वही भुलायदियो सो सावज न होइ तौने शब्द को तात्पर्य तुम नहीं बूझो वहीके मांसको तुम सब भक्षौहौ कहे बाणी सब कहौहौ और वही मांस सब जगत् है ताही को भक्षौ हौ कहे भोग करौ हौ अरु वाको तात्पर्य सत्यपदार्थ जो मैंहौं ताको नहीं जानौहौ संपूर्ण बाणीको बिस्तार असत्य है मैंहीं सत्य हौं ॥ १ ॥

सावज एक सकल संसारा, अबिगत वाकी बाता ॥
पेटफारि जो देखिये रे भाई, आहि करेज न आँता २

सो वाको पेट फारिकै जो देखिये अर्थात् जो वाको बिचारिकै देखिये तात्पर्यते तो जो तुम बिचार करिराख्यो है कि शब्दब्रह्म के अर्थ को सारांश करेज निर्गुण ब्रह्म है सो नहीं है वेद तो

तात्पर्यते मोको बर्णन करै है अरु त्रिगुण माया आंतहै सो वाकी बात अविगत है कहे अव्यक्त है काहूके जानिबे योग्य नहीं है जो मोको जानै है सोई वह सावज को जानै है ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसु रे भाई, पल पल मांसु बिकाई ॥
हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै, आगि धुवां नहिं खाई ३

पल का कहावै है सो वह शब्द ब्रह्मकी मांसु जो है बाणी सो हे भाइउ! ऐसी है कि पल पल कहे टकाटका को बिकाइ है अर्थात् को बिकाइ है तामें प्रमाण- कबीरजी को चौरासी अङ्गकीसाखी "गलीगली गुरुवा फिरैं दिक्षा हमरी लेहु। की बूड़ौकी ऊबरौ टका परदनी देहु" थोरे थोरे अक्षरकेमन्त्र गुरुवालोग देइहैं व शिष्यन सों धन लेइहैं अरु केवल शब्दब्रह्मै ते मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण "शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि। श्रमस्तस्य श्रमफलं ह्यधेनुमिव रक्षत" (इति भागवते) सो जब वे गुरुवा मन्त्र दियो तब बाणी को जो हाड़गोड़रहै ज्ञानकाण्ड-कर्मकाण्ड ताको घूर पँवारिदियो कहे ज्ञानकाण्डी कर्मकाण्डी घूर हैं तहां फेंकिदियो उपासनाकाण्डी वह मन्त्रदैकै उपासनामें लगाइ दियो तहां मन्त्र दियो सो उन न जप्यो जाते ज्ञानाग्नि उत्पन्न होइ अरु श्रम जरै व धुवां जेहैं कल्मष ते निकसिजायँ सो बाणीरूपी वह मांसु ज्ञानाग्नि ते पकाइ नहीं गई अर्थात् वह मन्त्र को अर्थ न जान्यो व न अभ्यास कियो वह अज्ञानरूपी धुवां गुँगुआतै रह्यो निर्धूम न भई ॥ ३ ॥

शिर औ सींग कछू नहिं वाके, पूंछ कहां वह पाई ॥
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया, कबिर बनौरी गाई ४

और शिर जे हैं नित्यशब्द व कार्यशब्द ते वाके नहीं हैं और चारि जे सींगहैं नाम, धातु, उपसर्ग, निपात ते वाके नहीं हैं काहेते कि वाको अनिर्बचनीय कहै हैं तो पूंछ जो है ब्रह्म हैजैबो मोक्षताको कहां पावैगो अर्थात् जहां भर बचनै में आवै है सो सब मिथ्या

है जो कहो मोक्षऊको रहिजाइबो न कह्यो तो रहिकागयो तो शब्द तो तात्पर्य करिकै वर्णनकरै हैं कि निर्गुण सगुण के परे परम-पुरुष जो मैं ताको सदाको अंश यह जीव है यह जो विचारकरै कि मैं उनको हौं तो बद्धही नहीं है मुक्त काहेते होइ मुक्तही बनो हो बद्धमुक्त तो कथनमात्र है तामें प्रमाण "अज्ञानसंज्ञो भव-बन्धमोक्षौ द्वौ नाम नान्यौ स्त ऋतज्ञभावात्। अजस्त्रचिन्त्यात्मनि केवले परे विचार्यमाणे तरणाविवाहिनी" (इति भागवते) अरु तात्पर्यकरिकै शब्द यह मोहीं को वर्णनकरैहै सो भागवतादिकन में प्रसिद्ध सुनैहै तऊ मूढ़ नहीं मानै हैं "शब्दब्रह्मपरब्रह्ममभोभे शाश्वती तनू" अपने अपने अर्थ बनाइकै गाइरहेहैं मोको नहीं जानै हैं सब पण्डित धन्धेमें परिरहे हैं नानामत बनाइरहेहैं तिनकी बनौरी को कबीर जे हैं जीव उनके सबशिष्य ते गावै हैं अर्थात् अपने अपने आचार्यन के मत में आरूढ़ ह्वैकै जो और कोई कहै है तो लड़ै हैं अरु पारिख करिकै सब वेदनको तात्पर्य जो मैं हौं ताको नहीं जानै हैं शब्दब्रह्म तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर जो मैं हौं ताही को वर्णन करै हैं ॥ ४ ॥

इति अट्ठासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८८ ॥

अथ नवासीवां शब्द ॥ ८९ ॥

सुभागे केहि कारण लोभ लागे रतन जन्म खोये । पूरब जन्म भूमिके कारण बीज काहेको बोये १ पानीसे जिन पिण्डै साजै अगिनिहि कुण्ड रहाया । दशैमास माता के गर्भकढ़ि बहुरि लागिलीमाया २ बालकसे पुनि वृद्धहुआ है होनीरही सो होये । जब यम ऐहैं बांधिलैजैहें नयन भरी भरि रोये ३ जीवनके जिन आशा राख्यो काल गहे है श्वासा । बाजी है संसार कबीरा चितचेति ढारो पासा ॥ ४ ॥

सुभागे केहि कारण लोभ लागे, रतन जन्म खोये ॥
पूरब जन्म भूमि के कारण, बीज काहे को बोये १

पानीसे जिन पिण्डें साजे, अगिनिहि कुण्डरहाया ॥
दशैमास माता के गर्भ कढ़ि, बहुरि लागिली माया २
बालक से पुनि वृद्ध हुआ है, होनी रही सो होये ॥
जब यम ऐहैं बांधि लैजैहैं, नयन भरी भरि रोये ३
जीवनकै जिन आशा राख्यो, काल गहे है श्वासा ॥
बाजी है संसार कबीरा, चित चेति ढारो पासा ४

हे सुभागे, जीव! तैंतो मेरो है यह संसार में जो तैं लोभ कियो सो कौने कारण कियो काहेते कि आपने दुःख पाइबे को कोई उपाय नहीं करै है जैसे मन आदिक करिकै संसार में परिगयो तैसे जो मेरो स्मरण करतो मैं हंसस्वरूप देतयों तामें स्थित ह्वैके मेरे धाम को पहुँचते सो तैं रत्न जो है यह मानुषजन्म ताको धोइ डार्यो पूर्वजन्म की भूमिकाके कारण कहे पूर्व जन्म में जैसे कर्म करिराखेहैं तैसे सुख दुःख यह जन्म पावै है अरु जो यह जन्म करै हैं सो वह जन्म में दुःख सुख पावैगो सो आँखिन तो देखि लिये ओई सुख दुःख के कारणरूप बीज तैं काहेको बोये और सबपदन को अर्थ स्पष्टई है॥ १ । ४ ॥

इति नवासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८९ ॥

अथ नब्बे शब्द ॥ ९० ॥

गुरुमुख ॥ सन्तमहन्तौ सुमिरौ सोई। जो कालफांससों बाचा होई १ दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्या स्वाद भुलाना । सलिला मथिकै घृतको काढ़्यो ताहि समाधिसमाना २ गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना। ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ३ बशिष्ठ शिष्ठविद्यासम्पूरण राम ऐसे शिष शाखा। जाहिरामको करता कहिये तिनहुँक काल न राखा ४ हिन्दूकहै हमैं लैजरबै तुरुक कहै मोर पीर। दूनों आयदीनमोंझगरैं देखै हंस कबीर ॥ ५ ॥

आगे के पद में कहिआये कि काल श्वासा गहे है सो चेति पांसा ढारो कहे बिचारि बिचारि काम करो सोई बिचार बतावै है॥

सन्तमहन्तौसुमिरौसोई। जो कालफांससों बाचा होई १

साहब कहैहैं कि हे सन्तमहन्तो! ताको सुमिरण करो जो कालफांस ते बचो होई॥ १॥

दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना, मिथ्या स्वाद भुलाना॥
सलिलामथिकैघृतको काढ़्यो, ताहि समाधि समाना २

जो कहो दत्तात्रेय आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्महीं ह्वैगये ते तो वाके मर्म को कहे ज्ञानको जान्यो है सो प्रथम दत्तात्रेयऊ नहीं जान्यो काहेते कि वह तो धोखा मिथ्या है सो तेऊ मिथ्या स्वाद में भुलाइ गये यह न बिचार्यो कि जौन बिचार करत करत रहिजाय है सो मेरो स्वरूप परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को दास है जब वे विग्रह देइ हैं आपनो तब उनके पास जाइ है सो यह तो न जान्यो पानी को मथिकै घृत काढ़्यो वही धोखा ब्रह्मकी समाधि में समाइ रह्यो सो कहूं पानिहूते घृत निकसै है उनके हाथ धोखई लग्यो॥ २॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना, योगयुक्ति अनुमाना॥
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा, पारब्रह्म नहिं जाना ३
बशिष्ठ शिष्ठ बिद्यासम्पूरण, राम ऐस शिष शाखा॥
जाहि रामको करता कहिये, तिनहुँक काल न राखा ४

अरु योगयुक्ति को अनुमान करिकै गोरख पवन राखै नहीं जान्यो कहे प्राण चढ़ावै नहीं जान्यो काहेते कि ऋद्धि सिद्धि संयम में लागिगये ब्रह्म के पार जे साहब हैं तिनको न जान्यो ३ और वशिष्ठ जे हैं संपूर्ण विद्या में श्रेष्ठ तिनके राम ऐसे कहे श्री रामचन्द्रही के बरोबर रघुबंशी जिनमें शिष्य शाखा भये तिनहूं को काल नहीं राख्यो अर्थात् यह शरीर उनहूं को न रह्यो व राजन में जिनको रामको कर्ता कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको जे उत्पत्ति

कियो है ऐसे दशरथौ को काल न राख्यो इ गोरख आदिक योगी दत्तात्रेयादिक ज्ञानी वशिष्ठआदिक ब्रह्मर्षि ई सबते श्रेष्ठ हैं याते संयोगी, ज्ञानी, ब्रह्मर्षि पृथ्वी के आइ गये और दशरथ महाराज को श्रीरामचन्द्र के बिछोह होत प्राण छूटिगयो सो ये सब राजर्षिते श्रेष्ठ हैं ताते दशरथ महाराज के कहे सब राजर्षि पृथ्वीके आयगये तिनहूंको काल न राखत भयो अर्थात् शरीरधारी कोई नहीं रहिजाय है कोई योग करि जो जियो तो ब्रह्मा के दिन भर जियो महाप्रलय में जब ब्रह्मा को नाश ह्वै जाइ है तब ब्रह्माण्डई नहीं रहै है और कोई कैसे रहै सो हंस समाधि लैके मिलत है ॥ ४ ॥

हिन्दू कहै हमैं लै जरबै, तुरुक कहै मोर पीर ॥
दूनों आइ दीनमों झगरैं, देखै हंस कबीर ५

जाको हंसस्वरूप साहब देइ है सो हंसस्वरूप में स्थित ह्वैके साहब के पास जाइ है सो साहब कहै हैं कि जो मोको जानै तो मैं हंसस्वरूप देउँ तामें स्थित ह्वैके मेरे पास आवै सो मोको तो जानै नहीं है हिन्दू कहै हैं कि हम वह ज्ञानाग्नि कैकै सबकर्म जारिदेइँगे ब्रह्म ह्वै जाइँगे और मुसल्मान कहै हैं कि पिरान जाहिर जो मक्का है तहां हमारो पीर है हमारे खाविन्द हैं ते हमारे कर्म सब जारि देइँगे फिरि दोनों आइ दीनमें झगरै हैं वे कहै हैं कि तुम्हारा खोदाय झूठा है वे कहै हैं कि तुम्हारा ईश्वर झूठा है सो जीवात्मा तो मेरो बन्दा है सो आपने स्वरूप को जानिकै मोको जानै नहीं है आपने आपने अनुमानकरि आपने आपने खाविन्द बनाइलिये हैं तिनको झगरा देखता कौन है जो सबके ऊपर होइ है सो साहब कहै हैं कि जिनको मैं हंसस्वरूप दियो है मेरे पास पहुँचे हैं ते सबके ऊँचे ह्वैकै उनको झगरा देखते हैं और हँसते हैं कि सांच साहब तो एकई हैं ताको जानै नहीं हैं आपुस में झगरते हैं ॥ ५ ॥

इति नब्बेवाँ शब्द समाप्तम् ॥ ९० ॥

अथ इक्यानबे शब्द ॥ ९१ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनुधरि सुखी न देखा । उदयअस्त की बात कहतहौं ताकर करहु बिबेखा १ बाटेबाटेसब कोइदुखिया क्या गिरहीबैरागी । शुकाचार्यदुखहीके कारण गर्भैमायात्यागी २ योगी दुखिया जङ्गम दुखिया तापस को दुख दूना । आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोईमहल नहिं सूना ३ सांचकहौंतौसब जगखीझै झूठ कहो नहिं जाई । कहकबीर तेईभे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥ ४ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा, तनु धरि सुखी न देखा ॥
उदय अस्तकी बात कहतहौं, ताकर करहु बिबेखा १

जाको संसार में देखै हैं ताको सबको दुखियै देखैं तनु धरिकै सुखिया काहूको नहीं देख काहेते कि गर्भते जो जीव निकस्यो तो माया लपटि जातीहै सो उदय अस्त कहे सब संसार की बात कहौ हौं अरु ताकर तुम विवेक करत जाउ ॥ १ ॥

बाटे बाटे सब कोइ दुखिया, क्या गिरही बैरागी ॥
शुकाचार्य दुख ही के कारण, गर्भै माया त्यागी २

आपने आपने बाट में कहे आपने आपने मतमें सबको दुखिया देखते हैं क्या गिरही क्या वैरागी अर्थात् त्रिगुण के मत में सब परे हैं माया को दुःख कोई नहीं छोड़ै है जो जेतो पायो है सो वही को सांच मानिकै सांच पदार्थ को नहीं जानै है दुःख ही के कारण शुकाचार्य गर्भैमें माया को त्यागिदियो शुकाचार्य गर्भ में बारहवर्ष के ह्वैगये सो गर्भते न निकसैं कहैं कि जो हम निकसैंगे तो हमको माया लागि जायगी तब ब्रह्मादिक देवता सब जुरे आय न निकसे तब भगवान् आइ कह्यो कि बरदाके सींग में सरसौं धरिदेइ जब भर सरसौं सींग में रहैहै यतने कालभर माया हम खैंचलेहैं निकसि आवो सो शुकाचार्य निकसे नारासहित बनको चलेगये साहब को मिलेजाई ॥ २ ॥

योगी दुखिया जङ्गम दुखिया, तापस को दुख दूना॥
आशा तृष्णा सब घट व्यापै, कोई महल नहिं सूना ३
सांच कहौं तो सब जग खीझै, झूठ कहो नहिं जाई॥
कह कबीर तेई भे दुखिया, जिन यह राह चलाई ४

योगी जङ्गम सब दुखियाहैं अरु तापस को तो दून दुःखहै काहे ते कि आशा तृष्णा सब के घट में व्यापै है कोई महल सून नहीं है काहूको हृदय आशा तृष्णा ते सून नहीं है सब के हृदय में आशा तृष्णा व्यापि रहीहै ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि अपने अपने मतमें जीव लगेहैं सांच मानिकै जो सांचको हम कहै हैं कि सांच जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगौ जिनको तुम जानि राख्यो है ते असांच हैं तो खीझैहैं व मोसों झूठ कह्यो नहीं जाइ है सो जेजे गुरुवालोग आपनी आपनी मतकी राह चलाई हैं ते दुखिया ह्वैगयेहैं तो जिनको वे शिष्य बनायो है ते दुखिया काहे न होयँ॥ ४॥

इति इक्यानबे शब्द समाप्तम्॥ ९१॥

अथ बानबे शब्द॥ ९२॥

गुरुमुख॥ ता मनको चीन्हौ रे भाई। तनुछूटे मन कहां समाई १ सनकसनन्दनजयदेवनामा। अम्बरीषप्रहलादसुदामा २ भक्त सही मनउनहुँ न जाना। भक्तिहेतुमनउनहुँनज्ञाना ३ भरथरि गोरखगोपीचन्दा। तामन मिलिमिलि कियो अनन्दा ४ जा मनको कोइ जान न भेवा। तामनमगनभये शुकदेवा ५ एकलनिरञ्जन सकलशरीरा। तामें भ्रमिभ्रमि रहलकबीरा॥ ६॥

जो कहिआये कि नाना उपासना करि सांच साहब को न जान्यो सो इहां कहैहैं॥

ता मनको चीन्हौ रे भाई। तनु छूटे मन कहां समाई १
सनकसनन्दनजयदेवनामा। अम्बरीषप्रहलादसुदामा २

भक्तसहीमनउनहुँ न जाना । भक्तिहेतुमनउनहुँ न ज्ञाना३

जा मनते नाना उपासना भई ता मनको हे भाई ! चीन्हो यह मन काको भयो है अर्थात् जौने मनते नाना उपासना ठाढ़े कैलियो है सो मन तो तुमहीं ते भयो है सो यह विचार तो करो जब सब शरीर छूटिजाइ है तब मन कहां समाइ है अर्थात् तुमहीं में समाइ जाइ है सो मनके मालिक तो तुम हौ मनैते जो नाना उपासना ठाढ़कैलियो है ते तुम्हारी उपासना सांच कैसे होइगी१ सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, नामदेव, जयदेव, अम्बरीष, प्रह्लाद, सुदामा ये सब भक्त सहीहैं संसार ते छूटे हैं परन्तु मनको वोऊ न जान्यो जो मनको जानते तो मनते भिन्न ह्वैकै मन वचन के परे जो मेरो रामनाम है ताहीको जपते और और की भक्तिको कारण जो है मन तेहि करिकै उनहूं को मेरो प्रथम ज्ञान न होत भयो फेरि जब और और उपासनन में कुछ न देख्यो तब साहब कहहैं कि मोमें लगे काहेते कि वह मन आपैते होइ है अरु वह जीवात्मा के परे मैं हौं काहेते कि यह मन आत्मैते होइ है अरु वह जीवात्मा के परे मैं हौं काहेते कि मेरो अंश है अरु ध्यानादि ज्ञानादिक सब मनते अनुमान करै हैं ताते ज्ञानको अनुभव ब्रह्म और ध्यान को अनुभव उपास्य देवता ये मनके भीतर होवई चाहैं और मन आत्मा को है ताते मन में आत्मा को स्वरूप कैसे आइसकै वह तो मनते परे है सो जब मनको छोड़ै है तब चिन्मात्र रहिजाइ है याते मन वचन के परे आत्मा होवई चहै अरु जब मैं हंसस्वरूप देउ हौं तामें स्थित ह्वैकै मेरे पास आवते कल्पना करिकै नानारूप में न लगते ॥ २ । ३ ॥

भरथरिगोरखगोपीचन्दा । तामनमिलिमिलिकियोअनन्दा ४
जामनको कोइजाननभेवा । तामन मगन भये शुकदेवा ५

भरथरी गोरख गोपीचन्द जे हैं ते वही मनहीं में मिलिकै आनन्द कियो अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनन्द कियो सो ब्रह्म

मनहीं को अनुभव है ४ सो जौने मनको अनुभव ब्रह्म होइ है अरु वह ब्रह्म उपास्यकन में अर्थ आपनी नाना ईश्वर स्वरूप कल्पना करैहै तौने मनको भेद कोई नहीं जान्यो तौने मनके मगन में कहे राह में शुकदेव ना भये गर्भही ते माया को त्यागिदियो और सनक-सनकादिक प्रहलादादिक बहुत श्रम करिकै फेरि फेरि समुझ्यो है सो साहब कहै है कि मोको जानिकै मेरे पास आये इहां रामोपासक शुकदेव को छूटिगये जो कह्यो तो रामोपासक सब आइगये ॥ ५ ॥

एकलनिरञ्जनसकलशरीरा। तामें भ्रमि भ्रमि रहलकबीरा ६

एक जो है निरञ्जन ब्रह्म सर्वव्यापी तिनहीं को नाना शरीर नारायणादिक महेशादिरूप है तिनहीं में सिगरे कबीर काया के बीर भ्रमि भ्रमि रहत भये वहे उनहीं की उपासना करत भये अपनो रूप और मेरो रूप न जानत भये अरु ब्रह्म नानारूप कल्पना करि लियो है तामें प्रमाण "उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना" याको अर्थ मेरे सर्वसिद्धान्त में है और रामोपासक शुकदेव को कहि आये हैं सो शुकाचार्यई मुक्त ह्वैगये हैं तामें प्रमाण "शुको मुक्तो वामदेवो वा" (इति श्रुतेः) और रामोपासक रहे हैं तामें प्रमाण "पादम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये" (इति भागवते) और कबीरऊजीको प्रमाण "आदिनाम शुकदेवजो पावा। पूर्वजन्म के कर्म मिटावा" ॥ ६ ॥

इति बानबे शब्द समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरानबे शब्द ॥ ६३ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो, ये कलि है ब्यवहारा। को अब अनख सहै प्रतिदिनको, नाहिंन रहनि हमारा १ सुमृतिसुभावसबै कोइ जानै, हृदयातत्त्व न बूझै। निरजिवआगेसरजिवथापे, लोचन कछुव न सूझै २ तजिअमृतविषकाहेको अचवै, गांठीबाँधो खोटा। चोरनकोदियपाटसिंहासन, शाहुकोकीन्हींओटा ३ कहकबीरझूठे

मिलिभूठा, ठगही ठग ब्यवहारा। तीनिलोक भरि पूरिरहो है, नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो, ये कलि है ब्यवहारा ॥
को अब अनखसहै प्रतिदिनको, नाहिंन रहनि हमारा १

बाबू कहे हे जीवो! तिहारो यह संसार ऐसो है कि एक जो है मन ताही के लिये यह संसार को व्यवहार है अरु वही के छोड़े ते संसार छूटिजाइ है तामें प्रमाण "मनएवमनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः" तामें कबीर को प्रमाण "मुक्ति नहीं आकाश में मुक्ति नहीं पाताल। जब मनकी मनसा मिटै तबहीं मुक्ति बिशाल" सो यह मन की प्रतिदिन की अनख कौन सहै अर्थात् अणु जो जीव है ताको प्रतिदिन खाइलेइहै कहे अपने में मिलाइ लेइ है सो रोज़ रोज़ को याके स्वरूप को भुलाइबो कौन सहै यह मन हमारे रहनि मुवाफ़िक़ नहीं है यह जड़ हम चैतन्य याते हम कैसे मिलैंगे ॥ १ ॥

सुमृति सुभाव सबै कोइ जानै, हृदया तत्त्व न बूझै ॥
निरजिव आगे सरजिव थापै, लोचन कछुव न सूझै २

सो यहितरहते मनको स्वभाव सुमृति जे स्मृति हैं तामें वर्णन है सो सबै कोई जानै है परन्तु हृदय में जो मनको तत्त्व कहे स्वरूप है ताको कोई नहीं बूझै है कि हम यह मन ते भिन्न हैं निर्जीव जो मन है ताके आगे सजीव जो है आत्मा ताको राखि देइ है कहे मिलाइ देइ है आंधरन को यह नहीं सूझि परैहै कि चितुजीव को जड़न में मिलाइ जड़ काहे करै हैं व आत्मा देह को एकही मानै हैं ॥ २ ॥

तजि अमृत विष काहेको अचवै, गांठी बांधो खोटा ॥
चोरन को दिय पाटसिंहासन, शाहुको कीन्हों ओटा ३

अमृत जो है आपने आत्माको स्वरूप ताको छोड़िके बिष जो है मन तामें लागिकै नाना पदार्थन में लागिबो तो है ताको काहेते

अँचवै हैं कि गांठी में खोट जो मन है ताको बांधे है सो काहे सो काहे बांधे हैं मनते भिन्न नहीं ह्वैजाइ है आत्मा के स्वरूप को भुलाइ कै मन में लगाइ देनवारे व साहब को भुलाइ देनवारे व संसार में डारि देनवारे ऐसे जे गुरुवालोगहैं तिनको पाटासिंहासन देइ है कहे उनको गुरु करै है और शाहु जे साधुजन हैं मनते छोड़ाय देनवारे जे साहबको बताइ देयँ आत्माको स्वरूप जनाइ कै तिनको ओट कीन्हें है कहे उनको दर्शनई नहीं लेइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर झूठे मिलि झूठा, ठगही ठग व्यवहारा ॥
तीन लोक भरिपूरि रहो है, नाहीं है पतियारा ४

सो कबीरजी कहै हैं कि ऐसे जे लोगहैं ते झूठा जो मन को अनुभव ब्रह्म है तामें मिलिकै झूठे ह्वैरहे हैं ठगै ठगको व्यवहार ह्वैरह्यो है सो तीन लोकमें वही भरिपूरिरह्यो है सो पतिआइबे लायक नहीं है जो ठगमें लगै है सो ठगही ह्वैजाइ है जो कहो तीनलोकमें तो साधु हू हैं पतिआइबे लायक कोई न रह्यो यह कैसे तो कबीरजी कहै हैं कि साधुजन तीनिलोक के बाहरई हैं वे तीन लोक के भीतर नहीं हैं काहेते कि तीनिलोक मन को पसारा है अरु वे मनते भिन्न हैं ॥ ४ ॥

इति तिरानबे शब्द समाप्तम् ॥ ६३ ॥

अथ चौरानबे शब्द ॥ ६४ ॥

कहौ निरञ्जन कवनीबानी। हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा का कहि जपहु हो प्रानी १ ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी। ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै तब कहँ ज्योति समानी २ चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया तिनहूँ न या गतिजानी। कहै कबीर सुनो हो सन्तो बूझहु पण्डित ज्ञानी ॥ ३ ॥

जो कहौ मनही ते यह संसार है और जब मनते छूटैगो तब ब्रह्मही ह्वैजाइगो तामें श्रीकबीरजी कहै हैं ॥

कहौ निरञ्जन कवनी बानी ॥
हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा, काकहिजपहु हो प्रानी १
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये, ज्योति कौन सहिदानी ॥
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारे, तब कहँ ज्योति समानी २

कहौ तो निरञ्जन ब्रह्म को कौनी बाणीते कहौहौ वाको तो मन वचन के परे कहौहौ तामें प्रमाण "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" (इति श्रुतेः) अरु वाको तो बिना नामरूप को कहौ हौ वाको कैसे जपौ हौ और कैसे ध्यान करौ हौ १ जो कहौ वह प्रकाशरूप ब्रह्म है सो प्रकाश को ध्यानकरै है प्रकाश में अपने आत्मा को मिलाइदेइ है ब्रह्म हमहीं ह्वैजाइ हैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्महै तामें आपने आत्मा की ज्योति ज्योतिकै कहै मिलाइ कै जो कहिये वह ज्योति कौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जब सब पदार्थ मिथ्या मानत मानत एक प्रकाशरूप ब्रह्म मान्यो ताको मान्यो कि वह ब्रह्म हमहीं ब्रह्म हैं सो जब भर यह मानेरह्यो कि वह ब्रह्म हमहीं हैं तब भर तो तिहारो अनुभव रहै है और जब अनुभवऊ मिटिगयो तब तुमहीं रहिजाउ हौ तब वह ब्रह्मकी कौन सहिदानी रहिजाइ है अर्थात् कछु नहीं रहिजाय है तुमहीं रहिजाउ हौ यही प्रकार जब ब्रह्मज्योति आत्माकी ज्योति मिलायकै वहि ज्योति को दै मास्यो कहे छोड़यो अर्थात् सबको निराकरणकै कैवल्य शरीर में प्राप्त भयो अरु वहूको छोड़यो तब आत्माकी ज्योति कहां समाइ है सो कहै हैं जीवके मुक्त भये पर परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हंसस्वरूप देइ हैं तामें टिकिकै साहब की सेवा जीवकरै है यह ज्ञान तो जीव जानै नहीं है वही ब्रह्म प्रकाश को जानि राख्यो है कि हमैंहीं ब्रह्म हैं सो जब मनको निराकरण ह्वैगयो तब ब्रह्महू को ह्वैजाय है तब आत्मै रहिजाय है याते मनैको अनुभव ब्रह्म है सो जौने हंसस्वरूप में वा ज्योति समाइ है ताको विचार करो ॥ २ ॥

चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया, तिनहुँ न या गति जानी ॥
कहै कबीर सुनौ हो सन्तो, बूझहु पण्डित ज्ञानी ३

ब्रह्मा चारि वेद कह्यो तिनमें यह कह्यो कि मुक्त भये पर विग्रह को लाभ होय है "मुक्तस्य विग्रहो लाभः" इत्यादिक श्रुति आंखही कह्यो तऊ न जान्यो काहे ते जो जानते तो जगत् की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूप में टिकिकै साहबके लोकको चलेजाते सो कबीर जी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो जाके सारासार विचारिणी बुद्धि होय सो पण्डित कहावै सोई पण्डितहै सो हे ज्ञानिउ ! जिन संपूर्ण असार को छोड़िकै सार जे साहब हैं तिनको ग्रहण कैलियो ऐसे जे पण्डित हैं तिनसों बूझो वह गति वोई बूझै हैं तबहीं तिहारो धोखाब्रह्म छूटैगो ॥ ३ ॥

इति चौरानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९४ ॥

अथ पञ्चानबे शब्द ॥ ९५ ॥

को असकरै नगर कोतवलिया । मासुफैलायगीधरखवरिया १ मूसभोनावमँजरिकँड़हरिया । सोवैदादुरसर्पपहरिया २ बैलबियाय गायभैबांझा । बछवैदुहिया तिनतिनसांझा ३ नितउठिसिंह स्यारसों जूझै । कबिरकपदजनबिरलाबूझै ॥ ४ ॥

को असकरैनगरकोतवलिया।मासुफैलायगीधरखवरिया १
मूसभोनावमँजरिकँड़हरिया । सोवैदादुरसर्पपहरिया २
बैलबियायगायभैबांझा । बछवैदुहियातिनतिनसांझा ३
नितउठिसिंहस्यारसोंजूझै।कबिरकपदजनबिरलाबूझै ४

साहब कहै हैं या संसाररूपी नगर की कोतवाली को करै जौने नगर में शरीररूपी मांस फैला है गीध जो निरञ्जन काल सो रखवार है और जहां जीवको स्वरूप ज्ञान जो मूसरूप नाव ताके बिलार कँड़हारिया है कहे गुरुवालोग और दादुर जो जीव है सो सोवै है प्राण जो सर्प सो पहरी हैं पै ई नानाशरीर में लै

जाइ हैं और गाय जो गायत्री सो आपने तात्पर्य छपाय राख्यो सो बांझ भई और बैल जो शब्दब्रह्म सो बियाय है कहे नाना ग्रन्थरूप बछवा भये तेई बछवाको तीनि तीनि सांझ दुहै हैं अर्थात् रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी सब वाही को दुहै हैं कहे पढ़े सुनै हैं और सिंह जो बिबेक है सो सियार जो कुमति तासों रोजही जूझै है सो कबीर जो है जीव ताको पद जो है मेरो धाम ताको कोई बिरला बूझै है जे मेरे धाम को बूझै हैं ते संसारते छूटि जाय हैं ॥ १ । ४ ॥

इति पञ्चानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९५ ॥

अथ छानबे शब्द ॥ ९६ ॥

काकहिरोवोगेबहुतेरा । बहुतकगयेफिरेनहिंफेरा १ हमरी बातबतैंनसँभारा । बातगर्भकीतैं न बिचारा २ अबतैंरोयाक्यातैं पाया । केहिकारणतैंमोहिंरोवाया ३ कहै कबीर सुनो नरलोई । कालके बशहि परो मति कोई ॥ ४ ॥

का कहि रोवहुगे बहुतेरा । बहुतक गये फिरे नहिं फेरा १
हमरीबात बतैं न सँभारा । बात गर्भकी तैं न बिचारा २
अब तैं रोयाक्या तैंपाया । केहिकारण तैं मोहिं रोवाया ३
कहैं कबीर सुनो नरलोई । कालके बशहि परो मति कोई ४

का कहिकै रोवौ हौ बहुत तरहते कि ये हमारे भाई हैं ई बाप हैं ई पुत्र हैं बहुत यही तरहते गये हैं फीरि नहीं फेरे फिरे हैं १ सो जब जब हमको तेरो दुःख देखिकै करुणा भई हमारो वा तोको उपदेश दियो सो तू न सँभारे जो कराराकिये तैं कि मैं भजन करौंगो सो न बिचारे साहब को भजन न कियो अब तैं गर्भ में जाय जाय संसार में आय आयकै रोवै है कहे दुःख पावै है सो क्या तैं पाये अब हमको तैं काहे रोवावै है तेरो दुःख देखिकै मोको दुःख होय है सो कबीरजी कहै हैं कि हे नरलोगो !

साहबको जानौगे तबहीं कालते बचौगे सो साहब को भुलायके काहे काल के बश परौहौ संसार दुःख पावौहौ ॥ २ । ४ ॥

इति छानबे शब्द समाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सत्तानबे शब्द ॥ ९७ ॥

अल्लहराम जीवतेरी नाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १ क्या मूड़ीभूमिहिशिरनाये क्या जल देह नहाये। खूनकरैमसकीनकहावै गुणको रहैछिपाये २ क्याभोउज्जूमज्जनकीन्हे क्यामसजिदशिर नाये । हृदयाकपटनेवाजगुजारै कहाभोमक्काजाये ३ हिन्दूएका-दशिचौबिसरोजा मुसलम तीस बनाये । ग्यारहमासकहौकिनटारो ये केहिमाहँसमाये ४ पूरबदिशिमेंहरिको बासा पश्चिम अलह मुकामा । दिलमेंखोजदिलैमेंदेखो यहैकरीमा रामा ५ जो खोदाय मसजिदमेंबसतुहै और मुलुककेहिकेरा । तीरथमूरतिरामनिवासी दुइमहँकिनहुँनहेरा ६ वेदकिताबकीनकिनझूठा झूठा जो न बि-चारै । सबघटमाहँएककरिलेखै भयदूजाकारिमारै ७ जेते औरत मर्दउपाने सोसबरूप तुम्हारा । कबिरपोंगड़ाअलहरामका सो गुरु पीर हमारा ॥ ८ ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपर मेहरहोहु तुम साईं १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे श्रीरामचन्द्र ! कोई तुमको अल्लाह कहै है कोई राम कहै है हिन्दू मुसल्मान दोउन में शरीरभेद है जीव तो एकई है सबमें विभु चैतन्य तुम हौ अरु चैतन्यजीव है ज्योति तुम्हारी है हिन्दू मुसलमान को आत्मा तुम्हारी है तुम दूनों के साईंहो ताते तुम्हारे जन जे हिन्दू तुरुक दोऊ हैं तिनके ऊपर मेहरबानगी करौ ॥ १ ॥

क्या मूड़ी भूमिहि शिर नाये, क्या जल देह नहाये ॥ खून करै मसकीन कहावै, गुण को रहै छिपाये २

कबीरजी कहै हैं कि हिन्दू तुरुक तुमको बिसराइकै और और

बिचार करै हैं या चित्त में न दीजै मेहर करिये काहेते कि तुरुक मूड़ी भूमि जो गोर तामें शिरनावै है और हिन्दू बहुत जलसों नहाय है याते काहभयो आपको तो जनबै न कियो और जीवन के गर काटै है ऐसो खूनकरै तौन खून तो छिपावै है आपते जे सर्वत्र पूर्ण हैं तिनको नहीं जानै है और मसकीन जो फ़क़ीर सो कहावै है याते कहा भयो ॥ २ ॥

क्या भो उज्जू मज्जन कीन्हे, का मसजिद शिरनाये ॥
हृदयाकपट नेवाजं गुजारै, कहाभो मक्का जाये ३
हिन्दू एकादशि चौबिस रोज़ा, मुसलम तीस बनाये ॥
ग्यारहमास कहौ किन टारौ, ये केहि माहँ समाये ४

हिन्दू बहुत प्रकार के मज्जन करै हैं और तुरुक उज्जू जो कुल्ला मुखारी करिकै हृदय में कपट सहित नेवाज गुजास्यो मसजिद में माथ नवायो मक्का गयो याते काह भयो आपको तो जनबै न कियो ३ हिन्दू तो चौबिस एकादशी रहे और तुरुक तीस रोज़ा रहे याते काह भयो काहेते याती जनबै न कियो कि और दिन ये काहे में समायँगे ई सब दिन साहिबै के हैं ग्यारह मास ई काके हैं ॥ ४ ॥

पूरुबदिशि में हरिको बासा, पश्चिम अलह मुकामा ॥
दिल में खोज दिलै में देखो, यहै करीमा रामा ५
जो खोदाय मसजिदमें बसतुहै, और मुलुक केहिकेरा ॥
तीरथ मूरति रामनिवासी, दुइ में किनहुँ न हेरा ६

हिन्दू कहै हैं कि पूरुब और उत्तर के कोने में सुमेरु है ताही में बकुण्ठ है वहैं ते सूर्य उदय होइ है तहैं हरिको बास है ताही ओर पूजा ध्यान करै हैं और पश्चिम कैति मक्का है तहां अल्लाह को बास है ताही ओर मुसलमान नेवाज़ गुज़ारै हैं सो याते काह भयो आपने दिल में खोजकैकै तो देखबै न कियो कि करीम जे

खोदाय राम जे रामचन्द्र ते दिलही में हैं हिन्दू तुरुक दोउन में कोई हैं ये तो शरीर आय साहब एकई है या न जानै तौ काह भयो ५ मुसल्मान लोग या मानै हैं खोदाय मसजिद में बसतु है और रामचन्द्र मूर्ति और तीर्थ में बसै हैं याते काह भयो काहे ते दुइ में या बात कोई न बिचारै कि और मुल्क में को बसै हैं सर्वत्र साहबही पूर्ण है आपने आपने पक्ष में लगे हैं ॥ ६ ॥

वेद किताब कीन्ह किन झूठा, झूठा जो न बिचारै ॥
सब घट एक एक करि लेखै, भय दूजा करि मारै ७

वेदवाले किताब को झूठा कहै हैं किताबवाले वेद को झूठा कहै हैं सो या कहा झूठा है इनको को झूठा करिसकै है झूठा वही है जो इनको नहीं बिचारै है कि वेद किताब को यही सिद्धान्त है साहब सर्वत्र पूर्ण है हिन्दू के याहै कि सब नाम साहब ही के हैं "सर्वाणि नामानि यमाविशन्ति" (इति श्रुतिः) और मुसल्मान के जामैजमीसिफ़ात जामै जमीअसमात यह कलामुल्ला के किताब में लिखै है सो घट घट में चित्स्वरूप जीव एक ही है सबके साहब रामचन्द्रही हैं तिनको एक करि लेखै भय दूसरे ते होय है ताको मारै सो याको बिचारबै न कियो तौ काह भयो ॥ ७ ॥

जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा ॥
कबिर पोंगड़ा अल्लह राम को, सो गुरु पीर हमारा ८

सो कबीरजी कहैहैं कि जेते औरत और मर्द उपाने कहे उपजे हैं ते सब तुम्हारे रूप हैं काहेते कि चित् जो तुम्हारो बिग्रह है ताही ते जगत् है और कबिर कहे काया के बीर जे जीव हैं ते हे अल्लाह, राम ! तिहारे जीवन के पोंगड़ा हैं अर्थात् तुमहीं घट घट में बोलत हौ तुमको जानिबेको इनके कुदरति नहीं है चाहौ तुम उपदेश करि आपने में लगावो चाहौ गुरु पीर द्वारा उपदेश करि आपने में लगावो इनको बश नहीं है तामें प्रमाण "यथ

दारुमयी योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया। एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहते सुखदुःखयोः" (चौपाई) "उमा दारुयोषित की नाईं। सबै नचावत राम गोसाईं" ॥ ८ ॥

इति सत्तानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९७ ॥

अथ अट्ठानबे शब्द ॥ ९८ ॥

आवो वेआवोमुझेहरिकोनाम। और सकल तजुकौनेकाम १ कहँ तब आदम कहँ तब हवा। कहँ तब पीरपैगम्बर हुवा २ कहँ तब जिमीं कहाँ असमाना। कहँ तब वेदकिताबकुराना ३ जिन दुनियामेंरचीमसीद। झूठोरोजाझूठी ईद ४ सांचएकअल्लाको नाम। ताको नयनय करोसलाम ५ कहुधौं भिश्त कहाँते आई। किसके कहे तुम छुरी चलाई ६ करताकिरतिमबाजीलाई। हिन्दु तुरुकदुइराहचलाई ७ कहँ तब दिवस कहां तब राती। कहँ तब किरतिमकी उतपाती ८ नहिं वाके जाति नहीं वाके पांती। कह कबीर वाके दिवस न राती ॥ ९ ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम। औरसकलतजुकौनेकाम १
कहँ तब आदम कहँ तब हवा। कहँतबपीरपैगम्बरहुवा २
कहँतबजिमीं कहाँ असमाना। कहँतबवेदकिताबकुराना ३

श्रीकबीरजी कहे हैं कि जौने नाम में सबनाम हैं तौन जो मन बचन के परे हरिको नाम है सो हे जीव! ताको तैं बिचारकरु कि मोको आवै और सब बस्तु झूठे छोड़िदे कौने काम के हैं जब वह नाम रह्यो है आदि में तब कुछ नहीं रह्यो १ ये जे कहिआये ते कहां रहे हैं अर्थात् कोई नहीं रहे ॥ २ । ३ ॥

जिन दुनिया में रची मसीद। झूठे रोजा झूठी ईद ४
सांच एक अल्लाको नाम। ताकेनयनयकरो सलाम ५
कहुधौं भिश्त कहाँते आई। किसकेकहेतुमछुरीचलाई ६

अरु जीव जिन संसार में मसीद जो मसाजिद शरीर रच्यो है

ते कर्तारौ नहीं रहे ४ सांच एक मन बचन के परे अल्ला को नाम है ताको नय नयके सलाम करो और सब झूठा है जिसके बनाये भिश्त भई है तेऊ वही नाम ते प्रकट भये हैं तुम किसके कहे जीव मारते हौ ई सब झूठे हैं ॥ ५ । ६ ॥

करताकिरतिमबाज़ीलाई । हिन्दुतुरुक दुइराहचलाई ७
कहँतबादिवसकहाँतबराती । कहँतब किरतिमकीउतपाती ८
नहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती । कहैकबीरवाकेदिवसनराती ६

सो कर्ता कै कृत्रिम जो माया है सो बाजी लगाइ कै दुइ राह चलाई है ७ जब प्रथम साहब सुरति दियो है तब कहां दिन रह्यो है कहां राति रही कहां कृत्रिम जो माया ताकी उत्पत्ति रही है न वाके कछु जाति है जो कहिये वा ब्रह्म में है माया में है सत्चित् है तो वा एकऊ में नहीं है न जातिहै वाके एकई साहब हैं दुइचारि साहब नहीं हैं न वाके दिवसहै न राति है कहे न ज्ञान है न अज्ञान है ताते साहब को सांचनाम जपौ ॥ ८ । ६ ॥

इति अट्टानबे शब्द समाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ निन्नानबे शब्द ॥ ६६ ॥

अब कहँ चल्यो अकेले मीता । उठिकिन करहु घरहुकी चीता १ खीरखांड़घृतपिण्डसमारा । सोतनलैबाहरकैडारा २ जेहि शिर रचि रचि बांध्यो पागा । सो शिररतन बिदारहिं कागा ३ हाड़ जरैं जैसे लकड़ीभूरी । केशजरैं जस तृणकै कूरी ४ आवत संग न जातको साथी । काह भयो दल साजे हाथी ५ मायाको रस लेइ न पाया । अन्तर यम बिलार ह्वै धाया ६ कह कबीर नल अजहुँ न जागा । यमको मोगरा मधि शिर लागा ॥ ७ ॥

अबकहँ चल्योअकेलेमीता । उठिकिनकरहुघरहुकीचीता १
खीरखांड़घृतपिण्डसमारा । सो तन लै बाहर कै डारा २

जेहिशिररचिरचिबांध्योपागा । सोशिररतनबिदारहिंकागा ३
हाड़जरैं जस लकड़ी भूरी । केश जरैं जस तृणकै कूरी ४
आवतसंगनजातको साथी । काहभयोदलसाजे हाथी ५
मायाको रस लेइ न पाया । अन्तरयमबिलारह्वै धाया ६
कहकबीरनलअजहुँनजागा।यमकोमोगरा मधिशिरलागा ७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवो ! जैसो या पद में कहि आये हैं तैसो तिहारो हवाल ह्वै रह्यो है जो तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को न जानौगे तो तिहारे शिर में यमको मोगदर लगैगो॥ ११७ ॥

इति निन्नानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९९ ॥

अथ सौ शब्द ॥ १०० ॥

देखौ लोगौ हरिकी सगाई । मायधरै पुतधिय सँग जाई १ सासुननँदिमिलिअदलचलाई । मादरियागृहबेटीजाई २ हम बहनोइ राम मोर सारा । हमहिं बाप हरिपुत्र हमारा ३ कहै कबीर हरीके बूता । राम रमै तैं कुकुरी के पूता ॥ ४ ॥

देखौलोगौ हरिकीसगाई । मायधरै पुतधिय सँगजाई १

हे जीवो ! सब संसार की सगाई न देखो दुःखके हरैया जे हरि हैं तिनकी सगाई देखो अर्थात् साहब में लागो तो वे संसारदुःख दूर करिदेइँगे जो संसारमें लागोगे तो माई जो माया सो तुमको धरैगी तुम जीवो वा माया के पुत्र ह्वै रह्यो है समष्टिते व्यष्टिजीव मायाही करैहै याते मायाको माय कह्यो है अब जीवके बुद्धि उत्पन्न होय है याते जीवकी धी कहे कन्या है सो तैं बुद्धि के संग बिगरि गयो और और में बुद्धि निश्चय कराइ नरकमें डारिदियो ॥ १ ॥

सासुननँदिमिलिअदलचलाई । मादरियागृहबेटीजाई २

बुद्धिकर्म की बासना ते उत्पत्ति होय है जौने प्रकार की बासना होय है तैसी बुद्धि होय है सो बासना जीवकी सासु है और जीव की सुरति बहिनी है काहेते कि वही सुरति पाइकै जीव

चैतन्य भयो है संसारी भयो है और वह सुरति जब साहब मुख होइगी तब साहब को पावैगो सो येई जे हैं बुद्धि की सासु ननँदि हैं तेई अदल जो हैं हुकुम सो चलाइकै शुद्ध समष्टि जीव को संसार में डारिदेइ हैं सो कैसे डारिदेइ हैं सो कहैहैं जौन बांदर को नट नचावे हैं सो मादारिया कहावै सो मन है ताकी बेटी जो है इच्छा सो उत्पत्ति भई तब जीव संसार में पस्यो ॥ २ ॥

हमबहनोइ राममोरसारा। हमहिं बाप हरिपुत्र हमारा ३
कहै कबीर हरी के बूता। रामरमै तें कुकुरी के पूता ४

हे जीव! तैं यह बिचारु कि यामें परिकै हम बहनोई हैं अर्थात् बहनवारे हैं सो बही जायँगे अरु हमारे सार कहे सारांश रामै हैं और हमारे बाप रामै हैं और पुत्र रामै हैं तामें प्रमाण "रामो माता मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः। सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने" (तामें कबीरजी को प्रमाण) "राम हमारे बाप हैं राम हमारे भ्रात। राम हमारी जाति हैं राम हमारी पांत" सो यह बिचारिकै श्री-कबीरजी कहैहैं कि हरि के बूता कहे हरिनके बूतते अर्थात् अपने बलते नहीं कुकुरी जो माया है ताके पतौ जीवो सर्वनात रामै सों मानिकै रामैमें रमो अर्थात् जब तुम साहबके होउगे तब साहब हंसस्वरूप दैकै तुमको अपने धामको बोलाइ लेइँगे ॥ ३ । ४ ॥

इति सवां शब्द समाप्तम् ॥ १०० ॥

अथ एकसैएक शब्द ॥ १०१ ॥

देखि देखि जिय अचरज होई। यह पद बूझै बिरला कोई १
धरती उलटि अकाशहि जाई। चींटी के मुख हस्ति समाई २
बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै। जीवजन्तु सब बिरछाबुड़ै ३ सूखे सरवर उठै हिलोल। बिनु जल चकवा करै कलोल ४ बैठा पण्डित पढ़ै पुरान। बिन देखे का करै बखान ५ कह कबीर जो पद को जान। सोई सन्त सदा परमान ॥ ६ ॥

देखिदेखिजियअचरज होई । यहपदबूझैबिरलाकोई १
धरतीउलटिअकाशहि जाई । चींटीकेमुखहस्तिसमाई २

श्रीकबीरजी कहे हैं कि मैं तो स्पष्टई कहौं हौं पै यह पद जो साकेतलोक ताको कोई बिरला बूझै है सो यह देखि देखि मोको बड़ो आश्चर्य होइ है १ जब महाप्रलय होय है तब धरती उलटि कै आकाश को जातरहै है कहे पृथ्वी जल में जल तेज में तेज वायु में वायु आकाश में समाइजाइ है अरु वहौ जो है आकाश सो अहंकार में समाइ है अरु अहंकार महत्तत्त्व में समाइ है सो महत्तत्त्व मन है काहेते कि यह सब विस्तार मनहीं को है सो महत्तत्त्व जो है आदि कारण मन हाथी सों भगवत् आपना रूप जो है जगत् की मूलशक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुखमें समाइहै ॥२॥

बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीव जन्तु सब बिरछा बुड़ै ३

सो वह साहबके अज्ञानरूपा मूलप्रकृति लोकप्रकाश में जो समष्टि जीव हैं तहां समानी रहै है पृथ्वी आदिक तो समाइगये हैं उहां पवन नहीं है परन्तु वह चैतन्याकाश कहे ब्रह्मरूपी आकाश में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड जे पर्वत हैं ते उड़तई रहैहैं ते अरु वही सरवर में जीवजन्तु ते सहित जे संसाररूपी वृक्ष हैं ते बूड़े हैं अर्थात् वही ब्रह्म में सब संसार की लय होय है ॥ ३ ॥

सूखे सरवर उठै हिलोल । बिनुजलचकवाकरैकलोल ४
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ५

वह ब्रह्म तो सूखा सरोवर है अर्थात् सो ब्रह्म महीं हौं यह मानिबो मिथ्या है लोकप्रकाश ब्रह्म सत्य है तौने के प्रकाश की हिलोर उठै है तहां बाणीरूपी जल तो है नहीं और चकवा जे जीव हैं ते कलोल करैहैं कहे वहैंते पुनि बाणी को उत्पत्ति करिकै संसारी ह्वै जाइहैं ४ पण्डित जेहैं ते बैठे पुराण पढ़ै हैं अरु उत्पत्ति प्रलय को सब बखान करै हैं यह तो नहीं समुझै हैं कि वह तो बिन देखे काहे कहे शून्य है जो हम ज्ञान उपदेश करिकै वह ब्रह्म

में लगावैंगे तो भगवत् अज्ञानरूपी कारणशक्ति तो उहां बनिही है माया फेरि न धरि लै आवैगी ॥ ५ ॥

कह कबीर जो पद को जान । सोई सन्त सदा परमान ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो कोई यह पद को कहै है जौने को प्रकाश यह ब्रह्म है ऐसो जो साकेत है तौने पद को कहे स्थान को जो जानै तो प्रमाण सन्त वही है और जेहिको प्रकाश या ब्रह्म है तौने धाम में जायकै पुनि नहीं लौटिआवै है तामें प्रमाण "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः । यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" (तामें कबीरऊजी को प्रमाण) "कालहि जीति हंस लै जाहीं । अबिचल देश पुरुष जहँ आहीं ॥ तहां जाय सुख होइ अपारा । बहुरि न आवै यहि संसारा" ॥ ६ ॥

इति एकसैएक शब्द समाप्तम् ॥ १०१ ॥

अथ एकसैदो शब्द ॥ १०२ ॥

हो दारी किलै देउँ तोहिं गारी । तुम समुझु सुपन्थ बिचारी १ घरहू को नाह जो अपना । तिनहूं सों भेंट न सपना २ ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ३ योगी औ जङ्गम जेते । वे आपु गये हैं तेते ४ कह कबीर यक योगी । तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ॥ ५ ॥

होदारीकिलैदेउँतोहिं गारी । तुमसमुझुसुपन्थबिचारी १
घरहू को नाह जो अपना । तिनहूं सों भेंट न सपना २
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ३

हो दारी कहे बांदी की बच्ची जीवशक्ति तोको गारी देइहौं तैं यह माया की बच्ची है कै मायाही में लागिरही है सो यह माया दारी है जो सबको दरिडारै सो दारी कहावै है सो तोको दरेडारै है यही के ये पेटते निकसे यही में लगे यह कुपन्थ है सो तैं सुपन्थ बिचारु १ घरके नाह जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र अपना

है तासों सपनेहूं नहीं भेंट करैहै तो योग ज्ञान उपासनादिकन में जो नाह वर्णन किये हैं तेतो जार हैं जो तोको मिलिबो करैंगे दश दिनको तो फेरि छाँड़िदेइँगे २ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको वेद को अधिकार हैं ते वेद को तात्पर्य परम-पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको न जान्यो तो शूद्र अन्त्यजन की कहबई कहा करैं ॥ ३ ॥

योगी औ जङ्गम जेते। वे आपु गये हैं तेते ४
कह कबीर यक योगी। तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ५

योगी जङ्गम जेतेहैं ते वही धोखाब्रह्म में लागिकै आपने आपने पौ खोइदियो ४ श्रीकबीरजी कहैहैं कि तुम एकके योगी भयो कि हम आतमा कोएक जो ब्रह्म है तामें संयोग करिदेइहैं कहे मिलाइ देइ हैं सो यह नहीं बिचार करते हौ कि एक वही ब्रह्म जो जीव होतो तौ वासों भिन्न काहे को होतो और तुमको मिलाइबे को काहे परतो जो कहौ यह ब्रह्महीं को माया ते भ्रम भयो है तब नानारूप देखनलग्यो है तो तुमहीं ब्रह्म को ज्ञानमय कहौहौ "सत्यं ज्ञानमनन्तंब्रह्मेत्यादि" तौ वाको भ्रमहीं कैसे भयो अरु जो माया में एती सामर्थ्य है कि तुमको फोरिकै नानारूप करि दियो है तो जब तुम मिलिहू जाउगे तब तुम को फेरि फोरिकै संसार में न डारिदेइगो का जनन मरण न छूटैगो ताते तुम फेरि फेरि यह भवभ्रम में भ्रमि भ्रमि कै भोगी होउगे अर्थात् जब वह ब्रह्म में लगौगे फेरि फेरि संसारही में परौगे ॥ ५ ॥

इति एकसैदो शब्द समाप्तम् ॥ १०२ ॥

अथ एकसैतीन शब्द ॥ १०३ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भोरा। ज्यों पानी पानी में मिलिगो त्यों ढुरि मिल्यहु कबीरा १ ज्यों मैथिलको सच्चा बास। त्योंहि मरण होय मगहर पास २ मगहर मरै मरण नहिं पावै। अन्तै मरै तो राम लजावै ३ मगहर मरै सो गदहा होई। भल परतीति रामसों

खोई ४ क्या काशी क्या ऊसर मगहर हृदय रामबस मोरा। जो काशी तनतजै कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ५ ॥

लोगोतुमहींमतिकेभीरा ॥

ज्यों पानी पानी में मिलिगो, त्यों ढुरिमिल्यहु कबीरा १

हे लोगो! तुम बड़े मतिकेभीर हौ कहे डराकुल हौ काहेते जो मैं एतो उपदेश पशुको करत्यों तो पशुहू को ज्ञान ह्वै जातो तुम पशुहूते अधिक हौ जैसे पानी में पानी मिलिजाइ है ऐसे कबीरजी कहहैं कि तुमहूँ ढुरिकै मिलौ कहे हंसस्वरूप में प्राप्त होउ और साहब के पास जाउ जो कहो पानी में पानी मिले एकही ह्वैजाइ है तो एक नहीं ह्वैजाइहै काहेते कि लोटा भरे जल में चुरुवाभरि जल नाइ देइँ तो बाढ़िआवै है जो वही जल होतो तो बढ़तो कैसे जो कहो समुद्र में तौ नहीं बढ़ै तो समुद्रौ में गङ्गादिक नदी जुदी ही रहती हैं देखबे को मिली हैं परन्तु उनको पारिख मेघ जानै हैं वहांते मीठे जल लैकै बर्षै हैं पुनि जब श्रीरामचन्द्र समुद्रपर कोपे तब समुद्र आयो है सब नदी चमरछत्र लीन्हें जुदी जुदी आई हैं और अबहूं जहाजवारे जे जानै हैं ते मीठाजल समुद्र को पाइ जाइ हैं सो हे कबीरो! कायाके बीर जीवो! तुमहूं हंसस्वरूप में स्थित ह्वै साहब के लोक में प्रवेश करि साहब को मिलोजाइ ॥ १॥

ज्यों मैथिल को सच्चा बास। त्योंहिमरणहोयमगहरपास २
मगहर मरै मरण नहिं पावै। अन्तै मरै तो राम लजावै ३
मगहर मरै सो गदहा होई। भलपरतीति रामसों खोई ४

जो श्रीरामचन्द्र को जानै तो जैसे मैथिल कहे मिथिलापुर में मरे मुक्ति होइहै तैसे मगहर में मरे मुक्ति होइ है २ जो मगहर में मरै तो मरण नहीं पावैहै यह सब कोई कहै हैं कि मगहर में मरे मुक्ति नहीं होइहै अरु जो अन्ते मरै तो श्रीरघुनाथजी को लजावै

१—तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ज्ञानसंप्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः ॥

के तीर्थकी ओटलैके मस्यो ३सो जाकी श्रीरामचन्द्र में परतीति नहीं होय है सो मगहर में परे गदहै होइ है ॥ ४ ॥

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, हृदय राम बस मोरा ॥
जो काशी तन तजै कबीरा, रामै कौन निहोरा ५

जो हृदयमें श्रीरामचन्द्र बासकिये हैं तो क्या श्रीकाशीहै क्या ऊसरहै क्या मगहरहै जहैं मरै तहैं मुक्ति ह्वै जाइ तो श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको कौन निहोरा तेहिते मैं श्रीरामचन्द्र को निहोरा करिकै मगहर मेंही शरीर छोड़्यो मोको मगहर बाधा न कियो तेहिते हे जीवो ! तुमहूं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को हृदय में धरौगे और रामनाम जपौगे तो तुमहूं को कछु बाधा न रहेगी जहैं मरौगे तहैं मुक्त ह्वै जाउगे ताते और सब धोखा छोड़िकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को स्मरण करौ मैं अनमाइकै कहौहौं जो कहो अपने शरीर छोड़िबे की कथा श्रीकबीरजी अपने ग्रन्थ में लिखैहैं यह असम्भव बात है तौ मगहर में जो श्रीकबीरजी शरीर छोड़्यो तो आपनी रामोपासकता देखाइबे की मैं मगहर में शरीर छोड़ौं हौं कैसे यम मोको गदहा करैंगे और कैसे मैं मुक्त न होउँगो सो मगहर में मैं शरीर छोड़्यो यमको कियो कछु न भयो मगहर में शरीर छोड़ि मथुरा में जाय रतनाकन्दुइनि को उपदेश कियो है पुनि बहुत दिन प्रकट रहे हैं याते यह देखायो कि नित्य वृन्दावन के रास में देख्यो जाइ है जहां सब मुक्त ह्वैकै जाइ हैं परम मुक्त ह्वै नित्य वृन्दैवन के रास में जाथ हैं तामें प्रमाण शुकाचार्य मुक्त ह्वै गये हैं तिनसों श्रीकृष्णचन्द्र की उक्ति "सचोवाच प्रियारूपं लब्धवन्तं शुकं हरिः । त्वं मे प्रियतमा भद्रे सदा तिष्ठ ममान्तिके" (इति पद्मपुराणे) सो सब कथा आपहो धर्मदासते निर्भय ज्ञान में आपने ही मुख कमल ते कह्यो है सो स्पष्टई है ॥ ५ ॥

इति एकसैतीन शब्द समाप्तम् ॥ १०३ ॥

अथ एकसैचार शब्द ॥ १०४ ॥

कैस के तरो नाथ कैसे के तरो । अब बहुकुटिल भरो १ कैसी तेरी सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान । ऊपर उजर देखो बक अनुमान २ भावतो भुवंग देखो अति बिबिचारी । सुरति शचान देखो मति तौ मञ्जारी ३ अति तो बिरोधी देखो अतिरे देवाना । छौदरशन देखो भेष लपटाना ४ कहै कबीर सुनो नरबन्दा । डाइनिडिम्भपरे सब फन्दा ॥ ५॥

अब गोरखनाथ के मतके जे नाथ कहावै हैं जे आपने इष्ट-देवता को नाथ कहै हैं तिनको कहै हैं कैसेहैं वे कि आप कालते नाथे गये अरु औरऊ को कालते नथावै हैं जिनको अपने अपने मतमें लै आवै हैं तेऊ कालते नाथे जायँगे अर्थात् नाथै सो नाथ कहावै अथवा नाथो जाइ सो नाथ कहावै ॥

कैसेकै तरो नाथ कैसेकै तरो । अब बहुकुटिल भरो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे नाथ ! तुम कैसे मुक्त होउगे गोरख-नाथ रहे तेतो योगऊ करतरहे अबतो योग को नामई रहिगयो मुद्रा पहिरिलियो वेष बनाइ लियो कपरा रँगिकै अरु नाना प्रकार के मन्त्रते भैरवभूत को बशिकैकै सिद्धि देखावन लगे लोगन को ठगनलगे कोई महन्त बनि बैठे कोई राजकाज करनलगे कोई राजा के गुरु ह्वै बैठे सो अब तुम बहुत कुटिलता ते भरे हौ ॥ १॥

कैसीतेरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यान।ऊपरउजरदेखोबकअनुमान २

तिहारी सेवा पूजा ध्यान करिबो कैसो है कि ऊपर ते तो यह जानि परै है बड़े पुजेरी हैं बड़े ध्यानी हैं बड़े योगी हैं और भीतर कपटते भरे हैं जैसे बक ऊपरते उज्ज्वल रहै है और भीतर कुटि-लई ते भरे मछरी धरन को ताके रहै है तैसे भीतर बासना भरी है काहूको धन पावै तो लैलेइ काहूके लरिका को देखै तो मूँड़ि लेइ काहू राजा को ठगि जागा पावै तो लैलेइ जाते हमारी महन्ती चलै ॥ २ ॥

भावतो भुवंगदेखो अतिबिबिचारी।
सुरतिशचानदेखो मतितौ मञ्जारी ३

भाव करिकै तौ भुवंग है जाको सांप धरैहै ताको बिष चढ़ैहै मरि जायहै तैसे जो इनको संग करैहैं ताहू के इनके मत को बिष चढ़िजाइ है इनके मतन में चल्यो सो मारो पर्‌यो अरु वे बड़े बिबिचारी होत हैं शास्त्र के मतते जो कर्म हैं ताको छोड़िइ ही देइ हैं अरु परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानते नहीं हैं जाते उद्धार ह्वै जाइ सो कर्मकाण्डी तो भला कछु स्वर्ग को सुख पाइ के संसार में परे हैं ये सीधे नरकही को चले जाइ हैं सो इनकी सुरति शचान ह्वै रही है जैसे शचान खोजत फिरै है कि जो कौन्यो जीव को पाऊँ तौ धरिलेउँ अरु उनकी मति जो है दुर्मति सो मञ्जारी ह्वै रही है जैसे मञ्जारी खोजत फिरै है कि जो काहू मूसको पाऊँ तौ धरिलेउँ तैसे येऊ खोजत बागै हैं कि काहू को पावैं तौ चेला करिलेइँ और धन लै लेइँ जैसे आप नरक में जाय हैं तैसे चेलौ को नरक में डारै हैं॥ ३॥

अतितौबिरोधीदेखोअतिरदेवाना।छौदर्शनदेखोभेषलपटाना४
कहै कबीर सुनो नरबन्दा। डाइनि डिम्भपरेसबफन्दा ५

योगी, जङ्गम, सेवरा, संन्यासी, दरवेश, ब्राह्मण तिनसों अति बिरोध करै हैं अरु अपने मत में अति देवाने ह्वै रहे हैं अर्थात् वही पाखण्ड मत को सब ते अधिक मानै हैं सो याही भांति छइउ दर्शन में देखै हैं कि भेष सब में लपटान्यो है कुछ सार पदार्थ नहीं जानै हैं भेष बनाइ लियो योगी जङ्गम सेवरा-दिक कहावन लगे ४ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे नर! तैंतो परम-पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को बन्दा है सो उनको तो ये षट्दर्शन-वारे जानै नहीं हैं आपने आपने मत में डिम्भ किये हैं कि हमारई मत ठीक है और मत झूठे हैं॥ ५॥

इति एकसैचार शब्द समाप्तम्॥ १०४॥

अथ एकसै पांच शब्द ॥ १०५ ॥

यह भ्रमभूत सकल जग खाया । जिन जिन पूजा तिन जहड़ाया १ अण्डनापिण्ड प्राण नहिं देहा । काटि काटि जिय केतिक येहा २ बकरी मुर्गी कीन्हो छेहा । अगिलजन्मउन्ह अवसर लेहा ३ कहै कबीर सुनो नरलोई । भुतवा के पूजे भुतवै होई ॥ ४ ॥

यहभ्रमभूतसकलजगखाया॥जिनजिनपूजातिनजहड़ाया १
अण्डनापिण्डप्राणनहिंदेहा॥काटिकाटिजियकेतिकयेहा २
बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्ह अवसर लेहा ३
कहै कबीर सुनो नर लोई । भुतवा के पूजे भुतवै होई ४

दुलहा, देव, भैरव, भवानी, ग्रामदेवता ई सब भ्रम हैं ई सब जगत् को खायेलेइ हैं जिन जिन इनको पूजा है तिनको तिनको जहड़ाइबो कहे वह कालदेइ है १ येई देय तिनके ना अण्ड है ना पिण्ड है इनको अनेक जीव काटि काटि दियो सो काह जानि कै दियो तुमको बैकलाइ डारैंगे फल ना देइँगे २ बकरी मुर्गी दैकै जो तुम इनको पूजा कीन्हों सोई आगिले जन्म तुम्हारो गर काटैंगे ३ सो श्रीकबीरजी कहैहैं हे लोगो ! तुम सुनौ ये भूतनको जो तुम पूजौगे तौ तुमहूँ भूत होउगे भूतके पूजेते भूत होइहै तामें प्रमाण "यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः । भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोपि माम्" (इति गीतायाम्) ॥ ४ ॥

इति एकसै पांच शब्द समाप्तम् ॥ १०५ ॥

अथ एकसै छः शब्द ॥ १०६ ॥

भवँर उड़े बक बैठे आय । रैनि गई दिवसौ चलिजाय १ हल हल कांपै बालाजीव । नाजानै काकरिहै पीव २ कच्चे बासन टिकै न पानी । उड़िगो हंस काय कुम्हिलानी ३ काग उड़ावत भुजा पिरानी । कहै कबीर यह कथा सिरानी ॥ ४ ॥

भवँर उड़े बक बैठेआय । रैनि गई दिवसौ चलिजाय १

हलहल कांपै बालाजीव । ना जानै का करिहै पीव २

यह जगत् में यह दशा ह्वैगई कि भवँर जे हैं रसिक सन्त जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के प्रेम में छकेरहे हैं ते उड़िगये कहे उठिगये अरु बक जेहैं गुरुवालोग ते बैठे आय जैसे बकुला मछरी खाय है तैसे ठगि ठगिकै जीवको स्वस्वरूप खाइलेइहै कहे भुलाइ देइहै वही ब्रह्म में लगाइके १ सो यह जीव तो बाला स्त्री कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र की चितृशक्ति है सो ब्रह्मधोखा में लगिकै हल हल कांपै है अर्थात् मैं आपने स्वामी को भुलायकै धोखाब्रह्म में लग्यो सो हाथ न लग्यो सो नाजानौं खफ़ा ह्वैकै मेरे पीउ कहे स्वामी अब कहा करैंगे ॥ २ ॥

कच्चेबासन टिकै न पानी । उड़िगोहंसकायकुम्हिलानी ३
कागउड़ावतभुजापिरानी । कहकबीरयहकथा सिरानी ४

सो उमिरि तो वह ब्रह्म में व्यतीत कै दियो और हाथ कुछ न लग्यो तब यह बिचारयो कि मैं अपने स्वामी जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगौं सो जैसे कच्चे बासन में पानी धरिदेइ तो बासन कच्चा बिगसि जाय है तैसे यह शरीर तो रहै नहीं है जब हंस उड़िगयो शरीर कुम्हिलाइ गयो कहे छूटिगयो भाव यह है तब पछितावई हाथ रहिजाय है ३ श्रीकबीरजी कहैहैं कि जैसे नारी अपने पति के आइबे को भुजा ते काग उड़ावै है जब पति नहीं आवै है तब भुजाको पिरावई रहिजाइ है तैसे ब्रह्महैब के लिये उमिरि बिताइ दियो अहंब्रह्म अहंब्रह्म करत करत वह सब कथा सिराइ गई कहे जब जब ब्रह्म भये उनको ब्रह्म न मिल्यो तब मेहनतई हाथ रहिजाइ है जैसे बूसी के कांड़े कुछ हाथ नहीं लगै है मेहनतई हाथ रहिजाइ है तैसे इनको बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के जाने ब्रह्म ह्वै जाइबो बूसई कैसो कांड़िबो है उहां कुछ हाथ नहीं लगै है तामें प्रमाण "श्रेयःश्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये । तेषामसौ

क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम् १ (इति भागवते) ॥ ४ ॥

इति एकसैछः शब्द समाप्तम् ॥ १०६ ॥

अथ एकसैसात शब्द ॥ १०७ ॥

खसम बिन तेलीके बैल भयो । बैठत नाहिं साधुकी संगति नाधे जन्मगयो १ बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दण्डसह्यो । धन दारा सुत राजकाजहित माथेभारगह्यो २ खसमहिंछोड़ि विषयरँग माते पाप के बीजबयो । झूठमुक्ति नल आशजिवनकी प्रेतको जूंठ खयो ३ लखचौरासी जीवयोनिमें सायर जात बह्यो । कहै कबीर सुनौ हो सन्तो श्वान कि पूंछ गह्यो ॥ ४ ॥

खसम बिन तेली के बैल भयो ॥

बैठत नाहिं साधु की संगति, नाधे जन्म गयो १
बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ, यम के दण्ड सह्यो ॥
धन दारा सुत राज काजहित, माथे भार गह्यो २

श्रीकबीरजी जीव को उपदेश करै हैं हे जीव! तेरे मालिक जे रामचन्द्र हैं तिनहीं बिना तैं तेली को बैल भयो जे साधु तेरो स्वरूप बताइदेइँ ऐसे साधुन की संगति में कबौ नहीं बैठै तेली के बैल की नाईं नाधे नाधे जन्म व्यतीत भयो जन्मतै मरत रह्यो १ जब कांधे जुवां नाधि जाय है तब निज तेली के निमित्त ढोइ ढोइ मरै है जो ना रेंगैं तो तेली डण्डा मारै है तैसे यह जीव धन, दारा, सुत, राज काज के हित नाना कर्म करै है इन्द्रिय-सुख लिये बहि बहि कहे नाना कर्मन को भारा ढोइ ढोइ कै पचै है अरु अन्त में यमदण्ड मारै हैं सो सहौ हौ याही रीति जन्म जन्म यमदण्ड सहौ हौ ॥ २ ॥

खसमहि छोड़ि विषय रँग माते, पाप के बीज बयो ॥
झूंठ मुक्ति नल आंश जिंवन की, प्रेत को जूंठ खयो ३

खसम जे साहब तिनको त्यागि विषयरङ्ग में मात्यो और पापको बीज बोवत भयो अर्थात् जो नारी आपने खसम को छोड़ि और पुरुष में लगैहै तो वाको बड़ो पाप होय है सो तैं खसम को छोड़िके नाना देवतन की उपासना में लगिजात भयो मति गयो सो तैं महापाप के बीज बोयो और नरन को ज्यावनवारी जो मुक्ति की जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयँगे तौ हम जीते रहैंगे हमारो जनन मरण न होयगो सो वह मुक्ति झूंठी है जौने शरीर ते उनके लोक को जायगो सो तन नाश ह्वै जाइगो जब फेरि सृष्टि समय होइगो तब वोई देवनके साथ फिरि आवैगो जनन मरण न छूटैगो सो ऐसी झूंठी मुक्ति के वास्ते तैं प्रेतन को जूठ खाय है कहे भैरव भूत आदिकन के बलिदान खाय है उनके दिये तपौना शराब पियै है ॥ ३ ॥

लखचौरासी जीवयोनि में, सायर जात बह्यो ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, श्वान कि पूंछ गह्यो ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, जीवो ! सुनो तुम परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते तुम्हारे रक्षक संसारसागर ते पार केदेनवारे जहाज तिनको छोड़ि श्वान जे हैं ई सब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछ गहे चौरासी लक्षयोनि समुद्र संसार में बहा जाय है सो श्वानकी पूंछ गहेते कैसे संसारसमुद्र ते पारजाउगे ॥ ४ ॥

इति एकसैसात शब्द समाप्तम् ॥ १०७ ॥

अथ एकसैआठ शब्द ॥ १०८ ॥

अवहमभयलबहिरजलमीना । पुरबजन्म तप का मदकीना १ तबमैंअक्षलोमनबरागी । तजलो कुटुम्बरामरटलागी २ तजलो काशीभैमतिभोरी । प्राणनाथकहुकागतिमोरी ३ हमचलिगैल तुम्हारेशरणा । कतहुंनदेखोहरिकोचरणा ४ हमहिंकुसेत्रकतुमहिं अयाना । दुइमहँदोषकाहिभगवाना५ हमचलिगैल तुम्हारेपासा । दासकबिरभलकैलनिरासा ॥ ६ ॥

अबहमभयलबहिरजलमीना। पुरबजन्मतपकामदकीना १
तबमैंअक्षलो मनबैरागी। तजलोकुटुम्बरामरटलागी २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैं साहब के पास गयो तब यह बिनती कियो कि तब तो संसार के जल के मीन रहे अब जबते हम संसार के बहिरे तिहारे प्रेमजल के मीन भये प्रथम हम पूर्वजन्म में पञ्चाङ्गोपासना तपस्या बहुत करी पुनि जब जन्म लियो तब हमको पूर्वजन्मकी सुधि बनीरही वह तपस्या को मद कहे अहंकार हमको बहुतरहै सो वह तपस्या के प्रभावते १ तबै हमको अच्छो मनमें वैराग्य रहै रघुनाथजी में भक्ति भई तब कुटुम्ब को छोड़िकै रामराम रट लगावतभयो ॥ २ ॥

तजलोकाशी भैमतिभोरी। प्राणनाथ कहुकागतिमोरी ३

तब प्राणनाथ मैं काशी छोड़िदियो और मेरी मति भोरी भई कहे पूर्वजन्म के तप के मद ते निर्गुणा रसरूपा भक्ति मोको न होत भई केवल ज्ञानै करिकै रामनामकी रटनि लगाइकै बिचरत भयो कि मिलिही जायँगे तब हे प्राणनाथ ! मेरी कहा गति होत भई सो कहौ हौ ॥ ३ ॥

हमचालिगैलतुम्हारेशरणा। कतहुँनदेखोहरिकोचरणा ४
हमहिंकुसेवकतुमहिंअयाना। दुइमहँदोषकाहिभगवाना ५

हम तुम्हारे शरण तो चलिगये कहे तुम्हारे नाम में रट लगावत भयो पै तुम्हारे चरणन को न देखत भयो अर्थात् दर्शन न पायो ४ सो हे भगवन्, षट्ऐश्वर्य संपन्न ! धौं हमहीं कुसेवक रहे जो तिहारो दर्शन न पायो धौं तुमहीं अयानरहे हमको न जानतरहे जो हमको नहीं मिले दुइमें काको दोष है ॥ ५ ॥

हमचालिगैलतुम्हारेपासा। दासकबीरभलकैलनिरासा६

अब दासकबीर जो मैं हौं ताको भलीभांति ते जब निराश करिदियो कि कौनिउ भांति की जब आश न रहिगई न ज्ञान करिकै न योगकरिकै न भक्ति करिकै केवल सुधारसरूपा निर्गुणा

भक्ति जब मोको दियो तब हम तुम्हारे पास चलि आये याते कबीरजी या देखायो कि जब सब बातते निराश ह्वै जाय हैं तब साहब के पास जाइ हैं ॥ ६ ॥

इति एकसैआठ शब्द समाप्तम् ॥ १०८ ॥

अथ एकसैनव शब्द ॥ १०९ ॥

लोग बोलै दुरिगये कबीरा । या मत कोइ कोइ जानैं धीरा १ दशरथसुत तिहुंलोकहि जाना । रामनाम को मर्म आना २ जेहि जिय जानिपरा जस लेखा । रजु को कहै उरग कोपेखा ३ यद्यपि फल उत्तम गुण जाना । हरिहि त्यागि मनमुक्ति न माना ४ हरि अधार जस मीनहि नीरा । और यतन कछु कहहिं कबीरा ॥ ५ ॥

लोगबोलै दुरि गये कबीरा । या मतकोइकोइजानैंधीरा १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब लोग बोलै हैं कि कबीर बहुत दूरि गये बहुत पहुँचे हैं सो या मत कोई कोई जे धीरे धीरे साधन में क्रियनमें समुझन में अभ्यासकरै हैं सो जानै हैं कौन मत सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

दशरथसुत तिहुँलोकहिजाना । रामनामकोमर्मैआना २

सो दशरथसुत को तो तीनों लोक जानैहै पै रामनाम को मर्म कोऊ कोऊ जानै है अर्थात् कबहूं दशरथसुत कबहूं नारायण कबहूं व्यापक ब्रह्महो अवतार लेई हैं नित्य साकेत बिहारी परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं जिनके नाम ते ब्रह्म ईश्वर वेद शास्त्र सब निकसैहैं तौने रामनाम को तो मर्म आन है ॥ २ ॥

जेहिजियजानिपराजसलेखा । रजुकोकहैउरगकोपेखा ३
यद्यपिफलउत्तमगुणजाना । हरिहित्यागिमन मुक्ति न माना ४

जाको यह रामनाम जैसो जानि पर्यो है सो तैसे लेख्यो है कोई रघुनाथजी को दशरथ के पुत्र मानै है कोई नारायण को अवतार मानै है कोई ब्रह्म को अवतार मानै है तिनही को नाम

रामनाम मानै है सो जैसे रसरी को उरग कहै हैं विना समुझे ऐसै रामनाम जो साहब को है सो भ्रम छोड़िकै विचारै तो साहिबै को बोध करै हैं ३ सो यद्यपि उत्तम गुणजानेके फल होय है कि विष्णुलोक प्राप्त भये परन्तु परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनके प्राप्त भये विना हम मुक्ति नहीं मानै हैं ॥ ४ ॥

हरिअधारजसमीनहिनीरा। औरयतनकछुकहैकबीरा ५

सो जैसे मीन को आधार अम्बु है विना जल मीन नहीं रहि सकै है तैसे श्रीरामचन्द्र सबके आधार हैं सो तिनहीं को जो आधार मानै तौ जैसे मीन सर्वत्र जलही देखैहै द्विभुजरूप श्रीरामचन्द्र को सर्वत्र देखै और उनहीं में रहै तो श्रीकबीरजी कहै हैं कि और यतन सब थोरई है तामें प्रमाण श्रीगोसाईं जी को (दोहा) "सो अनन्य अस जाहि के, मति न टरै हनुमन्त। मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त १" (तामें प्रमाण कबीरजी को) "नैनन आगे ख्याल घनेरा। अरध उरध बिच लगन लगी है, क्या संध्या क्या रैनि सबेरा। जेहि कारण जग भरमत डोलै, सो साहब घटलिया बसेरा। पूरि रह्यो असमान धरणि में, जित देखो तित साहब मेरा। तसबी एक दियो मेरे साहब, कहकबीर दिलहीबिच फेरा" ॥ ५ ॥

इति एकसैनव शब्द समाप्तम् ॥ १०९ ॥

अथ एकसैदश शब्द ॥ ११० ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई। कर्मकलिखा मिटैधौंकैसे, जो युग कोटि सिराई १ गुरु बशिष्ठ मिलि लगन शोधाई, सूर्यमन्त्र यक दीन्हा। जो सीता रघुनाथ बिआही, पल यक संचन कीन्हा २ नारदमुनि को बदन छपायो, कीन्ह्यो कपिसों रूपा। शिशुपालहु के भुजा उपारे, आपुनबोधस्वरूपा ३ तीनिलोक के करता कहिये, बालिबध्योबरियाई। एकसमयऐसोबनिआई, उनहूंअवसरपाई ४ पार्वतीको बांझ न कहिये, ईश न कहिय भिखारी। कहै कबीर करता की बातैं, कर्मकी बात निनारी ॥ ५ ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई । कर्मकलिखामिटैधौंकैसे, जो युगकोटिसिराई १ गुरुबशिष्ठमिलिलगनशोधाई, सूर्य-मन्त्रयकदीन्हा । जो सीतारघुनाथबिआही, पलयकसंचनकीन्हा २ नारदमुनिको बदन छपायो, कीन्ह्योकपिसों रूपा । शिशुपालहुकेभुजाउपारे, आपुनबौध स्वरूपा ३ तीनिलोककेकरताकहिये बालिबध्योबरियाई । एकसमय ऐसीबनिआई, उनहूं अवसर पाई ४ पार्वतीकोबांभ न कहिये, ईश न कहियभिखारी । कहकबीरकरताकीबातैं, कर्मकी बात निनारी ॥ ५ ॥

श्रीमन्नारायण वैकुण्ठ ते केतन्यो अवतार लियो तेऊ कर्म की मर्यादा राखिबोई कियो सो जे साहब उत्पत्ति पालन संहार करै हैं तेतो कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो और की कहां गति है सो विना परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के नाम लिये कर्मकी गति काहू की मेटी नहीं मेटिजाइहै श्रीरामनाम ते कर्मकी गति मिटिजाइ है साहब मेटिदेइहैं तामें दोऊ प्रमाण "रामनाममणि बिषय ब्याल के । मेटतकठिनकुअङ्कभालके" ॥ १ ॥ "सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच" (इति गीतायाम्) "सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचत । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम" (इति रामायणे) और कबीरऊजी को प्रमाण "पहिले बुरा कमाइकै, बांधीबिषकैमोट । कोटिकर्ममिटपलकमें, आवैहरिकी ओट" और या पद को अर्थ स्पष्ट है ॥ १ । ५ ॥

इति एकसैदश शब्द समाप्तम् ॥ ११० ॥

अथ एकसैग्यारह शब्द ॥ १११ ॥

है कोई पण्डित गुरुज्ञानी उलटि वेदको बूझै । पानी में पावक

जरै अन्धे आंखी सूझै १ गैया तो नाहर को खायो हरिना खायो चीता। कागालगरैफांदिकैबटेरनबाजजीता. २ मूसातो मञ्जारै खायो स्यारै खायो श्वाना। आदिको उपदेशजानै तासु बेसै बाना ३ एकै तो दादुरसोखायो पांचौजभुवंगा। कहै कबीर पुकारिकै हैं दोऊयकसंगा ॥ ४ ॥

हे कोई गुरुज्ञानीपण्डित, उलटिवेदकोबूझै ॥
पानी में पावक जरै, अन्धे आंखी सूझै १

ऐसो गुरुज्ञानी पण्डित कोई नहीं है जो उलटिकै वेदको अर्थ बूझै अर्थात् गायत्री ते वेद भयो है प्रणव ते गायत्री भई है प्रणव रामनाम ते उत्पत्ति भयो है सो कहै हैं पानी जो है बानी तामें पावक बरै है कहे ब्रह्माग्नि बीज रामनाम है सो सर्वत्र पूर्ण है सो अन्धे के आंखी में कैसे सूझै उलटिकै वेद को बूझै तो जानै कि सबको मूल रामनामई है ॥ १ ॥

गैयातोनाहरकोखायो, हरिनाखायोचीता ॥
कागालगरै फांदिकै, बटेरन बाज जीता २

गैया जो गायत्री तौनेके नाना अर्थ करि कहीं सूर्य में लगावैहै कहीं ब्रह्म में लगावै है सोई अर्थ जो गैया सो सांच गायत्री को तात्पर्यार्थ साहब तिनको ज्ञान जो नाहर ताको खाय लियो और हरिना जो अद्वैतज्ञानकी हरि नहीं है प्रणव को अर्थ कियो कि जीव नहीं है एक ब्रह्महीहै सो मैं हौं या जो हरिना सो साहब को ज्ञान जो चीता ताको खाय लियो चीता साहब के ज्ञानको काहेते कह्यो कि जब साहब को ज्ञान होइहै तब अद्वैतज्ञान नहीं रहिजाय है और काग जो अज्ञान सो साहब को ज्ञान जो लगर शिकारी पक्षी कागा को खानवारो ताको कागा खाय लियो और असत् शास्त्र के अनेक प्रकार के जे अर्थ तेई हैं बटेर ते सत्शास्त्र जे साहबके बतावनवारे तेई हैं बाज ताको जीतिलियो अर्थात् तामसी जे हैं ते तामसशास्त्र को प्रचार करि सत्शास्त्रको लोप करिदियो ॥ २ ॥

मूसा तो मञ्जारै खायो, स्यारै खायो श्वाना ॥
आदि को उपदेश जानै, तासु बेसै बाना ३
एकै तो दादुर सो खायो, पांचौ जे भूवंगा ॥
कहै कबीर पुकारिकै, हैं दोऊ यकसंगा ४

मूसा जो है बितण्डाबाद सो साहब को उपदेश जो मञ्जार ताको खायलियो और स्यार जो माया सो जीवके स्वरूप ज्ञानते जो होइ है श्वान भवानन्द सोई है श्वान ताको खायलियो सो कबीरजी कहैहैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनाम जानै ताहीको बेसबाना है और सब पाखण्डई है ३ एकही दादुर जो मन सो दादुर के खायलेनवारो पांच भुवंग जे रति नेष्ठाभाव प्रेम-रस ते ताको खाय लियो सोई एक एक के बिरोधी रहे तिनको खाइ लीन्हे सो कबीरजी कहै हैं जीव साहब एकैसंग के हैं आपने स्वरूप को न समुझ्यो या न बिचारयो कि मैं साहब को हौं ताते संसारी ह्वैगयो है जो साहब मुख अर्थ बिचारतो तौ एकही संगको है ॥ ४ ॥

इति एकसैग्यारह शब्द समाप्तम् ॥ १११ ॥

अथ एकसैबारह शब्द ॥ ११२ ॥

झगरा एक बढ़ो जिय जान । जो निरुवारै सो निरबान १ ब्रह्म बड़ाकी जहँते आया । वेदबड़ाकी जिन उपजाया २ इहमनबड़ा की जेहिमनमाना । रामबड़ा की रामहिं जाना ३ भ्रमि भ्रमि क-बिरा फिरै उदास । तीर्थ बड़ा की तीर्थकदास ॥ ४ ॥

झगराएक बढ़ो जियजान । जोनिरुवारै सो निरबान १
ब्रह्म बड़ा की ज़हँते आया । वेदबड़ाकीजिनउपजाया २
इहमनबड़ाकीजेहिमनमाना । रामबड़ाकीरामहिंजाना ३
भ्रमि भ्रमिकबिराफिरैउदास । तीर्थबड़ाकीतीर्थकदास ४

हे जीवौ ! यह झगड़ा बढ़ो है ताको बिचारकरो जो कोई यह

झगड़ा निरुवारै सोई निर्वाण कहे मुक्त है सो कहेहैं भला जौन ब्रह्मजीव आपने मनते अनुभव करि लियो है सो बड़ा है कि जहांते जीव आयोहै लोकप्रकाश ते सो बड़ो है सो ब्रह्म बड़ा नहीं है वा लोकप्रकाश बड़ा है जहांते जीव आयो है और जौने वेद की आज्ञाते नाना ईश्वर मानिलियो है सो बड़ा है कि रामनामते वेद उपजाहै सो बड़ा है अर्थात् रामनाम बड़ा है जाते वेद भयोहै और मन बड़ाहै कि जाको मन आपने ते बड़ा मान्यो है सो बड़ा है अर्थात् जो मन वचन के परेहै सोई बड़ो है जाको मन मान्यो है और श्रीरामचन्द्र काहूको उपदेश करै नहीं आवैं श्रीरामचन्द्रके जाननवारे राम को बतायकै जीवन को उपदेशके उद्धार कैदेइ हैं याते रामदास बड़े हैं और तीर्थ बड़ो कि जे तीर्थको विधिसहित न्हाइहैं ते बड़े अर्थात् जे तीर्थकेदास बनेहैं ते बड़ेहैं सो हे काया के बीरौ, जीवौ! भ्रमि भ्रमि काहेको उदास फिरौ हौ या बात को बिचारौ ॥ १ ॥ ४ ॥

इति एकसैबारह शब्द समाप्तम् ॥ ११२ ॥

अथ एकसैतेरह शब्द ॥ ११३ ॥

झूठे जनि पतिआहुहो सुन सन्त सुजाना। घटहीमेंठगपूरहै मति खोउअयाना १ झूठेका मण्डानहै धरती असमाना। दशौ दिशाजेहि फन्दहै जिउघेरेआना २ योग यज्ञ जप संयमा तीरथ व्रतदाना। नवधा बेद किताब है झूठेका बाना ३ काहूको शब्दै फुरै काहू कर माती। मान बड़ाई लेरहै हिन्दू तुरुक दुजाती ४ बात कथै असमान की मुद्दति नियरानी। बहुत खुदीदिल राखते बूड़े बिन पानी ५ कहै कबीर कासों कहों सिगरो जगअन्धा। सांचेसों भाजे फिरैं झूंठेसों बन्धा ॥ ६ ॥

झूठेजनि पतिआहु हो, सुनसन्तसुजाना। घटही में ठगपूर है, मतिखोउ अयाना १ झूठेकामण्डानहै, धरती असमाना। दशौदिशाजेहिफन्दहै, जियघेरेआना २ योग

यज्ञजपसंयमा, तीरथ ब्रत दाना । नवधावेदकिताबहै, झूठेकाबाना ३ काहूकोशब्दैफुरै, काहूकरमाती । मान बड़ाईबलैरहै, हिन्दू तुरुकदुजाती ॥ ४ ॥

हे सन्त सुजान ! जो तुम सुजान होउ तौ वा झूठे सो न पतिआहु मेरी बात सुनो वह ठग जो है तिहारो अनुभव धोखाब्रह्म सो तेरे घटही में है धोखा में परि आपनो स्वरूप जो साहब को दास ताको मति खोउ १ धरती में कहे नीचेके लोकन में और असमान में कहे ऊपर के लोकन में वही झूठ ब्रह्म का मण्डान है और दशौदिशा जे हैं छः शास्त्र और चारि वेद तिनमें वहीको फन्द है वही के फन्दते इनको जो है यथार्थ अर्थ सो कोई नहीं जानै है जीउको आनिकै घेरि लियो है अर्थात् शास्त्रन वेदन में अर्थ बदलि बदलि वही झूठब्रह्मको उपदेशकैके गुरुवा लोग भुलाइदियो है सब में वही धोखही ब्रह्म देखावैहै २ योग यज्ञ जप संयम तीर्थव्रत दान नवधासगुणा भक्ति और वेद किताब इन सब में झूठें कहे वही धोखाब्रह्म का बाना कहे बिरदावली गुरुवालोग सबको मनावै हैं किया साधनकीन्हे अन्तःकरण शुद्ध होय है तब ब्रह्मको प्राप्त होइ है ३ और काहूको शब्दै फुरै है कहे वेद शास्त्र किताब कुरान पढ़िकै उन को अर्थ बदलि बदलिके शास्त्रार्थ करिकै और को हरावै है उनहीं को हिन्दू तुरुक दूनों जाति मानबड़ाई करै हैं और कोई मान बड़ाई लैरहे हैं पण्डित मोलवीलोग और कोई जे बैरागी हैं संन्यासी हैं फ़क़ीर हैं औलिया हैं ते काहूको बेटालियो काहूको जागा दियो कहूं जलमें हीठिगयो कहूं आकाश ते उड़िगये कहूं दश पांच वर्ष कोठरी चुनाइकै आये कहूं भूत भविष्य वर्तमान जानि लियो इत्यादिक नाना प्रकार की करामात देखाइकै हिन्दू तुरुक दूनों दीनन सों मान बड़ाई लैकै रहे हैं ॥ ४ ॥

बातकथैअसमानकी, मुद्दतिनियरानी ॥
बहुतखुदीदिलराखते, बूड़े बिन पानी ५

और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र अल्लाह साकेत जाहूत के रहनवारे तिनको तो जानै नहीं हैं आसमान जो है शून्य धोखाब्रह्म तौनेकी बातैं कथै हैं कि हमहीं ब्रह्म हैं और हमहीं बेचन बेचिगून बेसुवा बेनिमून हैं और उनके जिन्दगीकी मुद्दति नियरेही है केतनो यहै कथत कथत मरिगये केतौ मरेंगे केतो मरेजायहैं यह नहीं विचारै हैं कि जो खुदा होते ब्रह्म होते तो मरि कैसे जाते सो बहुत खुदी दिलमें राखते हैं कि खुदखाविंद हमही हैं और जो बहुत खुबी पाठ होइ तो यह अर्थ कि हमहीं सबते खूब कहे अच्छेहैं पै बिना पानी भूरहीमें बूड़िगये अर्थात् मरिहीगये वह जो ब्रह्म खुदाकोज्ञानकियो कि हमहीं हैं सो ज्ञान भूरही ठहर्यो वामें कुछु रस न ठहर्यो मरत में वह रक्षा तनकऊ न कियो जो कहौ जे साहब खुदाको जानै हैं ते कब जियेहैं तेऊतो मरिहीजायहैं तो तुमहीं रामायणमें सुने होउगे कि जेतेभर प्रजाहैं जेतेभर भालु बांदर हैं तिनको श्रीरामचन्द्र सदेह आपने धामको लैगये और श्रीहनुमान्‌जी को विभीषणको छोड़िगये ते अबलों बने हैं और काकभुशुण्डि, नारद, अगस्त्य, वशिष्ठजी रामोपासकहैं ते अबलों बनेहैं जो कहो अबके तो रामभक्त को मरत देखे हैं तो जे साधनमें हैं और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को नीकी भांति नहीं जानै हैं और श्रीरामचन्द्रकी प्राप्ति नहीं भई ते शरीर छोड़िकै वह लोकको क्रमतेजाइहैं शरीरछोड़िकै फिरअवतार लेइहैं पुनि ज्ञान होइ है तब जाइहैं और जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अच्छी भांति जानिलियो है और तहांको प्राप्त होइ गये हैं तिनको शरीर छोड़िबो ऐसो कि यहां गुप्त ह्वैगये पुनि कहूं प्रकट ह्वैके उपदेश करिकै जीवन को तार्‌यो वे साहब को प्राप्तई हैं जब चाहै हैं तब साहब के रहै हैं जब चाहै हैं तब प्रकट ह्वैकै जीवन को उपदेश करिकै तारै हैं सो श्रीकबीरजी प्रकटई देखाइ दियो कि काशीमें शरीर छोड़्यो मथुरा में उपदेश कियो और चारिउ युग उपदेश करतई हैं और मुसल्मानन के अली शरीर छोड़्यो पुनि लौटि कै आय कै संदूक में आपनी लाश राखिकै ऊंट में लादिकै

लैगये सो द्वैपहार के बीच ह्वै निकसे जाइ सो वही में अटकाइ दियो सो अबलों वह संदूक्क अटकी है सो इन को चोला छांड़िबो यहि भांति को है जैसे सांप केचुरि छांड़ि देइ हैं ॥ ५ ॥

कहै कबीर कासों कहों सकलोजगअन्धा ॥
सांचे सों भाजे फिरें झूठे सों बन्धा ६

सो कबीरजी कहै हैं कि मैं कासों कहों सिगरो संसार आंधर ह्वै रह्यो है सांचे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सर्वत्र पूर्ण हैं तिनसों भागो फिरे है उनको नहीं देखै है और झूठा जो है धोखाब्रह्म ताही में बँधिरह्यो है और यथार्थ अर्थ में चारयो वेद छइउशास्त्र तात्पर्य कै कै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को बर्णन करै हैं सो मैं आपने सर्व सिद्धान्त में स्पष्ट करिकै लिखिदियो है ॥ ६ ॥

इति श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर
श्रीसीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथ
सिंहजूदेवकृततिलकशब्दसमाप्तम् ॥

इति ॥

अथ कहरा लिख्यते ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके बचन समाई हो । मेली सिष्टचराचित राखो रहो दृष्टिलौलाईहो १ जो खुटकार बेगि नहिं लागो हृदय निवारहु कोऊहो । मुक्तिकी डोरि गांठि जनि खैंचो तब बांझीबड़रोहूहो २ मनुवे कहो रहे मनमारे खीझुबो खीझि न बोलैहो । मनुवो मीत मिताइ न छांड़ै कबहूं गांठि न खोलैहो ३ भूलौ भोग मुक्ति जनि भूलौ योग युक्ति तन साधो हो । जो यहि भांति करहु मतवारी तामतके चितबांधो हो ४ नहिंतौ ठाकुर है अतिदारुण करिहै चालु कुचाली हो । बांधि मारिडारिसब लेहै छुटी सब मतवाली हो ५ जबहीं सामत आइ पहूंचे पीठि सांट

भल टूटैहो। ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखै कहे काहुकिन छूटैहो ६ एक तो अनिष्ट पाउंपरि बिनवै बिनती किये न मानैहो। अन-चिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिंचानैहो ७ लेइ बोलाय बात नहिं पूछै केवटगर्भतनबोलै हो। जेकरि गांठि सबल कछु नाहीं निराधार ह्वै डोलैहो ८ जिन्हसम युक्ति अगमनकै राखिन घरणि मांझधर डेहरिहो। जेकरे हाथ पाउं कछु नाहीं धरणि लाग तनसेहरिहो ९ पेलनाअछत पेलि चलु बौरे तीर तीर कह टोवहुहो। उथले रहौ परौ जनि गहिरे मति हाथै के खोवहुहो १० तरकै घाम उपरकैभूभुरि छांह कंतहुं नहिं पावहुहो। ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कसन छतरिया छावहुहो ११ जो कछु खेलकियो सो कीयाबहुरिखेलकसहोईहो। सासु ननँद दोउ देतउलाटन रहहु लाज मुखगोईहो १२ गुरुभोढीलगोनभोलचपच कहा न मानेहु मोराहो। ताजी तुरुकी कबहुं न साजेहु चढ़्यो काठ के घोरा हो १३ ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचैहो। जेहिरँगदुलहा ब्याहन आये तेहिरँग दुलाहिन राचैहो १४ नौका अछत खेवै नहिं जान्यो कैसे लागहु तीराहो। कहै कबीर राम रसमाते जोलहा दासकबीराहो ॥ १५ ॥

सहजध्यानरहु सहजध्यानरहु, गुरुके बचन समाईहो ॥
मेलीसिष्ट चराचित राखो, रहौ दृष्टि लौ लाईहो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव। तैं गुरु के बचन में समाइ के सहज ध्यान तैं करु गुरु के बचन जो आगे लिखि आये हैं कि सुरतिकमल में गुरु बैठे रकार मकार जपै हैं तामें समाइजाइ अर्थात दलदलमें बाढ़िकैइक्कीसहजार छासै श्वास जे चलै हैं तिनमें तेतनेरामनामजपै कौनी रीतिते जपै तामें प्रमाण ॥ श्रीकबीरजी को पद ॥ शतो योग अध्यातम सोई। एकै ब्रह्म सकल घट ब्यापै द्वितिया और न कोई ॥ प्रथम कमल जहँ ज्ञान चारिदल देव गणेशको बासा। ऋधि सिधि जाकी शक्ति उपासी जपते होत

प्रकासा॥ षटदल कमल ब्रह्मको बासा साबित्री सँग सेवा। षट सहस्त्र जहँ जाप जपतहैं इन्द्रसहित सबदेवा॥ अष्टकमल जहँ हरिसँग लक्ष्मी तीजो सेवक पवना। षटसहस्त्रजहँ जाप जपत हैं मिटिगो आवागवना॥ द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजा शक्ती सारँग। षटसहस्त्र जहँ जाप जपत हैं ज्ञान सुरतिलैपारँग॥ षोडशकमलमें जीवको बासा शक्तिअविद्याजानै। एकसहस जहँ जाप जपत हैं ऐसाभेदबखानै॥ भवँरगुफा जहँ दुइ दल कमला परमहंसकर बासा। एकसहस जाके जाप जपतहैं करम भरमको नासा॥ सहस कमल में झिलमिलदर्शों आपुइ बसत अपारा। ज्योतिस्वरूप सकल जगव्यापी अक्षय पुरुष है प्यारा॥ सुरति कमल परसत गुरु बोलै सहजजापजपसोई। छासै एकइस सहस हिं जपिले बूझै अजपा कोई। यही ज्ञानको कोई बूझै भेद अगोचर भाई। जो बूझै सो मनकापेखै कहकबीर समुझाई १ और यही राम नाम मन बचनके परे है सो आगे कहि आये हैं और सब मनके भितरैंहै यही राम नाम सबके ऊपर है ताहीमें मतौ तबहीं पारैजाउगे व मेलीसिष्ट कहे सिष्ट जो संसार ताको मेलिदेउ कहे छोड़िदेउ और चराचितराखौ कहे सहजसमाधि आगे कहिआयेहैं ताको चरचितराखौ कहै वही जानतरह्यो अथवा वाहीमें जो आपने चितको चराकहे चलतराखौ दलदल में चलत रहै और वही में आपने दृष्टिकी लौ लगाय राखौ कहे ज्ञानदृष्टिते साहब को रूप देखतरहो और ऊपरकी दृष्टिको नासाग्र में लगाय राखौ सो सांसके निकसतमें रकारके पैठत में मकार को निशिदिन जपतरहो सुरति याही में लगायराखौ या जीव सदाका श्रीरामचन्द्रहीको है सदा सांस सांसप्रति रामनामको जपत रहै हैं तामें प्रमाण "रकारेणबाहिर्याति मकारेणविशेत्पुनः। रामरामेति वै मन्त्रं जीवोजपति सर्वदा" रकारकरिकै अग्निको पवनको संयोग होइ है तहांते नाद उठैहै अरु अकार करिकै शब्द होइ है और मकार करिकै वाक्यहोइहै यहमें सुरति लगाइराखै यही परम

अजपा है तामें प्रमाण "रकाराज्जायते वायू रकाराच्छब्द उच्यते। वह्निरवं च मकारेण रामएवेति वै श्रुतिः" दूसरो कबीर को पद ॥ जागुरे जिव जागुरे अब क्या सोवै जिय जागुरे। चोरनको डर बहुतरहतहै उठि उठि पहरे लागुरे। ररौ करि खोलु ममोकर भीतर ज्ञान रतन करिखागुरे। ऐसे जो अजरायल मारै मस्तकी आवैभागुरे। ऐसीजागनिजोकोईजागै ताहरिदेइसोहागुरे। कह कबीरजागोईचहिये क्यागिरहीबैरागुरे २ सो या जीव आपनो स्वरूप भूलिगयो ॥ १ ॥

जो खुटकार बेगि नहिं लागौ, हृदय नेवारहु कोहूहो ॥
मुक्ति कि डोरिगांठिजनिखैंचौ, तब बांझीबड़रोहूहो ३

और हृदयते काम क्रोधादिकनको निवारण कीन्ह्यो संयम नियमादिक करिकै और मनमायाके खूट करनवारे ऐसेजे साहब तिनमें बेगि जो न लग्यो मुक्तिकी डोरिकी गांठिकहे चित अचित की गांठि जनि खैंचौ कहे न छोरयो तौ रोह जो मोह है सो तुमको बांझी कहें फँदाइलेइहै ॥ २ ॥

मनुवै कहौ रहै मनमारे, खिझुवाखीझि न बोलैहो ॥
मनुवोमीतमिताई न छोड़ै, कबहूं गांठि न खोलैहो ३

जाके मन मीत होय सो मनुवा कहावै है कैसे जैसे जाके धन होयहै सो धनिका कहावै है जाके धन नहीं होयहै सो निर्द्धनिया कहावैहै सो मन जीवते भयो है ताते मनुवा जो जीव है ताको कहौ आपनो-मन मारेरहै खिझुवा जो काम क्रोधादिक मनके खिझावनवारे तिनकी ओर सपनहूं ना हेरै हे सन्तलोगो! या बात की यतन करो काहेतें मनुवा जो जीव है मनमीतकी मिताई न छोड़ैगो और कबहूं जड़चेतन की गांठि न खोलैगो ताते साहब को जानो जाते मनकी मिताई जीव छाँड़ै ॥ ३ ॥

भूलौभोगमुक्तिजनिभूलौ, योगयुक्तितनसाधौहो ॥
जोयहिभांतिकरहुमतवारी, तामतकेचितबांधौहो४

सो हे साधो! जीवनते कहो कि नानाबिषयके जे भोग हैं ताको भुलाइ देउ और मुक्ति को जनिभूलौ और जो सहज समाधिरूप योग प्रथम तुकमें कहिआयेहैं याकी युक्ति तनमें साधौ कहे करौ और नाना मतमें परिकै यहिभांति को मतवारी जो करौहौ कि आत्मै मालिक है हमहीं ब्रह्म हैं याही मनमें चितको बांधो हौ सो न बांधौ जो बांधौगे तौ ऐसो होयगो सो कहे हैं॥ ४॥

नहिं तो ठाकुर है अतिदारुण, करिहै चालकुचालीहो॥
बांधि मारि डारि सब लेहै, छूटी सब मतवाली हो ५

तौ तिहारे शरीरको ठाकुर जो मन है सो अतिदारुण है और याकी नीच गति है सो तिहारी चालकुचाली कैदेइगो कहे बिषयन में लगायकै संसारही ओर लगाय देयगो तौने संसार में जब तैं मरैगो तब तोको यमदूत बांधिकै पनहिनसों मारिकै डारिलेइगो कहे जो जो तैं कर्म करै है सो सबनरकनमें भुगताइ लेइगो तब सबमतवाली तेरी छूटि जायगी॥ ५॥

तबहीं सामत आइ पहूंचे, पीठि सांट भल टूटै हो॥
ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखैं, कहे काहु किन छूटै हो ६

जब यमराजके सामत जे दूत ते जब पहुँचैंगे तब सांटसों भल पीटैंगे मारत मारत केतनो सांट टूटि जायँगे और कुटुम्बके लोग सबठाढ़े देखैंगे सो हे मूढ़! तैं या नहीं बिचारै है कि सबछूटै को पुकारै हैं काहूके कहे काहे नहीं छूटैहैं जे गुरुवालोग बताय कुमार्ग में लगायोहै ते यमदूतन से काहे नहीं छड़ाइ लेइहैं॥ ६॥

यकतो अनिष्ट पांयपरि बिनवै, बिनती किये न मानै हो॥
अनचिन्हरहोकियोनचिन्हारी, सो कैसे पहिचानै हो ७

एक जे साहब हैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्टरहे कहे उनको इष्ट न मानत रहे और वहां यमदूतनसों पांय परि परि बिनवै है सब देवतनते बिनवैहै वे बिनतीहू किये नहीं मानैहैं काहेते कि दया-हीन हैं और साहब जे दयालु छड़ावनवारे तिनसों अनचिन्हार

रहे चिन्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै भाव यह है कि जो अजहूं स्मरणकरो तौ साहब छड़ाइही लेइगो ॥ ७ ॥

लेइ बुलाय बात नहिं पूछै, केवटगर्ब तन बोलै हो ॥
जेकरी गांठि सबल कछु नाहीं, निराधार ह्वै डोलै हो ८

और केवट जे गुरुवालोग हैं ते तब तो गर्ब कहे अहंकार तन में कैके तुमको बोलाय आपने मतमें बोलाय लीन्हेनि अब जब यमदूत मारनलगे तब तुमको बात नहीं पूछै हैं गुरुवालोग सो जाके सबल कहे खर्च राम नाम रह्यो सो पार भयो और जाके राम नाम सबल कछु नहीं रह्यो सो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलै है अथवा निराधार जो ब्रह्म ताहीमें डोलै है ॥ ८ ॥

जिनसमयुक्तिअगमनकैराखिन,धरणिमांझधरडेहरिहो॥
जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं, धरन लागु तन सेहरिहो ९

जौने स्त्री पुत्रादिकन ते आगेन नाना युक्ति कैकै पालन कियो है तौन धरणि कहे स्त्री शरीर छूटे डेहरी भरि जायहै आगे नहीं जायहै सम जो पाठ होय तौ जिनका अपने सम बनाय राखिन तौन स्त्री डेहरी लौं पहुँचाई धुनिते था आयो कि पुत्र चितालौं जायहै सो जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं कहे जेकरे हाथ पाउँ नहीं है ऐसो जो जीवात्मा ताको जब यमदूत धरनलागु तब तन में सेहरि ह्वैआवै है तन विकल ह्वैजाइहै वे कोऊ नहीं सहाय करै हैं ताते साहब को जानौ जो कहो यमदूतै कैसे धरैंगे तौ लिङ्ग-शरीरते ॥ ९ ॥

पेलनाअछतपेलिचलुबौरे, तीर तीर का टोवहुहो ॥
उथलेरहौपरौजानि गहिरे, मति हाथेकै खोवहुहो १०

सो कबीरजी कहैहैं कि पेलना जो रामनाम सो अछत बनैहै ताको संसारसमुद्र में पेलिकै हे जीव ! संसारसमुद्र उतरिजा तीर तीर कहे नाना मतन को का टोवत फिरै है उथले में रहौ अर्थात् साहब को ज्ञान कीन्हे रहौ गहिर जो धोखाब्रह्म कठिन तामें

न जाउ वहाँ गये तुम्हार हाथहुको जीवत्व सो जात रहैगो ताते तुम न खोवौ उथले कहे साहब ज्ञान जानौ ॥ १० ॥

तरकै घाम उपरकै भूभुरि, छांह कतहुँ नहिं पावहु हो ॥
ऐसोजानिपसीजहुसीजहु, कसनछतरिया छावहु हो ११

तरको घाम कहे नाना कर्म जे नीको नागा किये ताकी जो ताप संसार में ऊपर की भूभुरि कहे नरकमें गये तौ वहाँ तपै है स्वर्ग में गये तौ गिरनकी भय बनी है काहूको अधिक ऐश्वर्य देख्यो तो ईर्षा बनी रहैहै कि ऐसो कर्म हम न किये ये दोऊ तापमें साहबको ज्ञानरूप छांह कतहूं नहीं पावैहै ऐसो तुमजानते हौ पै वही में पसीजौ हौ कहे श्रम करौहौ पसीना चलै है और छीजौहौ साहबकी ज्ञानरूप छतरिया काहे नहीं छावहुहौ ॥ ११ ॥

जो कछु खेल कियो सो कीयो, बहुरि खेलि कसहोई हो ॥
सासुननँददोउ देतउलाटन, रहहु लाज मुखगोईहो १२

जो कछु खेल कियो कहे जो कछु कर्म किये सोई भोग कियो अथवा जौनखेल मायाब्रह्म को साथ करिकै कियो सोई फल भोग कियो सो बिना रामनाम लीन्हें इनको छोड़िकै फेर खेल कियो चाहौ मुक्तवाला सो कैसे होइगो सासु जो है मूलप्रकृति और ननँदि जोहै विद्या माया सो ये दूनों तुमको उलाटन कहे उलटिकै जवाब देइहैं कि विद्या माया करिकै मुमुक्षु ह्वै मुक्तिकी इच्छा करत रह्यो सो अब हम तुमहीं ले लपेटिलियो तुम हमको त्यागत रह्यो है अब नहीं छूटि सकौ हौ या जवाब सुनि तुम लाजिकै मुख गोइ रहौहौ लाचार ह्वै छूटि नहीं सकौहौ ॥ १२ ॥

गुरु भो ढीलगोन भो लचपच, कहा न मानहु मोराहो ॥
ताजी तुरकी कबहुं न साजेहु, चढ़े न काठ के घोराहो १३

जो गुरुवालोग तुमको उपदेश कियो ते गुरु ढील ह्वै गये काहेते कि जौन जौन उपासना की गोन तुम्हारे ऊपर लादि दियो तेते देवता लचरात ह्वै गये कहे उनके छड़ाये ते ना छूटे संसारमें परेजाय

देवताके फुरते न उत फुर होइहै जब देवतै न फुरे तब गुरुवा ढील परिगयो सो कबीरजी कहे हैं कि जो मैं कहत रह्यो सो तुम ना मान्यो कि रकार मकार जपौ याहीते छूटौगे ताजो तुरकी जो रकार मकार ताको कबहूं न साज्यो कहे कबहूं रामनाम ना लियो जो साहबके पास लै जाय काठको घोरा जो है मन जड़ तामें चढ्यो सो कूदिकै संसारगाड़ में डारिदियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामें चढ़त्यो तौ तुमको कूदिकै साहबके पास पहुँचावतो ॥ १३ ॥

तालझांझझलबाजत आवै, कहरा सब कोइ नाचैहो ॥
जेहिरँगदुलहाब्याहनआये, तेहिरँगदुलहिनिराचैहो १४

गुरुवालोगन के ओट झांझ हैं और जीभ ताल देइ है वही ब्रह्महीमें ताल देइहै कहे नानावाणी करिकै नाना मतन करिकै वही ब्रह्ममें चुनावै है अथवा जाको जौन उपासना बतावै है ताको तौन इष्टदेवता है ताहीको ब्रह्म कहैहैं ताहीको सब कुछ कहैहैं उहै तालको मानदेइहैं अर्थात् सब शास्त्रको अर्थ वाही में पर्यवसान करैहै और गुरुवनमें लागिकै सुखबाचक जो कर्ता न हरागयो कहे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र को भूलि गये संसार में सब जीव दुखिया ह्वै नाचनलगे कोई रजोगुणी उपासनामें राचत भये कोई तमोगुणी उपासनामें राचतभये कोई सतोगुणी उपासनामें राचत भये जेहि रंग दुलहा जे उपासनावारे जीव ब्याहनआये कहे गुरुवालोग जौनरङ्गमें लगायो तेहि रङ्गमें दुलहिनि बुद्धि रचतभई ॥ १४ ॥

नौका अछत खेवै नहिं जान्यो, कैसेहु लागहु तीराहो ॥
कहे कबीर रामरस माते, जोलहा दास कबीराहो १५

अछत नौका जो रामनाम है ताको खेवै न जान्यो कहे जौने विधिते संसारसागरते पारकैदेइहै सो विधि रामनाम जपिबे की न जान्यो सो कैसे संसारसागरते पारह्वैकै तीरलागोगे सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जोलाहा कहे जो कोई रामरस लहा है अर्थात् रामरस पाय मातो है सोई संसारसागर को पार पायो है सोई कायाको

बीर जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास भयोहै जो माते पाठ होय तो या अर्थहै कि कबीरजी कहै हैं कि जातिको मैं जोलहा सो राम के रस में मातेते मैं दासकबीर कहवावनलग्यो पार्षद्रूप जो हंसस्वरूप याही शरीर में पायगयो संसारको पार ह्वैगयो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास ह्वैगयो तुम ब्राह्मणादिक जो रामरसमें मतौगे तौ कैसे संसारसागरते ना पारहोउगे पारही ह्वै जाउगे कबीरजी रामरसमें मातिकै बचिगये तामें प्रमाण "सायर बीजकको" हम न मरैं मरिहै संसारा। हमको मिला जियावनहारा ॥ अबनामरौंमोरमनमांना। तेई मुवाजिन राम न जाना ॥ सो कत मरै सन्त जन जीवै। भरिभरि रामरसायन पीवै ॥ १५ ॥

इति पहिला कहरा समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा कहरा ॥ २ ॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिकहृदयाबन्दिनिवारोहो १ अटपटकुम्हराकरैकुम्हारियाचमरागाउनबाचैहो। नितउठि कोरिया बेटभरतुहै छिपिया आंगननाचैहै २ नितउठिनौवानात्रचढ़त है बरहीबेराबारिउहो। राउरकीकछुखबरिनजान्योकैसेझगरानिवारिउहो ३ एकगांवमेंपांचतरुणिबसैं तिनमेंजेठजेठानीहो। आपन आपनझगरपसारिनि प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४ भैंसिनमाहँ रहत नितबकुला तकुलाताकिनलीन्हाहो। गाइनमाहँ बसेउ नहिं कबहूं कैसेकैपदचीन्हाहो ५ पथिकापन्थबूझिनहिंलीन्हो मूढ़हिमूढ़गवांरा हो। घाटछोड़िकसऔघटरेंगहु कैसेलगबेहुपाराहो ६ जतइतके धनहेरिनिललइ चकोदइतकेमनदोराहो। दुइचकरीजिनदरनपसारिहु तबपैहौठिकठोराहो ७ प्रेमबानएकसतगुरुदीन्ह्योगाढ़ोतीरकमानाहो। दासकबीर कियो यह कहरा महरामाहिंसमानाहो ॥ ८ ॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिक,हृदयाबन्दिनिवारोहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीव! तैंतो माणिक है माणिकलाल होय हैं सो तैं कहां संसार में अनुराग करिकै लाल ह्वैरहे साहब

में अनुरागकरि लाल होय गुरुवालोगनकी बाणी तें मति सुनु मति सुनु आपने हृदयकी जो संसाररूपी बन्दि ताको निवारु ॥ १ ॥

अटपटकुम्हराकरैकुम्हरिया, चमरागाउनबाचैहो ॥
नितउठिकोरियाबेटभरतुहै, छिपियाआंगननाचैहो २

काहते कि अटपट कुम्हरा जो या मन है सो कुम्हरिया करैहै कहे नाना शरीर रचैहै जैसे कुम्हार नानाबासन बनावै है ऐसे या मन नानाशरीर रचैहै सो शरीर जो गाउँहै तौन चमरा कालके मारे नहीं बचै है मन रचतजाइ है शरीर काल खातजाइ और कोरिया जे मुनिलोगहैं सत रज तम ग्रन्थप्रवर्तनवारे ते बेट भरतिहैं कहे बनावतजाइहैं तेई ग्रन्थनको लैके छिपिया जे गुरुवालोग हैं ते आंगन आंगन नाचैहैं अर्थात् चेला हेरत फिरैहैं नानामत में सीकै नानामत में लगावत फिरैहैं ॥ २ ॥

नितउठि नौवा नाव चढ़त है, बरही बेरा बारिउ हो ॥
राउरकी कछु खबरि न जान्यो, कैसेकै झगरनिवारिउहो ३

नौवा जो संन्यासी जौन आपना मूड़ मुड़ावै है आनौको मूड़िकै चेला बनाइलेइहै सो वेषमात्र जो नाव तामें चढ़िकै संसार-समुद्र पार होवा चाहै है और नानादेवतन प्रतिपाद्य जे ग्रन्थ तेई हैं बरही कहे बोझा ताहीको बेरा रचिवारी जे नानाउपासनावारे हैं ते संसारसमुद्रको पार होवा चाहै हैं राउर जो परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको घर ताको जानतई नहीं या झगरा कैसेकै निवारण होइ साहब ते तो चिन्हारिनि नहीं है कबहूं माया पकरि लेइहै कबहूं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहूं मनपकरि लेइहै इत्यादिक जेई पावैहैं तेई धरिलेइहैं सो कैसेकै झगड़ा निवारण होइ ॥ ३ ॥

एक ग्राम में पांचतरुणि बसैं, तिनमें जेठजेठानी हो ॥
आपनआपन झगरपसारिनि, प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४

एकगांउ जो या संसार तामें पांच तरुणि जे ज्ञानेन्द्रिय ते बसै हैं ज्ञानेन्द्रियते कर्मेन्द्रिउ आइ गईं तिनमें जेठ मन जेठानी माया

है सोई दशौ इन्द्रिय आपन आपन झगर कहे अपने अपने बिषय ओर मनको खैंचतभई सो मनके अधीन है जीव सोऊ वही कत चलो गयो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र प्रीतम हैं तिनसों प्रीति नशाइ गई ॥ ४ ॥

भैंसिनमाहँ रहतनितबकुला, तकुलाताकिनलीन्हा हो ॥
गाइनमाहँ बसेहु नहिं कबहूं, कैसेकै पद चीन्हा हो ५

सो भैंसी जे दशौइन्द्रियांहैं तिनमें बकुला जो मन सो रहैहै जैसे भैंसी जब जलमें परैहैं तब बकुला वाके ऊपर बैठरहैहै जो मछरी भैंसिनके किलनी खाबेको आई सो बकुला खायलीनो ऐसी इन्द्रिय जब बिषय ओर चली तब मनहीं भोगकरै है इन्द्रियद्वारा ताते मनको बकुला कह्योहै सो हे जीव! तैंतो तकुलाहै कहे ताकनवारो है काहे न ताकिलीन्हा और साहब के गावनवारे जे सन्त तिन गाइन में कबहूं बसबै न कियो परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र को पद कैसेकै चीन्हो ॥ ५ ॥

पथिकापन्थ बूझि नहिं लीन्हो, मूढ़हि मूढ़ गवांरा हो ॥
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु, कैसेकै लगिहो पाराहो६

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिनके पन्थ के चलनवारे जे पन्थी सन्त जन तिनसों तो पन्थ बूझि न लीन्हेउ मूढ़ जे गुरुवालोग तिनकी बाणी.में परिकै मूढ़ ह्वैगयो गवांर ह्वैगयो सो साहब के पहुँचबे को जो घाट ताको छोड़ि औघट जो मायाब्रह्म तामें चलौ हौ सो कैसे कै पार लागौगे ॥ ६ ॥

जतइतकेधनहेरिनि ललइच, कोदइत के मन दोराहो ॥
दुइचकरी जिन दरन पसारेहु, तहँ पैहहु ठिकठोराहो ७

जतइतके कहे जिनके जतवा चलै है सो जतइत कहावै-है सो धोखाब्रह्म है जो सबको दरि डारै है सबको मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहौं न पाइन तब कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासनारूप को

दौराजाय है तिनके इहां गये कि इहां मुक्ति धन मिलैगो सो कबीरजी कहै हैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तो कोदइत जे माटी के दुइ चकरी बनाइ दरना पसारे हैं तहां ठीकठौर पैहौ अर्थात् न पैहौ साहब को जानौगे तबहीं ठिकान लगैगो॥७॥

प्रेमबाण यक सतगुरु दीन्हो, गाढ़ो खैंचिकमाना हो॥
दास कबीर कियो यह कहरा, महरा माहिं समाना हो॥८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीवो! तम यामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तब पार जाउगे प्रेमको तो बाण करु और सतगुरु जो ज्ञान दीन्हो है ताको कमान करि गाढ़ो खैंचि साहबरूप जो निशाना है तामें प्रेमबाण मारु अर्थात् प्रेम लगाउ हे साहब को सदा को दास कायाकेबीर जीव! या कहरा में संसार को कहर है सो कहा कियो है महरामाहिं समाना कहे जे साहबके महरमी हैं तेही में समाय अर्थात् उनहींको सत्संग करु काहू गाढ़ो खैंचि कमाना यही पाठ है अथवा हे कबीर, कायाके बीर, जीव! मन मायाब्रह्म के दास है यह संसार तैं किये सो कहरा कहे कहर करनवारो है सो तैं आपनो रूप तौ बिचारु कहाँ मायादास ह्वैरहे है तैं महराकहे माया के हरनवारे जे हैं साधु तेही माहिं समाना कहे तैं तिनके बराबर है जो तैं आपने स्वस्वरूपको जानै है॥८॥

इति दूसरा कहरा समाप्तम्॥ २॥

अथ तीसरा कहरा॥ ३॥

रामनामको सेवहु बीरा दूरि नहीं दुरिआशा हो। और देव का पूजहु बौरे ईसब झूठी आशा हो १ उपरके उजरे कहभो बौरे भीतर अजहूं कारो हो। तनको वृद्ध कहाभो बौरे ईमन अजहूं बारोहो २ मुखके दांत गये का बौरे अन्दरदांत लोहेकेहो। फिरि फिरि चनाचबाउ बिषयके काम क्रोधमदलोभेहो ३ तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनी हो। कहै कबीर सुनो हो सन्तो सकल सयानप ऊनी हो॥ ४॥

राम नाम को सेवहु बीरा, दूरि नहीं दुरि आशा हो॥
और देव का पूजहु बौरे, ई सब झूठी आशा हो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, हे कायाके बीरो, जीवो! रामनाम को सेवनकरो रामनाम दूरि नहीं है तुम्हारी आशा दूरि है और देवको हे बौरे! का पूजहु हौ इनकी आशा सब झूठी है॥ १॥

उपर के उजरे कहभो बौरे, भीतर अजहूं कारो हो॥
तन को वृद्ध कहाभो बौरे, ई मन अजहूं बारो हो २
मुख के दांत गये का बौरे, अन्दरदांत लोहेके हो॥
फिरि फिरि चनाचबाउबिषयके, कामक्रोधमदलोभे हो ३

हे बौरे! जो ऊपर बहुत ऊजर बने रह्यो बहुत आचार कियो तो कहाभयो भीतर तो अजहूं करियैहौ व तनकी बड़ी वृद्धता मान्यो तौ हे बौरे! कहाभयो मनतो अजहूं बारो कहे लरिकवा बनाहै वही चालचलैहै २ व मुखके दांत गिरिगये तौ हे बौरे! कहाभयो! अन्तःकरण के जे विषय के चना चाबनवारे ऐसे लोहे के दांत तो गाबै न भये काम, क्रोध, मद, लोभ बनेनहैं मिटबै न भये॥ ३॥

तनकीशक्तिसकलघटिगयऊ, मनहिं दिलासा दूनी हो॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, सकल सयानप ऊनीहो ४

हे बौरे! तनकी सकल कहे रूप बिषय करनवाली सामर्थ्य घटिगई और संगी मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतो घटिबै न भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! तुम सुनो या सब जीवनकी सयानप ऊनी है अर्थात् तुच्छहै बिना रामनाम के जाने जनन मरण न छूटै है तामें प्रमाण कबीरजी का "जो तैं रसना राम न कहिहै। उपजत बिनशत भरमत रहिहै॥ जस देखी तरुवर की छाया। प्राणगये कहु काकी माया॥ जीवत कछु न किये परमाना। मुये मर्म कहु काकरजाना॥ अन्तकाल सुख कोउ न

सोवैं। राजारङ्कदोऊमिलिरोवैं॥ हंससरोवरकमलशरीरा। राम रसायन पिवै कबीरा" ॥ ४ ॥

इति तीसरा कहरा समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा कहरा ॥ ४ ॥

ओढ़न मेरो रामनाम मैं रामहिं को बनिजारा हो। रामनामका करौंबनिजमैं हरिमोराहटवाराहो१ सहसनामको करौं पसारा दिन दिनहोतसवाईहो। कानतराजू सेरतिपौवा डहकिनढोलबजाईहो२ सेरपसेरीपूराकरिले पासंघकतहुँ न जाईहो। कहै कबीर सुनोहो सन्तो ज़ोरिचलेजहडाईहो॥ ३ ॥

ओढ़न मेरो रामनाम, मैं रामहिं को बनिजारा हो ॥
रामनामको करौं बनिज मैं, हरि मोरा हटवाराहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि पाखण्डीलोग जे हैं ते कहैहैं कि हमारो ओढ़न रामनामही है अर्थात् रामनामहीं के ओढ़रते ठगिलेहिहैं परमतत्त्व जो रामनाम है तौनेके ठगिवेको ओढ़र बनाये हैं काहेन मारेपरैं कौनी तरहने कि बड़े बड़े टीका दैलिये माला जपै हैं न रामनाम को तत्त्वजानैं न अर्थ जानैं न जपैके बिधि जानैं न नामापराधदश जानै और या कहै हैं कि हम रामनामको बनिजारा हैं व रामनामकी बनिज करै हैं और हरि जे हैं तेई हमारे हटवारे हैं कहे दलाल हैं अर्थात् हम उनहीं के द्वारा सब रामनामको सौदा लेहिहैं उनकी प्रेरणाते हम मन्त्र देइ हैं जो वाके भागमें होयगो सो होयगो हमारो पैसा धोती तो हाथको न जायगो जो कोई कहै है कि शिष्य परीक्षा कैलेउ तो या कहै हैं कि कहांको बखेड़ा लगायो है हम मन्त्र दैदियो वह जो चाहै सो करै मुक्ति होइ जाइगो ॥ १ ॥

सहस नाम को किये पसारा, दिनादिन होत सवाईहो ॥
कान तराजू सेर तिपौवा, डहकिन ढोल बजाईहो २

और या कहै हैं कि एकनाम के लीन्हेते सर्वकर्म छूटिजाइ हैं हमतो हजारन नाम को पसारा करैं हैं कहे हजारन नाम लेइ हैं कर्म कहां रहैंगे सब छूटिजायँगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाई बढ़ैंगे सो दोऊ गुरुचेलन को ऐसो हवाल है चेलन के कान जे हैं तेई फेरहातरजुवा हैं और तीनपाव का सेर है अर्थात् त्रिगुणात्मक मन है सो मन बचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलि दियो अर्थात् मन्त्र दियो डहकिन ढोलबजाई कहे चेलालोग चारिउ ओर कहि आये कि हम मन्त्र लियो है के डहकाइ गये ढोल बजाइ ॥ २ ॥

सेर पसेरी पूरा करिले, पासँघ कतहुँ न जाई हो ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जोरि चले जहडाई हो ३

गुरुवन के उपदेशते सेर जो है मन पसेरी जो है ब्रह्मज्ञान सो पूरो करिलै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्म को पूर्णौ मानै परन्तु पसंघा जो मूलाज्ञान सो कतहूं न जायगो वाही में परिकै अन्तकाल में जहडायकै कहे डहकायकै चले जायँगे ॥ ३ ॥

इति चौथा कहरा समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां कहरा ॥ ५ ॥

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मन माहीं हो। लक्ष करोरि जोरिधनगाड़े चलेडोलावतबाहीं हो १ दाऊ दादा औ परपाजा उइगाड़ेभुइँ भांड़े हो। अँधरे भये हियो की फूटी तिन काहे सब छांड़े हो २ ई संसार असार को धन्धा अंतकाल कोइ नाहीं हो। उपजत बिनशत बार न लागै ज्यों बादर की छाहीं हो ३ नातागोताकुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाई हो। कह कबीर यकराम भजेबिन बूड़ी सब चतुराई हो ॥ ४ ॥

रामनाम भजु रामनाम भजु, चेति देखु मनमाहीं हो ॥
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े, चले डोलावत बाहीं हो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे मूढ़ ! परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को रामनाम ताको भजु भजु 'भज सेवायाम्' धातु है सो याही रामनाम को सेवा करु रामनाम मन बचन के परे हैं सो आगे लिखि आये हैं आपने मनमें चेति कहे बिचारिकै देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिकै गाड़ि गाड़ि धरयो जब मरन लाग्यो यम-दूत लै जान लगे तब बाहीं डोलावत चलो हो कि वे धन हमारे नहीं हैं ॥ १ ॥

दाऊ दादा औ परपाजा, उइगाड़े भुइँभांड़े हो॥
आँधरे भये हियो की फूटी, तिनकाहेसबछांड़ेहो २

जो कहो वा जन्म कब देख्यो है तो तेरे दाऊ दादा व पर-पाजा वे भुइँ में केतौ भांड़े गाड़ि गाड़ि मरिगये हैं उनहीं के साथ कवै धन गयो है सो तैं आँधरे ह्वैगये तेरे हियोकी फुटिगई हैं जैसे सब धन छोड़िकै वे चले गये हैं धनको मालिक तुहीं भयो ऐसे तुहूं धन छोड़िकै चलो जायगो तेरो धन और ही को होयगो तेरे हाथ कछु न लगैगो ॥ २ ॥

या संसार असार को धन्धा, अन्तकाल कोइ नाहीं हो॥
उपजत बिनशत बार न लागे, ज्यों बादर की छाहीं हो ३

या संसार असार कहे झूठही को धन्धाहै अन्तकाल में कोई आपनो नहीं है जो कहो कि हम जाबही न करैंगे बनेहीरहैंगे तो शरीर के उपजत बिनशत में बार नहीं लगै है जैसे बादर की छाहीं भई व पुनि मिटिगई ॥ ३ ॥

नातागोता कुल कुटुम्ब सब, तिनकी कवनि बड़ाई हो॥
कह कबीर थक राम भजे बिन, बूड़ी सब चतुराई हो ४

बड़े गोतके भये बड़ेकुल के भये बड़ी बड़ी जातिके नात भये तिनकी कौन बड़ाई है ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरही कोई न छुवैगो ताते ये सब नात गोत जबभर शरीर बनो है तबहीं भरेके हैं शरीर छूटे ये सब छूटि

जाइहैं इनकी कौन बड़ाई है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि एक जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनके रामनाम के भजे कहे सेवा किये बिन सब चतुराई तिहारी बूड़िजायगी नरकही को जाउगो जे जे आपनी आपनी कल्पना ते नाना उपासना कैलियेहो तिनते चाहो हो कि हमारी मुक्ति ह्वैजायगी ते एकहू काम न आवैगो तामें प्रमाण श्रीगोसाईंजी को पद "राम कहतचलुरामकहतचलु राम कहत चलु भाईरे । नाहिं तो भवबेगारिमें परिहौ पुनि छूटब अति कठिनाईरे । बाँसपुरानसाजुसबअटखट सरलत्रिकोणखटोलारे । हमहिंदिहलकरिकुटिल करमचँद मन्दमोलबिनडोलारे । त्रिषमकहारमारमदमातेचलैनपायबटोरे रे।मन्दबेलन्दअभेरादलकनिपाई दुखझकझोरे रे । कांटकुरायलपेटनलोटन ठामहिंठामबझाऊरे । जसजसचलियदूरिनिजतसतस बांसनभेंटलकाऊरे । मारग अगम संगनहिंसंबल नामगामकरभूलारे।तुलसिदासभवआशहरहुअब होहुरामअनुकूलारे १ रामकहतचलुरामकहतचलुरामकहतचलु भाईरे" अब गोसाईंजी जीवन को उपदेश करै हैं इहां राम कहत चलु तीनि बार कह्यो सो मुक्त-मुमुक्षु-विषयी तीनों जीवन को कहैहैं सो गोसाईंजी अपनी रामायण में कह्यो है चौ० "विषयीसाधकसिद्धसयाने । त्रिविधजीवजगवेदबखाने ॥ रामसनेह सरसमनजासू । साधुसभाबड़आदरतासू ॥ सिद्धविरक्त महामुनि योगी । नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी।" याते यह कि रामविना मुक्तहुनकी गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीव के नाते कहै हैं कि हम सब यती हैं अरु इहां एकवचन कहै हैं सो प्रतिजीव सो पृथक् कहैहैं कि हे भैया!या दुःखमार्ग त्यागिदेउ यामें दुःख पावोगे ताते राम कहते चलो ॥"नाहिंतोभवबेगारिमेंपरिहौ पुनि छूटब अतिकठिनाईरे" नहीं तो भव जो संसार है ताके बेगारिमें परोगे बेगारि परिबो कहाहै जाते संसारते कबहुं न उद्धार होइ ऐसेकर्म माया तुमको धरिकै करावैगी जो शरीररूप डोला को गुमान किये होहु कि डोलाचढ़ि बेगारि न परैंगे तो धरनवारो समरथहै डोला

म चढ़ेहू धरि लेइगो तब कठिन ह्वैजायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवाले को बेगारि पकरै है तब कोई कहै हैं कि ये तो बड़े आदमी हैं इनको सड़क खोदाना चाहिये तब अंगरेजलोग कहै हैं कि हमारे इहां दस्तूर है म्याना चढ़ेजाइ वही में फरुहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढ़े बेगारि धरिजाइ है और डोलहू तिहारो जर्जरहै सो कहै हैं "बांसपुरानसाजुसबअटखट सरलतिकोन खटोलारे। हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचँद मन्दमोलबिन डोलारे" प्रारब्ध जो है सोई पुरान बांस है काहेते कि संचित तो प्रारब्ध भे हैं तेहिते महापुरान है और सबसाज अटखट कह्यो सो आठ और खटकहे चौदह साज हैं शरीररूपी डोला की सो कहै हैं त्वचा, रुधिर, मांस, अस्थि, मेद, मज्जा, शुक्र, केश, रोम, नस, नख, दन्त, मल, मूत्र सो त्वचा डोलाको वोहार है रुधिर वोहार को रङ्ग व मांस वोहार की तुई है और अस्थि डोला को काठ है व मेद मज्जा डोला को तकिया बिछौना है और नस रसरी है व नख लोहे की पतुरी है व दांत खीला है व मलमूत्र घुलत है और घुन को कीरा है काहेते कि कारनहूं में पानी होय है अथवा साजु सब अटखट जो यह पाठ होइ तो पुरजा पुरजा जोरै है यही अर्थ है और सरल जो कह्यो सो सरो है कहे रोगन ते ग्रसित है व तिकोन खटोला जो कह्यो डोलामें सो शरीरकी तीन अवस्था हैं जाग्रत्--स्वप्न--सुषुप्ति याही में परोरहैहै सोई तिकोन खटोला है अथवा बालापन-युवापन-वृद्धापन ई तीनोंपन तिकोन खटोला है शरीररूपी डोला में सो ऐसो डोला कुटिल करमचन्द कहे कुटिल कलङ्की करम करिकै कहे बनाइकै हम सबको दीन्हो है और ऐसो निबल डोला है व मन्दमोल बिन जो कह्यो सो और को मांस भोजनहूं में काम आवै है यह मानुषशरीर को मांस बेचेहूते कोऊ नहीं लेइ याते मन्द मोल कहे थोरहू मोल बिना है सो ऐसो डोला में चढ़िकै हे भैया! या संसारमार्ग में चलौगे तो कलङ्की करमको दियो है डोला तुमहूंको कलङ्क लागिजाइगो

यह जर्जरडोला जो संसारमार्ग में टूटैगो तो फँसिजाउगे फिर न निकसोगे जो नाम सड़क चलौगे तो या सड़क रामघाटही लगी है डोला टूट्यो दिव्यरूप ते आंखी मूंदेहू चलेजाउगे अथवा दिव्य रूपते बिमान चढ़ि चले जाउगे कैसोहै डोला सो कहैहैं "विषम कहारमारमदमाते चलहिं न पाय बटोरे रे। मन्दबिलन्दअभेरा दलकनि पाईदुखझकझोररे" विषम कहे कहार जेहिको पांचौं इन्द्रिय सो एकतो सम नहीं हैं दूसरे स्वभावही ते विषम हैं तीसरे मार मदमाते हैं सो मतवारे के पांय सम नहीं परै हैं चलते में पांय बगारिजाइ हैं पांय बगारिबे कहे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द इनमें जाय रहे है फिरि मार्गकैसो है मन्द कहे नीच है बिलन्द कहे ऊंचहै अर्थात् कहूं अपमानते दीन ह्वै जाइ हैं अपने को नीच मानैहै कहूं मानते अपनेको बड़ो ऊंच मानैहै व कहूं अभेरा कहे धक्का लगिजाय है धक्का कहा है कहूं पुत्र मरिगयो भाई मरिगयो चोर चोराय लियो सो या लोक में लोग कहै हैं कि हमको बड़ो धक्का लगो दलकनि कहाहै कि विषय सुखदेत में अच्छो लगैहै जब वामें पर्‌यो तब विषय दल दल में फँसिजाय है और पाई दुख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरा लगै है इन्द्रियरूप कहार गिरै हैं कहूं उठे हैं ताते विकलताई झकझोरा का दुखपाइत हैं "कांटकुरायलपेटनलोटन ठांवहिंठांव बझाऊरे। जसजसचलियदूरिनिजतसतस बांसनभेंटलकाऊरे" कहीं कांटहै कहे सुन्दररूप है सो नयनरूपी कहारनके छेदिजाय हैं तब गिरि जाय हैं कहे आशक्त ह्वैजायहैं और कुराय सजल होइहै सो रस है तामें रसनारूप कहार बूड़िजाय है व लपेटनफूलीलता है तेई गन्ध हैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरिपरै है लोटनलोक में सर्पको कहे हैं सो स्पर्श है त्वचारूप कहारन को डसिडारै है कामिनीके एक अङ्ग छुवत में सर्वाङ्गकामबिष चढ़िजाय है याते स्पर्श को लोटनसर्प कह्यो है व ठांवहिं ठांव बझाऊ कहे मोहरूप शिकारी सो नाना विषय की कथा व नाना भूत यक्षनादिक

सेवनते सिद्धि की प्राप्त तिनकी कथा और नाना तामस मत तिन की कथा सो शब्दरूप बागुरि ठामहि ठांद लगाय राख्योहै तामें श्रवणरूप कहार अरुझिकै डोला डारिदेइ है फिरि संसारमग कैसो है ज्यों ज्यों संसारपथ में चलियतु है त्यों त्यों दूरि रामपुर परतो जाय है भैया रामपुरकी गैल नहीं है और राह है फिरि कैसो है यामें बास नहीं है अर्थात् कल नहीं रहै है कर्म करतई जाइहै शान्तह्वैके कोई नहीं टिक्यो "मारग अगम संग नहिं सम्बल नामग्राम कर भूलारे। तुलसिदास भवत्रासहरहु अब होहु राम अनुकूलारे" सो या प्रकार यह मार्ग है संसार सोई पृथ्वी है तामें बिषय के हेतु नाना यतन करिबो अरु राजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसार कर्म करिबो सोई चलिबो है ताको गोसाईं जी कहै हैं कि अगम है कहे चलिबे मुआफ़िक़ नहीं है और नाम मार्गमें सन्तन को संग है ते रामपुरको विघ्न नाशिकै पहुंचाइ देइहैं यहां कैसो है संग नहिं सम्बल कहे सम्यक् है बल जेहिके ऐसे सन्त संगमें नहीं है अथवा नानामार्ग में तो सात्विक श्रद्धा कलेवा मिलैहै या मार्ग में श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्यो है जे श्रद्धा सम्बल रहित इत्यादिक व जा गाउं को तुमको जानो है ताको नामही भूलि गयो है भूला जो कह्यो सो गर्भ में सुधि होइ है फिरि भूलिजाय है याते भूला कह्यो है अथवा जीव नाम ग्राम कर भूला है नाना देवतनको नाम लेइहै और तिनहीं के धाम जाइबेकी इच्छाकरै है सो तेरो ते नामनते भवबन्धना छूटै है न ते धामनमें गये तेरो जनन मरण त्रास छूटैगो सो अब गोसाईंजी कहै हैं कि हे भैया! अब अपने अपने जीवन पै दाया करि संसार की त्रास हरो अब काहे ते कह्यो कि अनेक जन्म भटकि के अनेक शरीर पाइकै मनुष्य को शरीर पायो है सो अबहूं नाममार्ग चलौ याते अब कह्यो है और होहु राम अनुकूला जो कह्यो सो उपक्रम में नाममार्गब- तायो ताको चलिकै उपसंहार में होहु रामअनुकूला कह्यो सो एक

उपलक्षण है छः प्रकार की शरणागती को सूचन कियो है उपक्रम में नाममार्ग बतायो उपसंहार में शरणागती बतायो सोई श्रीगोसाईंजी कहे हैं कि हे भैया! रघुनाथजी को नाम जपौ और शरण जाउ याहीमें उबार है और में नहीं है षट्विधि शरणागत को लक्षण "अनुकूलस्य संकल्पः प्रतिकूलस्य वर्जनम्। रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्वं वरणं तथा॥ आत्मनिक्षेपकार्पण्यं षड्विधा शरणागतिः॥ ४॥

इति पांचवां कहरा समाप्तम्॥ ५॥

अथ छठवां कहरा॥ ६॥

रामनाम बिनु रामनाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाई हो १ सेमर सेइ सुवा जो जहड़े ऊनपरे पछताई हो। जैसे मदिपगांठि अर्थैदे घरहुकी अकिल गँवाई हो २ स्व दे उदर भरत धौं कैसे ओसे प्यास न जाई हो। द्रव्यक हीन कौन पुरुषारथ मनहीं माहँ तवाई हो ३ गांठी रतनमर्म नहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरीहो। कह कबीर यह अवसर बीते रतन न मिलै बहोरी हो॥ ४॥

रामनाम बिनु रामनाम बिनु, मिथ्या जनम गँवाई हो १

उपासक जे हैं ते पञ्चाङ्गोपासना करिकै और कापालिकादिक मतवारे देवतनकी उपासना करिकै नास्तिक मरबई मोक्ष मानिकै व्याकरणी शब्दज्ञान करिकै ज्योतिषी कालज्ञान करिकै सांख्यवाले प्रकृति पुरुषज्ञान करिकै पूर्वमीमांसावारे कर्महीं करिकै नैयायिक दुःखध्वंस ही करिकै और कणादवाले नौगुणध्वंसही करिकै और शङ्करवेदान्तवाले ब्रह्मज्ञान ही करिकै इत्यादिक मुक्त होब माने हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनहीं बिना और तिनके रामनाम बिना मिथ्यै जन्म गँवाइ दियो॥ १॥

सेमर सेइ सुवा जो जहड़े, ऊनपरे पछिताई हो॥
जैसे मदिप गांठि अर्थैदे, घरहुकीअकिलगँवाईहो २

जैसे सेमरके फलको सुवा सेयो चोंच चलायो जब वामें घुवा

निकस्यो तब भोजनते ऊन कहे खाली पस्यो भोजन न पायो तब पछितायकै कहे जहड़िकै भोजन डहकायकै चल्यो ऐसे जीव नानामतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जब मुक्ति न पायो तब मुक्ति डहकाइकै संसार में पस्यो और जैसे मादिप कहे मतवार गांठीको द्रव्य दैकै मद पियो घरौ की अकिल गँवायदियो तैसे गुरुवालोगन को गांठिकी द्रव्य दैकै मन्त्र लैकै और और मतन में लगि गयें घरौ की अकिल गँवायदियो कहे साहब को सदा को दास है जीव सो अपने स्वरूप को भूलि गयो॥ २॥

स्वादे उदर भरत धौं कैसे, ओसै प्यास न जाईहो॥
द्रव्यकहीन कौन पुरुषारथ, मनहीं माहँ तवाईहो ३

जौने मत में स्वाद पायो सो तौनेही मतमें लग्यो सो ओसते कहूं पियास बुझाइहै ओसपरो सो ओसको जलको स्वाद मुख में आयो सो कहा स्वादते पेट भरैहै नहीं भरै है तैसे जीव नानामत में लग्यो नानासाधन करनलग्यो और वे देवतन के लोकनगयो अथवा ब्रह्मज्ञान सिद्धभयो अथवा आत्मज्ञान सिद्ध भयो इत्यादिक सब सिद्धभयो किंचित् सुख पायो ते तो ओसको चाटिबो है कहा मुक्ति होइहै नहीं होयहै और द्रव्य का हीन जो पुरुषारथ है सो कौन पुरुषारथ है मन में बहुत विचार करैहै कि वाको दश हज़ार देउँ वाको पांच हज़ारदेउँ जब द्रव्य की सुधि आई सो द्रव्य तो हई नहीं है तब मनै में तवाई होयहै कि हाय का करौं ऐसे नानामतन में लगे पाछे पछिताउ होयहै अन्तकाल में मैं कहा कियो साहब में न लाग्यो जाते मुक्ति होती॥ ३॥

गांठीरतनमर्मनाहिंजानेहु, पारखलीन्हीछोरीहो॥
कहकबीरयहअवसरबीते, रतननमिलैबहोरीहो४

या जीव सदा को साहब को अंश है सो या रतन तुम्हारे गांठी में है ताको यह रामनाम ते पारिख करिकै छोरिलेउ साहब के गुण जीवो में हैं वे बृहत्चैतन्य हैं या अणु चैतन्यहै वे घनरसरूपहैं या

जघुरसरूप है ऐसो जो शुद्ध आपनो रूप जानै तो रतन तेरे गांठि में है ताको भर्म तुम रामनाम विना नहीं जान्यो कि वा साहबकोहै मनमायाब्रह्मको नहींहै काहेते कि गुरुवालोग तिहारी पारख छोरि लियो और और तिहारो साहब बनाइ दियो सो कबीरजी कहै हैं कि जो ऐसो मनुष्य शरीर में साहब को ज्ञान न भयो कि मैं साहबको हौं तो या अवसर बीतिगये कहे या शरीर छूटि गये फेरि रतन जो है आपने स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहब को अंश हौं सो पुनि न मिलैगो और साहब को ज्ञान कैदेनवारो राम नाम न मिलैगो व आगे जे कहिआये पंचाङ्गोपासनावारे कापालिकादिकमतवारे व्याकरणी सांख्य मीमांसावारे नैयायिक कणादवारे शंकरवेदान्ती नास्तिकमतवारे जो या कहै हैं कि हमारे मतमें काहि मुक्ति नहीं होय है सो कहै हैं पञ्चाङ्गोपासना तौ सगुण है सो सत रज तम ये गुण माया के हैं सो मायाते माया नहीं छूटै है या असंभव है और कापालिकादिक व्याकरणादिक भैरवको मानै हैं सो वेद विरुद्ध है ई मुक्तिदाता कोई नहीं हैं तामें प्रमाण "मुक्तिदाता च सर्वेषां राम एव न संशयः" और वैयाकरणशब्द ब्रह्मते मुक्ति मानै हैं सो केवल शब्द ब्रह्मके जाने मुक्ति नहीं होय है जब शब्द ब्रह्म को जानिकै परब्रह्म को जानै तब मुक्ति होइ है तामें प्रमाण "शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि ॥ श्रमस्तस्य श्रमफलो ह्यधेनुमिव रक्षतः ॥" और ज्योतिषी कालज्ञानते मुक्ति मानै हैं सो कालहूके काल जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके विना जाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण "यः कालकालो गुणी सर्ववेत्ता" और सांख्यवारे प्रकृतिपुरुषते मुक्ति मानै हैं सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र हैं तिनके विना जाने मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण "वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्" और पूर्वमीमांसावारे कर्मते मुक्ति मानै हैं सो कर्मते मुक्ति नहीं होय है कर्म त्यागे ते मुक्ति होयहै तामें प्रमाण "न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुरिति श्रुतेः" और नैयायिक ईश्वर श्रीरामचन्द्र

ही हैं तामें प्रमाण " तमीश्वराणां परमं महेश्वरम् " और क-
णादवारे नौगुणध्वंस मुक्ति मानै हैं सो नौगुणध्वंस ही मुक्ति नहीं
होयहै नौगुणध्वंस भये उपरान्त जब भक्ति होयहै तब मुक्ति होय
है तामें प्रमाण "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् " और शङ्कर वेदान्ती ब्रह्म-
ज्ञान करिकै मुक्ति मानै हैं सो जीवब्रह्म कधी होतही नहीं है तामें
प्रमाण "सत्य आत्मा सत्यो जीवः सत्यं भिदः सत्यं भिदः" और ना-
स्तिक चारि प्रकार के हैं सौगत १ विज्ञानवादी २ सौत्रांत्रिक ३
चार्वाक ४ सो सौगतनामके आत्मा क्षणिक नाशवान् मानै हैं
जैसे घट सो आस्तिक मतते बिरुद्ध है काहेते कि आत्मा को
नित्य मानै है १ विज्ञानवादीपदार्थमात्र का ज्ञानस्वरूप मानै है
सो आस्तिक मत में बाधक है काहेते कि जो क्षणिकज्ञानके बा-
हर दूसर पदार्थ नहीं मानै है तो ज्ञानाश्रय आत्मा के हित राते
होइ २ और सौत्रांत्रिक गुणरूप आत्मा मानै है कौन गुण सुख
विशेषगुण सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते आस्तिक सुखरूप
सुखाश्रय आत्मा को मानै है ३ और चार्वाक शरीरै को आत्मा
मानै है काहेते प्रत्यक्ष है सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते
शरीर ते अभिन्न आत्मा को मानै है याही रीति उदयनाचार्य
बौधाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकन को खण्डन कियो है ४ और
कछु हमहूं कहै हैं और सौगत जो आत्मा को क्षणिक नाशंवान्
मानैंगे और चार्वाक जो शरीर को आत्मा मानैंगे तो जो क्षणिक
नाशवान् आत्मा होत तो भूत कैसे होत याते सौगत निराकरण
भयो और जो शरीरै आत्मा होयगो तो मुर्दा कैसे होइगो शरीर
काटिडारै चैतन्यरहैगो और विज्ञानवादी जो आत्मा को ज्ञान-
स्वरूप मानैगो तो अज्ञान कैसे होयगो और सौत्रांत्रिक सुख
गुणस्वरूप आत्मा मानै है तो गुणतो बिना गुणी रहतई नहीं है
सो गुणी को है जो कहो अरहन को अथवा जिनको गुण मानै है
जीवात्मा को तो गुणगुणी को समवाय है गुणगुणी को छोड़िकै

नहीं रहै है सो जीव जो अज्ञानी भयो सो जाको गुण है जीव सोऊ अज्ञान भयो जो चार्वाक कालै कै प्रत्यक्ष मानैहै गुणगुणी को नहीं मानैहै वेद शास्त्रको कहो मिथ्या मानौ हौ सो ग्रहण शास्त्र में लिखैहै सो परतही है सो वेद को कहो कैसे मिथ्या मानै तुम्हारे शास्त्र में लिखै है कि पृथ्वी नीचेको चली जाइहै सो जो पृथ्वी चलीजाती तौ पाथर फेंकेते फेरि कैसे पृथ्वी में मिलतो काहे से कि पाथर हलुक है बिलम्बपूर्वक आवाचाही पृथ्वी गरू है जल्दी जावा चाही तातेतुम्हारे ग्रन्थ झूठे हैं वेद शास्त्र सांचे हैं सो श्रीरामचन्द्र विना तुम मिथ्या जन्म गमाइ दियो ॥ ४ ॥

इति छठवां कहरा समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां कहरा ॥ ७ ॥

रहहु सँभारे राम बिचारे कहत अहौं जो पुकारेहो १ मूड़मुड़ाय फूलिकै बैठे मुद्रापहिरि मजूसाहो। ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर घरमूसा हो २ गाउँ बसत है गर्बभारती माम काम हंकारा हो। मोहिनि जहां तहां लै जैहै नहिं पतिरहै तुम्हारा हो ३ मांझ मँझरिया बसै जो जानै जनहैहै सो थीराहो। निर्भय गुरु कि नगरिया तहँवां सुख सोवै दास कबीराहो ॥ ४ ॥

रहहु सँभारे राम बिचारे, कहत अहौं जो पुकारे हो १
मूड़मुड़ाय फूलि कै बैठे, मुद्रा पहिरि मजूसा हो ॥
ताहि उपर कछु छार लपेटे, भितर भितर घर मूसा हो २

श्रीकबीरजी कहे हैं कि पुकारे कहौ हौं कि श्रीरामनाम को बिचारत हे जीवौ! यह मनको सँभारे रहौ अनत न जान पावै मैं पुकारे कहौं हौं अनत जायगो तौ मारो जायगो १ ऊपर ते मूड़ मुड़ाय कै काने में मुद्रा पहिरिकै अङ्ग में छार लपेटि कै मजूसा कहे गुफा में बैठे व प्राण चढ़ाइ कै मानन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं सो ऊपर ते तो बहुत रङ्गन कियो पै भीतर भीतर उनको घर मूसिगयो कहे साहब को भूलिगये ॥ २ ॥

गाउँ बसत है गर्ब भारती, माम काम हंकारा हो॥
मोहिनि जहां तहां लै जैहै, नहिं पतिरहै तुम्हारा हो ३

यह शरीररूपी जो गाउँ है तामें गर्ब को जो भारा है सो थिर भयो कहे यह मान्यो कि यह शरीर मेरो है तब माम जो है ममता व कामादिक जे हैं अहंकार तेहिते भरिगयो सो श्रीकबीरजी कहे हैं कि मोहिनि जो है मोहि लेनवारी माया सो जहां रहै है तहैं तोको ये सब कामादिक लैजै हैं जो यह मानिराख्यो है कि प्राण चढ़ाइ कैं ब्रह्माण्ड में लैगये माया तें भिन्न ह्वैगये सो या पति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि माया में परिजाउगे॥ ३॥

मांझ मँझरिया बसै जो जानै, जन ह्वैहै सो थीराहो॥
निर्भय गुरु कि नगरिया तहवां, सुखसोवैदासकबीराहो४

सो मांझ जो है माया काहेते कि जीव साहब के बीच में माया को आवरण है तौने के मँझरिया में जो जन बसै जानै है कि माया के बीच में बसो है और माया वाको ग्रहण नहीं करिसकै है जैसे जल में कमल जल नहीं स्पर्श करिसकै है काहेते साहब को जानै है सहज समाधि लगाये है तेई जन थिर रहै हैं अथवा साहब व जीव के मांझ कहे बिचवादक रामनाम तौने मँझरिया कहे जामिन है साहब के पास पहुँचाइबे को तौने रामनाम में जो कोई बसै जानै है कि मकाररूप मैं हौं रकाररूप साहब है मैं सदा को दास हौं व राम नाम सर्वत्र पूर्ण है ऐसो जो कोई जानै सो थिररहै है तामें प्रमाण गोसाईं की चौपाई "अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी" फिर प्रमाण श्लोक "रकारश्शेषलोकश्चअकारो मर्त्यसंभवः। मकारश्शून्यलोकश्च त्रयोलोका निरामयाः" तामें प्रमाण कबीर जी का "क्या नांगे क्या बांधे चाम। जो नहिं चीन्हे आतमराम॥ नांगे फिरै योग जो होई। बनको मृगा मुकुति गो कोई॥

मूड़ मुड़ाये जो सिधि होई । मूड़ीभेड़ि मुक्ति क्यों न होई ॥ बिद राखे जो खसहि भाई । खुसरै कौन परमगति पाई ॥ पढ़े गुने उपजै हंकारा । अधधर बूड़े वार न पारा ॥ कहे कबीर सुनो रे भाई । रामनाम बिन किन सिधि पाई" व थिरह्वैके गुरु कहे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के नगर कहे साकेत में कबीर जे जीव ते उनके दास ह्वै तहां सुख सों सोवै हैं वहां और देवके उपासनावारे अहंब्रह्मास्मिवारे जे हैं ते नहीं जाइसकै हैं वे मायाही में रहे आवै हैं ॥ ४ ॥

इति सातवां कहरा समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवां कहरा ॥ ८ ॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौनको दीन्हाहो । आवत जात दुनौ बिधि लूटे सरबसंगहरिलीन्हा हो १ सुरनरमुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हा हो । कहँलौं गिनैं अनन्तकोटिलै सकल पयाना दीन्हा हो २ पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र-जाहिगो सूराहो । वह भी जाहिगो यह भी जाहिगो परत काहु को न पूराहो ३ कुशलै कहत कहत जग बिनशै कुशल कालकी फांसी हो । कह कबीर सबदुनिया बिनशल रहल राम अबिनाशी हो ॥४॥

क्षेम कुशल औ सहीसलामत, कहहु कौनको दीन्हाहो ॥
आवत जात दुनौं बिधि लूटे, सरबसंगहरिलीन्हाहो १

श्रीकबीरजी कहै हैं क्षेम कहे कल्याणस्वरूप सदा रहै व कुशल कहे सबबात में कुशल होय अर्थात् सर्वज्ञ होय व सहीसलामत कहे जेहिके सहीते जीव सलामत ह्वैजाय अर्थात् जेहिके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटिजाय ऐसे जे अपने गुण हैं ते साहब कौने जीवको अपने बिना जाने दीन्ह हैं अर्थात् काहूका नहीं दीन ऐसे जे साहब हैं सरब संग कहे सबके अन्त-र्यामी तिनको या काल जीवको आवत कहे जनन और जात कहे

मरण दूनो विधि में लूट्यो अर्थात् जब आयो तब गर्भ को ज्ञान नाश कै दियो और जब जाइगो तब वहीं को नाश ह्वैगयो साहब ते चिन्हारी ना करन दियो ॥ १ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया, मीरा पैदा कीन्हा हो ॥
कहँलौं गिनैं अनन्त कोटिलै, सकल पयाना दीन्हा हो २

व सुर-नर-मुनि जे हैं व पीर जे हैं व औलिया जे हैं व मीर जे बादशाह हैं तिनको पैदा करत भयो और कहांलौं गिनैं अनन्त कोटि जीवनको पैदाकरि पयाना कराइ देतभयो ॥ २ ॥

पानी पवन अकाश जाहिगो, चन्द्र जाहिगो सूराहो ॥
वहभीजाहिगोयहभीजाहिगो, परत काहुको न पूराहो ३
कुशलैकहत कहतजगविनशै, कुशल कालकी फांसीहो॥
कहकबीरसबदुनियाबिनशल, रहलरामअबिनाशी हो ४

पानी व पवन व आकाश व चन्द्रमा और सूरा कहे सूर्य और यह भी कहे यह जगत् और वह भी कहे ब्रह्म सो ये सब चले जायँगे सबको काल खायलियो है काहूकी पूर नहीं परी है ३ सो कुशलै कहत कहत कहे कुशलै माने माने जग सब मरिगयो कुशल कोई न रहे कुशल काल की फांसी है जाकी फांसी में सब परे हैं सो कबीरजी कहे हैं कि सब दुनिया विनशिजायहै जो राम करिकै जन्म विनाशी है सोई रहिगे अर्थात् रामके दासई अबिनाशी हैं इनका नाश नहीं होय है सो या बाल्मीकीय रामायण में प्रसिद्ध है अङ्गद हनुमान् आदिकन को नाश नहीं भयो है ॥ ४ ॥

इति आठवां कहरा समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां कहरा ॥ ९ ॥

ऐसन देहनिरापन बौरे मुये छुवै नहिं कोई हो । डराडक डोरवा तोरिलै आइनि जो कोटिक धन होईहो १ उरध श्वासा उपंगजक तरासा हंकराइनिपरिवाराहो । जो कोई आवै वेगि चलावै

पल.यक रहन न हाराहो २ चन्दन चूर चतुर सब लेपैं गल गज-मुक्ताहाराहो। चोंवन गीध मुये तन लूटै जम्बुक वोदर फाराहो ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो ज्ञानहीन मतिहीना हो। यकयक दिन यह गति सबहीकी कहा रात्र का दीनांहो ॥ ४ ॥

ऐसन देह निरापन बौरे, मुये छुवै नहिं कोई हो ॥
डराडकडोरवा तोरिलैआइनि, जो कोटिक धन होई हो १
उरधश्वासा उपंग्जगतरासा, हंकराइनि परिवारा हो ॥
जो कोई आवै वेगि चलावै, पलयक रहन न हाराहो २
चन्दन चूर चतुर सब लेपैं, गल गजमुक्ताहारा हो ॥
चोंचन गीध मुये तन लूटै, जम्बुक वोदर फारा हो ३
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, ज्ञानहीन मतिहीना हो ॥
यकयक दिन यह गति सबहीकी, कहा रावका दीनाहो ४

ऐसी देह निरानपनी है कहे अपनी नहीं है और सब अर्थ प्रकटई है श्रीकबीरजी कहै हैं कि जे मतिते हीन मूर्ख परम पुरुष श्रीरामचन्द्र के ज्ञान ते हानरहैं तिनके शरीर की दशा ऐसे एक दिन सबकी है चाहे रङ्क होइ चाहै राउ होइ है ॥ १ । ४॥

इति नवां कहरा समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ दशवां कहरा ॥ १० ॥

हौं सबहिन में हौं नाहीं मोहिं बिलग बिलग बिलगाई हो। ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो १ एक निरन्तर अन्तर नाहीं ज्यों घटजल शशि झाई हो। यकसमान कोइ समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाई हो २ रैनिदिवस मैं तहँवों नाहीं नारि पुरुष समताई हो। नामैं बालक नामैं बूढ़ो ना मोरे चेलिकाई हो ३ तिरबिध रहौं सबन में बरतों नाम मोर रमराई हो। पठये न जाउं आने नहिं आऊं सहजरहौं दुनिआई हो ४ जोलहा तान बान नहिं जानै फाट बिनै दशठाईं हो। गुरुप्रताप

जिन जैसो भाष्यो जन बिरले सुधिपाई हो ५ अनन्तकोटि मन हीरा बेध्यो फिटकी मोलन आई हो। सुरनरमुनि वाके खोजपरे हैं किछुकिछुकबिरनपाई हो ॥ ६ ॥

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं, बिलगबिलग बिलगाईहो॥ ओढ़न मेरे एक पिछौरा, लोग बोलहिं यकताई हो १

गुरुमुख॥ मैं सबमें हौं औ सब न होउं ऐसे मोको बिलग बिलग कहे जुदा जुदा बिलगाइके वेद कह्यो इहां दुइबार बिलग बिलग कह्यो सो एकतो चित् कहे जीवब्रह्म ईश्वर अचित्कहे मायाकालकर्म स्वभावपृथ्वीआदिक माया के कार्य सब सो ये दोहुन में अन्तर्यामीरूप ते व्यापक हौं सो जीवब्रह्म ईश्वर चित् तत्त्व में मैं व्यापक हौं तामें प्रमाण "विष्यवायुत्तमदेहेषु प्रविष्टोदेवताऽभवत्। मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितोभजतिदेवता" (इति श्रुतिः) "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा" (इति श्रुतिः) "ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहमितिगीतायाम्" अचितौ में व्यापकहै तामें प्रमाण "विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्" (इति गीतायाम्) सो चित् अचित् दोऊ व्याप्यपदार्थ हैं व्यापक मैं हौं सो चित् अचित्रूप पिछौरा दुइ छोरिया मेरो ओढ़न है सर्वत्र महींहौं सो वेदको तात्पर्य न जानिके लोग यकताई बोलै हैं कि एकई ब्रह्म है पिछौरा ओढ़ैयाको एकही कहै हैं दूसरा नहीं कहै हैं लोग जो यकताई कहै हैं सो कौनीतरह ते कहै हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

एक निरन्तर अन्तर नाहीं, ज्यों घटजल शशिझाईहो॥ यकसमानकोइ समुझत नाहीं, जरामरण भ्रमजाईहो २

वही ब्रह्म निरन्तर एक सर्वत्र है या लोग बोलै हैं सो कहा अन्तर नहीं है अर्थात् अन्तर है कैसे जैसे जलभरे घटनमें शशि की छाया वामें व्याप्य व्यापक बनो है सो एक जो मैं सो समान रहे सबमें सम व्यापक हौं ताको कोई व्याप्य व्यापक

कोई नहीं समझै है तौ कहा उनको जरा मरण भ्रम जाइ है अर्थात् नहीं जाइ है सो अन्तर्यामी रूपते व्यापक साहब कहि चुके अब निजरूपते जहां रहै हैं तहांकी बात कहै है ॥ २ ॥

रैनिदिवस मैं तहँवों नाहीं, नारि पुरुष समताई हो ॥
ना मैं बालक ना मैं बूढ़ो, ना मोरे चेलिकाई हो ३

जहां मैं रहौं हौं तहां न राति है न दिन है और सब नारी रूप हैं जो पुरुषहू जाइ है सो नारिनरूप ते रास में प्राप्त होइ है पुरुष महींहौं और समताई है जैसे सच्चिदानन्दरूप हौं ऐसे ओऊ सच्चिदानन्दरूप हैं मैं न बालक हौं न बूढ़ हौं सदा किशोररूप बनो रहौहौं और न मोरे चेलिकाई कहे कोऊ वह उपदेश नहीं है अर्थात् अज्ञानी कोऊ नहीं है सब मेरे रूपको जानै हैं वहां राति दिन नहीं है तामें प्रमाण "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" ॥ ३ ॥

तिरबिध रहौं सबन में बरतौं, नाम मोर रमराई हो ॥
पठयेन जाउँ आने नहिं आऊँ, सहजरहौं दुनिआईहो ४

तिरबिध रहौं कहे जीव ब्रह्म ईश्वरन में जो अन्तर्यामीरूप ते रहौहौं व सबनमें बरतौं कहे माया, काल, कर्म, स्वभाव इन में जो अन्तर्यामीरूप ते रहौहौं सो इनमें जो रमनवारो अन्तर्यामी मेरो रूप ब्रह्म ताहूको मैं राईहौं सो पठये नहीं जाउँहौं न आने ते आऊँहौं अर्थात् जो कहूं न होउँ तो ना आने आऊं पठयेजाउँ सर्वत्रैतौ हौं सो यही रीतिते सहजही या दुनिया में अन्तर्यामी के अन्तर्यामीरूप ते पूर्णहौं ॥ ४ ॥

जोलहा तानबान नहिं जानै, फाट बिनै दशठाईं हो ॥
गुरुप्रताप जिन जैसो भाष्यो, जनाबिरले सुधिपाई हो ५

जोलहा जे हैं जीव ते तानबान नहीं जानैं अर्थात् वा हंस स्वरूप पोशाक बनै नहीं जानैं जो पहिरि के मेरे समीप आवै फाट बिनै दशठाईं कहे दश हैं छिद्र जिनमें ऐसो जो शरीर

ताहीको बिनै है कहे नानामतन में परिकै वही कर्मकरै है आमें अनेक जन्म शरीर धारण करत जाय है जो कहो कोऊ जानत ही नहीं है तौ गुरुके प्रतापते जो कोऊ मेरो रूप भाष्यो है जैसो सो तौ कोई बिरलाजन सुधि पायो है अर्थात् जाको सतगुरु मिल्यो है सोई पायो है ॥ ५ ॥

अनन्तकोटि मन हीरा बेध्यो, फिटकी मोल न आई हो ॥
सुर नर मुनि वाके खोजपरे हैं, किछुकिछुकबिरनपाईहो ६

अनन्तकोटि जे जीव हीरा हैं तिनमें मन बेध्यो है सो या हीरारूप जीवको फिटिकिरिउ को मोल न रहिगयो सो सुर जे हैं मुनि जे हैं नर जे हैं ते वही अपने स्वरूप को खोजै हैं सो किछु किछु कहे थोरहूते थोर जीव पाइन है और कोई नहीं पायो जे आपनोरूप मेरोरूप गुरुप्रताप जानि शरीर को बिनै या मनको त्याग्यो है तेई पायो है अथवा किछु किछु कबिर न पाई कहे साकल्य करिकै हमारो भेद तो कोई जानतही नहीं है जे अपनो रूप मेरोरूप जानत जे जीव ते किछु किछु भेद पायो है ॥ ६ ॥

इति दशवां कहरा समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां कहरा ॥ ११ ॥

ननँदीगेतै बिषमसोहागिनि तैंनिदले संसारागे। आवत दोखि एक सँगसूती तैं अरु खसमहमारागे १ मोरे बाप की दोय मेहरिया मैं अरु मोर जेठानीगे। जब हम ऐलिरसिक के जग में तबहिं बात जग जानीगे २ माई मोर मुवल पिताकेसंगहिसरराचि मुवलसंघातागे। अपनो मुई और लै मुवली लोग कुटुम्ब सँग साथागे ३ जौलौं सांसरहै घटभीतर तौलौं कुशल परैहैगे। कह कबीर जब श्वास निसरिगै मंदिर अनल जरैहैगे॥ ४ ॥

ननँदीगेतैं बिषम सोहागिनि, तैं निदले संसारागे ॥
आवत दोखि एकसँग सूती, तैं अरु खसम हमारागे १

कबीरजी जीवनपर दयाकैके ज्ञानशक्ति ते कहै हैं कि मगहमें मिथिलादेश में परस्पर स्त्रीलोग बताती हैं आदर कैके तब गे सम्बोधन देती हैं सो या पदमें गे सम्बोधन है अथवा गे बिगरे जीव को कहैहैं हे गये जीव ! सो कबीरजी जीव को चित् शक्ति साहब की स्त्री सो ज्ञानशक्ति जो साहब की बहिनी तासों कहै हैं ननँदी याते कहै हैं कि प्रथम साहब को ज्ञान प्रकट होय है पीछे साहब प्रकट होयहै सो साहब की बहिनी भई सो चित्-शक्ति जीव कहै हैं कि तैं हमते सब जीव है तिन पर तैं बिषम ह्वै गई व पति की सुहागिनि ह्वैगई कैसी है तैं कि निदलें संसारा कहे तैं तो संसार को निदरेन है हमपर बिषम ह्वै गई है काहू को ज्ञान करि साहब को मिलाय दियो काहू को ज्ञान हरि संसारी करि दियो गे जो कहै है सो साहब को पति मानि वाको ननँदि मानि गारी दै कहै है कीन्ही तैं कहा कि समष्टि ते व्यष्टि करै वाली ऐसी माया को आवत देखिकै हमार खसम जो साहब है तिनके सङ्ग सूती जाइ तैं अपने भाई को पति बनाये तैं अर्थात् साहब को ज्ञान काहू जीव के न रहिगयो साहब को ज्ञान साहिबै को रहिगयो ॥ १ ॥

मोरे बापकी दोय मेहरिया, मैं अरु मोर जेठानीगे ॥
जब हम ऐलिरसिकके जगमें, तबहिं बात जगजानीगे २

सो जौने धोखाब्रह्म को मानि हम संसारी भये हैं सो जो हमारो बाप है धोखाब्रह्म ताके दोय मेहरिया हैं जीव चित्शक्ति कहै हैं कि एक मैं और एक मोर जेठानी जौन साहब अज्ञानमूला प्रकृति धोखाब्रह्म ते जेठ समष्टि करही है सो तब कारणरूपाहै अब कार्यरूपा भई अर्थात् चित्शक्ति जीव कहै है कि वही माया में परिकै " अहं ब्रह्मास्मि " हम सब मानत भये जो कहो तुम या बात कसकै जान्यो तो जब हम ऐलिरासिक के जगमें कहे जब हम रसिक जे साहब तिनके लोक में आये तब हम या बात जान्यो

कि "अहं ब्रह्मास्मि" हम माने न रहे और संसार में परिवेही कियो साहब को ज्ञान हमारे नहीं भयो सो साहब या लोकके मालिक जे हैं तेई हैं तिनके जाने संसार छूटै है ब्रह्म साहब नहीं है ॥ २ ॥

माईमोरमुवल पिताके संगहि, सररचिमुवलसँघातागे ॥
अपनो मुई और लै मुवली, लोगकुटुम्ब सँगसाथागे ३

सो पिता जो हमारो धोखाब्रह्म जौने के द्वारा हम व्यष्टि भये सो जब मिट्यो तब मोरमाई जो मूलाप्रकृति सो सर कहे चिता वशीकार वैराग रचिकै पिता के साथ वाहू सती ह्वैगई अर्थात् जब धोखाब्रह्म मिट्यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटि गई साहब को ज्ञान ह्वैगयो सो अपना मरी और जेतने नाना मानिराख्यो लोग कुटुम्ब तिनहूं को साथही लै जातभई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़िदियो जगत् के नाते छोड़िदियो एक साहब को जानिलियो उनहीं नाता मानलियो सो हे ज्ञानशक्ति! जब तू या मोको जनायो तब मैं जान्यो ॥ ३ ॥

जौलौं सांस रहै घट भीतर, तौलौं कुशल परैहैगे ॥
कहकबीर जब श्वास निसरिगै, मन्दिर अनलजरैहैगे ४

सो जबलौं श्वास है तबलौं कुशल है तू काहे बिषम ह्वैगई जबलौं श्वास है तबलौं इनके आइकै साहब को प्राप्ति कराय कै इनको दुःख छड़ाइदेउ श्वास निसरिगये पर यम धरि लैजायँगे अनेकयोनि में भटकत बागोगे शरीर जरिजाइगो सो हे ज्ञान-शक्ति! तब तू न आयसकोगी तेहिते ईजीवन पर तुम आयसक्की हो साहब को ज्ञान ह्वैसकैहै ॥ ४ ॥

इति ग्यारहवां कहरा समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां कहरा ॥ १२ ॥

या माया रघुनाथकि बौरी खेलनचली अहेराहो। चतुर चिक-

नियां चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेरा हो १ मौनी बीर दिगम्बर मारे ध्यानधरन्ते योगी हो। जङ्गलमें के जङ्गममारे माया किनहुँ न भोगी हो २ वेदपढ़न्ता पांड़े मारे पूजा करते स्वामी हो। अर्थ बिचारे पण्डितमारे बांध्यो सकल लगामी हो ३ शृङ्गीऋषि बन भीतर मारे शिरब्रह्माके फोरी हो। नाथ मछन्दर चले पीठदै सिंहलहूमें बोरी हो ४ साकठके घर कर्ता धर्ता हरिभक्तनकी चेरी हो। कहै कबीर सुनोहो सन्तो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

या माया रघुनाथ कि बौरी खेलनचली अहेरा हो।
चतुर चिकनियां चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेरा हो १
मौनी बीर दिगम्बर मारै ध्यान धरन्ते योगी हो।
जङ्गल में के जङ्गम मारे माया किनहुँ न भोगी हो २
वेद पढ़न्ता पांड़े मारे पूजा करते स्वामी हो।
अर्थ बिचारे पण्डित मारे बांध्यो सकल लगामी हो ३
शृङ्गीऋषि बन भीतर मारे शिर ब्रह्माके फोरी हो।
नाथ मछन्दर चले पीठ दै सिंहलहूमें बोरी हो ४
साकठ के घर कर्ता धर्ता हरिभक्तनकी चेरी हो।
कहै कबीर सुनोहो सन्तो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीर को जवाब दियो मैं कहा करौं मोको कोई जीवन के उदय होन नहीं देइ है माया सबको बांधि लियो है सो कबीरजी जीवनसों कहै हैं यह माया छुइ जान न पावै जबहीं आवै तबहीं यासों मुंह फेरिलेउ तबहीं बचौगे या सबको बांधि लियो है तुमहूंको बांधिलेइगी और इहां रघुनाथ की बौरी जो माया कह्यो सो रघु है जीव ताके नाथ जे श्रीरामचन्द्र तिनकी या माया है सो जीवनको धरि धरिकै शिकार खेलैहै सो जब अपने नाथ को या जीव जानै जिनकी या माया है तब तबं या माया ते छूटैगो अपने बल ते जीव न छूटिसकैगो अथवा या

माया रघुनाथ की बौरी है रघुनाथ की बौरी कहे रघुनाथ को न जानिबो यहै याको स्वरूप है ॥ १।५॥

इति बारहवां कहरा समाप्तम् ॥ १२ ॥

इति कहरा सम्पूर्णम् ॥

अथ बसन्त प्रारभ्यते ॥

जहँ बारहि मास बसन्त होय। परमारथ बूझै बिरल कोय १ जहँ बर्षै अग्नि अखण्डधार। बन हरियर भो अट्ठारभार २ पनिया अन्दर तेहि धरे न कोय। वह पवन गहे कशमलन धोय ३ बिनु तरुवर जहँ फूलो अकास। शिव औ बिरञ्चि तहँ लेहिं बास ४ सनकादिक भूले भवँर भोय। तहँ लखचौरासी जीव जोय ५ तोहिं जो सतगुरु सतसो लखाव। तुम तासु न छांड़हु चरण भाव ६ वह अमरलोक फल लगे चाय। यह कह कबीर बूझै सो खाय ॥ ७॥

जहँबारहिमास बसन्तहोय। परमारथबूझै बिरलकोय १
जहँबर्षै अग्नि अखण्डधार। बनहरियरभो अट्ठारभार २

जाके कहे जौने साहब के लोकमें बरहौ मास बसन्त बनो रहै है सो या परमार्थ कोई बिरला बूझै है सो वा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करि कहे हैं १ और बसन्तऋतु में सूर्यने अग्नि बर्षै है अखण्डधार बन जो है अठारह भार बनस्पती सो हरियर होत जाइ हैं और साहब के लोक में कोटिन सूर्य को प्रकाश है परन्तु सब को ताप हरिलेनवारो है वहां के सब बन सन्तानक आदिक हरियर रहै हैं ॥ २ ॥

पनियाअन्दरतेहिधरेनकोय। वहपवनगहेकशमलनधोय३
बिनुतरुवरजहँफूलोअकास। शिवऔबिरञ्चि तहँलेहिंबास४

और बसन्तऋतु में वृक्षनके अन्दरन में कोई पानी नहीं धरेहै

चन्द्र जो है सो अमृत को स्रवै है ताहीको गहे पवन वृक्षन के कश्मलन को धोयडारै है व साहब को लोक कैसो है कि पनिया अन्दर कहे वा रसरूप है ताको कोई नहीं जानै है वही रसरूप लोक को स्मरण पवन है ताके गहे कहे कियेते कश्मल जे पापहैं ते धोय जात हैं अथवा कामादि जे कश्मल हैं ते धोयजात हैं ३ और बसन्तऋतु में जहां तरुवर नहीं हैं ऐसो जो आकाश सोऊ पुहुपनके परागन करिकै फूलो देखो परैहै कैसो है आकाश जहां शिव बिरञ्चि बास लेहिहैं अर्थात् बास कीन्हे हैं सुगन्धित ह्वैरह्यो है और साहबहिको लोक कैसाहै कि जेहिका प्रकाश चैतन्याकाश बिना तरुवरै जगत्‌रूप फूल फूलै है शिव बिरञ्चि आदिक बास लेहिहैं ॥ ४ ॥

सनकादिकभूलेभवँरभोय। तहँलखचौरासीजीवजोय ॥५॥

बसन्तऋतु में चौरासीलाख योनि जीवनकी कौन गनती सनकादिक जे मुनि हैं तेऊ पुष्पमकरन्द में भोयकै भवँर की नाईं भूलि जाहि हैं और साहब को लोकप्रकाश ब्रह्म कैसा है कि सनक, सनन्दन, सनत्कुमार जाके भवँर में भोयकै कहे परिकै भूले हैं चौरासीलाख योनि जीवनकी कौन गनती है ॥ ५ ॥

तोहिंजोसतगुरुसतकैलखाव। तुमतासुनछांड़हुचरणभाव ६
वहअमरलोकफललगेचाय। यहकहकबीरबूझैसोखाय७

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसो जो साहब को लोक जहां बरहो मास बसन्त बनोरहै है तौन जो सतगुरु कहे साहब के बताय देनवारे तोको सत्यकै लखायो होय तो तुम ताके चरण को भाव न छांड़ो भाव यह है कि वा लोक के मालिक जो साहब हैं तिनहूंको बताय देयँगे वह अमरलोक कैसा है कि जहां चारिउ फल अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष आनन्दै के फल लगेहैं सो हे जीवो! या बात जो कोई बूझै है सोई खाय है साहब के धाम में बरहो मास बसन्तरहै है तामें प्रमाण कबीर की साखी ज्ञानसागर की

सदा बसन्त होत तेहि ठाऊं। संशयरहित अमरपुर गाऊं॥ जहँवां रोग शोग नहिं होई। सदा अनन्द करै सब कोई॥ चन्द्र सूर्य देवस नहिं राती। बरणभेद नहिं जाति अजाती॥ तहँवां जरा मरण नहिं होई। क्रीड़ा बिनोद करै सबकोई॥ पुहुपविमान सदा उजियारा। अमृत भोजनकरै अहारा॥ काया सुन्दरको परवानः। उदितभये जिमि षोड़श भाना॥ येता एक हंस उजियारा। शोभितचिकुर उदय जनु तारा॥ विमलबास जहँवां पौढ़ाही। योजनचार घ्रान जो जाही॥ श्वेत मनोहर छत्राशिरछाजा। बूझि न परै रङ्क अरु राजा॥ नहिं तहँ नरक स्वर्ग की खानी। अमृत बचन बोलै भल बानी॥ अस सुख हमरे घरनमहँ कहैं कबीर बुझाय। सत्य शब्दको जानै अस्थिर बैठै आय॥ ६। ७॥

इति पहिला बसन्त समाप्तम्॥ १॥

अथ दूसरा बसन्त॥ २॥

रसना पढ़ि भूले श्रीबसन्त। पुनिजाइ परिहौ तुम यमके अंत १
जो मेरुदण्ड पर डङ्क दीन्ह। सो अष्टकमल पर जारि दीन्ह २
तब ब्रह्म अग्नि कीन्हो प्रकास। तहँ अर्ध ऊर्ध्व बहती बतास ३
तहँ नव नारी परिमल सो गाव। मिलि सखी पांच तहँ देखन जाव ४ जहँ अनहदबाजा रहल पूर। तहँपुरुष बहत्तरि खेलैं धूर ५
तैं मया देखि कस रहसि भूलि। जस बनस्पती बन रहल फूलि ६
यह कह कबीर ये हरिके दास। फगुवा मांगै बैकुण्ठबास॥ ७॥

रसनापढ़िभूलेश्रीबसन्तापुनिजाइपरिहौतुमयमकेअन्त१

श्रीबसन्त कहे ऐश्वर्यरूप जो बसन्त ताको रसना में पढ़िकै मन बचन के परे जो साहबके लोक को बसन्त ताको तुम भूलि गयो रसनामें पढ़ि जो कह्यो तामें धुनि यहहै कि औरै देवतनकी उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य प्राप्ति होइहै यह पोथिनमें पढ़िपढ़ि भुलाइगयो वाहूको जीभैं भरेते कह्यो कछु प्राप्ति नहीं भै सो तुम

फेरि यम के अन्तकहे संसार में परिहौ और जो लेहु पाठ होय तो रसना में श्रीबसन्त को पढ़ि लेहु नहीं तो पुनि यमके अन्त कहे फन्द में परिहौ ॥ १ ॥

जो मेरुदण्डपरडङ्कदीन्ह । सोअष्टकमलपरजारिदीन्ह २

और जो या गुमान करौ कि हम योगवारे हैं हम यम के अन्त में न परैंगे सो जो तुम मेरुदण्डमें प्राण खैंचिके मेरुदण्डपर डङ्का दीन्ह्यो और अष्ट जो हैं आठों कमल मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहद, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र, अठयें सुरतिकमल जहां परमपुरुष है तामें पहुँचिके जारि दीन्ह अर्थात् योगौ की खबरि भूलिगई ॥ २ ॥

तहँब्रह्म अग्निकीन्होप्रकास। तहँअर्धऊर्ध्वबहतीबतास३

तहँनवनारीपरिमलसोगाव । मिलिसखीपांचतहँदेखनजाव ४

सो वा ज्योतिमें लीन भयो जीवत हैं ब्रह्मअग्नि प्रकाशकरत भई व बतास जो अर्धऊर्ध्वश्वास सो वहै बहत में अर्थात् बहिरे न आवत भै श्वास वहैं रहत भै या भांति जीव तखत में बैठि मालिक भयो गांउकारा बसन्त देखैहै ३ सो यहां परिमल कहे गन्ध का गांव है शरीर में पृथ्वीतत्त्व अधिकहै सो गन्ध का गांव शरीर है तौने में नौ नारीहैं कहे नौ राहहैं तहां पांचों जे ज्ञानेन्द्रिय हैं तेई सखी देखन जाय हैं अर्थात् वहै लीन ह्वैगई है ॥ ४ ॥

तहँ अनहदबाजारहलपूर । तहँ पुरुषबहत्तरिखेलैंधूर ५

तैंमयादेखिकसरहसिभूलि।जसबनस्पतीबनरहलफूलि ६

बसन्तमें बाजा बजैहै सो अनहद बाजा जहां पूरि रह्यो है तहां बहत्तरि पुरुष जे बहत्तरि कोठाहैं ते धूरि खेलै हैं अर्थात् चैतन्यता नं राहिगे ५ सो बसन्तमें बनस्पती फूलैहैं ऐसे या माया फूलिरही है तामें समाधि उतरे फिरि काहे भूले अथवा जैसे बनस्पती फूलै हैं ऐसे गैबगुफा में सुधा पीके नागिनी फूलीहै तामें तें काहे भूलि

रहैहै कहा वा माया के बहिरे है समाधि नागिनिही के अधार तो समाधिउहै ॥ ६ ॥

यहकह कबीर ये हरिकेदास। फगुवामांगै बैकुण्ठबास ७

सो या हठयोग करिकै जानै कि मैं मुक्ति होउँगो तो या समाधि में मायाहीते नहीं छूट्यो मुक्ति कहां होइगो ताते श्रीकबीर जी कहै हैं कि हे जीवात्मा, हरिके दास! तैं बैकुण्ठबास को फगुवा मांगै अर्थात् फगुहार फगुवा खेलाइ कै फगुवा मांगै है सो तैं हठयोग कियो ताको फल फगुवा राजयोग मांगु जाते बैकुण्ठबासहोइ॥७॥

इति दूसरा बसन्त समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा बसन्त ॥ ३ ॥

मैं आयउँमेहतरमिलन तोहिं। अबऋतुबसन्तपहिराउमोहिं १ हैलम्बीपुरियापाइझीन। तेहिसूतपुरानाखुंटातीन २ शरलागैसै तीनिसाठि। तहँकसनबहत्तरि लाग गांठि ३ खुरखुरखुरखुरचलै नारि। वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४ सोकारिगहमेंदुइचलहिं गोड़। ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५ हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार। सखी पांच तहँराचीधमार ६ बेरङ्गबिरङ्गी पहिरैंचीर। धरिहरि के चरण गावै कबीर ॥ ७ ॥

मैं आयउँमेहतरमिलनतोहिं। अबऋतुबसन्तपहिराउमोहिं १
हैलम्बी पुरिया पाइझीन। तेहि सूत पुराना खुंटातीन २

जीव कहै हैं मेह कही बड़ेको और जो बड़ाते बड़ा होइ ताको मेहतर कहै हैं फ़ारसीमें सो ईश्वरनते ब्रह्मते जो बड़े श्रीरामचन्द्र हैं तिनसों जीव कहै है कि मैं तुमको मिलन आयो हौं सो जौने लोक में सदा बसन्त रहैहै सो मोको पहिरायो अर्थात् मेरो प्रवेश कराइदीजे तानारूप जो मेरे शरीरको बसन्त ताते छुड़ाइये १ सो लम्बी पुरिया कौन कहावै जो ताना तनै है पूरै है सो मैं बासननि करिकै बहुत लम्बा है रह्योहौं कहे बासननि करिकै मैं संसार में

फैलिरह्यो हौं और पाई वा कहावैहै जो ताना साफ़ करै है सो या आत्माको साफ़ करिबो बहुत झीन है कहे जब कोई बिरले सन्त मिलैं तब आत्मा शुद्ध होइ काहेते कि यह सूत्रजीव पुरान कहे अनादिकालते तीन खूंटा जोहैं सत, रज, तम तामें बँधो है ॥ २ ॥

शरलागेसैतीनिसाठि । तहँ कसनिबहत्तरिलागगांठि ३
खुरखुरखुरखुरचलैनारि । वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४

पाई में शर लागैहै सो शरीरमें तीनिसै साठि-हाड़हैं तेई शर हैं बहत्तरि जे कोठा हैं तिनमें बहत्तरिहज़ार नसनकी गांठि एक एक कोठनमें लाग हैं तेई कसनी हैं ३ व बिनत में जौन बीच है चलावैहै सो नारि कहावैहै सो या शरीर में नाड़ी जो है सो खुरखुरखुरखुर चलै है और जोलाहिनि जो है बुद्धि सो पलथी मारिकै बैठी है अर्थात् देहही में निश्चय करिकै बैठी है ॥ ४ ॥

सोकरिगहमेंदुइचलहिंगोड़ । ऊपरनचनीनाचिकरैकोड़ ५

सो यह तरह को जो शरीर है सो करिगहहै जहां जोलाहिनि बैठे है धमारि महल में होय है सो शरीरै महल है सो करिगह में जोलाहिनि दोऊ अंगूठा चलावै है ऊपर तानामें नचनी कोड़करै है कहे नाचै है इहां शरीररूपी करिगह में बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्म में निश्चय करैहै कहूं अशुभकर्म में निश्चय करैहै यही दोऊ अंगूठा को चलाइबो है और वृत्तिबुद्धिकी कहूं शुभ में कहूं अशुभ में जाय है यही नचनी है सो नाचैहै और धमारिपक्ष में नाचतमें नचनीको गोड़चलैहै ऊपर कोड़करैहै कहे भाव बतावै है ॥ ५ ॥

हैंपांच पचीसौ दशहु द्वार । सखी पांच तहँ राची धमार ६

और पांच जे हैं अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, और पचीसौ जे तत्त्वहैं जीवमाया, महत्तत्त्व, अहंकार, शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श दशौ इन्द्रिय एकमन पञ्चभूतई और ताही में दशौद्वार ऐसे शरीरमें पांचसखी जे हैं पञ्चप्राणते धमारि रचतभई

और तानापक्ष में पांच पचीस तत्त्वके कहे सबकोरीके साजु आइगे और धरि कहे सब अपने अपने धमार में लगिगे कैड़ावारे माड़ीवारे पुरियावारे करिगहवारे तानासाफ़ करैवारे और धमारिपक्षमें पांचसखी धमारि रचैहैं दुइ एकबार कियो एकदेखैयाभो ॥ ६ ॥

वे रङ्गबिरङ्गीपहिरैंचीर । धरि हरिकेचरण गावै कबीर ७

पाँचो जे सखी हैं पांचतत्त्वनका रङ्गबिरङ्ग चीरपहिरैं स्वरोदय में लिखेहै श्वास तत्त्वन के रङ्ग जुदेजुदे देखे परैहैं और कोरी के घरके अनेक रङ्गके चीर पहिरे हैं और धमारिपक्षमें केशरि कस्तूरी करिके गुलाल भोड़र करिके चीर रङ्ग बेरङ्ग होय हैं ते पहिरे हैं सो यहितरहकी धमारि या संसार में है ताते हरि को चरण धरिकै कबीर गावै है कहैहै या धमारि को प्रथम या कहि आये हैं जौने लोक में सदा बसन्त है तहां प्रवेश करावो और इहां धमारि कहै हैं तात्पर्य यह कि या शरीर को तानाबाना जनन मरण में परि रह्यो है या धमारि तुमको देखायो जो रीझे होहु तो मैं यह फगुवा यही मांगो हौं कि जहां सदा बसन्तहै वा लोकमें प्रवेश करावो और न रीझ्यो होहु तो तुम हारिहौ या तानाबीना धमारि हरिलेउ या कहो कि ऐसी धमारि तैं न रचु कबीर कहैहै कि हे जीव! हरिके चरण धरि ऐसी बिनयकरु ॥ ७ ॥

इति तीसरा बसन्त समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा बसन्त ॥ ४ ॥

बुढ़िया हँसि कह मैं नितहि बारि । मोहिं ऐसि तरुणि कहु कौनि नारि १ ये दांतगये मोर पान खात । औकेशगयलमोरगँग नहात २ औनयनगयल मोर कजलदेत । अरु बैसगयल परपुरुष लेत ३ औजानपुरुषवामोरअहार । मैं अनजानेकोकरशृँगार ४ कह कबीर बुढ़ि अनँदगाय । पूतभतारहि बैठि खाय ॥ ५ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि।मोहिंऐसितरुणिकहुकौनिनारि १

बुढ़िया जो माया है सो हँसिकै कहेहै कि मैं नित्यही बारी हौं माया अनादि है याते बुढ़िया कह्योहै तामें प्रमाण "अजामेकां-लोहित" इत्यादि और हँसिकै कह्यो याते या आयो कि साधन करिकै छोटे छोटे या कहै हैं कि हमको माया जीर्ण ह्वैगई है अर्थात् अब छूटि जाइ है मैं नित्यही बारी हौं सबके कार्यरूप ते उत्पन्न होतरहौं हौं और मोहिं अस तरुणि कौनि नारि है जो सब जीवन संग करौंहौं और बुढ़ाउँ कबौं नहीं हौं ॥ १ ॥

दांत गये मोर पानखातं। औकेशगयलमोरगँगनहात २

और दांत गये पान खात जो कह्यो सो पान जो है वेद ताको तात्पर्य जो जानैहै यही खाब है सो वेद तात्पर्यार्थ जानेते कामादिक जे मेरे दांत हैं जिनते जीव सज्जनन को ज्ञान खाय लेइहै ते दांत मेरे जातरहे काम क्रोधादिक माया के दांतहैं तामें प्रमाण॥ रत्नयोग ग्रन्थकबीर को "कामक्रोधलोभमोहमाया। इन दांतन सों सब जग खाया" और साहब को जो कथा चरित्ररूप गङ्गा तामें जो नहाय है अर्थात् सुनै है सो कुमतिरूप केश मेरे जातरहे हैं॥ २ ॥

औनयनगयलमोरकजलदेत। अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३

साहब को ज्ञानरूप कज्जल जो कोई दियो तो मेरे नयन जो निरञ्जनहैं सो ज्ञातरहे हैं अर्थात् चैतन्यके योग करिकै माया देखै है और नयन को निरञ्जन कहैहैं तामें प्रमाण कबीरजी को "नयन निरञ्जन जानि भरम में मत परै" और बैस जो मोर है सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको लेत अपने वशकै बैस मोर जात रहै है अर्थात् चारिउ शरीर मोर नहीं रहते॥ ३ ॥

औजानपुरुषवामोर अहार। मैं अनजानेको कर शृंगार ४

और जानपुरुषवा कहे जो या कहै हैं कि हम ब्रह्म को जानि लियो हमहीं ब्रह्म हैं ते तो हमार आहारही हैं आपने आत्मै को भूलिगये और अजान जे हैं तिनको शृङ्गारे किये हैं नाना विष

दैकै लोभाय लेउहौं अर्थात् जानौ अजान को विद्या अविद्यारूपी ते वश करि लियो है धुनि याहै जिनको साहब आपनो हंसरूप दियो है तेई बचे हैं या उपसंहार कियो ॥ ४ ॥

कह कबीर बुढ़ि अनँद गाय । पूत भतारहि बैठिखाय ५

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि बुढ़िया जो माया है सो जैसो या पद कहिआये तैसो आनन्दसों गावै है वेद शास्त्रादिकन में वाणी-रूप ते सब जीव सुनै हैं परन्तु या नहीं जानैहैं कि जीव व ब्रह्म माया के भितरै है पूत जो जीव है और भतार जो ब्रह्म है ताको बैठिखाय है अर्थात् जब जीव संसारी भयो तब संसार में डारिकै खायो जब ब्रह्म में लीन भयो और सृष्टिसमय आयो तब वा ब्रह्मज्ञानहूं नहीं रहिजाइहै ब्रह्महूं को खायो ॥ ५ ॥

इति चौथा बसन्त समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां बसन्त ॥ ५ ॥

तुम बूझहु पण्डित कौन नारि । कोइ नाहिं बिआहल रह कुमारि १ यहि सबदेवन मिलि हरिहि दीन्ह । तेहि चारिहुयुग हरि सङ्गलीन्ह २ यह प्रथमहि पद्मिनिरूप आय । है सांपिनि सबजग खेदि खाय ३ या बर युवती वे बारनाह । अतितेज तिया है रैनि ताह ४ कह कबीर सब जग पियारि । अब अपने बलकवै रहल मारि ॥ ५ ॥

तुमबूझहुपण्डितकौननारि । कोइनाहिंबिआहलरहकुमारि १ यहिसबदेवनमिलिहरिहिदीन्ह । तेहिचारिहुयुगहरिसंगलीन्ह २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे पण्डित ! तुम बूझौ तो या शङ्खिनी, हस्तिनी, चित्रणी, पद्मिनी चारि प्रकार की नारिनमें कौन नारि है या माया अर्थात् एकौके लक्षण नहीं मिलते एकौके लक्षण जो मिलते तो कुमारि न रहती बिआहिजाती याही ते अबतक कुमारि है १ जब समुद्र मथिगयो लक्ष्मी कढ़ी सो सबदेव मिलि हरिको देतभये सो हरि चारिहुयुग संगहो राखत भये ॥ २ ॥

यहप्रथमहिपद्मिनिरूपआय। हैसांपिनिसबजगखेदिखाय ३
या बर युवती वे बारनाह । अति तेज तिया है रैनि ताह४

प्रथम तो ब्रह्म जे हैं विष्णु तिनकी नाभि में कमलिनी है सो लक्ष्मीरूप है सो आय अब धनरूप सांपिनि ह्वै संसार को खेदि खाय है ३ या माया बर युवती है कहे श्रेष्ठ है बार जे लरिका ब्रह्मा-विष्णु-महेश तेई याके नाह हैं और ताह कहे तौन जो संसाररूपी रैनि है तौने में अति तेज है ॥ ४ ॥

कहकबीरसबजगपियारि । यह अपनेबलकवैरहलमारि ५

सो श्रीकबीरजी कहे हैं कि या माया सब जगत् को पियारि है आपन बालक जे जीव तिनको मारि रही है अर्थात् सब जीवन को बांधे है जनन मरण करावै है ॥ ५ ॥

इति पांचवां बसन्त समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठवां बसन्त ॥ ६ ॥

माई मोर मनुष है अति सुजान । धन्धा कुटि कुटिकरै बिहान १ बड़े भोर उठि अँगन बहार । बड़ी खांच लै गोबरडार २ बासीभात मनुषलै खाय । बड़ घैला लै पानी जाय ३ अपने सैंयां बांधी पाट । लैरे बेंचौ हाटै हाट ४ कह कबीर ये हरिके काज । जोइयाके ढिंगर कौन है लाज ॥ ५ ॥

माईमोरमनुषहै अतिसुजान । धन्धाकुटिकुटिकरैबिहान १
बड़े भोर उठि अँगनबहार । बड़ी खांच लै गोबरडार२
बासीभात मनुष लै खाय । बड़ घैला लै पानी जाय ३
अपने सैंयां बांधी पाट । लैरे बेंचौ हाटै हाट ४
कह कबीरयेहरिकेकाज । जोइयाके ढिंगरकौन है लाज५

जीवशक्ति कहे है कि हे माई, माया! मोर मनुष जो मन सो बड़ा सुजान है धन्धा जो बाल, पौगण्ड, किशोर ताही को कूटि

कूटि कहे कैके बिहान कहे देहान्त कैदेइहै सु ज्ञान याते कह्यो कि मोको नहीं जानदेइ है आपही जानै है बड़े भोर कहे जब दूसर भयो तब आँगन बहार कहे गर्भबास में ज्ञानदियो अन्तःकरण साफ़ कियो यही बहारबो है और बड़ी खांच जो प्रसूतवायु तौने ते गर्भरूप गोबर टास्यो अर्थात् बाहर निकास्यो और बासीभात जो पूर्वकर्म ताको दुःख सुख आपही भोगै है और घैला जो बुद्धि है ताको लैके गुरुवन के इहां नानाबानीरूप पानी ताको लेन जाइ है अर्थात् बुद्धिते निश्चय करै है ऐसो जो मोर सैंया है ताको पाट जो ज्ञान तामें बांधे पाऊं तो हाट हाट में बेचौं अर्थात् साधुनको संग करिकै अपनो व याको सम्बन्ध छोड़ाय देउँ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जोइया जो जीव तौनेको ढिंगरा जो मन सो हरि जे श्रीरामचन्द्र तिनको काज में जो नहीं लागै तो याको कौन लाज है धुनि याहै जो साहब में लगै तो यह शुद्ध होइ जाय ॥ १ । ५ ॥

इति छठवां बसन्त समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां बसन्त ॥ ७ ॥

घरही में बाबुल बढ़ी रारि । अँग उठि उठि लागै चपलनारि १ वह बड़ी एक जेहि पांच हाथ । तेहि पचहुनके पच्चीस साथ २ पच्चीस बतावैं और और । वे और बँनावैं कई ठौर ३ सो अन्तर मध्ये अन्त लेइ । झकझेलि झुलावै जीवदेह ४ सब आपन आपन चहैं भोग । कहुकैसे परिहै कुशल योग ५ बीवेक बिचार न करै कोइ । सब खलक तमाशा देखलोइ ६ मुख फारि हँसै सब राव रङ्क । तेहि धरे न पैहौ एकअङ्क ७ नियरे बतावैं खोजें दूरि । वह चहुँदिशि बागुरि रहलपूरि ८ है लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउ पीउ ९ अबकी बारै जो होय चुकाव । ताकी कबीर कह पूरि दाव ॥ १० ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि । अँगउठिउठिलागेंचपलनारि १
वहबड़ीएक जेहि पांचहाथ । तेहि पँचहुनकेपच्चीससाथ२

हे बाबू, जीव ! तुम्हारे घटही में कहे शरीरही में रारि बढ़ी है काहेते कि हमेशा उठि उठि चपलनारि जो माया सो तेरे पीछू लगी है १ तामें वह एक सबते बड़ी काया जाके पांच हाथ कहे पांच तत्त्व हैं पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश-पुनि एक एक तत्त्वन के साथ पांच पांच प्रकृति हैं अस कैकै पचीस प्रकृति हैं सो कहे हैं मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार चौथ पांचों अन्तःकरण जामें चारयो ओर रहै हैं ये सब निराकार हैं ऐसे आकाशके साथ है और प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान ये कर्म करावै हैं एते वायु के साथ हैं और आंखी, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा येऊ विषय को प्रकाश करै हैं एते अग्नि के साथ हैं और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध सो येऊ पांचौ तृप्तिकर्ता हैं एते जलपञ्चक हैं जलके साथ हैं और हाथ, पांव, मुख, गुदा, लिङ्ग येऊ आधारभूत हैं एते पृथ्वी के साथ हैं यही रीति पँचहुनतत्त्वन के साथ पचीसौ प्रकृति हैं ॥ २ ॥

पच्चीस बतावैं और और । वे और बतावैं कई ठौर ३

सो ये पचीसौ प्रकृति जेहैं ते और और अपने विषय को बतावै हैं सो कहे हैं अन्तःकरण को विषय निर्विकल्प मन को विषय संकल्प विकल्प चित्त को विषय वासना बुद्धि को विषय निश्चय अहंकार को विषय करतूति प्राणको विषय चलब अपान को विषय छोड़ब समान को विषय बैठब उदान को विषय उठब व्यान को विषय पौढ़ब कान को विषय सुनब आंखों को विषय रूपदर्शन नाक को विषय सूंघिबो, जीभ को विषय बोलिबो त्वचा को विषय स्पर्श शब्द को विषय राग रस स्पर्श को विषय कोमलत्व, कठिनत्व, शीतलत्व, उष्णत्व रूप को विषय सुन्दरत्व रस को विषय स्वाद गन्ध को विषय सुबास इनको वे पचीसौ

प्रकृति बतावै हैं ई सब कई ठौर और बतावै हैं कहे चौरासीलक्ष योनि जीव को बतावै हैं ॥ ३ ॥

सो अन्तरमध्ये अन्तलेइ। झकझेलि झुलाउबजीवदेइ ४
सब आपनआपन चहैंभोग। कहकैसेपरि है कुशलयोग ५
बीबेकबिचारनकरै कोइ। सब खलक तमाशा लखै सोइ ६

सो ये विषय कैसे हैं कि अन्तर में अन्त लेइहैं कहे गड़िजाते हैं झकझेलिकै कहे जोरावरी झुलाउब जो आवागमन है सो जीव को देइ है ४ सो ये सब आपन आपन भोग चाह्यो तब जीव के कुशल को योग कैसे परै अर्थात् कैसे कल्याण पावै ५ सो ये बन्धन को विवेक कहे विचार कोई नहीं करै है कि क्या सांच है क्या झूंठ है सब खलक कहे सब संसार के लोक वाणी विषयन को तमाशा देखै हैं और वही में अरुझि रहे हैं ॥ ६ ॥

मुख फारि हँसैं सबरावरङ्क। तेहि धरन न पैहौ एकअङ्क ७
नियरे बतावैं खोजैं दूरि। वह चहुँदिशि बागुरि रहलपूरि ८
है लक्ष अहेरी एक जीउ। ताते पुकारै पीउ पीउ ९

सो वही विषय में परिकै मुख फारिकै रावरङ्क सब हँसै हैं या दुःखदायी है विषय या अङ्क कोऊ नहीं धरन पावै है तेहिको ७ सो वेद, शास्त्र, पुराण साहब को तो नियरेही बतावै हैं और दूरि खोजै हैं काहेते कि मायारूप बागुरि सर्वत्र पूरिरही है ८ सो ये तो सब शिकारी हैं और लक्ष कहे निशाना एक जीवही है ताते हे जीव! तैं पीउ पीउ पुकारै तबहीं तेरो बचाउ है ॥ ९ ॥

अबकीबारै जो होय चुकाव। ताकी कबीर कह पूरिदाव १०

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि अबकी बार जो मानुषशरीर में चुकाव होयगो व साहब को न जानैगो तो ताकी पूरि दांव है काहेते कि अबकी बारके चूके फेरि ठिकाना न लगैगो चौरासी लाख योनिन में भटकैगो फेरि जो मानुष शरीर पावैगो तब

पुनि नानामतन में लगिकै चौरासीलाख योनि में भटकैगो उद्धार न होइगो ताते अब की बार जो समुझै व साहब को जानै तौ तेरो पूरो दांवपरै तामें प्रमाण कबीरजी की साखी ॥ लख चौ-रासी भटकिकै, पौमें अटको आय। अबकी पौ जो नापरै, तौ फिरि चौरासी जाय ॥ १० ॥

इति सातवां बसन्त समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठंवां बसन्त ॥ ८ ॥

कर पल्लवके बल खेलैनारि। पण्डित जोहोयसोलेइ बिचारि १ कपरा नहिं पहिरै रहउघारि। निरजीवैसोधनअतिपियारि २उलटी पलटीबाजै सो तार। काहुहिमारै काहुहिउबार ३ कहकबीरदासन के दास। काहुहि सुखदे काहुहि उदास ॥ ४ ॥

करपल्लवकेबलखेलैनारि।पण्डितजोहोयसोलेइबिचारि१

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि नारि जो माया सो पल्लव जो राम नाम सो करमें लैकै वाही के बल खेलैहै जब प्रथम यह जगत् की उत्पत्ति भई तब रामनाम लैकै बाणी निकसी है तामें प्रमाण "रामनाम लै उचरी बाणी" ताही जगत्मुख अर्थ में चारिउवेद ईश्वर ब्रह्म सब संसार निकसेहैं तामें प्रमाण सायरको "रामनाम के दोई अक्षर चारिउ वेद कहानी" सो तौनेहीके बलते सबसंसार बांधि लियोहै सो जो कोई पण्डित होय सो बिचारिकै लैलेइ जगत्-मुख साहबमुख यामें दोऊ अर्थ हैं सो साहबमुख अर्थ राम नाम में लेइ जगत्मुख अर्थ केवल माया खेलैहै ताको छोड़िदेइ ॥ १ ॥

कपरानहिंपहिरैरहउघारि।निरजीवैसोधनअतिपियारि २
उलटीपलटीबाजैसोतार। काहुहि मारै काहुहि उबार ३

सो वा नारि माया कैसी है कि कपरा नहीं पहिरै उघारही रहैहै अर्थात् वह माया सबको मूंदे है वाको मूंदनवारो कोई नहीं है जो कहो वाको ब्रह्म मूंदे होइगो तो निर्जीव जो ब्रह्म सो धन

जो माया ताको अतिपियारहै अर्थात् वाहूको शबलित कियेहै २ व पुनि कैसी है कि उलटी पलटी तार बाज है कहे काहूको अविद्या में डारिकै नरक देइ है और काहूको विद्यारूप ते स्वर्ग सत्यलोकादि देइ है। ३॥

कह कबीरदासनके दास। काहू सुखदै काहू उदास ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि दासन के दास कहे ब्रह्मादिक जे माया के दास तिनहूं के दास जीव तुम्हारी माया कैसे छूटे वे ब्रह्मादिकै माया ते नहीं छूटे या माया कैसी है काहूको तो सुखद है काहू कैति उदास है कहे उनको स्पर्श नहीं करिसकै है अर्थात् जे साहब को जानै हैं तिनकी कैति उदास है तिनहीं के दास तुमहूं होउ तब उबार होइगो माया ब्रह्मजीव के परे श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण "राम एव परंब्रह्म राम एव परंतपः। रामएव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्" (इति श्रुतेः)॥ ४॥

इति आठवां बसन्त समाप्तम्॥ ८॥

अथ नवां बसन्त॥ ९॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर। रामनामभजुलागैतीर १ गयेबेणु बलिगेहैं कंस। दुर्योधनगयेबूड़ेबंस २ पृत्थु गये पृथ्वीकेराव। बिक्रम गयेरहेनहिंकाव ३ छौचकवैमण्डलीकेभार। अजहूंहो नल देखु बिचार ४ हनुमत कश्यप जनकौबार। ईसब रोंके यमके धार ५ गोपीचन्द भल कीन्होयोग। रावणमरिगो करतै भोग ६ जातदेखुअस सबकेजाम। कहकबीर भजु रामैनाम॥ ७॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर। रामनाम भजु लागै तीर १
गये बेणु बलि गेहैं कंस। दुर्योधन गये बूड़े बंस २
पृत्थु गये पृथ्वी के राव। बिक्रम गये रहे नहिं काव ३
छौचकवैमण्डली के भार। अजहूंहो नल देखु बिचार ४
हनुमतकश्यपजनकौबार। ई सब रोंके यम के धार ५

गोपीचँदभत्लकीन्होयोग । रावण मरिगो करतै भोग ६
जातदेखुअससबकेजाम । कह कबीर भजु रामै नाम ७

चौरासीलाख योनिन में भटकत भटकत यह शरीर पायो दुर्लभ सो वृथा ही जाय है सो रामनाम को भजु सेवा करु जाते तीरलगै बेणु, बलि, कंस, दुर्योधन, पृथु, बिक्रम ये छत्रो चक्रवर्ती भूमिमण्डल के ते शरीर छोड़िकै जातभये सो नर अजहूं बिचारि कै तू देखु व हनुमत, कश्यप, अदिति जनक कहे ब्रह्मा बार कहे सनकादिक ते ये अबलौं रामनाम कहि यमको धार रोंके हैं अर्थात् जे उनके मत में जाय रामनाम कहे हैं ते संसारते छूटिही जाय हैं उनपै यमको बल नहीं चलै है और गोपीचन्द योगी रहे रावण भोगी रह्यो पै रामनाम नहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि याही भांति सबके जामा जे शरीर ते जात देखै हैं ताते रामनाम भजु 'भज सेवायाम्' धातु है ताते तैंहूं राम नाम की सेवाकरु तबहीं संसारसमुद्र के तीर लगैगो नहीं तो बहि जायगो राम नाम के जपैया नहीं मरै हैं तामें प्रमाण कबीरजी को पद ॥ हम न मरैं मरि है संसारा । हम को मिला जिलावनवारा ॥ अब ना मरौं मोर मन माना । सोई मुवा जिन राम न जाना ॥ सो कत मरै सन्त जन जीवै । भरिभरिरामरसायन पीवै ॥ हरि मरिहैं तौ हमहूं मरि हैं । हरि न मरैं हम काहे को मरिहैं ॥ कह कबीर मनमनहिंमिलावा । अमरभयेसुखसागरपावा॥ १।७॥

इति नवां बसन्त समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवां बसन्त ॥ १० ॥

सबहीमदमातेकोइ न जाग । सोसँगहिचोरघर मुसनलाग १ योगीमदमातेयोगध्यान । पण्डितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमद मातेतपकेभेव । संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसो साफ । काजी मदमाते कैनिसाफ ४ शुकदेव मते ऊधौ अकूर । हनुमत मदमाते लिये लँगूर ५ संसारमत्यो माया के धार । राजा

मदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहे हरिचरणसेव । कलिमाते नाम-
देव जयदेव ७ वहसत्यसत्यकहसुम्रित बेद । जसरावणमारेघरके
भेद ८ यहचञ्चलमनकेअधमकाम । सोकह कबीरभजुरामनाम॥६॥

सबहीमदमातेकोइनजागा।सोसँगहिचोरघरमुसनलाग १
योगीमदमातेयोगध्यान। पण्डितमदमाते पढ़ि पुरान २
तपसी मदमाते तपकेभेव । संन्यासी माते करि हमेव ३
मोलनामदमातेपढ़िसोसाफ़ । काजीमदमातेकैनिसाफ़ ४
शुकदेवमतेऊधौ अक्रूर । हनुमतमदमातेलिये लँगूर ५
संसारमत्योमायाकेधार । राजा मद माते करि हँकार ६
शिवमातिरहेहरिचरणसेव । कलिमातेनामदेवजयदेव ७
वहसत्यसत्यकहसुम्रितबेद । जसरावणमारेघरके भेद ८
यहचञ्चलमनकेअधमकाम । सोकहकबीरभजुरामनाम ६

यह पद को समेटिकै अर्थ करै है यह संसार में सबकोई मद
में मातत भयो जगत् कोई न भयो सो जिनको जिनको यह पद
में गनाय आये ते ते प्रथम जैसे रावण घरके भेदते मारे गयो
तैसे मनके भेदते मारेगये परन्तु इन सबमें जे रामनामको जप्यो
तेई छूटे हैं हनुमदादि शुकादि जे कहिआये यह मनके तो अधम
काम हैं जे रामनामको नहीं जाने ते संसारही में परे ताते तैंहूं
रामनामको भजु तबहीं तेरो उद्धार होइगो औरीभांति संसारही
में परेरहैगो और संसारसागरको पारकरनवारो एकरामनामहीहै
तामें प्रमाण ॥ माधव दुख दारुण सहि न जाइ । मेरी चपल बुद्धि
ताते का वसाइ ॥ तन मन भीतर बस मदन चोर । तब ज्ञानरतन
हरिलीन मोर ॥ हौं मैं अनाथ प्रभु कहौं काहि । अन्नेकाविगूँचमैं
को आहि ॥ औसनकसनन्दन शिवशुकादि । आपुनकमलापतिभो
ब्रह्मादि॥योगी जङ्गम यति जटाधारि।अपने अवसर सब गयेहारि ॥
सो कह कबीर करि सन्तसात । अभिअन्तरहरिसों करहु बात ॥

मनज्ञानजानकरिकरि बिचार। श्रीरामनामभजुहोउपार ॥ १ । ६ ॥
इति दशवां बसन्त समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां बसन्त ॥ ११ ॥

शिवकाशी कैसी भै तुम्हारि। अजहूंहो शिव देखहु बिचारि १
चोवा अरु चन्दन अगरपान। सब घर घर स्मृति होइ पुरान २
बहु बिधि भवनन में लगैं भोग। असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहु बिधि परजा निर्भय हैं तोर। तेहि कारण चित है ढीठ मोर ४
हमरे बालककर यहै ज्ञान। तोहीं हरिको समुझवै आन ५
जग जो जेहिसों मन रहललाय। सो जिवके मरे कहु कहँ समाय ६
तहँ जो कछु जाकर होइ अकाज। है ताहि दोष साहब न लाज ७
तब हर हर्षित ह्वै कहलभेव। जहँ हमहीं हैं तहँ दुसरकेव ८
तुम दिना चारि मन धरहु धीर। पुनि जस देखेहु तस कहकबीर ॥९॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि। अजहूंहोशिवदेखहुबिचारि १
चोवाअरुचन्दनअगरपान। सबघरघरस्मृतिहोईपुरान २
बहुबिधिभवननमेंलगेंभोग। असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहुबिधिपरजानिर्भयहैंतोर। तेहिकारणचितहैढीठमोर ४

श्रीकबीरजी कहे हैं कि जब मैं बालापन में साधन करत रह्यों है तबहीं देवतन को दर्शन होत रह्यो है सो मैं महादेवजीतेपूछ्यो कि यह काशी तुम्हारी कैसी भईहै अजहूं तो बिचारि देखो तुम्हारी काशीमें चन्दन, चोवा, अगर लगावै हैं पान खाय हैं घर घर स्मृति पुराण होइ हैं विविध भांतिके मेवा पकवान भोग लगावै हैं यही रीतिते नगरमें कोलाहल लोग करिरहे हैं ऐसे परजा तुम्हारे निर्भय होइ रहे हैं तौने कारणते मोरौ चित ढीठ होइ गयो है ॥ १ । ४ ॥

हमरेबालककरयहैज्ञान। तोहींहरिको समुझवै आन ५
जगजोजेहिसोंमनरहललाय। सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय ६

सो हम जे सब बालक हैं तिनकर यहै ज्ञान है तुम जे हो महादेव और हरि जे हैं श्रीरामचन्द्र तिनको तो समुझवै काशीवाले आन हैं काहेते कि वेदद्वारा यह कहते हैं कि जब संसार छूटै है ज्ञान होइहै तब मुक्ति होइहै ये सब जो काशी में मरै हैं सो मुक्त ह्वैजाइ हैं भोग करै हैं सो यहू वेदद्वारा कहौहौं कि कहे विलक्षण समुझवै है ५ जगत् में जो जौनेमें मनलगावैहै सो शरीर छूटे कहो कहां समाय है अर्थात् जाहीमें मन लगावैहै ताहीमें समायहै यहू वेद में लिखै है ॥ अन्ते या मतिः सा गतिः ॥ सो हम तुमसों पूछै हैं कि विषय में मनलगाये मरे जे काशीके लोग ते कहांजायहैं॥६॥

तहँजोकछुजाकरहोइअकाज। हैताहिदोषसाहबनलाज७
तब हरहर्षित ह्वै कहल भेव। जहँहमहीं हैं तहँदुसरकेव८
तुमदिनाचारमनधरहुधीर।पुनिजसदेखेहुतसकहकबीर ९

सो जाकर अकाज होइ है ताहीको दोष है काहेते वाके कर्महीते अकाज होइहै साहब जो आप हैं श्रीरामचन्द्र तिनको कौन लाज है जो आप काशीके जीवन्मुक्ति देइ हैं सो कौने हेतुते कहा और संसारी जीव आपका न होइ काशी आपका है ७ तब हर्षित ह्वैके हर मोसे भेद बतायो कि जहां हमहैं तहां दूसर को है काशी में और सब संसार में जहां हम हैं अर्थात् हमको जे जानै हैं तेके कर्म औ कालईको जोर कैसकैं काहेते कि जब हम ब्रह्माते रामनाम पायो है तब जान्यो है ताहीते मुक्ति करै हैं रामनाम को उपदेश करि श्रीरघुनाथजी को ज्ञान देइ है वाको तब मुक्ति होइ है सो काशीहू में रामनाम दै मुक्ति करै है औरहू देश में रामनाम पाइकै मुक्ति ह्वैजाइहै ८ सो दिनचार तुम मनमें धीर धरो पुनि जस देख्यो तस हे कबीर ! तुम कह्यो अर्थात् जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करते हैं तैसे तुमहूं करोगे तब तस देखोगे कि रामनाम ते कैसो विषयी होइ पै उद्धारई ह्वैजाइहै और काशी में रामनामही ते मुक्ति होइ है महादेव देइ हैं तामें प्रमाण " पेयं पेयं श्रवण-

पुटके रामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्म-रूपम् । जल्प्यं जल्प्यं प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशीनिवासी" (इति स्कान्दे)॥६॥

इति ग्यारहवां बसन्त समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां बसन्त ॥ १२ ॥

हमरे कहलकर नहिं पतियार। आपु बूड़े नल सलिलैधार १ अन्धा कहै अन्ध पतिआय। जस बिश्वा के लगनै जाय २ सोतो कहिये अतिहि अबूझ। खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ ३ आपन आपन चाहहिं मान। झुठ परपञ्च सांच करि जान ४ झूठा कबहुं करौ नहिं काज। मैं तोहिं बरजौं सुनु निरलाज ५ छांड़हु पाखण्ड मानहुं बात। नहिंतौ परिहौ यम के हात ६ कह कबीर नल चहेन्न सोझ। भटकि मुये जस बन के रोझ ॥ ७॥

हमरेकहलकरनहिंपतियार। आपुबूड़ेनल सलिलैधार १
अन्धा कहै अन्ध पतिआय। जस बिश्वाकेलगनैजाय २
सोतो कहिये अतिहिअबूझ। खसमठाढ़ढिगनाहींसूझ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हमरे कहे ये जीव कोई नहीं पतियाय हैं साहब में कोई नहीं लगते हैं आप सुखी बानीरूप सलिल में बूड़ेजाते हैं बानी को पानी आगे कहिआये हैं १ आंधर जे गुरुवा लोग हैं ते नानामतन को बतावै हैं आंधर जे जीव ते ग्रहण करै हैं साहब को नहीं जानै हैं जैसे वेश्या की लगन व नानापुरुषते रमै है एकको जानतिही नहीं है ऐसे नाना उपासना मानै हैं सो साहब को मानतही नहीं है २ सो ते जीवन को हम अतिही अबूझ कहै हैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामीरूपते ढिगही में हैं तिनको नहींसूझै है ॥ ३ ॥

आपनआपनचाहहिंमान । झूठपरपञ्चसाँचकरिजान ४
झूठाकबहुंकरौनहिं काज । मैंतोहिंबरजौंसुनुनिरलाज ५

छांड़हुपाखंडमानहुंबात। नहिंतौ परिहौ यम के हात ६

आपन आपन मान जो है बड़ाई सिद्धता तौने को चाहै हैं झूठ परपञ्च जो धोखाब्रह्म आत्मै मालिक है याको सांच मानैहैं४ सो जो तैं या झूठो बिचार करिराखे है कि हमहीं ब्रह्म हैं आत्मा मालिक है सो ये झूठे काज तैं न करु हे निर्लज्जजीव! केतौ जन्म मारो गयो है पुनि वही काम करैहै सो मैं तोको बरजो हौं तू या काम न करु साहब को जानु ५ सो मेरीबात तू मानु पाखण्ड को छोड़िदे नहीं तो यम जे हैं तिनके हात कहे गड़वा में परिहौ यमदूत डाढ़ी पकरिकै डारिदेयँगे ॥ ६ ॥

कहकबीरनलचलेनसोझ । भटकिमुयेजसबनकेरोझ ७

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे नल! सोझ कहे सूधो अन्तर्यामी जे साहब समीप तिनको न जान्यो दूरि हैं जे नाना उपासना तिनमें बनके रोझकी नाईं भटकिकै मरिगये अर्थात् रोझ औघट बाग तो है शिकारी सो भेंट भई मारोगयो ऐसे नाना उपासना करत रह्यो यमदूत डाढ़ी पकरि नरक में डारिदियो तामें प्रमाण "होइ हिस्साब तब ज्वाब का देहुगे पकरि फिरिस्त लै जाय डाढ़ी" औ साहिबैके जानेसे छूटैगो तामें प्रमाण कबीरजी को पद "चेतनदेकैरेजगधन्धा। रामनामको मरम न जानै मायाके रसअन्धा॥ जनमत तबहिं काह लैआया मरतकाहलैजासी। जैसे तरुवर बसत पखेरू दिवसचारिके बासी॥ आया थापी और न जानै जनमतही-जरि काटी। हरि के भक्ति बिना यहि देही फिरि लौटे हिय फाटी॥ काम अरु कोह मोह मद मत्सर पर अपवादा सुनिये। कहै कबीर साधुकी संगति रामनाम गुन भनिये ॥७॥

इति बारहवां बसन्त समाप्तम्॥ १२॥

इति बसन्त सम्पूर्णम्॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ चौतीसी प्रारभ्यते ॥

ॐकार आदिहि जो जानै। लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै॥ वै ॐकार कहै सबकोई। जिनहुँ लखा सो बिरला सोई १ कका कमल किरणिमें पावै। शशि बिकसितसंपुट नहिं आवै॥ तहां कुसुंभरंग जो पावै। औ गहगहकै गगन रहावै २ खखा चाहै खोरि मनावै। खसमहिं छोड़ि दशौ दिशि धावै॥ खसमहिं छोड़ि क्षमा हैरहई। होय अखीन अक्षयपद गहई ३ गगा गुरुके बचनै मानै। दूसर शब्द करै नहिं कानै॥ तहां बिहंग कतहुं नहिं जाई। औ गह-गहकै गगनरहाई ४ घघा घटविनशे घट होई। घटही में घट राखु समोई॥ जो घटघटै घटै फिरिआवै। घटहीमें फिरि घटै स-मावै ५ ङङा निरखत निशिदिन जाई। निरखतनैन रहा रट लाई॥ निमिष एकलौं निरखै पावै। ताहि निमिषमें नैन छिपावै ६ चचा चित्ररचो बहुभारी। चित्रहि छोड़ि चेतु चित्रकारी॥ जिन यह चित्र बिचित्र उखेला। चित्र छोड़ि तू चेतु चितेला ७ छछा आहि छत्रपति पासा। छाकिकै रहसि मेटि सब आसा॥ मैं तोहीं छिन छिन समुझाया। खसम छोड़ि कस आप बँधाया ८ जजा ई तन जियतै जारो। यौवनजारि युक्ति जो पारो॥ जो कुछ जानि जानि परजरै। घटहि ज्योति उजियारी करै ९ झझा अ-रुझि सरुझि कितजाना। हीठत ढूंढ़त जाहि पराना॥ कोटिसुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै। जो गढ़गढ़ागढ़हिसोपावै १० ञञा निरखत नगरसनेहू। करु आपन निरुवारि सदेहू॥ नहिं देखी नहिं आप भजाऊ। जहां नहीं तहँ तन मन लाऊ ११ टटा बिकट बात मनमाहीं। खोलि कपाट महल में जाहीं॥ रहै लटपटे जुटि तेहिमाहीं। होहिं अटलते कतहुं न जाहीं १२ ठठा ठौर दूरि ठग नीरे। नितके निठुर कीन मनधीरे॥ जेहिठगठग सबलोगसयाना। सो ठग चीन्हि ठौर पहिचाना १३ डडा डर कीन्हे डर होई।

डरही में डर राखु समोई ॥ जो डरडरै डरै फिरि आवै। डरही में पुनि डरहि समावै १४ ढढा ढूंढ़तई कत जाना। ढीगर ढोलहि जाइ लोभाना ॥ जहां नहीं तहँ सबकछु जानी। जहां नदी तहँले पहिंचानी १५ रे णणा दूरि बसौरे गाऊं। णणा टूटे तेरा नाऊं ॥ मुयेयतेजिय जाहीघना। मुये यतादिक केतिक गना १६ तता अतित्रियोनाहिंजाई। तन त्रिभुवन में राखुछपाई॥जो तन त्रिभुवन माहँ छपावै। तत्त्वहिमिलि सो तत्त्व जो पावै १७ थथा थाह थहो नहिं जाई। यह थीरे वह थीर रहाई ॥ थोरे थोरे थिरहो भाई। बिन थम्भे जस मन्दिर जाई १८ ददा देखौ बिनशनहारा। जस देखौ तस करो बिचारा ॥ दशो द्वार में तारीलावै। तब दयालको दर्शनपावै १९ धधा अर्धमाहँ अँधियारी। जस देखै तसकरै बिचारी ॥ अर्धछोड़िऊरधमनलावै। अपामेटिकै प्रेम बढ़ावै २० ननो वो चौथेमें जाई। रामकाग छह है बरषाई ॥ नाह छोड़ि किय नरक बसेरा। अजौं मूढ़ चित चेतु सबेरा २१ पपा पाप करे सब कोई। पापकेधरे धर्म नहिं होई। पपा कहै सुनौ रे भाई। हमरे सेये कछू न पाई २२ फफा फल लागो बड़दूरी। चाखै सतगुरु देवनतूरी ॥ फफा कहै सुनौ रे भाई। स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई २३ बबा बरबरकर सब कोई। बरबराकिये काज नहिं होई ॥ बबा बात कहै अरथाई। फलका मर्म न जानेहु भाई २४ भभा भर्म रहा भरि पूरी। भभरेते है नियरे दूरी ॥ भभा कहै सुनौ रे भाई। भभरे आवै भभरे जाई २५ ममासेये मर्म न पाई। हमरे ते इन मूल गँवाई ॥ ममा मूल गहल मनमाना। मर्मी होहि सो मर्महिजाना २६ यया जगतरहा भरिपूरी। जगतहुते ययाहै दूरी॥ यया कहै सुनौ रे भाई। हमरे सेये जै जै पाई २७ ररा रारि रहा अरुझाई। राम कहै दुखदारिदजाई ॥ ररा कहै सुनौ रे भाई। सतगुरु पूछिकै सेवहुजाई २८ लला तुतरे बात जनाई। तुतरे पावै परचै पाई ॥ अपना तुतुर और को कहई। एकै खेत दुनों निरवहई २९ ववा वह वह कह सबकोई। वह वह कहे काज नहिं होई ॥

वबाकहै सुनहु रे भाई । स्वर्गपताल कि खबरि न पाई ३० शशा शरद देखै नहिं कोई । शरशीतलता एकहि होई ॥ शशा कहै सुनौ रे भाई । शुन्यसमानचलाजगजाई ३१ षषा षर षर कह सब कोई । षर षर कहे काज नहिं होई ॥ षषा कहै सुनौ रे भाई । रामनाम लैजाहु पराई ३२ ससा सरारचो बरिआई । सरबेधे सबलोग तवाई ॥ ससाके घर सुन गुन होई । यतनी बात न जानै कोई ३३ हहा होइ होत नहिं जानै । जबहीं होइ तबै मन मानै ॥ है तो सही लहै सबकोई । जब वा होइ तब या नहिं होई ३४ क्षक्षा क्षणपरलै मिटि जाई । क्षेव परे तब को समुझाई ॥ क्षेत्र परे कोउ अन्त न पाया । कह कबीर अगमन गोहराया ॥ ३५ ॥

ॐकार आदिहि जोजानै । लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै ॥ वैॐकार कहौ सबकोई । जिनहुँलखा सो बिरलासोई १

ओंकार को आदि जो रामनाम ताको जो कोई जानै पिण्डाण्ड ब्रह्माण्ड को चाहे लिखिकै कहे उत्पत्तिकै मेटै कहे नाशकरै फिरि मानै कहे पालनकरै सो वह ओंकारको तो सबै कोई कहै हैं परन्तु जिन वाको लखा सो कोई बिरलाहै ताके लखिबे को प्रकार हौं कहौहौं अकार लक्ष्मणको स्वरूप उकार शत्रुघ्नको स्वरूप मकार भरतको स्वरूप अर्धमात्रा श्रीरामचन्द्र को स्वरूप संपूर्ण प्रणव श्रीजानकीजीको स्वरूप यहि रीतिते जो कोई प्रणवको जानै सो बिरला है कौनीरीतिते जप करै त्रिकुटी में अकार कण्ठ में उकार हृदय में मकार नाभिमें अर्द्धमात्रा गैवगुफा में संपूर्ण प्रणव ऐसो एक एक मात्रा को अर्थ बिचारत घण्टानादवी नाई जप करनवारो विरला है साहबमुख यह अर्थ हम दिग्दर्शन करदियो है और विस्तार ते अर्थ हमारे रहस्यत्रयग्रन्थ में है और सब जगत् मुख अर्थ है ॥ १ ॥

ककाकमलकिरणिमेंपावै । शशिबिकसितसंपुटनाहिंआवै ॥ तहांकुसुम्भ रङ्ग जो पावै । औ गहगहके गगन रहावै २

क कहिये सुखको सो ककाकहे सुखको सुख जो साहब तिनको किरणि जो अर्धमात्रा ताको नाभिकमल में ध्यानकरि जीव जानै और शशि जो चन्द्रनाड़ी तौनको अमृत सींचिकै विकसित किये रहे संपुटित न होनपावै व तहैं कुसुंभरङ्ग जो प्रेम ताको पावै तो अगह जो साहब जे मन वचन करिकै नहीं गहे जाइँ तिनको गहि कै गगन जो हृदय आकाश तामें राखै याके आवरण के मन्त्र और ध्यान को प्रकार हमारे शान्तशतक में लिख्यो है ककार सुख को कहे हैं तामें प्रमाण "कः प्रजापतिरुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः॥ कश्चात्मनि समाख्यातः कः सामान्य उदाहृतः १ कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखेऽपि प्रकीर्तितम्॥ पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः शब्देऽपि प्रकीर्तितः" ॥ २ ॥

खखा चाहैखोरिमनावै। खसमहिंछोड़िदशौंदिशिधावै ॥
खसमहिंछोड़िक्षमाह्वैरहई। होइअखीनअक्षयपदगहई ३

ख जो चैतन्याकाश ताहूको चैतन्याकाश अर्थात् ब्रह्महू को ब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तो अपनी खोरि जो चूक सो मनावै कहे बकसावै कौनचूक जौन खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै जो दशौंदिशा में धावै है कहे नाना उपासना करै है सो या चूक बकसावै व ख जो चैतन्याकाश सम कहे सर्वत्रपूर्ण ऐसो जो धोखाब्रह्म ताको छोड़िकै तैं क्षमाह्वैरहु ब्रह्मको वाद विवाद न करु होइ अखीन कहे आपनो स्वरूप जानिकै कि मैं साहब को हौं अक्षय हौं ब्रह्महू में लीन भये मेरो जीवत्व नहीं जाय है ऐसो हंसरूप ह्वैकै अक्षयपद जे साहब तिनको गहु ॥ ३ ॥

गगा गुरु के वचनै मानै। दूसर शब्द करै नहिं कानै ॥
तहां बिहङ्गकतहुं नहिं जाई। औगहगहकैगगनरहाई ४

ग जो है साहब को गीत ताको ग कहेते गवैया है सो हे जीव! तैं गुरु जे साहब हैं तिनके वचन मानु कौन वचन कि॥ अजहूं लेउँ छँड़ाय कालसे जो घट सुरति सँभारै॥ और दूसर

शब्द न कान करु जो घट सुरति सँभारैगो तौ विहङ्गम जो जीवात्मा सो कतौं न जाइगो व गह कहे अवगाह जे साहब हैं तिनको गहिकै गगन जो हृदयाकाश ताही में रहैगो अर्थात् जो साहब को गुणगान करैगो तौ तेरो मन जो सर्वत्र डोलै है सो कतौं न जाइगो तामें प्रमाण, "गो गणपतिरुद्दिष्टो गन्धर्वो गः प्रकीर्तितः। गं गीते गा तु गीता च गौश्च धेनुः सरस्वती" ॥ ४ ॥

घघा घट बिनशे घट होई। घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै। घटही में फिरि घटै समावै ५

घ जो घट है ताको घा जो नाश है सो करनेवारो अर्थात् जनन मरणवारे हे घघाजीव! घट जे पांचौ शरीर ताके बिनशे घट जो है हंस शरीर सो होइ है कैसे होइ है ताको साधन कहै हैं घटही में घट राखु समोई कहे स्थूल सूक्ष्म में सूक्ष्म कारण में कारण महा कारण में महाकारण कैवल्य में कैवल्य हंसस्वरूप में समोइराखु अर्थात् एकएक में लीनकैदेइ जो यही रीतिते घट जे पांचौ शरीर तिनको घटै घटै फिरि आवै तो घट जो है हृदयाकाश ताही में घट जो हंस शरीर सो समावै अर्थात् जीतै यही शरीर में हंसस्वरूप पाय जाय घघान को कहै हैं "घो घटेऽपि समाख्यातः किंकिणी वा प्रकीर्तितः। हनुमते घा समाख्याता घृ मूर्द्धनि प्रकीर्तितः" ॥ ५ ॥

ङङानिरखतनिशिदिनजाई। निरखतनयनरहतरतनाई॥
निमिषएकलौंनिरखैपावै। ताहिनिमिषमेंनयनछिपावै ६

ङ कहे भयानक ङा कहे विषयवाञ्छा सो ङङाभयानक विषयबाञ्छा निरखत कहे बिचारत तोको दिनौ राति जाइ है वाही के निरखत में वाके बिचारत में नय जो नीति सो नहीं रहत रतनाई जो अनुराग विषय में सोई रहिजाइ है कैसी है वह विषय की एक निमिषलौं निरखै पावै कहे वामें लगै तो तौनेन निमिष में भोगोपरान्त नयन छिपावै है नहीं नीक लागै है अर्थात् रूप

को देख्यो फिरि नयन में नीर भरिआवै है नहीं नीक लागै है सुगन्ध बहुत सूंघ्यो उपरान्त नाक बरिउठै है अच्छो भोजन कियो तृप्त भये पर बिरसपरिजाइ है गान बहुत सुन्यो फिरि बकवाधिलगै है स्पर्श बहुत सुन्दर स्त्री कियो फिरि वीर्यपात भये नहीं नीकलगै है गरम लागनलगै है सो ये सब तृप्त के उपरान्त जो निमिष है तौने निमिष नहीं नीकलगै है ङ विषयबाञ्छा को कहै हैं तामें प्रमाण "ङकारो भैरवः ख्यातो ङा ध्वनावपि कीर्तितः। ङकारस्स्मरणे-प्रोक्तो ङकारो विषयस्पृहा" ॥ ६ ॥

चचाचित्ररच्योबहुभारी। चित्र छोड़ि तू चेतु चित्रकारी॥
जिनयहचित्रविचित्रउखेला। चित्रछोड़ि तू चेतुचितेला ७

च कहे मन काहे ते कि मनको देवता चन्द्रमा याते च मन को कही और दूसर चा चोरको कही सो तेरो मन जो चोर सो तेरे स्वरूप को चोराय लीन्हो साहब को भुलाय दीन्हो सो यह जगत्रूप चित्र जो रच्यो है चित्रविचित्र सो तू छोड़िदे हे जीव! चित्रकारी जो मन ताको चेत करु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियो है च चन्द्रमा व चोर को कहैहैं "च चन्द्रश्च समाख्यात-स्तस्करश्च उदाहृतः" ॥ ७ ॥

छछाआहिछत्रपतिपासा। छकिकिनरहैछोड़िसबआसा॥
मैं तोहींक्षणक्षणसमुझाया। खसमछोड़िकसआपुबँधाया ८

छ कहे निर्मल जीव तैं आपने स्वरूप को भूलिकै साहब को भूलिगयो ताते छा कहे खेदरूपहो ह्वैगयो तेरे स्वरूप की क्षय ह्वै गई सो तैं तो छत्रपती जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको आहि तिनके पास जाय कै ईसब नानादेवन की आशा छोड़िकै छकि रहु या बात मैं तोको क्षण क्षण समुझायो परन्तु तुम खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगत् में अपनपौ बँधाया छ निर्मल को और खेद को कहै हैं तामें प्रमाण " निर्मले

छस्समाख्यातः तराणिश्छः प्रकीर्तितः। वेदे च छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्दशासने " ॥ ८ ॥

जजाईतनजियताहिजारो। यौबनजारियुक्ति जो पारो ॥
घटहिज्योतिउजियारी करै। जोकछुजानिजानिपरजरै ६

ज कहिये वेगवन्त को व आ कहिये जघनको सो हे जीव! वेगवारो जो मनहै सोई तेरो जघनहै ताहीते बागत फिरै है अर्थात् जनन मरण होतरहै है सो या तनको कहे मनरूप तनको तैं जीतै में कहे यही शरीर को साधन करके जारिदे मरेते न जरैगो दूसर शरीर देइगो यौबन कहे युवाअवस्था को जारिकै वह युक्ति को पारो कहे धारण करो फिरि वृद्धावस्था में साधन करिबे की सामर्थ्य नहीं रहैहै ताते युवै अवस्था में इन्द्रिन को विषय साधनकरि जारु कौनीतरहते जारु कि जो कछु पदार्थ जगत् में जानि राख्यो है ते जानिपरै कि जरिगये अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छूटिजाइ तबहीं ज्योति जो मन है सो घटमें साहब की ओर उजियारी करै है ज्योति मनको कहैहैं तामें प्रमाण "जीव-रूपयक अन्तरबासा। अन्तर ज्योति कीन परकासा " और ज-कार वेगवारे को व जघन को कहै हैं " त्रेगि तेजः समाख्यातो जघने जः प्रकीर्तितः " ॥ ६ ॥

झझाअरुझिसरुझिकितजाना। हीठतढूंढ़तजाहिपराना ॥
कोटिसुमेरुढूंढ़िफिरिआवै। जोगढ़गढ़ागढ़हिसो पावै१०

झ कहिये झंझा पवन को और झा कहिये नष्ट को सो तैं विषय झझा में परिकै नष्ट होइगये सो यामें अरुझि कै तैं कहां सरुझि कै जैहै झ कहिये पीठि को झा कहिये विषय बयारिको सो विषयबयारि में अरुझि कै साहब को पीठिदैकै सरुझिकै कित जान चाहैहै हीठत ढूंढ़त तेरो परान जाइहै नानाउपासना नाना मत करैहै अथवा हीठत ढूंढ़त तेरो परान जाइहै नानामतन में पै तोको विषयबयारि न छांड़ैगी वाही में अरुझो रहैगो कोटि

सुमेरु कहे कोटिन ब्रह्माण्ड भटकि आवो परन्तु जौन मन शरीर गढ़को गढ़ा है कहे बनावा तौनेन को व गढ़ कहे शरीर को तपावैगो याते तैं विषयबयारि को छांड़ु साहब के सम्मुख होइ झ झञ्झावातको व नष्टको कहैहैं तामें प्रमाण " झंझावाते झकारः स्यान्नष्टेझस्समुदाहृतः" ॥ १० ॥

ञञानिरखतनगरसनेहू । आपन करु निरुवारु सदेहू ॥
नहिंदेखोनहिंआपुभजाऊ। जहांनहींतहँतनमनलाऊ ११

ञ कहिये सोइबेको ञा कहिये घर्घर ध्वनिको सो घर्घर नाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूप को भूलो जीव नानामतनमें वाद विवाद करत नगर जो जगत् व शरीर ताही को निरखै है व वाहीमें सनेह करैहै आपने जो संदेह की मैं साहबको हौं कि और को हौं ताको तो निरवारु करु नयबातते नहीं देखी जेहिमें साहब मिलैहैं और न आप भजाऊ कहे न अपनपो जाने कि मैं कौनको हौं जिन जिन मतनमें न साहिबै जानिपरै न आपनो स्वरूप जानिपरै तामें तैं तन मनको लगाये है और ञशयनको व घर्घरध्वनिको कहै हैं तामें प्रमाण "ञकारः शयने प्रोक्तो ञकारो घर्घरध्वनौ" ॥ ११ ॥

टटाबिकटबातमनमाहीं । खोलिकपाट महल में जाहीं ॥
रहेलटपटेजुटितेहिमाहीं।होहिंअटलतेहिकतहुँनजाहीं १२

एक ट कहे जो नाभीमें रेफ की ध्वनि उठैहै और दूसरो टा कहे जो सुरति कमलमें गुरुरकार ध्वनि करैहै सो दूनों ध्वनि जामें होइँ सो टटा कहावैहै सो हे टटाजीव! बिकटबात की जे बासना तेरे मनमें तेई कपाट हैं ताको खोलिकै दूनों रकारकी ध्वनि एककै रामनाम की छइउमात्रा जपत अर्थबिचारत महल जो साकेत तहांको जायरहै लटपटे कहे जैसे होय तैसे रामनाम में जुटिरहु तौ साकेत में जाइकै तैं अटल ह्वैहै अथवा बिकटबासनन को तेरे मनमें टटा ह्वै रहा है सो टटा को खोलिकै महल में जा हे लटपटे

जौने संसार में लटपट ह्वैरहे हैं कहे नरक स्वर्ग में तैं गिरै उठै है सो तैं साकेतमें जुटिरहु जे साकेत में जुटिरहे हैं कहे प्रवेश करि रहे हैं तेई अटल ह्वैरहे हैं उनको जनन मरण नहीं होय वे कतहूं नहीं जायहैं ट ध्वनि को कहे हैं तामें प्रमाण "टः पृथिव्यां च कटके टो ध्वनौ च प्रकीर्तितः" ॥ १२ ॥

ठठा ठौर दूरि ठग नीरे। नितकेनिठुरकीन्हमन धीरे ॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना ।सोठगचीन्हिठौरपहिचाना १३

ठ कहिये बृहद्ध्वनि को और ठा कहिये चन्द्रमण्डल को सो बृहत् है ध्वनि कहे कीर्ति जिनकी तीनों ताप के हरणहारे चन्द्र-मण्डलकी नाईं ऐसे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ठौर दूरि है और ठग जो मन है सो नेरे है अथवा हे ठट्ठहा मसखरा जीव ! साहबसों मसखरी करनवारो जाते जनन मरण छूटै है वा साहबको ठौर दूरि है ठग जे मन बुद्धि चित्त अहंकार ते नेरे हैं तैं नित्यको निठुर है मा जो माया ताको ना धीरे करतभे सो कहे तेजकरते भये ऐसो जो ठग मन जौन सब सयाने लोगन को ठगत भो तौने ठग मन को चीन्हिकै साहब के ठौरको पहिचानौ अथवा ठग जे हैं गुरुवालोग ते साहबते छोड़ायकै और और में लगायो ते कहां तेरे मनको धीरे किये नाहीं किये और ठ बृहद्ध्वनिको व चन्द्रमण्डल को कहे हैं तामें प्रमाण "बृहद्ध्वनिश्च ठः प्रोक्तस्तथा चन्द्रस्य मण्डले" ॥ १३ ॥

डडा डर कीन्हें डर होई। डरही में डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरै फिरि आवै। डरहीमेंपुनि डरहिसमावै १४

एक ड कहिये ध्वनिको और डा कहिये त्रास को सो मायारूप बाणीकी त्रास कहे डर सो या डर तेरे कीन्हेते होइहै अर्थात् ये मिथ्या हैं तैंहीं बनायलियोहै कैसे मिटै सो जिनको तैं डरैहै बिष-यन को तिनको इन्द्रियन में समोइदे इन्द्रिन को डरै है सो मन जो महाडर है तामें समोइदे और मनको चित् तन्मात्रब्रह्म में

समोइदे या रीति ते डर को डर में समोइकै तैं फिरिआउ साधन करि साहब को जानु डकार ध्वनि को और, त्रास को कहै हैं तामें प्रमाण "डकारः शंकरे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते" ॥ १४ ॥

ढढा ढूंढ़तईकतजाना । ढीगरडोलहि जाइ लोभाना ॥
जहांनहींतहँसबकछुजानी । जहांनहींतहँलेपहिंचानी १५

ढ कहिये बाणी को ढा कहिये निर्गुण ब्रह्म को सो हे जीव! बाणी में लागिकै निर्गुणब्रह्म को ढूंढ़त तो को कहां जाना है अर्थात् उहां कुछु नहीं है तैंतो साहब को है वा ढीगरहै जापुरुष के है तौने को ढोल बाजा बानीरूप पानी तौने में लोभाने तैं जाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोल बाजा है अहंब्रह्म बुद्धि बतावै है सो दूरि को ढोल सुहावन है वामें कछु नहीं देश काल वस्तु परिच्छेद ते शून्य है हाथ एकौ न लगैगो सो हे जीव! जहां कहे जौने साधन में साहब नहीं हैं तौनेन साधन को तैं सब कछु जानि लीन्हे है सो जहां नहीं कहे जहां मायाब्रह्म ये एकहू नहीं हैं तहां साहब को तैं पहिचानले ढ निर्गुण को और ध्वनि को कहै हैं तामें प्रमाण "ढकारः कीर्तितो ढका निर्गुणे च ध्वनावपि ॥ १५ ॥

णणा दूरि बसौ रे गाऊं । रे णणा टूटै तेरे नाऊं ॥
मुयेयेते जियजाहीघना । मुये यतादिक केतिकबना १६

ण कहिये निष्फल को णा कहिये ज्ञान को सो हे जीव! या धोखाब्रह्म को ज्ञान तेरो निष्फल है या ज्ञानते साहब न मिलैंगे साहब को गाउं जो साकेत है सो दूरि बसैहै सो रे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीव! टूटै तेर नाउं कहे वा धोखाब्रह्म में लगे तेरो जीवत्व को नाउं टूटि जाइगो अर्थात् तैं हूं धोखाब्रह्म कहावन लगैगो सो या ज्ञान में केतो मरिगये हैं व घना कहे बहुत जीव मुये जाहि हैं और केते गनै यही रीति मरिजै हैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञान ते साहब न मिलैंगे ण निष्फलको व ज्ञानको कहहैं तामें प्रमाण "णकारः कीर्तितो ज्ञाने निष्फलेऽपि प्रकीर्तितः" ॥ १६ ॥

तता अतित्रियो नहिंजाई। तन त्रिभुवनमें राखु छपाई॥
जो तनत्रिभुवनमाहँछपावै। तत्त्वहि मिले तत्त्वसो पावै १७

त कहिये चोर को ता कहिये सीगट को पूंछ को सो हे जीव! साहब ते चोराइकै आंखी छपाइकै सिंह जो साहब ताकी शरण छोड़ि कै सीगट की पूंछ जो धोखाब्रह्म तौने को तैं गहे सो अतित्रियो कहे आसमता ताते कहे अत्यन्त चारिउ और व्याप्ति त्रिगुणात्मिका माया तौनौ भरि तेरी नहीं जाइहै मुक्ति होबे की कहा कहिये सो तन कहे अणुमात्र जो तैं है ताको त्रिभुवन में छपाय राखति भै माया सो ये जे तेरे पांचौ तन हैं तिनको तैं त्रिभुवन में छपाय दे अर्थात् चारिउ शरीर हैं तिनको संसारी मानिले व मैं इनते भिन्न हौं वा शरीर को अभिमान जो तैं छांड़िदे तो तत्त्व जो साहब को यथार्थज्ञान कि मैं साहब को हौं तौन जब तोको मिलै तब तत्त्व जे साहब हैं तिनको पावे तत्त्व यथार्थ को कहै हैं तामें प्रमाण "तत्त्वं ब्रह्मणि यथार्थे" और साहब तत्त्व कहावै हैं तामें प्रमाण "रामएव परंतत्त्वं रामएव परंतपः" त चोर को व सीगट की पूंछ को कहै हैं तामें प्रमाण "तकारः कीर्तितश्चौरः क्रोष्टुपुच्छेऽपि तः स्मृतः" ॥ १७ ॥

थथा थाह थहो नहिं जाई। इह थोरे वह थीर रहाई॥
थोरे थोरे थिररहुभाई। बिनुथम्भे जसमँदिल थँभाई १८

थ कहिये शिलासमूहको और था कहिये रक्षा को सो हे जीव! शिलासमूह जो मन जौने के भयते अपनी रक्षा करु काहेते थाह है अर्थात् बिचार कीन्हे कुछु वस्तु नहीं है परन्तु काहू के थहाये नहीं थहाये जाय है शिलासमूह मन है सो आगे पद में कहि आये हैं "पाहन फोरि गङ्ग यक निकसी चहुँदिशि पानी पानी" सो! यह मन थिर होइ तो वह जीवहू थिररहै ताते तैं थोरे थोरे साधन करु जाते मन थिर होइ जो साधन न करैगो तो मन न थिररहैगो कैसे जैसे बिना थम्भकहे खम्भा देवाल और जो कौनो

यशोवाली बात न करै तो वह यश बने रहत है मन्दिल थँभेहै अर्थात् नहीं थँभे है अथवा थोरे थोरे साधनकरि मन थिर कैले जब मन थिर ह्वैजाइगो तब साधन न करन परैगो कैसे जैसे कौनो यशवाली बात कियो फिर वा यश रूपमन्दिर बिना थम्भे बनोरहै है थ शिलासमूह को व रक्षा को कहै हैं तामें प्रमाण "शिलोच्चये थकारस्स्यात्थकारो भयरक्षणे" ॥ १८ ॥

ददा देखो बिनशनहारा । जस देखौ तस करौ बिचारा ॥
दशौ द्वार में तारी लावै । तब दयालको दर्शन पावै १९

द कहिये कलत्र को व दा कहिये दान को सो हे जीव ! या सब कहे यह लोक में जो कलत्रादि व वह लोक स्वर्गादिक बिनशनहारा है अर्थात् सब नाशमानहै सो जस देखो कहे जैसा नाशमान देखतेहो तैसा तुहूं अपने को बिचार करो कि हमहूं नाश ह्वैजैहैं दशौ द्वारको महामुद्रा करि बन्दकरि तारी लावै कहे समाधिकरै तब दयालु जे साहब हैं तिनको दर्शन तैं पावैगो द कलत्र को और दान को कहै हैं तामें प्रमाण "दं कलत्रे बुधैरुक्तं छेदे दानेऽपि दातरि" ॥ १९ ॥

धधाअर्धमाहँ अँधियारी । जस देखै तस करै बिचारी ॥
अर्धछोड़ि उरध मनलावै । अपा मेटिकै प्रेम बढ़ावै २०

ध कहिये बन्धन को व धा कहिये धाता को सो हे जीव ! माया के बन्धन में परिकै अपने को धाता कहे ब्रह्मा मानिलियो है सो हे जीव ! तैं अर्ध कहे अधोगति की अँधियारी में परो है तोको नहीं सूझिपरै अज्ञान में परो है सो जस देखै है सुनै है तैसही बिचार अज्ञानपूर्वक करैहै सो तैं न करु अर्ध जो है अधोगति की राह ताको छोड़िकै उरध कहे साहबके इहां जावेकी जो राह है तामें मन लगाउ अपामेटिकै कहे जो आपन सब मानि राख्यो है सो सब साहबको मानिकै और आपनेहूं को साहब को

मानिकै प्रेम को बढ़ावै ध बन्धन को और धाता को कहै हैं तामें प्रमाण " धो बन्धने धनाध्यक्षे धाता धीर्मरुतावपि " ॥ २० ॥

नना वो चौथे में जाई। राम को गद्दह ह्वै खरखाई ॥
नाहछोड़िकियनर्कबसेरा। नीचअजौं चितचेतुसबेरा २१

न कहिये गुण को और ना कहिये निन्दा को सो हे जीव! तैं त्रिगुण में बँधिकै निन्दारूप ह्वैगयो अर्थात् निन्दा करिबे लायक ह्वैकै मन बुद्धि चित्त में अहंकार जो चौथ तामें परिकै अर्थात् आपने को ब्रह्ममानिकै रामको तैं ह्वैकै अर्थात् तैंतो श्रीरामचन्द्र को है परन्तु अवरे २ में गदहा ह्वै खर खाति फिरै है अर्थात् क्रूर ज्ञानमें परो है सो नाह जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको छोड़िकै नरक में बसेरा कियो सो हे नीच! अबै सबेरो है अजहूं चेतु न गुणको व निन्दा को कहै हैं तामें प्रमाण " नकारः स्याद् गुणे चन्द्रे दुःस्तुतौ च प्रकीर्तितः " ॥ २१ ॥

पपा पाप करै सबकोई। पापके धरे धर्म नहिं होई ॥
पपा कहै सुनहुरे भाई। हमरे सेये कछू न पाई २२

प कहिये श्रेष्ठ को पा कहिये रक्षक को सो हे जीव! तैं साहब को ह्वैकै औरे औरे देवतन को श्रेष्ठ मानै है व रक्षक मानै है पापई करै है पाप के कियेते धर्म नहीं होइगो अर्थात् और देवतन के किंये तेरी रक्षा न होयगी काहेते पपा जे हैं श्रेष्ठरक्षक जिनको तैं मानैहै तेई कहै हैं हे भाई! सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो मुक्ति हमारी दीनि नहीं देजाइ मुक्ति श्रीरामचन्द्रही की दई देजाइ है तामें प्रमाण " मुक्तिप्रदाता सर्वेषां विष्णुरेव न संशयः " विष्णु श्रीरामचन्द्रको नाम है सो हमारे सर्वसिद्धान्त में लिखो है प श्रेष्ठ को व रक्षक को कहै हैं तामें प्रमाण " परमे पः समाख्यातो पा पाने चैव पातरि " ॥ २२ ॥

फफा फललागोबड़दूरी। चाखैं सतगुरु देइँ न तूरीं ॥
फफा कहै सुनहुँ रे भाई। स्वर्गपतालकिखबरिनपाई २३

फ कहिये फल को फा कहिये निष्फल भाषण को सो हे जीव ! जौने फल को तैं भाषण करै है कि ऐसो फल होइगो सो या तेरो भाषणो निष्फल है फल जे साहब हैं ते बहुत दूरि हैं सतुगुरु जे हैं जे साहब को जाने हैं तेई चाखैं हैं व फल वे तूरिकै काहू को नहीं देइ हैं काहेते वे साहब मन बचन के परे हैं आपही ते आप जाने जाइ हैं आपनी दई इन्द्रिय ते आप देखे जाइ हैं सतुगुरु जे बतावै हैं ते साहब के प्रसन्न होवे की राह बतावै हैं सो हे भाई ! लोकन में फलकी चाह करिकै निष्फल के भाषणवाले जे गुरुवालोग हैं ते कहै हैं कि स्वर्ग पाताल में साहब की खबरि हमहूं कहूं नहीं पाई अर्थात् साहब हई नहीं हैं फ फल को और फा निष्फल भाषण को कहै हैं तामें प्रमाण " फंफा वाते फकारः स्यात्फः फलेऽपि प्रकीर्तितः । फकारेऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे " ॥ २३ ॥

बबा बरबर कर सबकोई । बरबर किये काज नहिं होई ॥
बबा बात कहै अरथाई । फल के मर्म न जानेहु भाई २४

ब कहिये बरुण को बा कहिये घटको सो बरुण जल के भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव ! तुहूं बाणी के भीतर ह्वैकै घट की नाईं भकभकाइ बरबर सब कोई करौ हौ सो बरबर के किये काज नहीं होइ है अर्थात् साहब नहीं मिलैहै सो हे बबा ! घट की नाईं भकभकानवारे बात तो बहुत अर्थाय कै कहै हैं परन्तु हे भाई ! लोकन के फलको मर्म नहीं जानौ हौ कि वा फल भोग करि कछु दिन में गिरही परैंगे ब बरुण को व कलश को कहै हैं तामें प्रमाण "प्रचेताबः समाख्यातः कलशो ब उदाहृतः" ॥ २४॥

भभा भर्म रहाभरिपूरी । भभरेते है नियरे दूरी ॥
भभा कहै सुनौरे भाई । भभरे आवै भभरे जाई २५

भ कहिये आकाश शून्य को भा कहिये भ्रमण को सो हे जीव ! भ भरिबो कहावै है डेराबो धोखा या ज्यहि मतनमें कल

शून्य है तेही मतन में तैं भ्रमण कारिरहो है कहे सो बिचार को भ्रमण तेरे पूरिरहो है सो तोको गुरुवालोग साहबते डेरवाइ दियो और धोखा में लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्वत्र देखो परै है जब आवै कहे जन्म होइहै तबहूं भभरे आवै है कहे डरै में आवैहै और जब जाइहै तबहूं भभरे कहे डरै में जाइ है वोहू नाना प्रकार के दुःख होइहैं सो या भभरे ते नियरे जे साहब हैं ते दूरि ह्वैगये सो भभा जेहैं धोखाब्रह्म के भ्रमणवाले तेई कहै हैं सो हे भाई! सुनो भ्रमैते आवैहै भ्रमते जाइहै महाप्रलय में लीनहोइ है पुनि सृष्टिसमय में संसार में आये भ आकाश को व भ्रमण को कहै हैं तामें प्रमाण "नक्षत्रं भं तथाकाशं भ्रमणे भः प्रकीर्तितः। दीप्तिर्भा भूस्तथा भूमिर्भीर्भयकथिता बुधैः"॥२५॥

ममा सेये मर्म न पाई। हमरे ते इन्ह मूल गँवाई॥
ममामूलगहलमनमाना । मर्मी होइसोमर्महि जाना २६

म कहिये लक्ष्मी को मा कहिये बन्धन को सो हे जीव! तैं लक्ष्मी के बन्धन में परिकै ऐश्वर्य में परिकै साहब को मर्म तू न पायो हमरे ते व हे यह सब हमार है यह बिचारते यह सब साहब को पहन जानोइ है आपन मानते इन्ह मूल जे साहब हैं तिनको गँवाइ दियो सो हे ममा! मायाबन्धन में बँधो जीव जौन तेरे मन में माना है ताही को मूल मानि गहि लीन्हों है सो तैं मूल न पायो काहेते कि मर्मी कहे जो कोई साहबको मर्मी होइहै सोई साहब के मर्मको जानै है म लक्ष्मी को और बन्धनको कहैहैं तामें प्रमाण "मः शिरश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्तिता। मश्च मातरि माने च बन्धने मः प्रकीर्तितः" ॥ २६ ॥

यया जगत रहा भरिपूरी। जगतहु ते यया है दूरी॥
यया कहै सुनो रे भाई। हमरे सेये जय जय पाई २७

य कहिये त्याग को या कहिये प्राप्त को सो हे जीव! त्याग ते नाम संन्यास ते प्राप्त जे साहब होय हैं ते साहब जगत् में पूरि

रहे हैं जौन भरिपूरि कह्यो सो साहब को सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत् ते दूरि है अर्थात् बाहर है ते यया जे साहब हैं ते कहै हैं कि हे भाई ! सुनो हमरे सेयेते कहे हमरेन सेवाते सबको जय करनवाला जो काल ताहूते जय पावै औरी तरहते कालते जय नहीं पावै है साहब त्यागही ते मिलै हैं तामें प्रमाण (दोहा) "बिगरी जन्म अनेक की, सुधरै अबहीं आज। होय रामको राम जपि, तुलसी तजि कुसमाज" य त्यागको व प्राप्त को कहै हैं तामें प्रमाण "यमो यः कीर्तितः शिष्टैर्यो वायुरिति विश्रुतः। याने पातरि या त्यागे कथिता शब्दवेदिभिः" ॥ २७ ॥

ररा रारि रहा अरुझाई। राम कहे दुख दारिद जाई ॥
ररा कहै सुनौरे भाई। सतगुरु पूछिकै सेवहु आई २८

र कहिये कामको रा कहिये अग्निको सो हे जीव ! तैं कामाग्नि में अरुझिरह्यो है तामें जरो जाइ है सो यामें दुःख दरिद्र न जाइगो रामनाम कहेते दुःख दरिद्र जाइ है सो हे भाई ! सुनो ररा कहे रसरूप जे साहब तिनको ज्ञानाग्नि ते कर्मलायकै सत्-गुरु जे साहब के जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनाम को सेवहु रामनाम के सेवन की युक्ति बूझिकै र को काम अर्थ छोड़िकै र काम को व अग्नि को कहै हैं तामें प्रमाण "रश्च कामे नले सूर्ये रुश्च शब्दे प्रकीर्तितः" ॥ २८ ॥

लला तुतरे बात जनाई। तुतरे पावै परचै पाई ॥
अपनातत्तुर औरको कहई। एकै खेत दुनो निरबहई २९

ल कही इन्द्र को ला कही लक्ष्मी को सो हे जीव ! तैं इन्द्रकी नाईं लक्ष्मी पाइकै तत्त्व की बातें जनावै है सो तत्त्व तब पावैगो जब साधुनते परचै पावैगो सो हे जीव ! "तत्त्वं राति गृह्णातीति तत्त्वरः" अपना तो तत्त्व जे हैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानै है और औरको ज्ञान सिखवै है सो एक खेत जो है एक हृदय तेरो तामें दोनों निरबहई अर्थात् का दोनों निरबहै हैं नहीं निर-

बहे हैं कि तैं अज्ञानी बनो रहे है और को ज्ञान कथे है तौ का और के ज्ञान लगे है नहीं लगेहै जो तैंहूं ज्ञानी होइहै तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरको लगै और जो तुतरे पाठ होय तो या अर्थ है ला इन्द्रको व छेदनको कहे हैं सो हे जीव! जो यज्ञादिककरि इन्द्रादिक देवतनके संतुष्ट के वास्ते पशुच्छेदन करौ हौ सो वेद या तुतरे बात जनाई है जैसे लरिका रोटी को टोटी कहै है परन्तु माता तात्पर्य जानै है कि रोटीही मांगे है ऐसे वेद जो यज्ञादिक कहे हैं सो दुष्कर्म छुड़ाइकै यज्ञादिक में लगायो फेरि ज्ञान दैकै येऊ कर्म छुड़ाइकै तात्पर्य ते साहब को बतावै है सो तुतर जो है वेद तौनेको अर्थ तब पावै जब वाके तात्पर्य को पावै सो आप तो तुतर हैं वेद परदा कैकै बात कहै हैं सब जीवन को ए कहै हैं कि जीव औरको औरई कहैहै मेरो तात्पर्य नहीं समुझैहै सो एकै खेत जो संसार है तामें दूनों निबहे हैं अथवा साहब के इहां वेद नहीं पहुँचि सकैहै न प्रकट वर्णन करिसकै है तात्पर्यही करिकै कहैहै जगत् व कर्म याही को प्रकट वर्णन करै है और जीव जे हैं ते जगत्‌ही में परेरहे हैं जे तात्पर्य जानै हैं तेई साहब के समीप पहुँचै हैं ताते वेदौ जीवौ एक खेत जो जगत् है ताही मों निबहै हैं जो जगत् न रहै तो बद्धविषयी मुमुक्षुई न रहिजायँ मुक्त भरि रहिजायँ और चारिउ वेद रकार मकार में रहिजायँ ल इन्द्र को लक्ष्मी को छेदन को कहै हैं तामें प्रमाण "लइन्द्रोलवनोलश्च लाचलक्ष्मीप्रकीर्तिता" ॥ २९ ॥

ववावहवहकह सब कोई। वह वह कहे काज नहिं होई॥
ववाकहै सुनौरे भाई। स्वर्गपताल कि खबरि न पाई ३०

व कहिये भक्त को वा कहिये वायु को सो हे जीव! तैं तो साहब को भक्त है वायुकी नाईं जगत् में बहत फिरौ हौ वह है ईश्वर वह है ईश्वर या कहा सब कोई कहौ हौ सो वे नाना ईश्वरन के कहे काज कहे मुक्ति न होइहै सो हे ववा कहनेवारे भाई!

सुनते जाउ तुम स्वर्ग पाताल की खबरि नहीं पाई अर्थात् सबके रखवार साहब को नहीं जानौ हौ तामें प्रमाण "स्वर्गपताल भूमिलौंबारी। एकै राम सकल रखवारी" वा सात्वतको व वायु को कहै हैं तामें प्रमाण "सात्वते वरुणे वाते वकारः समुदाहृतः" ॥ ३० ॥

शशा सरदेखै नहिं कोई। सरशीतलता एकै होई॥
शशाकहै सुनौ रे भाई। शून्यसमान चला जगजाई ३१

श कहिये सुखको शा कहिये शेषको सो हे जीव! तैं तो सुखसागर जे साहब हैं तिनको शेषहै अर्थात् अंश है सो सुखसर जे साहब हैं तिनको तुम कोई नहीं देखौ हौ कैसो है वा सर कि जाकी शीतलता एकई है वा शीतलता पाये फिरि जनन मरण नहीं होइहै सो शशा जे साहब के शेष साधु हैं ते कहै हैं कि जिनको अंश जीव तिनको नहीं जानै है शून्य जो धोखाब्रह्म ताही में जगत् समान जाइहै श शेषको व सुखको कहै हैं "वदन्ति शं बुधाः शेषे शः शान्तश्च निगद्यते। शश्च शयनमित्याहुर्हिंसा शः समुदाहृतः" ॥ ३१ ॥

षषा षर षर कह सब कोई। षरषर कहे काज नहिं होई॥
षषा कहै सुनौ रे भाई। रामनाम लै जाहु पराई ३२

ष कहिये श्रेष्ठ को सो षा दूसरी है सो हे जीव! श्रेष्ठौते श्रेष्ठ जे साहब हैं तिनको षरषर सांच सांच सबै कहैहैं औरे को खोटा मानै हैं परन्तु षरषर कहेते काज जो है मुक्ति सो न होइगी बिना रामनाम के साधन कीन्हे व बिना नीकी प्रकार साहब के जाने काहेते षषा कहे श्रेष्ठोते श्रेष्ठ जे साहब हैं ते कहै हैं कि हे भाई! सुनौ तुम रामनाम को लैकै मायाब्रह्म ते पराइजाउ अर्थात् सब को छोड़िकै रामनाम जपौ ष श्रेष्ठ को कहै हैं "षकारः कीर्तितः श्रेष्ठे षश्च गर्भविमोचने" ॥ ३२ ॥

ससा सरा रचो बरिआई। शरबेधे सबलोग तवाई॥

ससाके घर सुनगुन होई। यतनी बात न जानै कोई ३३

स कहिये लक्ष्मी को सा कहिये परोक्ष को सो हे जीव! तेरो ऐश्वर्य परोक्ष में है अर्थात् साहब के यहां है या देखबे की लक्ष्मी तेरी नहीं है सो तैं सग जो कर्म है ताको बरिआई रचि लियो सो वाही सारूपी शर है कहे कर्मरूपी शर में लोग बेधे हैं ते सब तवाई में परे हैं नरक स्वर्ग में जाय आवै हैं सो ससा जो जीव ताके घर कहे हृदय में काहूके शून्य कहे धोखाब्रह्म समान है काहू के गुण जो माया सो समान है सो यतनी बात कोई नहीं जानै है कि येई साहबको चीन्हन न देइहैं स लक्ष्मी को व परोक्ष को कहैहैं "स परोक्षे समाख्यातः सा च लक्ष्मी प्रकीर्तिता" ॥३३॥

हहा होइ होत नहिं जानै। जबहीं होइ तबै मनमानै॥
है तो सही लहै सबकोई। जबवाहोइतब या नहिं होई३४

ह कहिये बिष्कम्भ को हा कहिये त्याग को सो हे जीव! या बिष्कम्भ शरीर को त्याग होत कोई नहीं जानै है जब शरीर त्याग ह्वै जाइ है तबहीं जानै है कि शरीर त्याग ह्वै गयो जामें जीव थँभा रहै है सो शरीर में हंसरूप सही है ता जीवको परन्तु सब कोई नहीं लगे है कहे नहीं पावै है जब वा हंसशरीर होइ जब या शरीर नहीं होइ है वाही हंसशरीर में थँभारहै है जब बिष्कम्भ को व त्याग को कहै हैं तामें प्रमाण "हः कोपवारणे प्रोक्तो हस्स्यादपि च शूलिनी। हानेऽपि हः प्रकथितो हो विष्कम्भः प्रकीर्तितः" ॥ ३४ ॥

क्षक्षाक्षणपरलयमिटिजाई। क्षेवपरे तब को समुझाई॥
क्षेवपरेकोउअन्तनपाया। कहकबीरअगमनगोहराया३५

क्ष कहिये क्षत्र को क्षा कहिये वक्षस्थल को सो हे जीव! तैं क्षत्रंपति जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको वक्षस्थल में तो ध्यानकरु तो तेरी प्रलय जनन मरण क्षणै में मिटिजाइ जब क्षेव कहे तेरो शरीर क्षय ह्वैजाइगो तब तोको को समुझावैगो क्षेवपरे कहे शरीर

क्षय ह्वैगये कोऊ अन्त साहब को नहीं पायो है सो कबीरजी कहै हैं कि याही ते तोको हम आगेते गोहरावै हैं कि फिरि क्या करैगो क्ष चत्र को व वक्षस्थल को कहै हैं तामें प्रमाण " क्षश्च क्षत्रं चाक्षवश्च स्यात् क्षोव क्षसि कथ्यते " चत्र कहे क्षत्रपती को बोध ह्वै जाइ जैसे बलि कहे बलिराम को बोध ह्वैजाइहै ॥ ३५ ॥

इति चौंतीसी संपूर्णम् ॥

अथ विप्रमतीसी प्रारभ्यते ॥

सुनहु सबनमिलि विप्रमतीसी । हरि बिनु बूड़ी नावभरीसी १ ब्राह्मण ह्वैकै ब्रह्म न जानैं । घर में यज्ञ प्रतिग्रह आनैं २ जे सिरजा तेहि नहिं पहिचानैं । करम भरम लै बैठि बखानैं ३ ग्रहण अमावस सायरपूजा । स्वाती के पात परहु जनि दूजा ४ प्रेतकर्म मुखअन्तर बासा। आहुति सहित होमकी आसा ५ कुल उत्तम कुल माहँ कहावैं । फिरि फिरि मध्यमकर्म करावैं ६ कर्म अशुचि उच्छिष्ट खाहीं । मतिभरिष्टयमलोकहिजाहीं ७ सुतदारा मिलिजूठो खाहीं । हरिभगतनकीछूति कराहीं ८ न्हाय खोरि उत्तम ह्वै आवैं । विष्णुभक्त देखे दुख पावैं ९ स्वारथलागिरहे वे आढ़ा । नाम लेत जस पावक डाढ़ा १० रामकृष्णकी छोड़िनी आसा । पढ़ि गुणि भे किरतिमकेदासा ११ कर्मकरहिं कर्महिंको धावैं । जो पूछै तेहि कर्म दृढ़ावैं १२ निष्कर्मी के निन्दा करहीं । करैं कर्म ताही चित धरहीं १३ अस भगती भगवत की लावैं । हरिणाकुश को पन्थ चलावैं १४ देखहु कुमति नरकपरगासा । बिनुलखिअन्तरकिरतिमदासा १५ जाके पूजे पापनऊड़ै । नामसुमिरिते भवमें बूड़ै १६ पापपुण्यके हाथेहि पासा । मारि जगतको कीन्ह बिनासा १७ ये बहनी दोउ बहनिन छाड़ैं । यह गृह जारैं वह गृह माड़ैं १८ बैठेते घर शाहु कहावैं । भितर भेदमन मुसहि लगावैं १९ ऐसी

विधि सुरबिप्र भनीजै। नामलेत पञ्चासन दीजै २० बूड़िगये नहिं आपु सँभारा। ऊंच नीच कहु काहि जोहारा २१ ऊंच नीच है मध्यम बानी। एकै पवन एक है पानी २२ एकै मटिया एक कुम्हारा। एकसबनका सिरजनहारा२३ एकचाकबहुचित्र बनाया। नाद बिन्दुके बीच समाया २४ ब्यापी एक सकल में ज्योती। नामधरे क्या कहिये मोती २५ राच्छस करणी देवकहावै। बादकरै भवपार न पावै २६ हंसदेह तजि न्यारा होई। ताकी जाति कहै धौं कोई २७ श्वेतसुपेदकिरातापियरा। अबरणबरणकितातासियरा २८ हिन्दूतुरुक कि बूढ़ाबारा। नारिपुरुषमिलिकरौ बिचारा २९ कहियेकाहिकहा नहिं माना। दासकबीरसोईपहिंचाना ३० बहिआहै बहिजातु है कर गहि ऐंचहु ओर। समझाये समझै नहीं दे धक्का दुइ और ॥ ३१ ॥

सुनहुसबनमिलिविप्रमतीसी। हरिबिनबूड़ीनावभरीसी १
ब्राह्मण ह्वै कै ब्रह्म न जानैं। घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं २
जे सिरजा तेहिनहिंपहिचानैं। करमभरमलैबैठिबखानैं ३
ग्रहणअमावससायरपूजा। स्वातीकेपातपरहुजनिदूजा ४

विप्रके वर्णन में हम तीस चौपाई कहै हैं सो सबन मिलि सुनते जाउ कैसे ब्राह्मण होतभये कि जिनको जन्म हरि बिना भरी नाव ऐसी बूड़िगई १ ब्रह्मई के जानेते ब्राह्मण कहावै हैं सो ब्रह्म को तो न जान्यो यज्ञादिकन.के प्रतिग्रह घर में लै आवै हैं आदि ते दानौं आयो २ जौन उत्पत्ति कियो है ताको तो जानतई नहीं हैं कर्मकाण्ड को भरम नानाप्रकार के बैठिकै बखानै हैं ३ सो हे दूजा कहे दुःखग्रहण में अमावस में सायर कहे समुद्रादिक तीर्थन में जैसे स्वाती के जल को पपीहा दौरै है ऐसे तुम्हीं ग्रहण अमावस में समुद्रादिक तीर्थन में दानलेन को ताके रहौ हौ परन्तु आशा नहीं पूजै है ॥ ४ ॥

प्रेतकर्ममुखअन्तरबासा। आहुतिसहितहोमकीआसा ५

कुलउत्तमकुलमाहँकहावैं। फिरिफिरिमध्यमकर्मकरावैं ६

मुख ते प्रेतकर्म करावै हैं कि ऐसो पिण्डदान करौ तौ प्रेतत्व छूटिजाइ व अन्तःकरणमें या आशा बसै है कि जो या होम करै तो हम दक्षिणा पावैं ५ और ब्राह्मण तो बड़े उत्तमकुल के कहावै हैं कि हम बड़े कुलके हैं परन्तु फिरि फिरि कहे बारबार मध्यम कहे नरक जाय वाके कर्म करावै हैं ॥ ६ ॥

कर्मअशुचिउच्छिष्टैखाहीं। मतिभरिष्ट यमलोकहिजाहीं ७
सुतदारामिलिजूठोखाहीं। हरिभगतनकी छूतिकराहीं ८
न्हायखोरिउत्तम ह्वैआवैं। विष्णुभक्त देखे दुखपावैं ९

नानाप्रकार के अपावनकर्म कैकै भैरव दुलहा देवादिकन को उच्छिष्ट खाय हैं सो मति भ्रष्ट ह्वैकै यमलोकहि जाइ हैं ७ तौने प्रेतन को जूठ सुत दारा कहे स्त्री त्याहि समेत सब मिलि खाइहैं व हरिभक्तन की छूति मानै हैं ८ और नहाय खोरिकै आपने जान पवित्र ह्वै आवैं व जिनके दर्शनते पवित्र होय हैं ऐसे विष्णुभक्त तिनको देखिकै दुःख पावै हैं ई बड़े तिलक दिये शङ्ख चक्र दीन्हे कहां रहे उनको मुख देखैंगे तो पाप लगै है या कहै हैं ॥ ९ ॥

स्वारथलागिरहेवेआढ़ा। नामलेत जसपावकडाढ़ा १०
रामकृष्णकीछोड़िनिआसा। पढ़िगुणिभेकिरतिमकेदासा ११

अपने स्त्री पुत्र यही के स्वारथ में वे अर्थ आढ़ति लगाय रहे हैं जिनके अंश हैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नाम लेत में मानो जीभ पावक में जरीजाइ है १० रामकृष्ण जे हैं तिनकी आशा छोड़िकै पढ़ि गुणिकै किरतिम कहे आपनी बनाई मूर्ति अथवा किरतिम माया तिनको दास कहावै हैं ॥ ११ ॥

कर्मकरहिंकर्महि को धावैं। जो पूछै त्यहि कर्म दृढ़ावैं १२
निष्कर्मीकै निन्दा करहीं। कर्मकरै ताही चितधरहीं १३
असभगतीभगवतकीलावैं। हिरणाकुशकोपन्थचलावैं १४

कर्म नाना प्रकार के करैहैं व कर्मफल जो स्वर्गादिकन को भोग ताही को धावै हैं और जो कोई मुक्तिहू की बात पूछैहै ताको कर्मही दृढ़ावै हैं १२ निष्कर्मी जे साधु हैं तिनकी तो निन्दा करै हैं और कोई कर्म करै हैं ताको सत्कार करैहैं १३ सो या रीतिते भगवत् की भक्ति करैहैं या कहै हैं कि ईश्वर तो अजागलथनकी नाईं है वाते कौन काम होय है और कोई हिरणाकुश को पन्थ तामसी मत चलावै हैं कहैहैं कि हमहीं ब्रह्म हैं ऐसो दैत्यन को ज्ञान है तामें प्रमाण "ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी। आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया" ॥ १४॥

देखहुकुमतिनरकपरगासा। बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५

सो या कुमतिन को प्रकाश तो देखौ बिनु अन्तर के लखे कि हम कौन के हैं या बिना जाने किरतिम जो माया ताके दास ह्वै रहे हैं रक्षक को न माने रक्षा कौन करे ॥ १५ ॥

जाके पूजे पाप न ऊड़ै। नाम सुमिरिते भवमें बूड़ै १६

पापपुण्यके हाथेहिपासा। मारिजगतसबकीनबिनासा १७

ये बहनीदोउबहनिनछाड़ैं। यहगृहजारैंवहगृहमाड़ैं १८

व जौने देवता के पूजे न पाप छूटै न मुक्ति होइ तेईं देवतन को पूजै हैं उन्हीं को नाम सुमिरि सुमिरि संसार में बूड़ै हैं १६ और नाना प्रकार के कर्म बताइकै पाप पुण्यरूप फांसी डारिकै जगत् को विनाश करिदेत भये १७ और कोई बिप्र जे हैं ते बहनी कहे संसार में बहनवारी जो विद्या अविद्या माया पाप पुण्यरूप ताको बहनिन कहे ढोवनवारो जो विप्र सो ऊपरते छांड़िकै यह गृह जारिकै कहे छांड़िकै वह गृह कहे वहां के महन्त भये ध्यान लगाय कै बैठे ॥ १८ ॥

बैठेते घर शाहु कहावैं। भितरभेदमनमुसहिलगावैं १६

ऐसीविधिसुरबिप्रभनीजै। नामलेत पञ्चासनदीजै २०

बूड़िगयेनहिंआपुसँभारा। ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा २१

ऊंचनीच है मध्यम बानी। एकै पवन एक है पानी २२
एकैमटियाएककुम्हारा। एक सबनकासिरजनहारा २३
एकचाकबहुचित्रबनाया। नादबिन्दुकेबीचसमाया २४

सो ऊपरते ऐसो ध्यान लगायकै घर में बैठे बड़े साधु कहावैं व अन्तःकरण में मनते पराई द्रव्य मूसे को भेद लगाये हैं १९ सो यहि रीति विप्रन के सुरनकी विधि कहेहैं नाम को लेइहैं कहे मन्त्र जपै हैं व पञ्चासन कहे पञ्च आसन देइहैं अर्थात् पञ्चाङ्गोपासना करै हैं २० सो आपैमाया की धारमें बूड़िगये न सँभारत भये तो ऊंच नीच कहे पांच देवतन में काको जोहास्यो कहे काके भये अर्थात् काहूके न भये २१ सो विप्रन को उत्तम मध्यम नीच बाणी करिकै होइहैं वास्तव तो सबके शरीरन में एकै पानी है एकै पवन है २२ और एकै सबकी माटी है कहे सब पञ्चभौतिक हैं और सबके सिरजनहार कुम्हार मन एकै है २३ एकचाक जो जगत् है तामें बहुत विधिके चित्र बनावत भयो मन व नादबिन्दु के बीच में आपै समातभयो ॥ २४ ॥

व्यापीएकसकलमेंज्योती। नामधरेकाकहिये मोती २५
राक्षसकरणीदेवकहावे। बाद करै भवपार न पावै २६
हंसदेहताजि न्यारा होई। ताकी जाति कहैधौं कोई २७
श्वेतसुपेदकिरातापियरा। अबरणबरण कि तातासियरा २८

सो एकै ज्योति जो आत्मा सो सबमें व्यापि रही है ब्राह्मण नामधस्यो सो ताही ते मोती कही अर्थात् न कही बिना ब्रह्मजाने ब्राह्मण नहीं कहावै है २५ और करणी तो राक्षस की नाईं करै हैं व जगत् में ब्राह्मणदेवता भूसुर कहावै हैं और बाद बिवाद नाना प्रकारके करै हैं परन्तु संसारसमुद्र को पार नहीं पावैहैं २६ सो हंस जो जीव है सो देहको त्यागिकै न्यारो ह्वैजाइ है ताकी जाति कोई कहै तो वह कौन बर्णहै ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र २७ और वह आत्मा श्वेत कहे श्याम है कि सुपेद है कि लाल है कि पियर

है कि अवर्ण है कि वर्ण में है कि गर्म है कि शीतल है ॥ २८ ॥

हिन्दूतुरुककिबूड़ाबारा। नारिपुरुषमिलिकरहुबिचारा २९
कहियेकाहिकहानहिंमाना। दासकबीरस्वंईपहिचाना ३०
साखी ॥ बहिआहै बहिजातुहै, करगाहिऐंचहुओर ॥
समझाये समझै नहीं, दे धक्का दुइ और ३१

पुनि हिन्दू है कि तुरुक है कि बूढ़ा है कि लड़िका है या नारि पुरुष मिलि कै सबजने बिचारकरो २९ सो या बात कासों कहों कोई नहीं मानैहै सबके रक्षक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको दासकबीर कहै हैं कि मैं सोई पहिचान्यों है कि उनको अंश जीव है वे स्वामी हैं ३० या जीव औरे औरे में लगिकै बहत आयो है व बहाजाइ है सो कर गहि कहे एक बेर उपदेश कहिकै ओर ऐंचौ हौं कि साहब में लागु समुझावत आयो हैं व समुझावत हौं जो समुझाये न समुझै तो लाचार ह्वैकै दुइ धक्का और महूं दैदेउँ कि वहां जाय ॥ ३१ ॥

इति विप्रमतीसी संपूर्णम् ॥

अथ बेलिर्लिख्यते ॥



हंसासरवरसरि हो रमैयाराम। जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १ जो जागल सो भागल हो रमैयाराम। सोवत गैल बिगोय हो रमैयाराम २ आजबसेरानियरेहोरमैयाराम। कालिहबसेरादूरि हो रमैयाराम ३ परेहुबिरानेदेशहो रमैयाराम। नैन भरैगे ढूंढ़िहो रमैयाराम ४ त्रासमथनदधिकियो हो रमैयाराम। भवनमथ्यो भरिपूरि हो रमैयाराम ५ हंसापाहनभयल हो रमैयाराम। बेधिनपदुनिरबानहोरमैयाराम ६ तुमहंसामनमानिकहो रमैयाराम। हटलनमानलमोरहो रमैयाराम ७ जसरेकियोतसपायोहो रमैया-

राम। हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम ८ अगमकाटिगमकीन्होंहो रमैयाराम। सहजकियोबैपारहोरमैयाराम.९ रामनामधनबानिज-हुहोरमैयाराम। लादेहुवस्तुअमोल हो रमैयाराम १० नौबहिया दशगोनहोरमैयाराम। पांचदलनचालादे साथहो रमैयाराम ११ पांचदलनवापरेहो रमैयाराम। खाखरिडारिनिखोरिहो रमैया-राम १२ शिधुनिहंसाचलेहो रमैयाराम। सरवरमीतजोहारहो रमैयाराम १३ आगीसरवरलागिहो रमैयाराम। सरवरभोजरि क्षारहो रमैयाराम १४ कहैकबीरसुनोसन्तोहो रमैयाराम। परखि लेहुखरखोट हो रमैयाराम॥ १५॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम। जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १ जोजागलसोभागलहोरमैयाराम। सोवतगैलबिगोयहोरमैयाराम.२

सो हे रामनाम के रमनवारे, हंसा! या शरीररूप सरवर में तेरो ज्ञान जागत में चोर मूसिलियो १ जो जागत है मोहनिशा ते सो भागे है संसार ते सो हे राम में रमनवारे मोहनिशा में सोवत सब बिगोय गये हैं कहे नानायोनि में संसारस्वप्न में भट-कत फिरै हैं॥ २॥

आजबसेरानियरेहोरमैयाराम।कालिहबसेरादूरिहोरमैयाराम ३ परेहुबिरानेदेशहोरमैयाराम। नैन भरैंगे ढूंढ़िहो रमैयाराम ४

सो हे राम में रमनवारे! आजु बसेरा नेरे है कहे मानुष शरीरई में ज्ञान होइ है सो पाये है कालिह कहे जब या शरीर छूटि जायगो तब बसेरा दूरि ह्वै जायगो अर्थात् अनेक योनिन में भटकत फिरौगे तब मेरो ज्ञान होयगो तैं जागतै में लूटिगयो है तैं का जागत रहे है नहीं जागत रहे ३ हे राम में रमनवारे! आपनो देश साकेत ताको छोड़िकै बिराने कहे मनके देश में पर्यो है तैसो अनेक योनिन में तेरी आंखी आंसू ढारिढारि फूटि जायँगी॥ ४॥

त्रासमथन दधिमथन हो रमैयाराम। भवनमथ्यो

भरिपूरिहो रमैयाराम ५ हंसापाहनभयलहो रमैयाराम । बेधिनपद निर्बाणहो रमैयाराम ६ तुम हंसा मनमानिक हो रमैयाराम । टहल न मानेहु मोर हो रमैयाराम ॥ ७ ॥

त्रास मथन जो है रामनाम तौने है दधिमथंन कहे मथानी तौने ते हे रामनाम के रमनवारे ! भवसमुद्र जो तेरे हृदय में भरिपूर है ताको काहे नहीं मथ्यो ५ हे रामनाम के रमनवारे ! तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहूं जड़ ह्वैगये है काहे ते कि निर्वाणपद को न बेधि कै तैं जड़ ह्वैगये है जो निर्वाणपदको बेधते तो मेरे साकेत को जाते ६ हे हंसा ! तुमहीं मन में मानि कै कहौ तो जब तुम रामनाम को जगत्मुख अर्थ करन लग्यो है तब मैं हटक्यों है सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनाम के रमैया हो परन्तु रामनाम जो मोको वर्णन करै ताको अर्थ नहीं जान्यो संसार में पर्‍यो है ॥ ७ ॥

जस रे कियो तस पायो हो रमैयाराम । हमरदोष जनि देहु हो रमैयाराम ८ अगमकाटि गमकीन्हों हो रमैयाराम । सहजकियो बैपार हो रमैयाराम ९ रामनाम धन बनिजहु हो रमैयाराम । लादेहु बस्तु अमोल हो रमैयाराम ॥ १० ॥

हे रामनाम के रमनवारे, हंसा ! जस कियो तस पायो हमारो दोष जनिदेहु ८ अगम जो रामनाम ताको काटि गम कीन्हों अर्थात् साहबमुख अर्थछांड़ि जगत्मुख अर्थ कियो फिरि वही रामनाम को ब्रह्ममुख अर्थ करि सहज व्यापार कहे सहजसमाधि लगावन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं ९ हे रामनाम के रमनवारे ! रामनाम धन को बनिज करिकै रामनाम अमोल् वस्तु लादेहु परन्तु अर्थ न जान्यो जो बनिजहु लादहु पाठ होइ तो यह अर्थ है अगम जो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजक में बनाइ कै तुमको गम कै दियो कहे सुगम कै दियो समुझन

लगे रामनाम को व्यापार तुमको सहज कै दियो अर्थात् राम नाम की सहजसमाधि तुमको केउ बताय दियो सो रामनाम अमोल है ताको बनिज करो व वही धन को लादो यह सांच है और सब झूंठ है ॥ १० ॥

पांचलदनवालादे हो रमैयाराम। नौबहियादशगोन हो रमैयाराम ११ पांचलदनवा आगे हो रमैयाराम। खाखरि डारिनि खोरि हो रमैयाराम १२ शिरधुनि हंसाउड़िचले हो रमैयाराम। सरवरमीत जोहार हो रमैयाराम ॥ १३ ॥

ताही ते पांच लदनवालादे अर्थात् पञ्चभौतिक शरीर धारण कीन्हेंते जौने में दशौ गोन दश इन्द्रिय हैं तामें मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पांचों प्राण ते बहिया हैं अर्थात बहनवारे हैं चलावनवारे हैं ११ खाखरि जो शरीर तौन जब खोरि में डारेनि अर्थात् नाशभयो तब पांच लदनवा कहे वही पञ्चभौतिक शरीर आगे मिलैहै पांच लदनवा गिरिपरे पाठ होइ तो यह अर्थ है कि जब इन्द्रिय गिरिपरी शक्ति न रहिगई तब शरीरो छूटिजाइ है १२ सो हंसा जो जीव है सो शिर धुनि कै सरवर जो शरीर मीत तौने को जोहारिकै उड़ि चलै है ॥ १३ ॥

आगिलगी सरवरमें हो रमैयाराम। सरवरजरि भो क्षार हो रमैयाराम १४ कहैं कबीर सुनो सन्तो हो रमैयाराम। परखलेहु खरखोट हो रमैयाराम ॥ १५ ॥

जब हंसा उड़ि चलै है तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगै है सरवर जरिकै क्षार ह्वै जाइ है सो हे रामनाम के रमनवारे! तुम सो संसार मुख अर्थकैकै तुम संसार में पर्‍यो सो तुम्हारी यह दशा होतभई १४ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो! साहब जो कहै हैं ताको सुनते जाउ तुमतो रामनाम में रमनवारे हो सो रामनाम को जगत्मुख अर्थ छांड़िकै साहबमुख अर्थ करिकै

साहब में लागो साहब की बाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खरा है कौन खोट है साहबमुख अर्थ खरा है काहेते साहिबै अपने मुख कहे हैं जगत्मुख अर्थ खोट है सो खोट छांड़िकै साहब में लागो ॥ १५ ॥

इति प्रथमबेलि समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीय बेलि ॥ २ ॥

भलसुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम। धोखा कियो बिश्वास हो रमैयाराम १ सोतो हैं बनसी कसि हो रमैयाराम। शिरकै लियो बिश्वासहो रमैयाराम २ तौ हैं बिधिभागहो रमैयाराम। सुरुदीन्हो मोहिं थापिहो रमैयाराम ३ गोबरकोटउठायहुहो रमैया-राम। परिहरि जैहोखेतहो रमैयाराम ४ बुधिबलतहांनपहुँचैहो रमैयाराम। खोजकहांतेहोयहो रमैयाराम ५ सुनिमनधीरजभयल हो रमैयाराम। मनबढ़िरहलजायहो रमैयाराम ६ फिरि पाछेजनि हेरहुहो रमैयाराम। कालबूतसबआयहोरमैयाराम ७ कहकबीर सुनौसन्तोहो रमैयाराम। मतिढिगहोफैलावहो रमैयाराम ॥ ८ ॥

भलसुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम।
धोखाकियो बिश्वास हो रमैयाराम ॥ १ ॥

साहब कहै हैं हे रामनामके रमनवारे, जीव! तुम भलीतरह ते स्मृति में जहडाय गयो स्मृतिको तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहेते कि धोखाब्रह्म में विश्वास कीन्हेते ॥ १ ॥

सोतौहैबनसी कसिहो रमैयाराम।
शिरकैलियोबिश्वासहो रमैयाराम ॥ २ ॥

सो तौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंसी की नाईं है जो मछरि बंसी में लागै है ताको प्राण छूटि जाइहै ऐसे तुहूं वामें लगैहै सो तेरो जीवत्व न रहैगो अर्थात् तेरो स्वरूप भूलिजाइगो मुरदाकी नाईं टँगो रहैगो तौने धोखाब्रह्म में शिरकै बिश्वास कैलिये है अथवा

जे गुरुवालोग तोको धोखाब्रह्म में बिश्वास कराइदेइ हैं स्मृतिनका अर्थ फेरिकै ते बनके सीगट हैं उहां हैं वा जो ब्रह्म है सो तैं आहे यही कहे हैं अथवा हुआ है हुआ है या कहे हैं कि तैं लगा सो ब्रह्म हुआ जैसे सीगटनकी बाणी में अर्थ नहीं है ऐसे गुरुवालोगनकी बाणी में अर्थ नहीं है तैं ब्रह्म कबहूं न होइगो तैं रामनाम में रमनवारो है सो ताही में रमै तबहीं तेरो बनैगो ॥ २ ॥

ईतौहैं बिधिभाग हो रमैयाराम। गुरुदीन्ह्यो मोहिं थापि हो रमैयाराम ३ गोबरकोटउठायहुहो रमैयाराम। परिहारिजैहोखेत हो रमैयाराम ॥ ४ ॥

साहब कहे हैं कि रामनाम के रमनवारे यह स्मृति बिधि निषेधका भाग कहावै है तौने भागवश मोको गुरुवालोग बहँकाइ दियो मैं काकरौं मेरो दोष कौन है तौ हमारो महल छोड़ि तहीं गोबरको कोट उठायहु है जो तैं गुरुवालोगनके न जाते और उपासना न पूछते तौ वे काहेको बतौते सो मोको परिहारिकै तैं संसाररूप खेत में जैहे जहां सब उत्पत्ति होइ है ॥ ३ । ४ ॥

बुधिबलतहांनपहुँचैहो रमैयाराम। खोजकहांते होय हो रमैयाराम ५ सुनिमनधीरज भयल हो रमैयाराम। मनबढ़िरहललजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुद्धि बल नहीं पहुँचैहै शून्य है खोज कहां ते होई जो कहो कि आपै में तो बुद्धि बल नहीं पहुंचै है तो जो कोई मेरे रामनाम में रमैहै मोको जानैहै ताको महीं बताइदेउहौं नयनइन्द्रिय देउँहौं ताहीमें मोहीं देखै है ५ गुरुवन की बाणी सुनिकै जो तेरे मन में धैर्य भयो कि हम ब्रह्म ह्वैजाइँगे सो राम में रमनवारे वा ब्रह्म में मन बढ़िकै कहे बिचार करत करत लजायगयो ब्रह्म न भयो मन आपनी गति जब नहीं देखै है तब सकुचिकै वाही में रहिजाइ है मनको नाश नहीं होय है ॥ ६ ॥

फिरिपाछेजनिहेरो हो रमैयाराम। कालबूतसबआय

हो रमैयाराम ७ कहकबीरसुनौसन्तोहो रमैयाराम। मति ढिगहीफैलावहो रमैयाराम ॥ ८ ॥

तुमतो रामनाम में रमनवारे ईंतो सब तुमंते पाछे हैं तिनकी ओर जनिहेरौ मायाब्रह्म काल के पराक्रम आय जो इनके ओर हेरोगे तौ ये काल के बूत आय कहे काल के पराक्रम है अर्थात् मायै ब्रह्मद्वारा कालनाश सबको कैदेहै ७ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! साहब कहै हैं सो सुनते जाउ तुमतो रामनाम में रमनवारेहौ दूरि दूरि कहां खोजौहो मति को ढिगही में फैलाव अर्थात् अपने स्वरूप को बिचारु कि मैं कौन को हौं तो या जानि लेइ तैं कि मैं राम में रमनवारो हौं रामनाम स्मरण करौगे तबहीं मुक्ति होयगी तामें प्रमाण—असचरितदेखिमनभ्रमैमोर। ताते निशिदिनगुणरमौंतोर ॥ यक पढ़हिंपाठ यकभ्रम उदास। यक नागिननिरन्तररहनिवास ॥ यकयोगयुक्तितिनहोहिंखीन। यक रामनामसँगरहललीन ॥ यकहोंहिंदीनयकदेहिंदान। यककलपि कलपि कै होयँ हरान ॥ यकतन्त्रमन्त्रऔषधीवान। यकसकल सिद्धिराखैं अपान ॥ यकतीरथब्रतकरिकयाजीति। यकरामनामसों करन प्रीति ॥ यकधूमघोटितनहोहिं श्याम। तेरी मुक्ति नहीं बिन रामनाम ॥ सतगुरूशब्दतोहिंकहपुकार। अबमूलगहो अनुभवबिचार ॥ मैं जरामरण ते भयउँ थीर। भै रामकृपायह कहकबीर ॥ ८ ॥

इति बेलि संपूर्णम् ॥

अथ चाचरि प्रारम्भः ॥

दोहा ॥ खेलति मायामोहिनी, जेरकियो संसार। कटिकेहरि गजगामिनी, संशय कियो शृंगार १ रचैरङ्गकीचूनरी, सुन्दरिप-हिरैआय। शोभा अद्भुतरूपकी, महिमा बरणि न जाय २ चन्द्र-बदनि मृगलोचनी, बिन्दुकदियोउघालि। यती सती सब मो-हिया, गजगति वाकी चालि ३ नारद को मुख माड़ि कै, लीन्हों

बदन छिनाय । गर्बगहेलीगर्बते, उलटिचलीमुसकाय ४ शिवअरु ब्रह्मादौरिकै, दोनों पकरे जाय । फगुवालीनछोड़ायकै, बहुरिदियो छिटकाय ५ अनहद धुनि बाजा बजै, श्रवणसुनतभोचाव । खेलनहारीखेलिहै, जैसी वाकी दाव ६ आगेढालअज्ञानकी, टारेटरत न पाव । खेलनिहारी खेलिहै, बहुरि न ऐसी दाव ७ सुरनरमुनि भूदेवता, गोरखदत्ताव्यास । सनक सनन्दन हारिया, और कि केतिक आस ८ छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात । करिलीनो बश आपने, फिरि फिर चितवतजात ६ ज्ञानगाड़लै रोपिया, त्रिगुणलियो है हाथ । शिवसँगब्रह्मालीनिया, और लिये सबसाथ १० एक ओर सुरमुनिखड़े, एकअकेली आप । दृष्टिपरे छोड़ैनहीं, करिलीनोयकछाप ११ जेतेथेतेतेलियो, घूंघुटमाहँ समोय । कज्जलवाकेरेखहै, अदगगया नहिं कोय १२ इन्द्रकृष्ण द्वारेखड़े, लोचनदोउललचाय । कहकबीरतेऊबरे, जाहिन मोह समाय ॥ १३ ॥

खेलति मायामोहिनी, जेरकियो संसार । कटिकेहरि गजगामिनी, संशय कियो शृँगार १ रचेरङ्गकी चूनरी, सुन्दरिपहिरै आय । शोभा अद्भुतरूपकी, महिमा बरणि न जाय ॥ २ ॥

जौन माया सब संसार को जेरकियो है सो मोहिनी माया चाचरि खेलै है केहरि जो है काल सबको खाइलेनवारो सो वाकी कटि है वह मध्यभाग है मध्य में बैठिकै अर्धऊर्ध्व को खाय है व मन गज है तेही करिकै चलैहै व संशयरूप शृङ्गार किये अर्थात् जहें बहुत संशय होइहै तहें माया बहुत शोभित होइहै १ नारी लोग रचेकहे जो पीउ को रुचैहै सो चूनरी पहिरै हैं और माया नाना विषय जो जीवनको नीक लगै ताकी चूनरी पहिरै हैं अद्भुत शोभा स्त्रियनहूं की होइहै यहै मायौ की अद्भुत शोभा है ॥ २ ॥

चन्द्रबदनिमृगलोचनी, बिन्दुकदियोउघालि । यती

सतीसबमोहिया, गजगतिवाकीचालि ३ नारद को मुख माड़िकै, लीन्हो बदनछिपाय। गर्ब गहेली गर्बते, उलटि चलीमुसकाय ॥ ४ ॥

और नारी चन्द्रबदनी मृगनयनी बिन्दुक दीन्हे घूंघुट उघारि गज की नाईं चलि सबको मोहै हैं माया कैसी है कि याहू चन्द्रबदनी है आपने पदार्थते सबको आनन्द देय है मृगनयनी कहे यहू चञ्चल है बिन्दुक दीन्हे उघारि कहे आपने रागको फैलाय देइ है गजगति कहे धीरे धीरे यती सती सबको मोहै है ३ वे स्त्री नारद कहे जाके रद कहे दांत नहीं हैं ऐसे जे वृद्ध पुरुष तिनको मुख माड़िकै बदन कहे बोलिबो छिनाय लेती हैं अर्थात् और बोलिबो सो छूटि जाइ है नारी नारी यहे कहै हैं चाचरि वोऊ गावै लगै हैं अथवा माया जो है सो नारद ऐसे मुनि को बांदर की नाईं मुख कै दियो शीलनिधि राजाकी कन्या को काज करै चले और स्त्री गर्बको गहे लोगनके मोहिबे को चाचरि में मुसक्याय चलैहै व माया जो है सोऊ नारद के गर्बको गहिकै मुसक्यायकै चलीहै॥ ४॥

शिव अरु ब्रह्मा दौरिकै, दोनों पकरे जाय। फगुवा लीन छिनायकै, बहुरिदियो छिटकाय ५ अनहद्धुनि बाजाबजै, श्रवण सुनत भो चाव। खेलनिहारी खेलिहै, जैसी वाकी दाव ॥ ६ ॥

और स्त्री जे हैं ते पुरुषनते चाचरि में पकरि फगुवा लैकै आपुस में छिटकाय कहे बांटि लेयहैं व माया जो है सोऊ ब्रह्मा शिव तिनको पकरिकै फगुवा जो नानामत सो लैकै अनेक ब्रह्माण्डन में छिटकाय दीन्हो ५ चाचरि में बाजा बजै है ताको सुनिकै चाव होइहै खेलनिहारी आपनो दावँ ताकिताकि खेलैहै और माया जोहै सोऊ अनहदबाजा योगिनके बजाइकै जौनेके सुनतमें योगिनके चाव होइहै सो खेलनिहारी जो कुण्डलिनी शक्ति सो जैसो वाको दावँ है तैसो खेलैहै जीवको चढ़ावै व उतारै है ॥ ६ ॥

आगेढालअज्ञानकी, टारेटरतनपांव। खेलनिहारीखेलि है, बहुरिनऐसीदांव ७ सुरनरमुनिभूदेवता, गोरखदत्ता ब्यास। सनकसनन्दनहारिया, औरकिकेतिकआस ॥८॥

चाचरिमें स्त्री भोडरकी ढाल आगेकरि पांव पीछेको नहीं टारैहैं सो खेलनिहारी जेहैं ते जब पतिको पायजाय हैं तब कहै हैं कि खेलि लेउ अब ऐसो दावँ न मिलैगो व माया जो है सोऊ अज्ञान की ढाल आगे लीन्हे है जाको पांव ज्ञानभक्ति वैराग्यकरि टारे नहीं टरै सो खेलनिहारी जो माया सो खेलबे करी ऐसो दावँ वाको फिरि न मिलैगो अपने वशकरि पायो है ७ व चाचरि में स्त्रिनते पुरुष हारिजाय हैं सुख मानै हैं व माया जो है ताहूसों सुर जे हैं नर जे हैं मुनि जे हैं भूदेव जे ब्राह्मण हैं गोरख जे हैं दत्तात्रेय जे हैं ब्यास जे हैं सनक सनन्दन जे हैं ते सब हारिगये और की कौन गनती है ॥ ८ ॥

छिलकतथोथेप्रेमसों, धरिपिचकारीगात। करिलीनो बशआपने, फिरिफिरिचितवतजात ६ ज्ञानगाड़लैरोपिया, त्रिगुणलियेहैहाथ। शिवसँगब्रह्मालीनिया, और लियेसबसाथ ॥ १० ॥

चाचरिमें नारी रङ्गकी पिचकारी गात में सींचि आपने बश करि फिरि फिरि चितवत कहे कटाक्ष करै हैं व माया जो है सोऊ थोथे कहे झूठेप्रेमसों संसार राग सबको गात सींचेहै आपने बश करिलियोहै व फिरि फिरि चितवत जातै है कहे सबको ताकेरहै है कि कोऊ बाच्यो तौ नहीं ६ व चाचरि में स्त्रीलोग रङ्गके हौद में डारिदेइहैं व फूलन के माला में हाथ बांधैहैं पुरुषनको व माया जो है सोऊ ज्ञानके गाड़ में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुण की फांसी में बांधिलियो ॥ १० ॥

एकओरसुरमुनिखड़े, एकअकेलीआप। दृष्टिपरे

छोड़ै नहीं, करिलियएकैछाप ११ जेतेथेतेतेलियो, घूंघुट माहँसमाय। कज्जलवारेरेखहैं, अदगनकोईजाय १२ इन्द्रकृष्णद्वारेखरे, लोचनानिजललचाय। कहकबीरते ऊबरे, जाहिन मोहसमाय ॥ १३ ॥

और चाचरि में दुइपारा होयहैं एक ओर आप एक ओर पुरुष होइहै ऐसे सुर, नर, मुनि सब एक ओर हैं एक ओर माया अकेली आप है दृष्टि परे काहूको नहीं छोड़ै है ११ व स्त्री जे हैं ते आपने घूंघुट में सबको मन समाय लेइ हैं सबके काजर लगाइ देइहैं अदग कोई नहीं जाय है माया जो है सोऊ आपने में सबको समाय लियो है सबके एक दाग लगाइ दियो है अदग कोई नहीं बच्यो १२ चाचरि में जिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सब खड़े रहै-हैं लोचन देखिबेको ललचाय हैं ऐसे माया जोहै ताहूके द्वारे में इन्द्र कृष्ण जे हैं उपेन्द्र ते खड़े हैं माया के देखिबे को लोचन ललचाय हैं तो श्रीकबीरजी कहे हैं कि तेई पुरुष उबरे हैं जे मोह में नहीं समाने हैं ॥ १३ ॥

इति पहिली चाचरि समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरी चाचरि ॥ २ ॥

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो। जामें शोक संताप समुझ मनबौराहो १ कालबूतको हस्तिनी मनबौराहो। चित्ररचो जगदीश समुझ मनबौरा हो २ बिना नेइको देवघरा मनबौराहो। बिन कहगिलकै ईंट समुझ मनबौरा हो ३ तन धन क्या सो गर्व समुझ मनबौराहो। भसम क्रीमकीसाजु समुझ मनबौराहो ४ काम अन्ध गजवशपरे मनबौरा हो। अंकुश सहिया शीश समुझ मनबौराहो ५ ऊँच नीच जानेहु नहीं मनबौरा हो। घर घरनाचेहु द्वार समुझ मनबौरा हो ६ मरकट मूठी स्वाद की मनबौरा हो। लीन्हों भुजा पसारि समुझ मनबौरा हो ७ छूटन की

संशय परा मनबौरा हो । घर घर खायो डांग समुझ मनबौरा हो ८ ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मनबौरा हो । ऐसाभर्म बिचारि समुझ मनबौरा हो ९ पढ़ेगुनेका कीजिये मनबौरा हो । अन्तबिलैया खाय समुझ मनबौरा हो १० सूने घरका पाहुना मनबौरा हो । ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मनबौरा हो ११ न्हाने का तीरथघना मनबौरा हो । पूजका बहुदेव समुझ मनबौरा हो १२ बिनपानी नलबूड़िया मनबौरा हो । तुमटेकहु राम जहाज समुझ मनबौरा हो १३ कह कबीर जग भर्मिया मनबौरा हो । तुम छोड़े हरिकासेव समुझ मनबौरा हो ॥ १४ ॥

जारहु जगको नेहरा मनबौरा हो । जामें शोक संताप समुझ मनबौराहो १ कालबूतकी हस्तिनी मनबौराहो । चित्ररचो जगदीश समुझ मनबौराहो २ बिनानेइको देव घरामनबौराहो । बिनकहगिलकेईंटसमुझमनबौराहो॥३॥

हे मन करिकै बौरा, जीव ! जौने में शोक संताप अनेक पावै है ते सब ऐसो जगत् को नेहरा समुझिकै जारिदे १ व या जगत् काल बूत जो धोखा ताकी हस्तिनी है अर्थात् झूठो है जौन रूप ते देखै जगदीश जो साहब ताको रचो यह चित्र है सो विचारि कै छांड़ो व या देह कैसीहै जैसे विना नेहको देवाला व धन कैसो है जैसे विना गिलावाकी ईंट अर्थात् देवालाकी नाईं यातन गिरिही जायगो ईंट की नाईं जैसे ईंट खरिकिजाइ है तैसे तन खरिकिही जायगो ॥ २ । ३ ॥

तन धन सों क्या गर्ब, समुझ मनबौराहो । भसम क्रीम की साजु, समुझ मन बौराहो ४ कामअन्ध गज बश, परे मनबौराहो । अंकुशसहियाशीश, समुझमन बौराहो ५ ऊंचनीच जानेहुनहीं, मनबौराहो । घरघर नाचेहुद्वार, समुझ मनबौरा हो ॥ ६ ॥

सो ऐसे नाशवान् तन धनको क्या गर्ब करैहै भस्म व कीरा की साजु है सो तैं जैसे कामते आंधर ह्वैकै हाथी हथिनी वास्ते बँधिकै अंकुश शीश में सहै हैं ऐसे तैं विषयकी बश परिकै नाना प्रकार के दुःख सहै है ऊंच नीच न पहिंचाने द्वार द्वार बागत फिरै है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

मरकट मूठीस्वादकी मनबौराहो । लीन्होंभुजापसारि समुझ मनबौराहो ७ छूटनकी संशय परी मनबौराहो । घरघरखायोडांग समुझमनबौराहो ॥ ८ ॥

जैसे मर्कट स्वाद के लिये भुजापसारि चना लेइ है मूठी नहीं छांड़ै है ऐसे तैं मुक्तिके लिये नानामतन में परिकै दृढ़ कैलियो है साहब को नहीं जानैहै सो तोको संसारते छूटिबे की संशय आइ परी है यमके घर लाठी खाय है पै मत नहीं छांड़ै है सो हे बौरा, जीव! मनकरिकै समुझुतौ ॥ ७ । ८ ॥

ज्योंसुवनानलिनीगह्यो मनबौराहो । ऐसाभर्मविचारि समुझमनबौराहो ९ पढ़ेगुनेकाकीजिये मनबौरा हो । अन्तबिलैयाखाय समुझमनबौरा हो ॥ १० ॥

जैसे नलिनी को सुवा भ्रमते गहैहै कोऊ धरे नहीं है ऐसे तुहूं आपने भ्रमते बँधो है सो साहब को जानै बिचार करै तो छूटिही जाय है जो सुवा पढ़े गुने बहुत भयो तो काभयो बिलैया तो अन्त में खाय है सो ऐसे तैं बहुत पढ़िगुनि नानामत कीन्है परन्तु जौने में मीचते बचै सो तो करबही न कियो ॥ ९ । १० ॥

सूनेघरकापाहुनामनबौराहो । ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मनबौरा हो ११ न्हानेकातीरथघना मनबौरा हो । पूजैका बहुदेव समुझ मनबौरा हो १२ बिनपानी नलबूड़ियामनबौराहो । टेकहु राम जहाज समुझ मन

बौराहो १३ कहकबीरजगभर्मिया मनबौराहो। छोड़ेहरि को सेव समुझमनबौराहो॥ १४॥

सो तैं शून्य धोखाब्रह्म में लगिकै सूना घर को पाहुना भयो जैसे आयो तैसे चल्यो मुक्ति न भई सो जो मुक्ति न भई तौ का बहुत तीर्थ नहाये भयो का बहुत देवपूजे भयो तैंतो बिना पानी को जो संसार समुद्र तौनेनमें बूड़िगयो सो तैं श्रीरामनामरूपी जहाज समुझिकै धरु श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे मन करिकै बौरा, जीव! जगत् में भर्मिया कहे भ्रमत फिरै है हरि जे साहब हैं तिनकी सेवा छोड़िकै सो हे मनबौरा! अबहूं समुझ॥ ११। १२। १३। १४॥

इति तीसरी चाचरि समाप्तम्॥ ३॥

इति चाचरि समाप्तम्॥

अथ हिंडोला प्रारभ्यते॥

भर्महिंडोलना झूलै सबजग आय॥ जहँपापपुण्यकेखम्भदोउ मेरुमायानाथ। तहँकर्मपटुली बैठिकै कोको न झूलै आय १ यह लोभ मरुवा विषय भमरा कामकीलाठानि। दोउ शुभौ अशुभ बनाय डांड़ी गह्यो दूनौ पानि २ झूलेसो गणगन्धर्व मुनिनर झूले सुरगण इन्द्र। झूलतसुनारदशारदाहोझुलतब्यासफणिन्द्र ३ झूलतबिरञ्चिमहेशमुनिहो झूलतसूरजइन्दु। औ आप निर्गुणसगुण ह्वैकै झूलियागोबिन्दु ४ छचारिचौदहसातयकइस, तीनलोकबनाय। चौखानिबानीखोजिदेखौ, थिर नकोइरहाय ५ शशिसूर निशिदिनसन्धिऔ तहँतत्वपांचोंनाहिं। कालहुअकालहुप्रलयनाहिं तहँसन्तबिरलेजाहिं ६ खण्डहुब्रह्मण्डहुखोजिषटदरशनयेछूटे नाहिं। यहसाधुसंगबिचारिदेखौजोउनिसतारिजाहिं ७ तहँकेबिछुरि बहुकलपबीतेपरेभूमिभुलाय। अबसाधुसंगतिशोचिदेखौ बहुरि उलटिसमाय ८ तेहिझूलबेकीभयनाहिं जो सन्तहोहिंसुजान। कह कबीरसतसुकृतामिलै तौ फिरि न झूलै आन॥ ६॥

भर्महिंडोलनाझूलै सबजगआय॥ जहँ पापपुण्य के

खम्भ, दोऊमेरुमायानाय । तहँकर्मपटुलीबैठिकै, कोको न भूलैआय १ यहलोभमरुवा बिषयभमरा, कामकीला ठानि । दोउशुभौअशुभबनाय, डांड़ीगहेदूनौपानि ॥ २॥

परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के विना जाने भरमको हिंडोला सब संसार भूलैहै कैसो है हिंडोला जहां पाप पुण्यरूप दोऊ खम्भ हैं माया जो है सो मेरु कहे गोला है जौने में कर्मरूपी पटुली है ताही में बैठिकै को नहीं भूल्यो अर्थात् सब भूल्यो है १ लोभ जो है सोई मरुवालगो है विषम जो है सोई भमरा है काम जो है सोई कीलाहै व शुभौ अशुभ जे उपासना हैं तेई डांड़ी हैं ताको पाणि ते गहिकै सब भूलैहैं को को भूलैहैं ताको आगे कहैहैं॥२॥

भूलेसोगणगन्धर्बमुनिनर, भूलेसुरगणइन्द्र । भूलत सुनारद्शारदाहो, भूलतव्यासफणीन्द्र ३ भूलतबिरञ्चि महेशमुनिहो, भूलतसूरजइन्दु । औआपनिर्गुणसगुण ह्वैकै भूलियागोबिन्दु ॥ ४ ॥

गन्धर्ब, मुनि, नर, सुरगण, इन्द्र, नारद, शारदा, व्यास फणीन्द्र जे हैं शेष महेश जे हैं बिरञ्चि, सूर्य, चन्द्रमा ये सब भूलै हैं और कहां तक कहैं सगुण निर्गुणरूपते अर्थात् चित् अचित् के अन्तर्यामी ह्वैकै गोबिन्द जे हैं तेऊ भूलैहैं ॥ ३ । ४ ॥

छचारिचौदहसातयकइस, तीनलोकबनाय । चौखानिबानीखोजिदेखौ, थिरनकोइरहाय ॥ ५ ॥

छः जे शास्त्र हैं चारि जे वेद हैं चौदह जे विद्या हैं सातजेद्वीप हैं व इक्कीसौ जे हैं सातशून्य सातसुरति सातकमल यतनेमें परे जे तीनिउलोक की रचना भई सो इनमें चारिउखानिके परे जे जीव तिनकी हम चारिउ बानी ते वेदशास्त्रादिकन ते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिर नहीं रहेहैं सबै भूलैहैं सो तैं यहां को नहीं है तैं तो बाहर को है जहां इहां की साजु उहां एकौ नहीं है ॥ ५ ॥

शशिसूरनिशिदिनसंधिऔ तहँ, तत्त्वपांचौंनाहिं। कालौअकालौप्रलयनहिं, तहँसन्तबिरलेजाहिं ६ खएडौ ब्रह्मएडौखोजिषट, दरशनयेछूटेनाहिं। यह साधुसंगबि-चारिदेखौ, जीउनिसतरिजाहिं ॥ ७ ॥

न उहां सूर्य हैं न चन्द्र हैं न दिन है न राति है न संध्या है न पांचौ तत्त्व हैं न काल है न अकाल है न उहां प्रलय है ऐसी ज-गह में कोई बिरले सन्त जाइ हैं ६ पुनि कैसो है जाको खएड जो शरीर ब्रह्माएड जो जगत् तामें वाको छइउ दर्शनवारे खोजि खोजि हारे परन्तु पाये नहीं न संसार ते छूटे सो ऐसे लोकको साधु जेहैं तिनको संगकरिकै बिचारिकै देखै जाते जीव यहि संसार ते निस्तरिजाइ ॥ ७ ॥

तहँकेबिछुरिबहुकल्पबीतेपरेभूमिभुलाय। अबसाधु संगतिशोचिदेखौ बहुरिउलटिसमाय ८ तेहिभूलबेकी भय नहीं जो सन्तहोहिं सुजान। कह कबीर सतसुकृत मिलै सौफिरिनभूलैआन ॥ ९ ॥

सो ऐसे लोकते बिछुरे तोकों केतन्यों कल्प ब्यतीत भये तैं संसारमें भुलायकै परे आय सो तैं अब साधुसंगति करि बिचारिकै रामनाम को जानै जाते बहुरिकै वहैं समाय अर्थात् जहांते आये है तहैं जाय या संसार हिंडोला छांडु जो कोई साहब के जाननवारे सुजान साधु हैं तिनको या हिंडोला में झूलबे की भय नहीं है तिनसों श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो याको सतसुकृत रामनाम मिलै तो फिर आनीबार न भूलै को जपिबे जोहै सोई सत्यसुकृत है वही वाङ्मनोगोचरातीत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके और जे सुकृत हैं ते क्षयमान हैं व रामनाम पास पहुँचवै है तहांते नहीं लौटे है तामें प्रमाण “सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः। एक एव परो मन्त्रो राम इत्यक्षरद्वयम्” (इति सारस्वततन्त्रे)

दूसर प्रमाण "इममेव परं मन्त्रं ब्रह्मरुद्रादि देवताः। ऋषयश्च महात्मानो मुक्ता जप्त्वा भवाम्बुधेः" (इति पुलहसंहितास्मृतिः)॥८।६॥

इति प्रथम हिंडोला समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा हिंडोला ॥ २ ॥

बहुबिधिके चित्र बनाइकै, हरि रच्योक्रीड़ारास। ज्यहि नाहिं इच्छाभूलबे, असबुद्धि केहिके पास १ भूलत भुलत बहुकल्पबीते, मन न छोड़ै आस। यह रच्यो रहस हिंडोलना, निशि चारियुग चौमास २ कबहूंक ऊंचे नीच कबहूं, स्वर्ग भूलौं जाय। अतिभ्रमत भ्रमहिं हिंडोलना, सो नेकु नाहिं ठहराय ३ डरपतरहौं यहि भूलिबेको, राखु यादवराय। कह कबिर सुनु गोपाल बिनती, शरण हौं तुव पाय ॥ ४ ॥

बहुबिधिके चित्रबनाइकै, हरिरच्योक्रीड़ारास। ज्यहि नाहिं इच्छाभूलबे, असबुद्धि केहिके पास १ भूलत भुलतबहुकल्पबीते, मननछोड़ैआस। यह रच्यो रहस हिंडोलना, निशिचारियुगचौमास २ कबहूंकऊँचेनीच कबहूं, स्वर्गभूलौंजाय। अतिभ्रमतभ्रमहिं हिंडोलना, सोनेकुनहिं ठहराय ३ डरपतरहौं यहिभूलिबेको, राखु यादवराय। कह कबिर सुनु गोपाल बिनती, शरणहौं तुवपाय ॥ ४ ॥

बहुतबिधि चित्र बनाइकै या जगत हरि जे हैं गोलोकबासी कृष्णचन्द्र आपनी क्रीड़ा बनाइ राख्यो है अर्थात् अन्तर्यामीरूप ते आपही बिहार करैहैं सो या जगत्रूप हिंडोला में भूलिबे की बुद्धि काहूके नहीं आई अर्थात् सबके है न भूलिबेकी बुद्धि कोई बिरले सन्तनके है सो ऐसो हिंडोलना चारियुग जे हैं चौमास तामें रच्यो है जीवन को भूलत भूलत कोटिन कल्प व्यतीतभये

तऊ झूलिबेकी आशा मन नहीं छोड़े है हिंडोला के चढ़ैया कहूं नीचे आवै हैं कहूं ऊँचे जाय हैं ऐसे अतिभ्रमत जो जगत्रूप हिंडोला तामें परे जे जीव ते कहूं नरक को जाय हैं कहूं स्वर्ग को जाय हैं सो हे जीवो ! या जगत्रूप हिंडोला झूलिबे को डरतरहौ राखु यादवराय या कहौ कि हे यादवराय, कृष्णचन्द्र ! हमको बचायो सो हे कायाके बीरौ जीवो ! यह कहौ कि हे गोपाल गो जे हैं इन्द्रिय तिनके रक्षा करनवारे ! हमारी बिनती सुनो हम तुम्हारे चरण शरण हैं ॥ १ । ४ ॥

इति दूसरा हिंडोला समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा हिंडोला ॥ ३ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भदोऊ, मन रच्योहै हिंडोर । तहँ झुलहिं जीव जहान, जहँलगि कतहुँ नाहिं थित ठौर १ चतुराझूलैं चतुराइया, झूलैं औ राजासेव । अरु चन्द्र सूरज दोऊ झूलहिं, नाहिं पायो भेव २ चौरासिलक्षहु जीव झूलैं, धरहिं रविसुत धाय । कोटिन कलप युग बीतिया, मानै न अजहूं हाय ३ धरणी अकाशहु दोऊ झूलैं, झुलैं पवनहुं नीर । धरि देह हरि आपहू झूलहिं, लखहिं हंसकबीर ॥ ४ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भदोऊ, मन रच्यो है हिंडोर । तहँ झूलहिं जीव जहान, जहँलगि कतहुँ नाहिं थित ठौर १ चतुराझूलैं चतुराइया, झूलैं औ राजा सेव । अरु चन्द्र सूरज दोऊ झूलहिं, नाहिं पायो भेव २ चौरासि लक्षहु जीवझूलैं, धरहिं रविसुत धाय । कोटिन कलपयुग बीतिया, मानै न अजहूँ हाय ३ धरणी अकाशहुदोऊझूलैं, झुलैं पवनहुँ नीर । धरिदेह हरि आपहू झूलहिं, लखहिं हंसकबीर ॥ ४ ॥

जौन जगत् में लोभ मोह के खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिंडोल ताहीमें सब ज़हानके जीव झूलै हैं थिर नहीं कौनो ठौर में रहै हैं चतुर चतुराईते झूलै हैं राजा झूलै हैं सेवक झूलै हैं चन्द्र सूर्य तेऊ झूलैहैं हिंडोला को भेद नहीं पावैहैं चौरासीलक्ष योनि के जीव झूलैहैं तिनको सबको रविसुत जे यमराज ते धेरै हैं सो कोटिन कल्प बीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहूं नहीं मानै हैं और धरणी, आकाश, पवन, पानी ये सब वही हिंडोला में झूलै हैं और देह धरिकै कहे अवतार लैकै जौनी रीति सब झूलैहैं तौनी रीति हरि आपहू झूलैहैं जीवन को यह दिखाइबे को कि जैसे तुमहूं झूलौ हौ तैसे हमहूं झूलै हैं सो देह धरेको फल यह है इनको हेतु कोई जानि नहीं सकैहै कि जीवनपर दया करिकै उ-द्धार करिबे को हेतु दिखावै हैं कि देह को फल यह संसारई है ताते देह को अभिमान छोड़ि हमारे अवतार के नाम लीलादि-कनमें लागि मनको त्याग करिकै चारो शरीरन को त्याग करि देउ जब तुम आपने स्वरूप में स्थित रहौगे तब हंसस्वरूप दै आपने धामको लैआवैंगो यह बात कोई नहीं लखैहै कहे जानै है जे हंसस्वरूप पाये काया के बीर जीव हैं तेई जानैहैं याते सा-हबकी दयालुता ब्यञ्जितभई ॥ १ । ४ ॥

इति हिंडोला समाप्तम् ॥

अथ बिरहुली लिख्यते ॥

आदि अन्त नहिं होत बिरहुली। नहिंजड़पल्लवपेड़ बिरहुली १
निशिबासर नहिं होत बिरहुली। पानीपवन न होत बिरहुली २
ब्रह्माआदिसनकादिबिरहुली। कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३ मास
अषाढ़हिशीत बिरहुली। बोइन सातौ बीज बिरहुली ४ नितगोड़ै
नितासिंचै बिरहुली। नित नवपल्लवपेड़ बिरहुली ५ छिछिलाबिर-
हुलीछिछिल बिरहुली। छिछिलरहीतिहुँलोक बिरहुली ६ फूलएक
भलफुललबिरहुली। फूलिरहलसंसारबिरहुली ७ ते फुलबन्दैभक्त

बिरहुली । बांधिकैराउरजाहि बिरहुली ८ तेफुललेहींसन्तबिरहुली । डसिगो बेतल सांप बिरहुली ९ बिष हर मन्त्रनमानबिरहुली । गाडुरि बोले आरबिरहुली १० बिषकी क्यारी बोयो बिरहुली । लोरतका पछिताय बिरहुली ११ जन्म जन्म अवतरेबिरहुली । फलयककनयलडार बिरहुली १२ कह कबीरसचुपायबिरहुली । जो फल चाखहु मोर बिरहुली ॥ १३ ॥

आदिअन्तनहिंहोतबिरहुली।नहिंजड़पल्लवपेड़ बिरहुली १
निशिबासरनहिंहोतबिरहुली।पानीपवननहोत बिरहुली २
ब्रह्म आदिसनकादिबिरहुली।कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३

बी कहे दुइ विद्या अविद्यारूप ते बिरहुली कहे रहनवाली जो माया ताको न आदि है न अन्त है अर्थात् विचार कीन्हे भ्रममात्रै है जीव छूटिमात्र जाइ है सो बिरहुली जो माया ताके न जड़ है न पेड़ है न पल्लव है अर्थात् विचार कीन्हे मिथ्या है १ जब निशि बासर नहीं होत है तबहूं बिरहुली माया रही है जब पानी पवन नहीं रह्यो तबहूं बिरहुली माया रही है और ब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुली है और जौनेयोग अपार कथिगये हैं सोऊ बिरहुली है ॥ २ । ३ ।

मासअषाढ़हिशीतबिरहुली।बोइनिसातौबीजबिरहुली४
नितगोड़ैनितसिंचैबिरहुली । नितनवपल्लव पेड़बिरहुली ५

जब प्रथम उत्पत्तिभई है सोई आषाढ़मास है काहेते चौमास को आदि आषाढ़ है तैसे युगन को आदि सतयुग है सो कैसा है शीत कहे शुद्ध सतोगुण है तौने में जीव सातौ सुरति तेई हैं बीज ते के ओवतभये ते सब बिरहुलिन आइ सो मङ्गल में लिखिआये हैं कि " सात सुरति सब मल हैं प्रलयहु इनहीं माहँ " सो जीव नित गोड़ैहै गुरुवनते वोई कर्म पूछैहै खोदि खोदि नित सींचै है कहे वोई कर्म करैहै जाते बिरहुली कहे माया बढ़ते जाइहै॥४।५॥

छिछिल बिरहुली छिछिल बिरहुली । छिछिलरहल तिहुँलोक बिरहुली ६ फूल एक भल फुलल बिरहुली । फूलि रहल संसार बिरहुली ॥ ७ ॥

कहूं विद्यारूप ते छिछिली है बिरहुली माया कहूं अविद्यारूप ते छिछिली है बिरहुली माया यही रीतिते तीनों लोक में बिरहुली छिछिलरही है सो यही माया बिरहुली में कहूं कर्मत्याग रूप एक फूल धोखाब्रह्म फूलिरह्यो है ताही में सब संसार लागि के फूलिरहे कहे आनन्द मानिलिये हैं ॥ ६ । ७ ॥

तेफुलबन्दैभक्तिबिरहुली । बांधिकैराउरजायबिरहुली ८ तेफुललेहींसन्तबिरहुली । डसिगोबेतलसांपबिरहुली ९

ते फुल कहे तौन जो धोखाब्रह्म सो भक्तन को बन्दैहै अर्थात् खुलो नहीं है वे धोखा में नहीं परे हैं काहेते वाको बांधि कै कहे खण्डन करिकै राउर जो साहबको महल है तहांको जाहि हैं और जे सन्त धोखाब्रह्मरूप फूल लेहिंहैं अर्थात् ब्रह्मबिचार में जे शान्त भे साहब को भूलिगे ते बेतल कहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखाब्रह्म तौनेते डसिगे धुनि या है जाको सांप डसै है ताको स्वरूप भूलिजाइ है सांपै बोलै है ऐसे जे धोखाब्रह्मवारे हैं तिनहूं को आपनास्वरूप भूलिगये कहे हैं हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ८ । ९ ॥

बिषहरमन्त्रनमानबिरहुली।गाडुरिबोलैआर बिरहुली १० बिषकीक्यारीबोयोबिरहुली।अबलोरतपछितायबिरहुली ११

जाको ब्रह्मरूप सर्प डस्यो सो ब्रह्मरूप सर्प को बिषहरनवारो जो रामनाम ताको नहीं मानैहै गाडुरि जे हैं ते आरबोलै हैं झारैहैं इहां सतगुरु जे हैं ते रामनाम उपदेश करै हैं परन्तु नहीं मानै हैं सों विषय की कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुली कहे मायै आय सो अबलोरतकहे काटतमें का पछिताय है अबका विषय छांड़ैहै नहीं छांड़ै है कहूं ब्रह्मानन्द

की कहूं विषयानन्द की चाह विद्या में ब्रह्मानन्द की चाह अविद्या में विषयानन्द की चाह तोको नहीं छांड़े है ॥ १० । ११ ॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली।फलयककनयलडारबिरहुली १२
कहकबीरसचुपायबिरहुली। जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३

सो हे जीव! बिरहुली जो माया ताही में तुम जन्म जन्म अवतर्‌यो जौने बिरहुली को फल धोखाब्रह्म और वह कर्मफल कैसो है कि कनयल कैसो फल है अर्थात् निरस है रस नहीं है और बिषधर है सो कौनीतरह ते सचुपावोगे सो श्रीकबीरजी कहे हैं कि तब सचु को पावै जब फल मोर चाखै कहे जौने राम नाम में मैं जपौ हौं ताही फलको चाखै तो सुचित्तई पावै या कनयल का फल न चाखै ॥ १२ । १३ ॥

इति बिरहुली समाप्तम् ॥

अथ साखी लिख्यते ॥

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोइ ॥
छठी तिहारी होजगा, तू कहँ चला बिगोइ १

गुरुमुख ॥ जीवसों साहब कहै हैं जहिया कहे प्रथम जब तुम जन्मते मुक्त रह्यो है कहे जन्म मरण ते छूटरह्यो है तहिया कहे तब ये मनादिक नहीं रहे जो जहियां जनमुक्ताहता या पाठहोय तो साहब कहै हैं कि हे जन, हमारे दास! जब तुम मुक्तरह्यो है तब ये मनादिक कोई नहीं रहे अणु विज्वर गुणातीत चिन्मात्र मेरो अंश सनातन को या स्वरूप ते रह्यो है छठई देह हमारे पासहै तू कहां बिगरो जाइ है मनादिकन में लागिकै तैं कैवल्यशरीर में टिकिकै हमारे प्रकाश में स्थितरहै हमको नहीं जाने याहीं ते माया तोको धरिकै संसार में डारिदियो सो तुम कैवल्य तन तें महाकारण में महाकारण ते कारण में कारण ते सूक्ष्म में सूक्ष्म

ते स्थूलशरीर में गयो सो जो अजहूं मनादिकन को त्यागिकै मोको जानै तौ मैं ताको हंसशरीर देउँ तामें टिकि मेरे पास आवै प्रथम साहब बरज्यो है ताको प्रमाण आगे बेलि में लिखि आये हैं जो कोई कहै कि हंसस्वरूपई ते माया तो धरिले आई है व भूलि भई है सो बिना बिचारे कहै है पारिख करिकै देखो तो जो हंसस्वरूपई ते माया धरिले आवती तौ पुनि जब हंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि ले आवेगी काहेते कि एक बार तो धरिही लेआई ताते हंसशरीर ते माया नहीं धारिल्यावै है जीव कैवल्यशरीर में सदा स्थित रहै है तहां मनकी उत्पत्ति होइ है तब माया धरि ल्यावै है जीव संसारी ह्वै जाइहै पुनि जब महाप्रलय होइहै तब फेरि वही ब्रह्मप्रकाश में जाइ कै एकरूप ते सब रहै है तामें प्रमाण "परे व्यये सर्व एकीभवति" और सब यहै उत्पत्ति होइ है तामें प्रमाण "सदैव सौम्येदमग्र आसीत्--एक-मेवाद्वितीयम्। तदैक्षत एकोहं बहु स्यामिति श्रुतेः" और जब जीव संसार ते मुक्त ह्वैजाय है तब साहब हंसस्वरूप देइ हैं तामें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइहै ताको प्रमाण आगे लिखिआये हैं साहब के पास जाय फेरि नहीं आवै "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" (इति गीतायाम्) और जब जीव कैवल्यशरीर में रहै है सो सच्चिदानन्दरूप कास में भरोरहै है तहां जब मनको अंकुर वह चित होइ है तब तुरीय अवस्था को स्मरण होइ है सो याको महाकारण शरीर है और जब वह सुख के स्मरण ते बासना उपजी तब सुषुप्ति अवस्था में मगन होइहै जागे है तब कहै है कि आज खूब सोयो याको या कारण शरीर है और जब वह बासना संकल्प बिकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीर है स्वप्न अवस्था को सुख भयो और जब संकल्प विकल्प ते नानाकर्मन के फल ते पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाशादिक ते स्थूलशरीर पावै है तहां जाग्रत् अवस्था सों सुख होइ है तामें प्रमाण पञ्चदेह की

निर्णय को "एक जीव जो स्वतःपद बुद्धिभ्रान्ति सो काल। काल होइ वह काल रचि तामें भये बिहाल॥ बीहाले को मतो जो देउ सकल बतलाय। जाते पारख प्रौढ़ लहि जीव नष्ट नहिं जाय॥ करि अनुमान जो शून्य भो सूझै कतहूं नाहिं। आपु आप बिसरो जबै तन बिज्ञान कहि ताहिं॥ ज्ञान भयो जाग्यो जबै करि आपन अनुमान। प्रतिबिम्बित झाईं लखै साक्षीरूप बखान॥ साक्षी होय प्रकाश भो महाकारण त्यहिनाम। मसुर प्रमाण सो बिम्बभो नीलबरण घनश्याम॥ बढ़्यो बिम्ब अधपर्व भो शून्याकारस्वरूप। त्यहिका कारण कहत हौं महँ अँधियारी कूप॥ कारण सों आकार भो श्वेत अँगुष्ठप्रमान। वेदशास्त्र सब कहत हैं सूक्ष्मरूप बखान॥ सूक्ष्मरूप ते कर्म भो कर्महिं ते अस्थूल। परा जीव या रहट में सहै घनेरी शूल॥ सन्तौ षटप्रकार की देही। स्थूलसूक्ष्म कारणमहँ कारण केवल हंसकिलेही॥ साढ़े तीन हाथ परमाना देह स्थूल बखानी। रातावर्ण बैखरी बाचा जाग्रत अवस्था जानी॥ रजोगुणी ॐकार मात्रुका त्रिकुटी है अस्थाना। मुक्तिश्लोक प्रथमपद गात्री ब्रह्मा वेद बखाना॥ पृथ्वी तत्त्व खेचरीमुद्रा मगपपीलघटकासा। क्षरनिर्णयबड़-वाग्निदशेन्द्री देवचतुर्दशबासा॥ और अहैऋग्वेदवतायू अर्धशुन्नि संचारा। सत्यलोक बिषका अभिमानी विषयनन्द हंकारा॥ आदि सन्त औ मध्य शब्द या लखै कोई बुधिवारा। कहै कबीर सुनो हो सन्तौ इनिस्थूलशरीरा १ सन्तो सूक्ष्मदेह प्रमाना। सूक्ष्म देहअँगुष्ठ बराबर स्वप्न अवस्थाजाना॥ श्वेतवर्ण ॐकार-मात्रु का सतोगुण विष्णुदेवा। ऊर्ध्व औ अधतो यजुर्वेद है कण्ठ-स्थान अहैवा॥ मुक्तिसमीप लोक वैकुण्ठं पालनकिरियाराखी। मार्गबिहँगभूचरी मुद्रा अक्षरनिर्णयभाखी॥ आबतत्त्वकोहंहंकारा मन्दाअग्नीकहिये। पञ्चप्राण द्वितीयापद गात्री मध्यम बाणी लहिये॥ शब्द स्पर्शरूपरसगन्धंमनबुधिचितहंकारा। कहै कबीर सुनोभइसन्तौ यह तन सूक्ष्मसारा २ सन्तौ कारणदेह सरेखा।

आँधापर्वप्रमाण तमोगुण कारावर्णपरेखा ॥ मध्याशून्यमकार-मात्रुकाहृदयासो अस्थाना । महदाकाशचाचरीमुद्राइच्छाशक्ती जाना ॥ उददाअग्निसुषुप्तिअवस्थानिर्णयवराठस्थानी । कपि-मारग तृतीयपदगात्री अहै प्राज्ञअभिमानी ॥ सामवेद पश्यन्ती बाचा मुक्तस्वरूप बखानी । तेज तत्त्व अद्वैतानन्दं अहंकारनिर-बानी ॥ अहैं बिशुद्धमहातम जामें तामें कछु न समाई । कारण देह इतीसम्पूरण कहै कबीर बुझाई ३ सन्तौ महकारणतनजाना। नीलबरण औ ईश्वरदेवा है मसूरपरमाना ॥ नाखिस्थानविकार-मात्रुका चिदाकाशपरबानी । मारगमीन अगोचरमुद्रा वेद अर्थ नहिं जानी ॥ ज्वाला कलचतुर्थपदगात्री आदिशक्तितनुबाऊ। आश्रयलोकबिदेहानन्दं मुक्तिसज्योतिबताऊ ॥ नृणै प्रकाशिक तुरीअवस्थाप्रतिज्ञातु अभिमानी । सीवन्हकारमहाकारणतनइवो-कबीरबखानी ४ सन्तौकेवलदेहबखाना । केवलसकलदेहकासाक्षी भमरगुफाअस्थाना ॥ निराकाश औ लोकनिराश्रयनिर्णयज्ञान-वशेखा । सूक्ष्मवेद है उनमुनमुद्राउनमुनबाणीलेखा ॥ ब्रह्मानन्द कहींहंकाराब्रह्मज्ञानकोमाना । पूरणबोधअवस्थाकहियेज्योतिस्व-रूपीजाना ॥ पुण्यगिरीअरुचिरूमात्रुकानीरञ्जनअभिमानी । परमारथपञ्चमपदगात्रीपरामुक्तिपहिंचानी ॥ सदासीव औमार्ग सिखाहै लहैसन्तमतधीरा । कालेतीतकलासम्पूरणकेवलकहै कबीरा ५ सन्तोसुनौहंसतनब्याना । अवरणबरणरूपनहिं रेखा ज्ञानरहितविज्ञाना ॥ नहिं उपजै नहिं बिनशै कबहूं नहिं आवै नहिं जाहीं । इच्छ अनिच्छ न दृष्ट अदृष्टी नहिं बाहर नहिं माहीं ॥ मैंतूरहितनकरताभोगता नहीं मान अपमाना । नहीं ब्रह्म नहिं जीव न माया ज्योंका त्यों वह जाना ॥ मनबुधिगुनइन्द्रिय नहिं जाना अलख अकहानिर्बाना । अकलअनीहअनादिअभेदा निगम नीतिफिरिजाना ॥ तत्त्वरहितरविचन्द्र नतारानहिंदेवीनहिंदेवा। स्वयंसिद्धिपरकाशकसोई नहिंस्वामी नहिं सेवा ॥ हंसदेह विज्ञान भाव यह सकलबासना त्यागे । नहिं आगे नहिं पाछे कोई निज

प्रकाशमें पागे ॥ निजप्रकाशमें आप अपनपौ भूलि भये बिज्ञानी। उनमतबालपिशाचमूकजड़दशापांचइहलानी ॥ खोये आपु अपनपौ सबरसानिजस्वरूपनहिंजाने । फिरिकेवलमहकारणकारण सूक्ष्म स्थूलसमाने ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणकेवलपुनिविज्ञाना । भयेनछ्यहेरफेरमेंकतौंनहींकल्याना ॥ कहै कबीरसुनौहो सन्तौखोजकरो गुरुऐसा । ज्यहितेआपअपनपौजानो मेटोखटका रैसा"६ और जब पांचौ शरीर ते भिन्न अपने को मान्यो अरु आपने को ब्रह्मरूप न मान्यो यह मान्यो कि मैं साहब को अंश हौं यह जान्यो तब साहब याको हंसशरीर देइ है सो जैसे साहब अनिर्बचनीय रस रूप है ऐसे जीवो है रकाररूप साहब है मकार रूप जीव है न्यूनता येती है साहब स्वामी है जीव सेवक है साहब स्वतन्त्र है यह परतन्त्र है साहब की मरजी ते सब काम करै है जैसे गुण साहबकेहैं तैसे याहूकेहैं जैसे साहब नहीं आवै जाय है ऐसे यहो नहीं आवै जाय है साहब के पासते जैसे साहब की सर्वत्र गति है ऐसे याहूकी सर्वत्र गति है साहबके बराबर याको भोग है तामें प्रमाण व्याससूत्रम् ॥ भोगमात्रसाम्यलिङ्गात् तामें प्रमाण षट्दोहावलीको शब्द कबीरका "तत्त्वाभिन्ननिस्तत्त्वनिरक्षरमनोपवनतेन्यारा । नादबिन्दुअनहदअगोचरसत्यशब्दानिरधारा" और स्थूलशरीर पच्चीस तत्त्व को है पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दश इन्द्रिय, पञ्चप्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, जीव सो जाग्रत्अवस्था में अनुभव होइ है और ऋग्वेद है प्रथमपद गायत्री और सूक्ष्मशरीर सत्रह तत्त्वको है पञ्चप्राण दश इन्द्रिय मन बुद्धि सो स्वप्न अवस्था में अनुभव होइ है और यजुर्वेद है द्वितीयपदगायत्री और कारणशरीर तीनितत्त्व को है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्ति अवस्था में अनुभव होइ है सामवेद है तृतीयपद गायत्री और महाकारण शरीर दुइ तत्त्व को है अहंकार जीवात्मा सो तुरीयावस्था में अनुभव होइ है अथर्वणवेद है चतुर्थपदगायत्री वेदहै जीव सूक्ष्मवेद है नी ॐकार

पञ्चमपद गायत्री है बचन में नहीं आवै है ४ छठौं पद गायत्री नाम वेद है तामें प्रमाण "निद्रादौ जागरस्यान्ते योभावउपपद्यते॥ तम्भावं भावयेन्नित्यमक्षयानन्दमश्नुते" और कैवल्यशरीर एकतत्त्व को है चित्मात्र है और जौन ब्रह्मको छठौं शरीर मानि राख्यो सो निस्तत्त्व है सो वाको भ्रम है कुछ वस्तु नहीं है सो जो कोई रामनाम को स्मरण करत साहब को जान्यो व पांचो शरीर को त्यागकियो तब साहब हंसशरीर जीव को देइ है मन बचन में नहीं आवै है सो हंसशरीर अनिर्बचनीय है रसरूप है वह निस्तत्त्वहूसे परेहै सो जब प्राकृते रस जो है सोऊ व्यञ्जनावृत्ति करिकै जानो परैहै तौ अप्राकृत जो मन बचन के परे है, वाको कोई कैसे जानै सो तौने हंसशरीर में प्राप्त ह्वैकै साहब के पास जाइकै फिरि नहीं आवैहै उहां माया मन आदिकनकी पहुँच नहीं है सो साहब कहैहैं कि हे जीव! हंसस्वरूप जो छठौं शरीर तिहारो सो हमारे पास है तू कहां मनआदिकन में लागिकै बिगरे जाउहौ तुम हमारे पास आवो और अर्थ इनको स्पष्टैहै अन्त में कुछु अर्थ खोले देइ हैं सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि षट् जे हैं छयो शरीर तिनको ऐसा कह झगरा है मेटो सो जौने ब्रह्म प्रकाश में तुम भरे रहेहौ सो वाको छठौं शरीर आपनो मानो हौ सो तिहारो शरीर नहीं है वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् ह्वै जाइ है जाको भूत लगैहै और जो उन्मत्त होइहै ताको यथार्थज्ञान नहीं होइ है सो ऐसा गुरु करो जो साहबको बतावै तब आपनो छठा शरीर हंसस्वरूप पावोगे लोक में जो साहब देइ है तौने इहां साहब कह्यो है कि छठी तिहारीही जगह कहे छठौं शरीर हंसस्वरूप हमारी जगह में कहे हमारे है सो हमको जानोगे कि वही ब्रह्म है तब हमारे दिये पावोगे जौन छठौं शरीर तुम मानि राख्यो है और खोजो हौ सो तिहारो नहींहै ताते तुम्हारो कार्य नं सरैगो॥१॥

शब्द हमारा तुम शब्दका, सुनिमति जाहु सरक्खि॥
जो चाहो निजतत्त्व को, तौ शब्दै लेहु परक्खि २

साहब कहे हैं कि शब्द जो है हमारा रामनाम तौनेही शब्द के तुम हो रामनाम को सरेखिकै कहे बिचारिकै माया ब्रह्म में मतिजाहु जो निजतत्त्व को चाहो कि मैं कौनतत्त्व यथार्थ हौं तो शब्द जो रामनाम ताको परखि लेउ अनादि शब्द यही है मेरे धाम में यह नाम मेरो सदा बनोरहै है जब आदि उत्पत्ति प्रकरण होइहै तब यही नाम लैकै यहीको अर्थ वेदशास्त्र व सब जगत् निकासिकै बाणी जगत् की उत्पत्ति करैहै रामनाम को अर्थ मोमें रूढ़ है सो अर्थवाणी गुप्त कैदेइ है तौन अर्थ साधु जानै हैं कि रकार जु हैं साहब तिनको अकार जो है आचार्य सतगुरु सो मकार जो है जीव ताको शरण करावे है सो तुम मकार तत्त्व हो ताको जानो चाहो तो शब्द जो है मेरो रामनाम ताको परखो जो ककार के समीप मकार होइ तो वो मकार कामरूप सजै है और जो दकार के समीप मकार होइ तो दामरूप सजैहै इत्यादिक नाना शब्द सजै हैं तहां तौने रूप ह्वैजाइ है वतनी शुद्धता नहीं रहिजाय है जब वहै मकार-रकार के समीप सजै है तबहीं शुद्धता होइहै ऐसे तुम मेरे समीप सजौ है सो मेरे पास आवो मोको जानो तो तुमहूं शुद्ध ह्वैजाउ जैसे रकार के समीप मकार सदा रहै है तैसे तुमहूं सदा के मेरे समीपी हो ताते मेरे समीप आवो औरे औरे में न लगो रकार के शरण मकार को अकार करावे तामें प्रमाण "रकारो रामरूपोऽयं मकारस्तस्य सेवकः। अकारःश्रीमकारस्य रकारे योजनामता।" (इति शम्भुसंहितायाम्) ॥ २ ॥

शब्द हमारा आदिका, शब्दहि पैठा जीव ॥
फूल रहन की टोकनी, घोरा खाया जीव ३

साहब कहे हैं कि, हमारा शब्द जो रामनाम सो आदि को है आदिहीते यहि शब्द में जीव पैठा है सो शब्द रामनाम जीव के रहिबे को पात्र है जैसे फूल के रहन की टोकनी पात्र है सो रामनामको लैकै निर्भय सुखपूर्वक हो बिचरै कछू भय न लगै

तौने रामनाम को सार जो अर्थ है सोई घी है ताको घोरे जे पशु हैं गुरुवालोग अज्ञानी ते खाइलियो अथवा पूर्वमें छांछ को घोरा कहे हैं जामें सार नहीं है ऐसे जे हैं छांछ गुरुवा लोग ते साहब को यथार्थज्ञान जो घी ताको खाइ लियो कहे वाको और और अर्थ करिकै नानामतन में लगाइदियो जो रामनाम मोको बतावै है सो अर्थ भुलाय दियो गुरुवालोग बड़े घोर हैं येई संसारमें तोको डारि दियो है ॥ ३ ॥

शब्द बिना श्रुति आंधरी, कहौ कहां को जाय ॥
द्वार न पावै शब्द को, फिरिफिरि भटका खाय ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रुति जो है व शब्द जो है रामनाम ताके बिना आंधरी है काहेते कि रकार मकार श्रुति की आंखी हैं ताके बिना कहांको जाय सो शब्द जो रामनाम है तौनेको द्वार नहीं पावै अर्थात् अर्थ नहीं जानै रामनाम तो साहबमुख अर्थ में मन बचन के परे पदार्थ बतावै है या श्रुति नेति नेति कहि बतावै है याते रामनाम को साहबमुख अर्थ नहीं कहि सकै है याते यामें परिकै जीव फिरि फिरि भटका खाय है ज्ञानभक्ति बिज्ञान योग बतावै है फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइ है याते जीव भटका खाइ है उहां वस्तु कुछ नहीं पावैहै जो राम नाम को साहबमुख अर्थ जीव जानिकै लगावै तो सब श्रुति लागिजायँ और सबके परे पदार्थ सो जानि जाहिं काहे ते बिना आंखी कोई नहीं देखै जौनी तरहते रामनाम ते सब श्रुति लागि जाय हैं और अनिर्बचनीय पदार्थ मालूम होय है सो पीछे लिखि आये हैं ॥ ४ ॥

शब्द शब्द बहु अन्तरही में, सार शब्द माथि लीजै ॥
कह कबीर जेहि सारशब्द नाहिं, धिकजीवन तेहिदीजै ५

जहां जहां अन्तर तहां तहां बहुत शब्द देखै हैं और तुम रामनाम को अनिर्बचनीय हैं श्रुति की आंखी हैं या कहौ हौ सो

कैसे होइगो एकशब्द वोहू होइगो सो या ऐसो नहीं है सार शब्द है जब सब शब्दन को मथै तब वा जानिपरै सो श्रीकबीर जी कहैहैं कि जेहिको सार जो रामनाम सो नहीं मथि लियो है ताको जीवन संसार में धिक् है सारशब्द मत लीजै जो यह पाठ होइ तो सारशब्द रामनाम ताको मतलेइ और जे मत हैं ते कुमत हैं तेहिको छोड़िदे रामनाम वर्णन सब श्रुति की आंखी हैं तामें प्रमाण " आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरणबिलोचन जन जिय जोऊ " १ " मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौ मुनिहृदयवयःपक्षती तीरभूमी संसारापारसिन्धोःकलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिम्बौ । उन्मीलत्पुण्यपुञ्जद्रुमललितदले लोचने च श्रुतीनां कामं रामेति वर्णौ शमिह कलयतां संततं सज्जनानाम् " ॥ ५ ॥

शब्दै मारा गिरि गया, शब्दै छाड़ा राज ॥
जिनजिन शब्द बिबेकिया, तिनको सरियाकाज ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि शब्द जो रामनाम तौने को जगत्-मुख अर्थ में वेद शास्त्र पुराण नानामत जे निकसे हैं तामें जो पर्‍यो सो गिर गया अर्थात् संसार में पर्‍यो और जिन जिन शब्द बिबेकिया कहे सब शब्दन ते विचार करि सारशब्द जो राम-नाम ताको जानिलियो सोई संसाररूप राजको छोड़िदियेहैं और तिनहीं को काज सरिया कहे सिद्धभयो है ॥ ६ ॥

शब्द हमारा आदि का, पल पल करै जो आदि॥
अन्त फलैगी माहली, ऊपर की सब बादि ७

गुरुमुख साहब कहै हैं कि हे जीवो ! हमारा शब्द जो राम नाम सोई आदिको है अर्थात् याही ते प्रणव वेद शास्त्र बाणी सब निकसे हैं सो याको आदि कहे स्मरण जो पल २ कहे निरन्तर करैगो तो अन्त में फलैगी साकेत जो हमारो महल ताको माहली होइगो बसैया होइगो अर्थात् तहां को जाइगो

और ऊपर के जे सब नानामत हैं ते बादि कहे मिथ्या हैं अथवा और सब ऊपर के मत बादबिवाद हैं ॥ ७ ॥

जिन जिन संबल ना किया, अस पुरपाटन पाय ॥
झाल परे दिन आथये, संबल किया न जाय ८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अस पुरपाटन जो या मानुष शरीर तौने को पायकै जिन जिन पुरुष संबल न किया कहे सम्यक् प्रकार बल न कियो अर्थात् मन आदिकन न जीति लियो साहब को न जान्यो अथवा संबल कहे जमासों परलोक की जमा राम नाम को न जानि लियो अथवा संबल कहे कलेवा सो दिन अथये कहे शरीर छूटे झालि परे अर्थात् चौरासीलाख योनि में पर्‌यो अब संबल कियो नहीं जाय है ॥ ८ ॥

हंसा सरवर तजि चले, देही परिगै सुन्नि ॥
कहै कबीर पुकारिकै, तेई दर तेइ थुन्नि ९

हे हंसा जीव ! बिना साहब के जाने या सरवररूपी शरीर तजिकै जाउगे तब या देही सुन्नि परि जायगी अर्थात् मरि जायगी सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम पुकारि कै कहै हैं बिना साहब के जाने तेई दर तेई थूनी बने हैं अर्थात् नये तलाये में लाठि गाड़ि जाइ है सो जहैं जायगो तहैं देहरूपी सरवर में बासना-रूपी दर में कर्मरूपी थून्हि गाड़ि लेउगे पुनि पैदा होइगो जनन-मरण न छूटैगो ॥ ९ ॥

हंसा बकयक रँग लखिय, चरैं एकही ताल ॥
क्षीर नीर ते जानिये, बक उघरैं तेहिकाल १०

बकुला और हंस एकही रङ्ग होइहैं और एकही ताल में चरै हैं परन्तु जब नीर क्षीर एक करिकै धरिदियो वे दूध पीलिये पानी रहिगयो तब जानि परो हंस है और नीर क्षीर जुदो कीन न भयो तब जान्यो कि बकुला है ऐसे टीका, कण्ठी, माला, टोपी सब बराबरै होइ हैं जब बिचार करन लग्यो मन माया

ब्रह्म जीव इनते साहब को अलग मान्यो तो जान्यो कि ये हंस हैं जो मन माया ब्रह्मजीव ते अलग न कियो साहब को तो जान्यो कि ये बकुला हैं ॥ १० ॥

काहे हरिणी दूबरी, चरै हरियरे ताल ॥
लक्ष अहेरी यक मृगा, केतिक टारो भाल ११

जीव कहै है कि हे हरिणी बुद्धि! तैं काहे दूबरी ह्वैरही है संसाररूपी हरियरे ताल में चरिकै यह संसारताल में लक्ष तो अहेरी कहे मारनवारो है सो तैं केतिक भारटारोगे मरिही जाइगो सो हरियर हैं जौने ताल में तौने में काहे नहीं चरै है साहब में निश्चय काहे नहीं करै है और भक्तिरस सरोवर में रक्षक एक तेरो और साहबै है ताते साहबै के ताल में चरु यह संसारताल को छोड़ि दे यहि संसारताल में लाखन मरवैया हैं ॥ ११ ॥

तीनि लोक भो पींजरा, पाप पुण्य भो जाल ॥
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल १२

तीनों लोक जो पींजरा हैं तामें पाप पुण्यरूप जाल लगे हैं अर्थात् वाही में सब अटके हैं सो सब जीव सावज हैं तिनको काल जो है शिकारी सो मारि मारि खाय है ॥ १२ ॥

लोभय जन्म गँवाइया, पापै खाया पुन्नि ॥
आधी सों आधी कहै, तापर मेरी खुन्नि १३

लोभै करत करत जन्म गँवाइ दियो अर्थात् द्रव्य बिढ़वे के वास्ते नाना पाप किये सो जो प्राक्तन के पाप पुण्य रहैं ताहू को कहे पूर्वजन्म के खायगये सो ऐसी जो लोभवारी बुद्धिहै सो आधी कहे मक्खनसी व्यथा है सो वा ऐसी बुद्धि को या सम तातभाव ते धी कहै हैं कि मैं बड़ी बुद्धि कैकै जटिल्यायो मैं हराय दियो इत्यादिक काहिकै अपनी बुद्धि को बुद्धि कहै हैं और की बुद्धि नहीं कहै हैं तौने पर मेरी खुन्नि है कहे रिस है ॥ १३ ॥

आधी साखी शिर खड़ै, जो निरुवारी जाय ॥
क्या पण्डित क्या पोथिया, राति दिवस मिलिगाय १४

आधी साखी कबीर की चारिवेद का जीव सो आगे आधी साखी रामनाम को कहिआये हैं सो आधी जो है रामनाम सो सब ते शिरखड़ै है कहे जाहिरै है जो यह साखी निरुवारी जाय अर्थात् रामनाम निरुवारा जाइ और जो खण्डै पाठ होइ तो अर्द्धचन्द्र बिन्दु ते खण्डै कहे पण्डितौ होइ और या रामनामरूपी साखी निरुवारी जाय अर्थात् साहबमुख अर्थ याको समुझै तो पण्डितलोग दिनराति पोथी देखि २ मरेहैं रामनाम ते काम ह्वै जाय है तामें प्रमाण "नाम लिया तिन सब लिया, सकल शास्त्र को भेद। बिना नाम नर कैगये, पढ़ि पढ़ि चारों वेद" ॥ १४ ॥

पांच तत्त्व का पूतरा, युक्ति रची मैंकीय ॥
मैं तोहिं पूछौं पण्डिता, शब्द बड़ा की जीय १५

यह पांचतत्त्व को पूतरा जो शरीर तामें तैं यह युक्ति रचेहै कि मैंकीय कहे महीं मालिक हौं सो हे पण्डित ! मैं तोको पूछोहीं कि यह शब्द जो रामनाम जाके बिना जाने संसारी भयो है तौन बड़ा है कि तैं बड़ा है जो आपने को मालिक मानै है ॥ १५ ॥

पांच तत्त्व को पूतरा, मानुष धरिया नाउँ ॥
एक कला के बिछुरते, बिकल भया सब ठाउँ १६

पांचतत्त्व को पूतरा जो तैं है ताको मनुष्य यह नाम धस्यो है कला जेहि साहब के नामरूप लीला धामादिक सब परी रहीं एक कला जो रामनाम तौनेके बिछुरत में सबठाउँ में बिकल ह्वैगये कहे जौनै शरीर धारण करै हैं तहैं बिकल होइहैं मनुष्य नाम में यह व्यंग्य है कि है पांचतत्त्व पूतरा को मनुष्यनाम धराइलियो है इहांको यह न होइ साहब के इहांको है द्विभुज सो आपनो रूप भूलिकै संसार में पस्यो है ॥ १६ ॥

रङ्गहि ते रँग ऊपजै, सब रँग देखैं एक॥
कौन रङ्ग है जीव को, ताकर करहु बिबेक १७

रङ्गहि जो है संसाररङ्ग तौनै रङ्ग जब जीव को लग्यो है तबहीं नानारङ्ग उपज्यो है कहे नानारूप के भये हैं ताको तो हम एक देखैं कहे मायाही के रङ्ग देखै हैं यह जीवात्मा शुद्ध जो है ताको कौने रङ्गहै यह तो बिबेक करो॥ १७॥

जाग्रतरूपी जीव है, शब्द सोहागा शेख॥
जरद बुन्द जल कूकुही, कह कबीर कोइ देख १८

यह जीव जो है सो जाग्रत्रूप है कहे सदा चैतन्य है जैसे साहब को रङ्ग श्वेत चैतन्य आनन्दघनीभूत है ऐसे याहू अणु चैतन्य है शब्द जो रामनाम सोहागारूप साहब को मिलावन-वारो ताको शेष है अन्त को बर्ण मकार है सो जरदबुन्द जल कहे जरदबीर्य स्त्री को जलपुरुष को ये दुनहुन के बीर्य ते शरीर-रूप कूकुही जीवके लागि गई जैसे खेतनमें कूकुही लागिजाइहै सो कबीरजी कहे हैं कि याको भीतर बिचार करिदेखो यहि जीवको स्वरूप जानिपरै कूकुही छड़ाइबो जैसे कूकुहीते अन्ननाश ह्वैजाइ है ऐसे याहू शरीररूप कूकुही जीवके लगी है सो एकरी शुद्धता को नाशकैदेइ है॥ १८॥

पांचतत्त्व लै या तन कीन्हा, सो तन लै कह कीन्ह॥
कर्महि के बश जीव कहत हैं, कर्महि को जिय दीन्ह १९

या पांचतत्त्वन को लैकै या शरीर कियो सो या शरीर लैकै तैं कौन काम कीन्ह्यो कर्मके बश ह्वैकै मेरो अंश जो जीव सो कर्महि को देतभयो मेरो ह्वैकै अर्थात् कर्मैंके बश ह्वैकै संसारी भो जीव सों कौन बड़ो काम कियो जीव कहवावन लग्यो॥ १९॥

पांच तत्त्व के भीतरे, गुप्त बस्तु अस्थान॥
बिरल मर्म कोइ पाइ है, गुरु के शब्द प्रमान २०

पांचतत्त्व को जो या शरीर ताके भीतर जो गुप्तवस्तु जीवात्मा है ताको स्थान है ताको मर्म कोई बिरला पावै है कि यह नित्य कौन को है यामें गुरु जे साहब हैं तिनका शब्द जो राम नाम सोई प्रमाण है तौने को अर्थ बिचार करै तो या जानिलेहि कि जीव साहबै को है ॥ २० ॥

अशुन तखत अड़ि आसनै, पिण्डझरोखे नूर ॥
ताके दिल में हौं बसौं, सैना लिये हजूर २१

अशुन कहे शून्य नहीं वा निराकार के परे अशून्य जो साहब को तख्त आड़िकै तामें आसनकैकै अर्थात् ध्यान में रत पिण्ड जो है शरीर ताके झरोखा जेहैं नेत्र तिनते साहब को जो कोई नूरदेखै कि सब साहबै को प्रकाश पूर्ण है सर्वत्र ताके दिल में आपने परिकरते सहित बसौंहौं ॥ २१ ॥

हृदया भीतर आरसी, मुख तौ देखि न जाय ॥
मुखतो तबहीं देखिहौं, जब दिलकी द्विबिधा जाय२२

हृदय भीतर जो आरसी है कहे तौन आपरन परिकर जे हैं जानकी लक्ष्मणादि तिनको मुख आपने रूप को जो सो नहीं देखो जाय है वो बिचार करिकै देखो जाय है सो मुख जो तुम्हारो स्वरूप सो तबहीं देखिहौ जब मैं मोर या द्विबिधा जात रही कि चित् अचितूरूप सब साहिबै के देखोगे ॥ २२ ॥

ऊंचे गांव पहाड़ पर, औ मोटे की बांह ॥
ऐसो ठाकुर सेइये, उबरिय जाकी छांह २३

जो गांव ऊँचेपर होइ है तहां बूड़ा की भय नहीं होइहै जाके जबरेकी बांह होइ है ताको डर नहीं होइ है ऐसे ऊँचो गांव जो साकेत तहां साहब जे हैं तिनकी जहां बांह ऐसे जे साहब हैं तिनकी छांह में टिकौ जाते उबरो उहां मायाके बूड़ाको डर नहीं है कहा मन मायादिकन में परेहौ इनमें काल ते न बचौगे ॥ २३ ॥

ज्यहि मारग गे पण्डिता, तेही गई बहीर ॥
ऊंची घाटी राम की, त्यहि चढ़ि रहे कबीर २४

जौने मार्ग में रामनाम जाने बिना पण्डित गये वही मार्ग है मूर्खौं जातभये अर्थात् पापी पुण्यी सब वही यमपुरी ह्वैगये कबीरजी कहै हैं कि ऊँची घाटी जो रामनाम तामें आरूढ़ ह्वैके माया के बूड़ाते बाचिगयों सबको तमाशा देखौ हौं ॥ २४ ॥

हे कबीर तैं उतरिरहु, सँबल परोहन साथ ॥
सँबल घटे औ पग थके, जीव बिराने हाथ २५

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर! तैं ऊँची घाटी जो रामनाम तौने ते उतरि रहु न तेरे सँबलकहे कलेवाहै न परोहन कहे बाहन साथ है सो सँबल और पगु जब थाकैगो तब जीव तों बिराने हाथ ह्वैजाइगो जो हमारे पास आवोगे तो ज्ञानयोगादिक संबल बतावैंगे 'अहं ब्रह्मास्मि' बाहन देयँगे तामें आरूढ़ ह्वैके संसार समुद्र पार ह्वै जाइगो ॥ २५ ॥

घर कबीर का शिखर पर, जहां सिलिहिली गैल ॥
पांय न टिकैं पिपीलिका, खलकन लादे बैल २६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे गुरुवालोगो! हमारा घर शिखर जो रामनाम है तामें तहां गैल चिकनी है चीटी जो बुद्धि है ताहीके पांय नहीं टिकै हैं अर्थात् वा मन वचन के परे हैं रामनाम और स्वरूप है ताते बिछुलनहारि है गैल उहां नानामत नानाशास्त्ररूप लाद लादे बैल जेहैं गुरुवा ते नहीं जायसकै हैं अर्थात् सूक्ष्मबुद्धि नहीं जायसकै हैं तो तुम जे नानामतन को लाद लादे हो सो कैसे जायसकौ हो जहां मैं टिकौ हौं तहां भरि तुमहूं पहुँचि सकतै नहीं हौ कहां कलेवा देउगे कहां बाहन देउगे ॥ २६ ॥

बिन देखे वह देश की, बातैं कहै सो कूर ॥
आपै खारी खातहौ, बेचत फिरत कपूर २७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जौने शिखर में हम चढ़ेहैं तौने देश को बिना सतगुरुद्वारा देखे जे बात वहां की कहैहैं ते क्रूरहैं अर्थात् तुम हमको उतरन शिखरते बिना जाने कहौहौ सो तुमहीं क्रूर हौ कैसे हौ आप तो खारी जे नानामत तिनको ग्रहण कीन्हे हौ स्वच्छ उज्ज्वल कपूर जो है ज्ञान ताको बेंचत फिरौ हौ अर्थात् द्रव्यलैकै चेला बनावत फिरौ हौ भाव यह है कि नाम को भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुँचौगे ॥ २७ ॥

शब्दशब्द सबकोइ कहैं, वातो शब्द विदेह ॥
जिह्वापर आवै नहीं, निरखिपरखि कर लेह २८

शब्द शब्द सब कोई कहै हैं परन्तु वा शब्द जो रामनाम है सो विदेह है विना शरीर का है जिह्वा में नहीं आवै है मन बचन के परे है ताको ज्ञानदृष्टि ते निरखि कै पारिख करिलेहु ॥ २८ ॥

परबत ऊपर हर बसै, घोड़ा चढ़ि बस गाउँ ॥
बिन फुल भौंरा रस चखै, कहु बिरवा को नाउँ २९

पर्वत आगे जीव ब्रह्म को कहिआये हैं सो पर्वत जो ब्रह्म ताके ऊपर हर जो माया सो जोतै है अर्थात् शबलित ह्वैकै संसार की उत्पत्ति करै है सो घोड़ा जो है मन तौने में गाउँ जो संसार है सो बसै है अर्थात् मनै में सब संसार है बिन फुल कहे या संसार तरु को फूल विषय है सो मिथ्या है कछु बस्तु नहीं है तौने को रस भौंरारूप जीव चाखै है सो वा बिरवा को नाउँ तो कहु सो बताउ हमको नाम संसार मिथ्या है जौन याको सांच नाम है ताको कहु ताको तैं नहीं जानै है ॥ २९ ॥

चन्दन बास निवारहू, तुझ कारण बन काटिया ॥
जिवत जीव जनि मारहू, मुये ते सबै निपातिया ३०

हे चन्दन, जीव ! अपनी बासना तू निवारण करु काहेते कि मैं तेरे कारण जौने गुरुवन की नानाबाणी नाना मतन में तुम लाग्यो तिनकी बाणीरूप बन मैं काटिडारयो अर्थात् खण्डन

करिडारयो जाते तुमको ज्ञान होय सो बासना में परिकै जीवत जीव तुम अपनो न मारो जो वामें लागि जाहुगे तो तुम्हारो जीवत्व जातरहे मरिजाहुगे वाही धोखा में लगिकै आपको ब्रह्म मानन लगोगे तब निपातिया कहे सब साहब के ज्ञान को निपात ह्वै जाहिगो ॥ ३० ॥

चन्दन सर्प लपेटिया, चन्दन काह कराय ॥
रोम रोम बिष भीनिया, अमृत कहां समाय ३१

चन्दन जो जीव है सो कहा करै है सर्प जे गुरुवालोग हैं ते लपटिरहे हैं सो उनकी वाणी को जो है बिष सो रोम रोम बिषे भेदि गयो है हमारो उपदेश जो अमृत सो कहां समाय ॥३१॥

ज्यों मुदादि समसान सिल, सब यकरूप समाहिं ॥
कह कबीर साउज गतिहि, तब की देखि भुकाहिं ३२

जैसे मुदादि समसानसिल होइ है सो जो कोई देखै है ताको मुरैलै रूप देखि परै है सोकबीर जी कहै हैं कि गुरुवालोगन की वाणीरूप सिल में तबकी कहे सृष्टि के आदि में आपनी गति देखै हैं कि तबहूं हम ब्रह्म रहे हैं या मानिकै भोकै हैं कि हमहीं ब्रह्म हैं अथवा ज्यों मुदादि कहे मुदको आदि ब्रह्म ज्यों कहे कैसे जैसे मसान ते सहित सिल पाथर के भुतहा चौरा जेई वा चौरा में बैठे हैं सो अभुआइ हैं कहै हैं हमहीं ब्रह्म हैं सोई कहै हैं मैं फलानो भूत हौं आपनो रूप भूलिजाइ हैं ऐसे जेई गुरुवालोगन की वाणी उपदेश में परे हैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाहि हैं यही कहैहैं कि महीं ब्रह्म और सब ब्रह्महीं है एकरूप दूसरो पदार्थ नहीं है सो श्रीकबीरजी कहै हैं साउज जो जीव है ताकी तबकी गति गुरुवालोग कहै हैं तब तुम ब्रह्मही रहेहौ आपने अज्ञानते तुम जीवत्व को धारण कीन्हे हौ अबहूं जो ज्ञान करो तो ब्रह्महीं ह्वैजाहु या मानिकै उपदेश जीव भोकै है कि हमहीं ब्रह्म हैं अर्थात् जैसे वा पण्डा भूत नहीं ह्वै जाइहै जीवही रहै है ऐसे न ब्रह्म रहे हैं न

ब्रह्म होइगो भोकैपद के शक्ति ते दूसरो दृष्टान्त ध्वनित होइहै जैसे कूकुर कांच के मन्दिर में आपनो प्रतिबिम्ब देखि भूंकै है ऐसे अपने भ्रमते गुरुवन की बाणीरूप ऐना में आपनो रूप ब्रह्मही देखैहैं भूंकै हैं यह नहीं जानै हैं कि हम साहब के हैं या गुरुवा-लोगन की बाणी में ब्रह्म देखो परै है सो हमारे मनहीं को अनुभव है ॥ ३२ ॥

गही टेक छोड़ै नहीं, चोंच जीभ जरि जाय ॥
मीठो काह अँगार है, ताहि चकोर चबाय ३३

ब्रह्मबादिन की टेक कैसी हैं जैसे चकोर को ओठ जीभ जरै है परन्तु अँगारै को चाबैहै ॥ ३३ ॥

झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटी न काहु ॥
गोरख अटके कालपुर, कौन कहावै शाहु ३४

झिलमिल झगरा कहे दशमुद्रा करिकै बङ्कनालते खिरकी के राह लैजाइकै वह ज्योति जो झिलमिलाइ है तामें आत्मा को मिलाइदेइ है पुनि षट्चक्र ते झिलिकै गैवगुफा में जो ब्रह्मज्योति है तामें मिलिकै व झगरा करिकै कहे काम क्रोधादिकन को दूरि करिकै पुनि संसारमें झूलिपरै है अर्थात् जब समाधि उतरि आई तब फेरि वही झगरामें झूलिपरे सो कर्म की बाकी काहू की नहीं छूटैहै सब कर्म भोग करै है जो गोरखै कालपुर में अटके अर्थात् उनहीं को जो काल खाइलियो तो और दूसरो कौन शाहु कहावै है कौन काल ते बच्यो है जो बहुत जियो योगी वो कल्पान्त में कोई नहीं रहिजाय है जो कोई रहिगयो जल बढ्यो तो जल में मिलिकै रहिगये अग्नि बढ़ी अग्नि में मिलिकै रहिजाइ है तो महाप्रलय में नहीं रहिजाइ है ॥ ३४ ॥

गोरख रसिया योग के, मुये न जारी देह ॥
मांस गली माटी मिली, कोरो मांजी देह ३५

जो कहो गोरख तो बने हैं तो प्रलयादिकन में वोऊ न रहैंगे

योग के रसिया जे हैं गोरख ते ऐसो योग हज़ारनवर्ष कियो कि मस्यो ते देह को न जास्यो मांस गलिकै माटी में मिलिगयो तब कोरो कहे मई मांझी कहे शुद्धचर्म देह गोरख की कढ़िआई आखिरपर वहौ प्रलयादिकन में न रहैगो सो उनकी देह मुयो कहे ऐसो योग कियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसार छूटिगयो संसार ते मारिगये कै उनकी सूक्ष्मादिक देहौ मस्यो पर न जरी जब देह न जरी तब पुनि २ संसार में आवते भये कल्पान्तरन में सो कल्पान्तर में गोरखआदि दैकै योगी सब आवै हैं सो आगे कहै हैं ॥ ३५ ॥

बनते भागि बिहड़े परा, करहा अपनी बानि ॥
वेदन करहकसों कहै, को करहा को जानि ३६.

बन जो है संसार तौनेते भागिकै बिहड़ जो है अटपट गैल ब्रह्म तामें पस्यो जाइ सो यह जीव को सदा स्वभावई है कि प्रलयादिकन में ब्रह्म में गयो व पुनि करहा कहे कराहिआयो संसार में जन्म लियो शरीर धारण कियो सो यह जीव संसार योगादिक साधन कियो सो यह वेदन कहे पीड़ा जीव कासों कहै और शरीर काहेते कराहि आयो यह को जानै जैसे आम्रादिक वृक्ष करहि आवै हैं कहे फूलि आवै हैं फेरि फरै हैं आपनी ऋतु पाइकै तैसे जब महाप्रलयादिक भये तब लीन ह्वैगयो जब उत्पत्ति प्रकरण भयो तब फेरि करहि आये कहे शरीर धारण किये पुनि नाना कर्म करिकै नाना फल पावन लगे ॥ ३६ ॥

बहुत दिवससों हीठिया, शून्य समाधि लगाय ॥
करहा परिगा गाड़ में, दूरि परे पछिताय ३७

जीव बहुतदिन समाधि लगाइकै शून्य में हीठिया कहे भ्रमत भये कि हमारो जन्म मरण छूटै है सो हज़ारन कल्प समाधि लगाये रहे जब समाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये अथवा हज़ारन वर्ष ब्रह्म में लीन रहे जब सृष्टिभई तब पुनि संसाररूपी

गाड़ में परिकै पछितानलगे पछिताइबो कहाहै कि वही बासना लगीरही ताते पुनि नानासाधन करनलगे कि हमारो जन्म मरण छूटै ॥ ३७ ॥

कबिरा भर्म न भाजिया, बहु बिधि धरियाभेख ॥
साईं के परिचय बिना, अन्तर रहिगो रेख ३८

कबीर जे हैं कायाके बीर यह जीव सो बहुत भांति के वेष धरत भयो योगी ह्वैकै योग करत भयो ज्ञानी ह्वैकै ज्ञान करत भयो भक्त ह्वैकै भक्ति करतभयो कर्मकाण्डी ह्वैकै कर्म करत भयो पै जिन को यह जीव अंश है ऐसे जे हैं साईं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिन के बिना जाने याको भ्रम न भाजत भयो जो मुक्त हू ह्वैगयो आपने को ब्रह्महू मानत भयो तो मूलाज्ञानरेख याके रही गई काहेते कि जाको है ताको तो जान्यो नहीं योग कियो ज्ञान कियो भक्ति कियो व नानाकर्म कियो ताते पुनि संसारही में पर्‌यो कौन रक्षाकरे रक्षकको तो बिसराइ दियो ॥ ३८ ॥

बिन डांड़े जग डांड़िया, सोरठ परिया डांड़ ॥
बांटनहारा लोभिया, गुरते मीठी खांड़ ३९

यह संसारमें जीव बिना काहूके डांड़े डांड़िया कहे सब डारि जाते भये अर्थात् आपनेही कर्मते साहबको ज्ञान भूलिगये व सोरठ या देश बोलीहै सोरठै फलदेउ दशउ फलदेउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र ई सोरठैते ब्रह्मा साहबको उपदेश इनको कियो पै ये सब अपने अपने कर्म में लागिगये उनको वा सोरठ कहे सोरठै जौन ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उनको डांड़पर्‌यो डांड़ वह कहावैहै जौन बन काटिकै मैदान ह्वैजाय है सो उनको चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र ई जे सोरठ हैं ते डांड़ पर्‌यो कहे वामें साहबको खोज न पायो साहबको बिचार उनको दिखाई न पर्‌यो अनतही अनतही लगावै है वेद शास्त्र का अर्थ करि काहेते न पायो कि बांटनहारो जो ब्रह्मा है सो लोभी रह्यो है

कहे रजोगुणी है सो बहुत चोराइके कह्यो परोक्ष कह्यो जाते कोई न पावै और जे जानतभये ब्रह्माको उपदेश ते गुरु जे ब्रह्मा हैं तिनहूंते अधिक ह्वैगये अर्थात् गुरु गुरहीको रह्यो चेला खांड़ ह्वैगयो गुरुते मीठी खांड़ होय है काहेते ब्रह्माते अधिक ह्वैगये कि ब्रह्मा गुणको धारण किये हैं और वे सगुण निर्गुणके परेकी बात जानै हैं ॥ ३९ ॥

मलयागिरि के बास में, बृक्षरहा सब गोइ ॥
कहिबे को चन्दन भया, मलयागिरि ना होइ ४०

मलयागिरि चन्दन के वृक्ष के बास में सब वृक्ष गोररहे कहे मलयागिरिके बास सब में ह्वैगई कछु मलयागिरि नहीं ह्वैगये ऐसे तिन को साहब को ज्ञान भयो तिनमें साहब को गुण आइ गये शुद्ध ह्वैगये कछु साहब न ह्वैगये जो कहो ब्रह्मा तो चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र जे सोरठ हैं तिनते सबको उपदेश कियो ताको गुप्तार्थ और लोग काहे न समझयो एक साहब को जनैये काहेते जान्यो तौने को अर्थ दूसरी साखी में दिखावै हैं ॥ ४० ॥

मलयागिरि के बास में, बेधा ढाक पलास ॥
बेना कबहुँ न बेधिया, युग युग रहिया पास ४१

मलयागिरि के बास में ढाक पलास सब बेधिगये और बेना जो है बांस सो युग युग मलयागिरि के पास रहे है पै वामें बास न बेधत भई अर्थात् और वृक्षन भीतर सार रह्यो तेहिते बास बेधि गई व बांसके भीतर सार न रह्यो ताते बास न बेधत भई अर्थात् और जे अज्ञानिउरहे तिनके अन्तःकरण में शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेश कियो तो साँच मानिकै समुझिलिये और जिनके भीतर वह शून्य ब्रह्मधोखा घुसोरह्यो ते और ऊपरते खण्डन करनलगे और और अर्थ वेदशास्त्र के बनाइलियो ते न बासिगये कहे. उनको साहब को रङ्ग न लग्यो चारों युगमें वेद-शास्त्र सब पढ़तई रहे ॥ ४१ ॥

चलते चलते पगु थका, नगर रहा नौकोस ॥

बीचहि में डेरा पर्यो, कहौ कौन को दोस ४२

चलत चलत थकिगयो वह नगर नवकोस रह्यो सो नवकोस में एकौकोस न चलिसक्यो तो दशौं कोस जहां साहबको मुकाम है तहां कैसे जायसकै दशौं कोस दशौं मुकाम रेखता में लिखि आये हैं सो बीचै में याको डेरा पर्यो बीचहीं में रहिगयो ताते जन्म मरण होन लग्यो तो कौन को दोषहै साहबके पास भरतो पहुँचिबोई न कियो और मुसल्माननके मतमें बहत्तरहज़ार परदा के ऊपर जब गयो तब नवपरदा बाकी रहिजाय हैं तौने कोस है दशयें में साहब है ॥ ४२ ॥

झालिपरे दिन आँथये, अन्तर परिगै साँझ ॥
बहुत रसिक के लाग ते, बेश्या रहिगै बाँझ ४३

यहि साखी में अर्थ कोऊ यह कहै हैं प्रपञ्च करते करते और बिषयरस लेते लेते बुढ़ाई आई और वेदशास्त्र पुराण नानाबाणी पढ़ते पढ़ते व कर्म उपासना तपस्या योग बैराग्य करते करते थके आखिर गुरुपद पारिख की प्राप्ति नहीं भई एकदिन मौत आइ पहुँची तब आँखिनपर झालिपरी कहे अँधियारी परी और दिन कहिये ज्ञान सो गाफिली में डूबिगया व हमारो अर्थ यह है झालि पर कहे जब दिन अथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे तब बीमार हुये इन्द्रिय शिथिल भईं तब अन्तःकरण में अँधियार ह्वै गयो कहे कुछ न सूझि परन लग्यो तब जैसे बहुत रसिक के संगते बेश्या बांझ रहिजाइहै तैसे गुरुवालोगन की नानाप्रकार की बाणी को उपदेश सुनि सुनिकै शून्य ह्वैगये ज्ञान भक्ति उत्पत्ति भई और साहब न प्राप्त भये ॥ ४३ ॥

मनतो कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जाउँ ॥
छामासे के हीठ ते, आध कोस पर गाउँ ४४

मन संकल्प बिकल्प करिकै आत्मा को स्वरूप खोजै है कि आत्मा कैसो है और चित्त स्मरण करै है कि आत्मा को स्वरूप

कैसो है सो छामास जो हैं छयूशास्त्र तौनेमें हीठतकहे स्वरूपको खोजतई गये पै वह गाउँ आत्मा को स्वरूप मकार आधकोस में कहे अर्धनाम रकार ताके निकटही रह्यो पै खोजे न पायो ॥४४॥

गिरही तजिकै भये उदासी, बनखँड ताको जाय ॥
चोली थाकी मारया, बरइनि चुनि चुनि खाय ४५

घर छोड़िकै जगत् ते उदास भये बन पहारमें बैठेजाय साहब को तौन जान्यो शरीर औटिकै तपस्या करनलगे सो यामारते कहे कन्दर्प ते चोली थकिगई कहे वीर्य की हानि ह्वैगई जब वृद्ध ह्वैगये तब जैसे चोली बरइनि की थकि गई तब बरइनि सरे सरे पान निकारिडारै है नये नये पान चुनि चुनिकै खाय है तैसे माया जोहै बरइनि कहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरि करनवारी सो पुरान पुरान जे शरीर हैं तिनको निकारि डार्यो नये नये सुन्दर शरीर दैकै स्वर्गादिकन को सुख दियो राजा बनायो धनवान् बनायो भोग कराइकराइकै उनको माया मृत्युरूप खाय लियो ज्ञानी भक्त योगी तपस्वी कोई नहीं बचेहैं जे साहब को जानै हैं ते बचै हैं ॥ ४५ ॥

रामनाम जिन चीन्हिया, भीने पिंजर तासु ॥
नयन न आवै नींदरी, अङ्ग न जामै माँसु ४६

जिन रामनामको चीन्ह्यो है तिनके पिंजर भीने ह्वैगयेहैं पांचो शरीर उनके छूटिगये यह स्थूल शरीर कैसो बन्यो है जैसे सूमा जरिजाय ऐंठनि बनीरहै जब यहौ शरीर छूटैगो तब हंसशरीरमें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिंजरा भीन ह्वैगयो है व नयनन में नींद नहीं आवै है कहे सोवायदेनवारी जो माया है सो उनको स्पर्श नहीं करै है और अङ्गमें पुनि मांस नहीं जामै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करै हैं ॥४६॥

जे जन भीजे रामरस, बिकासित कबहुँ न रुक्ख ॥
अनुभव भाव न दरशै, ते नर सुक्ख न दुक्ख ४७

जे जन श्रीरामचन्द्रके रस में भीजेरहे हैं ते सदा बिकसित रहे हैं उनको हृदयकमल सदा प्रफुल्लितई रहै है रूख कबहूं नहीं रहै है और रूख जो है अनुभवभाव वह धोखाब्रह्म सो उनको कबहूं नहीं दर्शै है और ते नरन को न संसार को सुख होइ है न दुःख होइ है वै रामरसही में मग्न रहै हैं ॥ ४७ ॥

काटे आँब न मौरिया, फाटे जुरै न कान ॥
गोरख पद परसे बिना, कहो कौन की सान ४८

कबीरजी गोरख सों कहै हैं अथवा गो जो हैं मनादिक इन्द्रिय तिनको राखै कहे रक्षाकरै अर्थात् चैतन्यकरे सो गोरख कहावै जीव सो हे जीव ! जो आरमा काटिडारै तो फेरि नहीं मौरै है कहे नहीं फूलैहै व कान जो फाटिजाय तो फेरि नहीं जुरैहै यहि जीव पर जे हैं साहब तिनके पद बिना परसेई काहूकी सान नहीं राखै हैं कहो कौनको सान रह्यो है अर्थात् योगी ज्ञानी ब्रह्मादिक सब को काल खायलियो है काहूकी सान नहीं रही है ॥ ४८ ॥

पारसरूपी जीव है, लोहरूप संसार ॥
पारस ते पारस भया, परख भया टकसार ४९

कबीरजी कहै हैं कि यह जीव पारस है काहेते कि पारस जे परमपुरुष श्रीरामन्द्र हैं तिनको अंश है तो यहू उन्हीं को रूप है वै बिभु हैं जीव अणु है सो जीव लोहरूपी संसारमें मिलिकै लोह ह्वैगयो सो जब पारस जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको स्पर्श करै तब पारस होइ और अपने स्वस्वरूप को जानै कि मैं साहब को अंश हौं तब जानिये कि जौन टकसार मत है सांचा है तौन याको परखभयो कहे जान्यो काहेते यहै मत टकसार है सांचा है यहीके जाने जन्म मरण नहीं होइ है जो कहो पारसके परसे तो सोन होइ है तो यह पारसके परसे सोन होइ है कहे और जीव अशुद्ध ह्वै रहेहैं ते शुद्ध होइ जाइहैं वाके स्पर्श ते और श्रीरामचन्द्र

के चरणारबिन्द पारसके परसे पारसई होइ है काहेते कि वह पारस सच्चा है और यह पारस कच्चा है पाषाण है जड़ है ॥ ४६॥

प्रेमपाट का चोलना, पहिरि कबीरा नाच ॥
पानिप दीन्ह्यो तासु को, तन मन बोलै सांच ५०

कबीरजी कहे हैं कि हे जीव! तैं साहबके प्रेमपाटका चोलना पहिरिकै नाचैहै संसार में नहीं नाचता पानिप कहे शोभा साहब ताहीको देयहैं जो तन मनते साहबसों सांच बोलै कहे सांच प्रेम करै है ॥ ५० ॥

दर्पण केरी जो गुफा, सोनहा पैठो धाय ॥
देखत प्रतिमा आपनी, भूंकि भूंकि मरिजाय ५१

दर्पणकी गुफा कहे शीशमहल में कूकुर पैठ्यो सो अपनी प्रतिमा देखिकै भूंकि भूंकिकै मरिजाय है अर्थात् यह जीवात्मा यह नहीं समुझैहै कि मेराही अनुभव यह ब्रह्महै दर्पणकी गुफा जोहै ब्रह्मज्ञान तामें पैठिकै अहंब्रह्म भूंकि भूंकि मरै है जाको अंश यह जीव है ताको न जान्यो जैसे कूकुर नहीं जानै है कि मेराही प्रतिबिम्ब है ऐसेही यहभी नहीं जानैहै कि मेराही अनुभव है ॥५१॥

ज्यों दर्पण प्रतिबिम्ब देखिये, आप दुहूं घट होई ॥
ऐसे वा तत्त्व यही तत्त्वसों, है याही पुनि सोई ५२

वह ब्रह्म को जो अनुभव करै है सो तेरा ही अनुभव है वह तत्त्व व तेरो तत्त्व एक है अर्थात् दूनों चितई तत्त्व हैं भेद इतना ही है वह विभु चित है तैं अणु चित है परन्तु तेराही अनुभव है जैसे दर्पण में अपनोई प्रतिबिम्ब देखि परै है वह तेरई अनुभव है मैं वही ब्रह्म हौं यही धोखा है ॥ ५२ ॥

जो बन सायर मुञ्झते, रसिया लाल कराय ॥
अब कबीर पाजी परे, पन्थी आवहिं जाय ५३

जौने बन कहे वाणी करिकै सायर जो है समुद्र अगाध ब्रह्म

तौने में मुज्झते कहे मोह को तुम प्राप्त भयो व वहीके रसिया कहे रसिक ह्वैकै लाल कहे दुलार करत भये अपने को ब्रह्म मानत भये बाणी को प्रकाशरूप जो ब्रह्म है सो अगाध है याको पार कोई नहीं जाय है सो कबीरजी कहै हैं कि अब हम सबको जौन नहीं समुझि परत रह्यो अगाध रह्यो शुद्ध जीवन को सो ब्रह्म पाजी पर्‌यो है वही प्रकाशित ह्वैकै रामरसिक ह्वैकै साहब के लोक को चलोजाय है और पुनि जीवनके उपदेश करिबे को चलो आवै है ब्रह्मप्रकाश ह्वैकै साहब्य के लोक को चलेजायँ हैं तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः। तज्ज्योतिर्भेदने सक्ता रसिका हरिवेदिनः" और साहब के लोक में जे हैं तिनकी सर्वत्र गति है तामें प्रमाण "स मृत्युन्तरति स सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति" (इति श्रुतेः) ॥ ५३ ॥

दोहरातो नवतन भया, पदहि न चीन्है कोइ ॥
जिन यह शब्द बिबेकिया, क्षत्रधनी है सोइ ५४

सेव्य सेवकभाव मान्यो साहबको जान्यो तब दोहरा तो तन भया कहे हंसशरीर पायो पराभक्ति पायो तौने पद कहे साहब के लोक में प्रवेश करे है सो वो लोक को नहीं चीन्है है जो कहो ब्रह्म-रूप ह्वैकै कैसे सेव्य सेवकभाव साहबते कियो तुम बनायकै कहौ हौ तो श्रीकबीरजी कहै हैं जिन यह शब्द बिबेकिया कहे जिन साहब यह बिबेककरि शब्द बतायो सोई क्षत्र धनी है अर्थात् साहिबै मोको बतायो है मैं बनायकै नहीं कहौं हौं तामें प्रमाण "ज्ञानी बेगि जाहु संसारा। अमी शब्द करि जीव उबारा॥ पुरुष हुक्म जब जब मैं पावा। तब तब जीवको आनि चेतावा" गीतामें भी लिखा है "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समस्सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः। ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्" ॥ ५४ ॥

कबिरा जात पुकारिया, चढ़ि चन्दन की डार ॥
बाट लगाये ना लगै, फिरि का लेत हमार ५५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैं चन्दन की डार में चढ़िके कहे वह ब्रह्मके परे ह्वैके साहबके लोक को जान लग्यों तब मैं पुकार्यों और अबहूं पुकारौं हौं सो पीछे लिखि आये हैं कि बिरवा चन्दनते बासिजाइ है कछु चन्दन नहीं ह्वैजाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञान किये जीव शुद्ध ह्वैजाइहै कछु ब्रह्म न होइहै सो ब्रह्म जो है चन्दन तौनेकी डार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञान करिकै शुद्ध ह्वैके वाको जानिकै पुकार्यों हौं कि साहबके होउ ब्रह्मही में जनि अटकेरहौ इतनाही नहीं है साहब ब्रह्मके आगे है सो सबको मैं बाट लगावों हौं कि तुम साहब के होउ तुम हमारे लगाये उस राह में जो नहीं लगते हो तो हमारो कहाजाय है अथवा हम जौन चाल बतावैं हैं तौने चाल नहीं चलतेहो और हमारो फिर क्या लेतेहो कि हम कबीरपन्थी हैं सो लम्बी टोपी दीन्हे और बिना छिद्रको चन्दनदिये और बहुत साखी शब्दी कण्ठकरलिये हमारे फिरका न पावोगे मत को न पावोगे यम के धक्कातें न बचोगे तामें प्रमाण "हमारा गाया गावैगा। अजगैबी धक्का पावैगा॥ मेरा बूझा बूझैगा। सो तीनलोकमें सूझैगा १" कबीर की साखी शब्दी पढ़िके और वितण्डाबाद अनर्थ करनेलगे और परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूठ करनलगे आपने जीवै को सत्य करनलगे ते यम को धक्का पावै चाहैं और जे कबीर की साखी बूझिके और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अंश है जीव श्री रामचन्द्र याके रक्षक हैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीन लोक में सूझबई करैंगे काहेते उनके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तो बनेई हैं सर्वत्र रक्षा करिलेइ हैं ॥ ५५ ॥

सबतें सांचा है भला, जो सांचा दिल होइ ॥
सांच विना सुख नाहिंना; कोटि करै जो कोइ ५६

जो आपना साँचा दिल होइ तो सबते साँचे जे परमपुरुष

श्रीरामचन्द्र व उनहीं को अंश जीव है और उन्हीं को मैं साँचो दास हौं यह मत सबते साँच है सोई भला है सो यह साँच मत बिना सुख काहूको नहीं है कोटिन उपायकरै और श्रीरामचन्द्र सत्य हैं व जीव सत्य है व जीवको और श्रीरामचन्द्र को भेद सत्य है तामें प्रमाण "सत्यंभिदः सत्यंभिदः" इत्यादि और कबीरजी की साखिहूको प्रमाण "सत्य सत्य समरथ धनी, सत्य करो परकाश। सत्यलोक पहुँचावहू, छूटैभवकी आश" ॥ ५६ ॥

साँचा सौदा कीजिये, अपने मनमें जानि ॥
साँचे हीरा पाइये, झूठे मूरौ हानि ५७

आपने मन में पारिख कैलीजिये तब साँचा सौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते साँचे हीरा पाइये वही में कच्चे हीरा निकसै हैं तिनको छाँड़ि दीजिये ऐसे वेद पुराण खानि हैं तिनमें साहब को मत निकासि लीजिये यह साँचो सौदा कीजिये और मतन को त्यागि दीजिये काहेते झूठे मत में लागे आपनो स्वरूप जो है साहब को अन्तमूर ताकी हानि ह्वैजाय है अर्थात् भूलिजाय है ॥ ५७ ॥

सुकृत वचन मानै नहीं, आपुनकरै विचार ॥
कहैं कबीर पुकारिकै, सपन्यो गो संसार ५८

सुकृत साहब अथवा सुकृत सन्त अथवा सुकृत वचन जो मैं कहौ हौं कि साहब को भजन करो सो नहीं मानैहैं जो मन में आवै है सो विचार करै हैं सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि उन को स्वप्न्यो में संसार गयो अर्थात् स्वप्नेहू में संसार नहीं गयो यह काकु है ॥ ५८ ॥

लागी अग्नि समुद्र में, धुआँ प्रकट नहिं होइ ॥
की जानै जो जरिमुवा, की ज्यहि लाई होइ ५९

समुद्र में आगि बड़वाग्नि लगी है और वाको धुआँ नहीं प्रकट होइ है सो वाको सो जानै है जो वामें जरिजाय कि जाकी

वह बड़वाग्नि लाई कहे लगाई होइ सो जानै अर्थात् संसार में मायाब्रह्म की अग्नि लगिरही है ताको वही जानै जाको ज्ञान भयो होय या समझै कि मायाब्रह्म की अग्नि में हम जरेजाय हैं अथवा सो जानै जाकी अग्नि बनाई है संसार रच्यो है ॥ ५९ ॥

लाई लावनहार की, जाकी लाई परजरै ॥
बलिहारीलावनहारकी, छप्पर बाजै घरजरै ६०

यह अग्नि किसकी लगाई है ताके लायेते सगुण निर्गुण जे दोनों पर हैं ते जरेहैं और घर जे हैं पांचो शरीर ते जरिजात हैं तामें प्रमाण "अबतौ अनुभव अगिनिहि लागी। घेरि घेरि तन जारनलागी ॥ यह अनुभव हम कासों कहिये बूझै कोउ बैरागी॥ ज्यठरी लहुरी दोनों जरिया जरी कामकी बारी। अगम अगोचर समुझिपरै नहिं भयो अचम्भौ भारी ॥ सम्पतिजरी सम्पदा उबरी ब्रह्मअगिनिपसरी । कहै कबीर सुनोहो सन्तो बड़ी सो कुशल परी" ॥ ६० ॥

बुन्द जो परा समुद्र में, सो जानै सब कोइ ॥
समुद्र समाना बुन्द में, बूझै बिरला लोइ ६१

यह ब्रह्म ईश्वर माया आदि दैकै जो संसारसागर है तामें बुन्द जो जीव है सो पस्यो या सबै जानैहैं कि जीव संसारी है गयो है बेदशास्त्र में सर्वत्र लिखेहै अरु यह सिगरो संसारसमुद्र बुन्दरूप जीव में समायजाय है अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभव करिलियो है सो जब जीव या भांतिते अनुभव त्यागै कि बिषय इन्द्रिय में इन्द्रिय मनमें मन चित्त में चित्त प्राण में प्राण जीवात्मा में लीन कैदियो तब संसार सागर बुन्दरूप जीव में समायजाय है अर्थात् संसार मिटि जाय है जीव साहब को जानि जाय है ॥ ६१ ॥

जहर जिमींदै रोपिया, अमि सींचै सौबार ॥
कबिरा खलकै नातजै, जामें जौन बिचार ६२

ज़िमीं में ज़हर को थलहा दैकै जो बीज बोवै है सो वामें जो सैकड़ों बार अमृतौ सींचै तो वहि बीजा में ज़हर को असर आय-बोई करैगो तैसे यह खलक कहे संसार में माया की ज़िमीं है विषय को थलहा है ताते केतिकौ कोई उपदेश करै परन्तु माया को असर कबिरा जे जीव हैं तिनके आयही जाय है जोई बिचार आवै है सोई करै हैं सो संसार नहीं छोड़ैं ॥ ६२ ॥

दौकी डाही लाकरी, वाभी करै पुकार ॥
अबजोजाउँलोहारघर, डाहै दूजीबार ६३

दावानल की डाही कहे जरी जो लकरी है सोई लाई भई वहै पुकारिकै कहै है कि अब जो लोहार के घर जाउँ तो दूजी बार लोहार मोको डाहै कहे जारै सो दावाग्नि जो है ब्रह्माग्नि तौने ते जो सम्पूर्ण कर्म जरिछुगे तो कोयला रहिजाय है कहे वहै कैवल्य शरीर रहिजाय है सो कहैहै कि जो अब लोहार जे सतगुरु हैं तिनके इहां जाउँ तो कैवल्यौ शरीर छूटै मुक्त ह्वैजाउँ अर्थात् जो साहब को न जान्यों और कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात् सब संसारही में आवैहैं जो कैवल्य शरीर छूटै तो हंस शरीर ते मुक्त ह्वैजाय काहेते कर्मन के जरे कैवल्य शरीर नहीं छूटै है ॥ ६३ ॥

बिरह कि ओदी लाकरी, सपचै औ गुंगुआय ॥
दुखते तबहीं बाचिहौ, जब सगरो जरिजाय ६४

बिरहकी जरी लाकरी है अर्थात् याको साहब को बिरहभयो है सो वह बिरहते ओदी है याहीते सपचै है और गुंगुआय है नाना दुःख पावै है सो जब पांचौ शरीर जरिजाय हैं हंस शरीर पाय साहब के पास जाय है तब दुःखते बचै है जो कहो इहां तो सगरो शरीर को जरिजायबो कह्यो हंस शरीर को जरिबो काहे न कह्यो तो हंस शरीर याको न होय वा साहब के दिये मिलै है त्यहिते याही के पांचौ शरीर जब जरैहैं तब सतई जगह भूमिका

ते नांघिकै आठई भूमिका में जाय है तब चितमात्र रहिजाय है तब साहब हंस शरीर देइ हैं तामें टिकिकै साहब के पास जाय है सो पाछे लिखि आये हैं ॥ ६४ ॥

बिरहबाण ज्यहि लागिया, औषध लगत न ताहि ॥
सुसुकिसुसुकिमरिमरिजियै; उठै कराहि कराहि ६५

साहब को बिरहरूपी बाण जाके लग्यो अर्थात् जिनको यह जानि पस्यो कि हमते साहब ते बिछोह ह्वैगयो है ते बिरहवारेन को ज्ञान योगादिक औषध नहीं लगैहै बिरहबाणाग्नि ते तप्त जरै है मरि मरि जियै है या जो कह्यो सो बिरहाग्नि ते जरै है स्थूल शरीर को जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीर में जियो जब सूक्ष्म शरीर छूट्यो तब कारण शरीर में जियो जब कारण शरीर छूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियो जब महाकारण शरीर छूट्यो तब कैवल्य शरीर में जियो यही मरिमरि जीबो है और तहौं कराहि कराहि उठै है कहे एको शरीर नहीं आछे लगै हैं ॥ ६५ ॥

सांचा शब्द कबीरका, हृदया देखु बिचार ॥
चितदै समझै मोहिं नहिं, कहत भयल युगचार ६६

साहब कहै हैं कि साँचा शब्द जो कबीर का रामनाम ताको हृदय में बिचारिकै देखु तो तैं चित्त दैकै नहीं समझै है मोको चारों युग वेद शास्त्र में कहतभयो और कबीर जे हैं तेऊ चारोंयुग में कहत आये हैं सतयुग में सत्य सुकृत नाम ते त्रेता में मुनीन्द्र नामते द्वापर में करुणामय नामते और कलियुग में कबीर नाम ते एक रामनामै को उपदेश कियो सो जो तैं वह रामनाम को जानते तो तेरे समीप मोको आवनपरतो हंस शरीर दै अपने पास लै आवतो ॥ ६६ ॥

जो तू साँचा बानियाँ, साँची हाट लगाउ ॥
अन्दर में झारू को दैकै, कूरा दूरि बहाउ ६७

हे जीव! जो तैं अपने स्वरूपको चीन्है तो तैं साँचा बानियाँ है

सो साँची हाट लगाउ कहे साँचे जे साहब तिनको जानु और उनके नामरूप लीलाधाम सब साँचे हैं तिनकी हाट लगाउ कहे स्मरण करु और अन्दर में झारू दैके बिषयबासना और नानामत जे कूरा हैं तिनको दूरि बहाय दे तू साँचाहै साहब को है असाँचेन मा न लागु ॥ ६७ ॥

कोठी तो है काठकी, ढिग ढिग दीन्ही आगि ॥
पण्डित तो झोला भये, साकठ उबरे भागि ६८

कोठी जे हैं चार्‌यो शरीर तेतो काठकी हैं जरनवारी हैं ज्ञानाग्नि ढिग ढिग उनके लगीहै वेद,शास्त्र, पुराण साहब को बतावै हैं सो जे पण्डित रहे ते सारासारको बिचारकर साहब जे सार तिनको जान्यो ते उस अग्नि में परिकै झोला ह्वैगये कहे उनके सब शरीर जरिगये अर्थात् संसार ते मुक्त ह्वैगये और साकठ जे हैं शाक्त ते भागिकै उबरे कहे जो वेद शास्त्र साहबको प्रतिपादन करैहै ताके डांड़े नहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसार में परे माया में लपटे हैं मायैको स्मरण करन लगे ॥ ६८ ॥

सावन केरा मेहरा, बुन्द परा असमान ॥
सबदुनिया वैष्णव भई, गुरू न लाग्यो कान ६९

जैसे श्रावण के मेह को आसमान बुन्द परे है तैसे सब दुनिया वैष्णव होतभई सब बीजमन्त्र लेतभये जैसे लोकमें को गुरु हज़ारन चेला एकैबार बैठायकै मन्त्र गोहराय देय हैं याही भांति श्रावणकैसो मेह सबको मन्त्र देइ हैं चेला मन्त्र लेइहैं याही रीति गुरुवालोग उपदेश करत भये कोटिन वैष्णव होत भये गुरु कबै कान लग्यो अर्थात् नहीं लग्यो अरु गुरु तो वाको कहै हैं जो अज्ञान को नाशकरे सो जो चेला को अज्ञान न नाश भयो तो गुरु चेला दोऊ नरक को जाय हैं तामें प्रमाण " हरै शिष्य धन शोक न हरहीं । ते गुरु घोरनरकमहँ परहीं " सो जो वो चेला को अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु है और जौन

गुरुते ज्ञान ले अज्ञान न नाश कियो तो वह कौन चेला है अर्थात् वह गुरु नहीं है कायर क्रूर है और वह चेला नहीं है टूटमसखरा है और जो अज्ञान को नाशै सोई गुरुहै तामें प्रमाण "अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः" और जो संसार दूरि नहीं करैहै सो गुरु नहीं है तामें प्रमाण "गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात् पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्। दैवन्न तत्स्यान्नृपतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम्" श्रीकबीरजीकी गुरुपारख अङ्ग की साखी "गुरू सीख देवे नहीं, चेला गहै न खूट। लोकवेदभावे नहीं, गुरु शिष्यकायरटूट" ॥ ६९ ॥

ढिग बूड़ा उसला नहीं, यहै अँदेशा मोहिं ॥
सलिल मोहकी धार में, क्या नींद आई तोहिं ७०

साहब कहै हैं कि हे जीवो! तुम सब संसारसागर के तीरही में बूड़िगये एकहू बार न उसले यहै मोको अँदेशा है या संसार-सागर के मोहरूपी सलिलधार में क्या तोको नींद आई है भला एक बार तो मूड़निकासि उसलि मोको पुकारतो तो मैं तोको पारही लगावतो सर्वत्र पूर्ण मैं बनो हौं तैं मेरे ढिगही बूड़ोजातो है अबहूं जो जान तो मैं पारही लगाय देहुँ ॥ ७० ॥

साखी कहैं गहैं नहीं, चाल चली नहिं जाय ॥
सलिल मोहनदिया बहै, पांय नहीं ठहराय ७१

कबीरजी कहै हैं कि साखी तो कहैहैं और जो मैं साखी कही है ताको गहैं नहीं हैं वाको बिचारै नहीं हैं और जो मैं चाल लिख्यो है सोऊ नहीं चली जाय संसाररूपी नदिया में मोहरूपी सलिल बहैहै तामें पांवें नहीं ठहराय जीव बिचारा क्या करै? या साहब सों अर्जकै जीवको क्षमापन करावै है ॥ ७१ ॥

कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ ॥
सो कहता बहिजानदे, जो नहिं गहता होइ ७२

साहब कहै हैं याही भांति कहता तो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलै है सो जो कोई गहता न होइ ताको तैं बहिजानदे तोको कहापरी है ॥ ७२ ॥

एक एक निरवारिया, जो निरवारी जाय ॥
दुइदुइ मुखको बोलना, घने तमाचा खाय ७३

तामें पुनि कबीरजी कहै हैं कि हे साहब ! याको जीव को दोष नहीं है एक २ जो निरवारतो तो वेद शास्त्र ते याको निरवार ह्वै जातो अर्थात् जो एकमालिक आपही ठहराय देतो तो जीव गहि लेतो दुइ दुइ मुखको बोलना बेद शास्त्र को अर्थात् कहीं ब्रह्म को कहीं ईश्वर को कहीं जीव को कहीं काल को कहीं कर्म को कहीं मालिक बतायो सो या दुइ मुख के बोलते जीव घने तमाचा खाय है तुमको नहीं जानिसकै ॥ ७३ ॥

जिह्वा को दै बन्धनै, बहुबोलना निवारि ॥
सो परखी सों संग करु, गुरुमुखशब्दविचारि ७४

सो कबीरजी कहै हैं कि हे जीव ! मैं साहबसों बिनती करि लियो है सो तुम यह राह चलो तुम्हारो उबार साहब करिलेइगो आपनी जिह्वा बन्धन करो असत् वाक्य न बोलने पावे एक राम नामहीं कहो और नाना मत जो कहौहौ सो कहिबो निवारि देउ व जौन सब मतनते पारिख करिकै साहबको ठहरायो होय ऐसे पारखी को संग करु और गुरुमुख जो शब्द है ताको तू बिचार करु काहे ते साहब या कह्यो है "अबहूं लेहुँ छुड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारै" सो तैं सुरति सँभारि साहब में लगाय दे अनत न जान दे साहब तो को संसारसागर ते उबारिही लेइँगे ॥ ७४ ॥

जाकी जिह्वा बन्द नहिं, हृदया नाहीं सांच ॥
ताके संग न लागिया, घालै बटिया कांच ७५

जाकी जिह्वा बन्द नहीं है जौने मत को चाहै तौनेन मत को

प्रतिपादन करै हैं और जिन के हृदय में साहब के नाम रूपादिक नहीं हैं तिन के संग कबहूं न लागिये वे कहे हैं उनके संग लागेते संसार में परौगे ॥ ७५ ॥

पानी तो जिह्वै ढिंगै, क्षण क्षण बोल कुबोल ॥
मनघाले भरमत फिरै, काल देत हिंडोल ७६

पानीरूप जो बानी है सो याके जीभ के ढिगै है छिन छिन में कुबोलई बोल बोलै है असत्‌बाणी बोलि २ बानीरूप पानी में बूड़ि गयो अथवा ब्रह्ममाया की आगी बुझावनवारो पानी याके जीभ ही के ढिग है सो नहीं कहै है छिन छिन कुबोल ही बोलै है सो मतके घाले कहे फेरि संसारमें भरमत फिरै है काल जो है सो याको हिंडोलरूप शरीर दिया है सो झूलत फिरै है कबहूं मानुष होय है कबहूं पशु पक्षी इत्यादिक शरीर धारण करै है ॥ ७६ ॥

हिलगैं भाल शरीर में, तीर रही है टूटि ॥
चुम्बक बिन निकसैं नहीं, कोटि पहन गये फूटि ७७

जिन मतन में श्रीरघुनाथजी नहीं मिलै हैं तेई मतन के बाण याके लगेहैं नाना कुमतिरूपी गाँसी याके अटकी हैं सो रामनाम चुम्बक बिना वे नहीं निकसै हैं ॥ ७७ ॥

आगे सीढ़ी साँकरी, पाछे चकना चूर ॥
परदा तर की सुन्दरी, रही धका दै दूर ७८

साहब के यहां की गैल बहुत साँकरी है कोई कोई पावै है और पाछे संसार में गिरै तो चकनाचूर ह्वैजाय परदा तरकी सुन्दरी जो माया सो जो कोई साहबसों लगन लगावन लागै है ताको धक्का देइ है और जो कोई साहब के सम्मुख भयो वह राह चढ्यो तेहिते दूरि रहै है धुनि याहै कि जो वाके जायगी तो गैल साँकरी है दूसरे की समाई नहीं है पीसि जायगी यह डरै है ॥७८॥

संसारी समय बिचारिया, क्या गिरही क्या योग ॥

अवसर मारो जात है, चेतु बिराने लोग ७९

क्या गिरही कहे गृहस्थ और क्या योगवारे कहे योगी ज्ञानीते श्रीरामचन्द्रको छोड़ि छोड़ि और और साहब बिचारैहैं ते सब संसारी समय बिचारते हैं परमारथ कोई नहीं बिचारै हैं अर्थात् संसारही में रहे हैं अर्थात् आपने इष्टदेवतन के लोक गये अथवा ब्रह्म में लीन भये ज्योतिमें लीन भये पुनि संसारमें आय गये सो हे जीव ! तैं बिराना है साहब को है और काहू को नहीं है और मतन में लागे तैं न छूटै गो जौन जाको होय है तौन ताही के छुड़ाये छूटै है सो या मानुषशरीर पायकै अवसर मारो जाय है चेतु तौ तैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को है तिनहीं के छुड़ाये संसार ते छूटैगो और संसारी देवतन को कहापरी है जो आपने ते छुड़ाय कै संसारते छुड़ावैंगे वे तो और संसार ही में डारैंगे ॥ ७९ ॥

संशय सब जग खंधिया, संशय खँधै न कोय ॥
संशय खंधै सो जना, जो शब्दाबिबेकी होय ८०

संशय जो है मनको संकल्प-बिकल्प सो सब जगको खँधाइ लियो है कहे फंदाय लियो है और संशय जो है मन को संकल्प बिकल्प ताको कोई नहीं खँधिसकै है अर्थात् मनको संकल्प-बिकल्प काहूको नहीं छूटै है जो साहब के शब्द राम नाम को अर्थ बिचारत रहैहै सोई संशयको खँधिसकै है अर्थात् ताहीके मनको संकल्प बिकल्प छूटैहै संशय छूटिबे को उपाय याहीमें है ॥ ८० ॥

बोलना है बहुभाँतिके, नयन कछू नहिं सूझ ॥
कहै कबीर बिचारिकै, घट घट बाणी बूझ ८१

सो बोलना तो बहुत प्रकार के हैं कहे बहुत प्रकार के शब्द हैं बहुतप्रकार के मत हैं तिन मतनमें ज्ञाननयनते सार पदार्थ जो जनन मरण छुड़ावे सो कछू न सूझतभयो सो कबीरजी कहै हैं कि तैं बिचारिकै तो देखु ये जे बाणी ते नाना मत घट घटते निकसै हैं ते मनैके संकल्प बिकल्पते हैं सो तौनेते संकल्प बिकल्प

मनको कैसे छूटैगो येतो मन बचन में है वह घट घटकी बाणी तो झूठ की कहांते निकसी है वह बाणी को मूल और मन बचन के परे ऐसो जो रामनाम ताको बिचार करि जानैगो तबहीं छूटैगो यह सब बाणी को मूल रेफ है सो नाभिस्थान में है तहाँते बाणी उठै है सो जो मूल है सो तो साहब को बतावै है रामनामही प्रथम प्रकट करै है और मूलाधारचक्र में मूल जो रामनाम है मन बचन के परे त्यहिते जो अनुसार भयो बाणी को ताहीको आभास परा बाणी प्रकट भई रेफ ताहीते अकार जब जोस्यो तब रकाररूप हृदय में पश्यन्ती प्रकट होइहै और फेरि जब एक अकार और आयो तब कण्ठ में मध्यमा प्रकट होइहै और पुनि जब बैखरी में एक अकार और प्रकट भयो जब ओठलग्यो तब व्यञ्जन मकार भई तब वहै मन बचन के परे रामनाम सो आपनै रूप को आभास बैखरी में प्रकट करै है सोई प्रथम कबीर लिख्यो कि "रामनाम लै उचरी बाणी" सो प्रथम याको प्रतिलोमक्रमते जप करत चारिउ बाणीको स्वरूप जानै और फेरि अनुलोमक्रमते रामनाम को उच्चार करै घण्टानादवत् या भांतिते जो जप करै तो मन बचनके परे जो रामनाम ताको आभास जो रामनाम है सो प्रथम याही को लै कै बाणी उचरी है फेरि प्रणवादिक मन्त्रभये हैं यही घट घट बाणी को मूल तैं बूझ और मन बचनते परे जे साहब हैं तिनको पाय जाय सो या भांतिते बाणी को मूल जो तैं घट घट में बिचारै तो ये सब बाणी ऊपरते नाना मत नाना सिद्धान्त कहै हैं याको मूल सिद्धान्त तो साहिबै को बतावै है त्यहिते चारो वेद छः शास्त्र तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्र ही को बतावै हैं सो मेरे सर्वसिद्धान्तग्रन्थ में प्रसिद्ध है ॥ ८१ ॥

मूल गहे ते काम है, तू मति भर्म भुलाय ॥
मनसापर मनलहरि है, बहि कतहूं मति जाय ८२ ॥

मन जो है सोई समुद्र है मनसा कहे मनोरथ ताकी लहरि

में बहिकै तैं मति जा अर्थात् मनको संकल्प बिकल्प छोड़ि दे नानाबाणी नानामत में तैं न भूलिजाय मूल जो रामनाम ताही को ग्रहण करु याही के गहेते तेरो उबार होइगो संसार छूटैगो ॥ ८२ ॥

भँवर बिलम्बै बागमें, बहुफुलवनकी आश ॥
जीव बिलम्बै विषयमें, अन्तहु चलै निराश ८३

जैसे भँवर बाग में बहुत फूलन की आश करिके बिलँबै है तैसे जीव संसार में बहुत विषय की आश कै पस्यो सो ऐसो फूल न भ्रमर पायो कि एकै फूल सूंघेते सन्तोष ह्वैजाय और न ऐसो वि-षय जीवही पायो कि जामें संतुष्ट ह्वैजाय अर्थात् विषयसुख जीव कियो परन्तु अन्तमें निराश ही ह्वैजाय है सो प्रकटही है वह सुख नहीं रहि जायहै परन्तु मूढ़ जीव नहीं छोड़ै है ॥ ८३ ॥

भँवरजाल बगुजाल है, बूड़े जीव अनेक ॥
कह कबीर ते बाचि हैं, जिनके हृदय बिबेक ८४

भ्रमरजाल जो है संसारसागर के विषय को भौंता सो कैसे हैं कि बकुला जे जीव हैं तिनके बोरिबे को जाल है तामें बहुत जीव बूड़ि गये सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके हृदय में बिबेक है असार बाणी को छोड़िकै सार जो रामनामरूपी जहाज ताको बिबेक करि गहिलियो है तेई संसारसागर के पार जाइ हैं ॥ ८४ ॥

तीनि लोक टीड़ी भई, उड़िया मन के साथ ॥
हरिजन हरि जाने बिना, परे काल के हाथ ८५

टीड़ीके जब पखना जामा तब जहँ जाइ है तहँ मारिही जाय है सो तीनि लोक के जीवन के मनरूपी पखना जामे सो जहां जाय हैं तहां मारिही जाय हैं सो हैं तो ये हरिके जन हरिके अंश पै अपनो स्वामी और रक्षक हरि जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके क्लेश हरनेवाले तिनके बिना जाने काल के हाथ में परे और मन के साथ

उड़े हैं सो मरतमें जहँ मन जाय है तौने रूप ह्वै जाय है तामें प्रमाण "अन्ते या मतिः सा गतिः" और कबीरहू को प्रमाण "जाकी सुरति लागिहै जहँवां । कहै कबीर सो पहुँचै तहँवां" ॥ ८५ ॥

नाना रङ्ग तरङ्ग हैं, मन मकरन्द असूझ ॥
कहै कबीर पुकारिकै, अकिलकला लै बूझ ८६

संकल्प बिकल्परूप नानारङ्ग की हैं तरङ्गें जामें ऐसो जो मन तामें काहेते तरङ्ग उठै है कि मकरन्द जो विषय रस ताको पान करिकै मतवालो ह्वै गयो है सो जो मतवालो होय है सो और को और करै चाहै सो कबीरजी पुकारि कै कहै हैं कि अकिल जो बुद्धि तामें निश्चय करिकै कला जो है रेफ अर्धमात्रा ताको लैकै बूझ अर्थात् वही अर्धमात्रा में स्थित की विधि पाछे लिखि आये हैं अथवा नानारङ्ग की जामें तरङ्ग उठती हैं ऐसा जो मकरन्द पुष्परस कहावै है सो महुवाके फूलका रस मदिरा समुद्र मन सो असूझ कहे अपार है वारपार नहीं सूझि परै है सो कहां ते मनरूपी मद भर्‌यो है सो अपनी अकिलते कहे बुद्धि ते वह कलाल कहे कलार को तो बूझ ॥ ८६ ॥

बाजीगरका बन्दरा, ऐसा जिउ मनसाथ ॥
नाना नाच नचायकै, राखै अपने हाथ ८७
ये मन चञ्चल चोरई, ई मन शुद्ध ठगार ॥
मनकरि सुरमुनि जहड़िया, मनके लक्ष दुवार ८८
बिरहभुवंगम तन डसा, मन्त्र न मानै कोइ ॥
रामबियोगी ना जियै, जियै सो बाउर होइ ८९

ये दूनों साखिन को अर्थ स्पष्टई है ८७ । ८८ बिरहभुवंगम कहे जिनको साहब की अप्राप्ति है तिन जीवन को अज्ञान भुवंगम डस्यो है ताते ज्ञानभक्ति वैराग्य योग ये मन्त्र नहीं मानै हैं काहे ते कि जिनमें साहब को ज्ञान नहीं है तें भक्ति वैराग्य ते

विमुख है सो कबीरजी कहै हैं कि राम के बियोगी जे जीव हैं ते जिये नहीं हैं विषय में लागे हैं काल उनको खाय लेइहै और जे योग करिकै वैराग्य करिकै भक्ति करिकै जियैहैं विषय छाँड़िकै संसार को छोड़ै हैं ते बाउर ह्वैजाय हैं कहे बहुतदिन जीबो किये ब्रह्महू में लीन भये तौ पुनि संसार में तो आवही करैंगे काहेते कि अपने स्वामी को तो चीन्हबही न किये अर्थात् बैकल ह्वैगये हैं जो बैकलाय है सो और को और करै है यथार्थ बात नहीं करै है ॥ ८६ ॥

रामबियोगी बिकलतनं, जनिदुखओइनकोइ ॥
छूवत ही मरि जायँगे, तालाबेली होइ ६० ॥

श्री कबीरजी गुरुवालोगनते कहै हैं जे साहब के बियोगी जीव ह्वैरहे हैं तिनको तुम काहे दुखावते हो अर्थात् नानामतनमें नाना उपासना में काहे भटकावते हो जरे में लोन मींजतेहो इनके भीतर आपहीते तालाबेली परिरही है नानामत खोजैहैं ये छुवतही मरिजायँगे अर्थात् धोखाब्रह्म उपदेश देतै में गहिलेइँगे सो अबै तो भला बद्ध भरि हैं नित्यबद्ध नहीं हैं जो कहूं साधुते भेंट ह्वै जाय तो उबारहू ह्वैजाय जब धोखाब्रह्म में लागैगो तब वाको न छाँड़ैगो साहब को मत खण्डन करैगो सो तुम ऐसे मरेन को काहे मारौ हौ ॥ ६० ॥

बिरहभुवंगम पैठिकै, कीन करेजे घाव ॥
साधु न अङ्गनमोरिहै, जब भावै तब खाव ६१

बिरहरूपी भुवंगम कहे साहब को अप्राप्तरूपी जो भुवंगमहै सो पैठिकै करेजमें घाव करतभयो अर्थात् साहबते बिमुख संसारी ह्वैगये अथवा गुरुवालोग नानामत नाना उपासना बताय करेजमें घाव करिदिये हैं अर्थात् साहब ते बिमुख करिदिये सो जेतो असाधु रहे तेतो मारे परे और जे कौनेहू जन्ममें साहबको पुकार्‌यो है उपासना कियो है सो साधु कबहूं न अङ्ग मोरैगो

वाकी पूर्ववासना साहबमें बढ़तही जायगी आखिर साहबको जानि साहबके पास पहुँचैगो वे गुरुवनके लगाये धोखा में कबहूं न लागेगो काल उनको जब चाहै तब खाय वे जब जन्म धरैंगे तब साहिबै की उपासना करैंगे उपासना सिद्धकरि साहबके पास पहुँचैंगे तामें प्रमाण "भक्ति बीज पलटै नहीं, जो युग जाहिं अनन्त। नीच ऊंच घर अवतरै, होय सन्तको सन्त" इति चौरासी अङ्गकी साखी समाप्तम् ॥ ६१ ॥

करक करेजे गड़िरही, बचन बृक्षकी फाँस॥
निकसाये निकसै नहीं, रहीसो काहू गाँस ६२

सब जीव को साहब के अप्राप्त की करक कहे पीड़ा गड़ि रही है कहे गुरुवन के बैन बृक्ष की फाँस को लगोड़ छोलिकै काठके बाण बनावै है ताकी फाँस अथवा बृक्ष ते शर इव आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरही है सो निकासे ते नहीं निकसै है अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखाब्रह्म में लगाय दिये हैं ते पलटाये नहीं पलटै हैं वाही को गहै हैं काहूके तो बाणसहित गाँसी के अटकी रहै हैं ते वही ब्रह्म को प्रतिपादन करै हैं सत् मतको खण्डन करै हैं और वे जे ऊपरते बेष बनाये हैं भीतर धोखाब्रह्मही घुसो है तिनके भीतर करेजे में गाँसिही भर अटकी है तामें प्रमाण "अन्तश्शाक्ता बहिश्शैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः। नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले" अथवा गुरुवालोग जो और और देवतन की मत सुनायोहै सोई उनके अन्तःकरण में जाइकै अज्ञानरूपी बृक्ष जाम्यो है तौने की कुमतिरूपी फाँस याके करेजे में गड़िरही है सो वह करक कहे जनन मरण रोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उपदेश कोई करै सो कबीरजी कहै हैं कि काहू गुरुवन की यह जीव के कहा गाँस कहे बैर रह्यो है जो ऐसी फाँस मारयो है जो अब लौं निकासी नहीं निकसै ॥ ६२ ॥

कालसर्प शरीर में, सबजग खाइसि झारि ॥
बिरलै जन बचिहैं जोई, रामहिं भजैं बिचारि ६३

कालरूप जो सर्प सो सबजीवन के शरीर में बसै है शरीर के साथै उत्पन्न भयो है जेती अवस्था जायहै तेती काल खातोजाय है जब आयुर्दाय पूरिगई तब सब काल खायलियो याही भाँति सब जगत् को काल झारा दै खायेलेइहै जे सबमत को छोड़ि परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को बिचारिकै भजै हैं तेई बिरलै बाचै हैं तामें प्रमाण कबीरजी को पद "सन्तौ रामनाम जो पावैं। तौ वे बहुरि न भवजल आवैं॥ जङ्गमतो सिद्धिहिको धावैं। निशिबासर-शिव ध्यान लगावैं॥ शिव शिव करत गये शिवद्वारा। रामरहे उनहूंते न्यारा॥ पण्डित चारिउ वेद बखानैं। पढ़ैं गुनैं कछु भेद न आनैं॥ सन्ध्या तर्पण नेम अचारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ सिद्ध एक जो दूध अधारा। काम क्रोध नहिं तजै बिकारा॥ खोजत फिरैं राजको द्वारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ बैरागी बहुवेष बनावैं। करमधरमकी युगुति लगावैं॥घण्ट बजाय करैं झनकारा। राम रहे उनहूं ते न्यारा॥ जङ्गमजीव कबौं नहिं मारैं।पढ़ैं गुनैं नहिं नाम उचारैं॥ कायहिको थापैं करतारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ योगी एक योग चित धरहीं। उलटे पवन साधना करहीं॥ योग युगुति लै मनमें धारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ तपसी एक जो तनको दहई। बस्ती त्यागि जँगल में रहई॥ कन्दमूलफल कर आहारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ मौनी एक जो मौन रहावैं। और गाउँमें धुनी लगावैं॥ दूध पूत दै चले लबारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ यती एक बहुयुगुति बनावैं। पेट कारणे जटाब-ढ़ावैं॥ निशिबासर जो कर हङ्कारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ प-कर लैं जियजबेकराहीं। मुखते सबतर खुदा कहाहीं॥ लै कुतका कहैं दम्ममदारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ कहै कबीर सुनो टक-सारा। सारशब्द हम प्रकटपुकारा॥ जो नहिं मानहिं कहा हमारा। राम रहे उनहूंते न्यारा" ॥ ६३ ॥

काल खड़ा शिर ऊपरे, जाग बिराने मीत ॥
जाको घर है गैल में, क्या सोवै निश्चीत ९४

जाको घर गैलमें होइहै सो बेगारि धरिहीजायहै सो हे जीव! तेरे ऊपर काल खड़ा है तैं कैसे निश्चिन्त ह्वैकै बेखबरि सोवै है तुहूं बेगारि धरो जायगो ताते चेत करु तैंतो बिराना मीतहै अर्थात् तैंतो साहबको मीतहै से जागु बेगारि न धरिजायगो ॥ ९४ ॥

कायाकाठीकालघन, यतन यतनसों खाय ॥
कायाम्मध्ये कालबस, मर्म न कोऊ पाय ९५

यह कायारूपी काठ में कालरूप घुन लग्यो है सो यतन यतनसों लव निमेष परिणाम युग वर्ष कल्प करिकै पिण्डाण्डहू को ब्रह्माण्डहूको खाइलेइ है सो जे शरीर धारण किये हैं तिनके शरीरही में काल बसै है कहै हैं कि हम दश बर्ष के भये बीस बर्ष के भये यह नहीं जानै हैं कि यह काल हमारी एती अवस्था खाय लियो ॥ ९५ ॥

मनमाया की कोठरी, तन संशय का कोट ॥
बिषहरमन्त्रनमानहीं, कालसर्पकी चोट ९६

मनमायाकी कोठरी तन संशय का कोट है तामें परो जो है जीव ताको काल सर्पकी चोट भई है कहे कालरूपी सर्पशरीरको डस्यो है सो बिषहर कहे बिष के हरनवारे जे ज्ञान योग बैराग्य मन्त्र हैं तिनको नहीं मानै हैं अर्थात् मणिते बिष उतरि जाय है सो रामनाम जो बिष हरनवाली मणि ताको नहीं जानै हैं जाते कालरूपी सर्पको बिष उतरिजाय तामें प्रमाण गोसाईंजी को "मन्त्रमहामणिबिषयब्यालके।मेटतकठिनकुअङ्कभालके" ॥ ९६ ॥

मनमाया तो एकहै, माया मनहिं समाय ॥
तीनिलोक संशयपरी, काहि कहौं बिलगाय ९७

यह माया मन में समानी है मन माया एकही ह्वै गई है सो

यह मनमाया साहब को भुलाय दियो है ताते तीनलोक में काल की संशय परीहै काल के छूटिबे को सब उपाय करैहैं परन्तु छूटै नहीं है मैं काको बिलगाय कै कहौं कि यह मनमाया को छोड़ि कै साहब को जानो कालते छोड़ावनवारे कालहू के काल साहिब ही हैं उनहीं को काल डेराय है तामें प्रमाण कबीरजी को "कह कबीर कालहु कर काला। है दारुण बड़ काल कराला" यह ज्ञानसागरकी साखी है ॥ और साहिबको काल डेराय है तामें प्रमाण "यद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति यद्भयात्। वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निर्मृत्युर्धावति यद्भयात्" (इति भागवते) ॥ ९७ ॥

बारी दीन्ह्यो खेत में, बारी खेतहि खाय ॥
तीनिलोक संशयपरी, काहिकहौं समुझाय ९८

खेतकी रखवारीवारे बारी रूँधिजाय हैं सो जो बारिही खेत को खाय तो काकरैं तैसे ज्ञानयोग बैराग्य ब्रह्मभावना जीव की रक्षा करिबे को बतायो सो जो ब्रह्मही में लीन ह्वै संसार में परें तो जीव कहा करै सो यह संशयरूप जो धोखाब्रह्म सो तीनोंलोक में है मैं काको काको समुझाऊं कि तुम धोखा में न जाउ संशय जो है धोखाब्रह्म सोई खेत चरे लेइहै तामें प्रमाण कबीरजी की परिचयकी साखी "शब्द विषय कहि ब्रह्मऊ, गुरुवन कीन्ह्यो फेर। मातु सुतै बिषदेइ जो, का बस बालककेर" ॥ ९८ ॥

मनसायर मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक ॥
कह कबीरतेइबाचिहैं, जिनके हृदय बिबेक ९९

मनसायर जो है मनको समुद्र तौनेमें मनसा की लहरि जोहै मनको अनुभव धोखाब्रह्म सो ये दुनहुंन में परिकै केतो बूड़िगये केतो बाहिगये सो कबीरजी कहे हैं कि जिनके हृदय में विबेक है साहब में लगे हैं तेई बाचे हैं ॥ ९९ ॥

सायरबुद्धि बनायकै, बायुबिचक्षण चोर ॥

सारी दुनिया जहड़िगै, कोई न लाग्यो ठौर १००

सायर जो है संसारसमुद्र तामें बुद्धि बनायकै कहे बुद्धि को निश्चय करिकै वायुबिचक्षण जो है बैहर ताहूते चञ्चल जो चोर-रूपी मन ताको संङ्ग करिकै सबदुनिया जहड़िगई कहे बिगरिगई कोई न ठौरमें लागतभये अर्थात् कोई न साहब के पास पहुँचत भये. मन वायुते चञ्चल है तामें प्रमाण कबीरजी को "पानी ते अति पातला, धूवाँते अतिभीन। पवनहुँते अति ऊतला, तेहि मित्र कबीरा कीन" ॥ १०० ॥

मानुष ह्वैकै ना मुवा, मुवा सो डाँगर ढोर ॥
एकोजीवठौर नहिं लाग्यो, भया सो हाथी घोर १०१

जो कोई साहबके पास पहुँचै सोई मानुष है अर्थात् साहब द्विभुज हैं यहो द्विभुज ह्वैकै साहब के पास जाइ है और कबहूं मरै नहीं है सो साहब के जाननवारे नहीं मरैं या पीछे लिखि आये हैं और जे साहब को नहीं जानै हैं तेई मरै हैं ते वे डाँगर ढोर हैं ते मानुष नहीं हैं अर्थात् पशु हैं एको ठौर में नहीं लागै हैं कहे साहब के पास नहीं पहुँचै हैं हाथी घोर इत्यादिक नाना योनि में भटकै हैं ॥ १०१ ॥

मानुष तैं बड़पापिया, अक्षर गुरुहि न मानि ॥
बारबार बन कूकुही, गर्भ धरे चौखानि १०२

हे मानुष ! तैंतो श्रीरामचन्द्र को अंश है तेरो स्वरूप मानुष को है सो तैं बड़ो पापी ह्वै गयो काहे ते कि साहब तोको बारबार गोहरायो कि तैं मेरो है मेरे पास आउ सो उनके कहे अक्षर न मान्यो आज्ञाभङ्ग कियो तौने पापते बारबार जो बनकी कूकुही कहे मुर्गी तिनके कैसो गर्भ चारिउ खानि के जीवन में परिकै परिवार के पालन पोषण में लागिकै पुनि पुनि जन्म धरत भयो नाना दुःख सहत भयो इहां मुर्गी याते कह्यो है कि बच्चा बहुत होय हैं ॥ १०२ ॥

मनुष बिचारा क्याकरै, कहे न खुलें कपाट ॥
श्वान चौक बैठायकै, पुनि पुनि ऐपन चाट १०३

वेद, शास्त्र, पुराण इनके कहे जो कपाट नहीं खुले हैं अर्थात् ज्ञान नहीं होय है तो मानुष बिचारा क्या करै प्रथम साहब को कह्यो नहीं मान्यो याते मानुष पशुवत् ह्वै गयो अज्ञान घेरे है सो जो कूकुर कुकुरिया को बिवाह करै चौक में बैठाइये तौ वे पुनि पुनि ऐपनै चाटै हैं तैसे जीवन को पशुवत् ज्ञान ह्वै गयो है फेरि फेरि वही बिषयमें लागेहैं साहबकी ओर नहीं लागेहैं ॥१०३॥

मनुष बिचारा क्या करै, जाके शून्य शरीर ॥
जो जिउ झाँकि न ऊपजै, काहि पुकार कबीर १०४

या मानुष बिचारा क्या करै जाके शरीर में शून्य जो धोखा ब्रह्म सो समायरह्यो है सो धोखाब्रह्म को झांकिउ कहे देखिउ चुक्यो कि इहां कुछ बस्तु नहीं है और साहबको ज्ञान न उपज्यो तो कबीरजी कहैहैं कि मैं काको पुकारौं वह तो बड़ो अज्ञानी है बूड़िगयो जो प्रत्यक्ष देखो नहीं मानै है कि यह शून्यही है यामें कछू न मिलैगो तो मेरो कह्यो कैसे सुनैगो ॥ १०४ ॥

मानुष जन्महिं पायकै, चूकै अबकी घात ॥
जायपरै भवचक्र में, सहै घनेरी लात १०५

चौरासीलाख योनि में भटकतभटकत ऐसो मानुष शरीर पायकै अबकी जो घात चूक्यो साहब को न जान्यो तो संसार-चक्र में परैगो और यमकी घनेरी लातैं सहैगो ॥ १०५ ॥

ज्ञानरतनको यतनकरु, माटी का शृङ्गार ॥
आयाकबिरा फिरि गया, झूठा है हंकार १०६

साहब के ज्ञानरतन को यतनकरु जाते साहब को ज्ञान होय यह जो माटी कहे शरीर को शृङ्गार करै है सो अनित्य है कबिरा कहे काया को बीर! यह संसार में आया और फिरिगया

तब शरीर पराय जाताहै यह जो अहंकार करताहै कि हम शरीर हैं हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं सो सब झूठे हैं और जो फीका है संसार यह जो पाठ होय तो यह अर्थ है कि साहब के ज्ञानरतन को जो यतन करै है ताको या संसार फीके लगै है जो कोई दाख को खानवारो है ताको महुवा फीके लगै है ॥ १०६ ॥

मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न दूजी बार ॥
पक्काफल जो गिरिपरा, बहुरि न लागै डार १०७

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभ है जौन अवैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरिपरै है तौ पुनि वह डार में नहीं लगै है अबै साहब के जानिबे को समय है सो साहब को जानि लेउ ॥ १०७ ॥

बांह मरोरे जातहौ, मोहिं सोवत लियो जगाय ॥
कहै कबीर पुकारिकै, यहि पैंड़े ह्वैकै जाय १०८

मुसल्मानन में जे साहब के भक्त होय हैं ते जब भजन करै हैं तब उनको पीर दस्ततेदस्त मिलावै हैं सो दस्त मिलायकै साहबको बताइ देइ हैं पास पहुँचाय देय हैं तिनसों जीव वे कहै हैं कि हमारी बांह मरोरे चलेजाउ हौ हम संसार में सोवत रहे सो जगाय लियो तब उनके पीर जे हैं कबीर ते कहै हैं कि यहि पैंड़े ह्वैकै जाउ या कहिकै साहबके जायबेको राह बताय देइ हैं तब उनके परमगुरु जे हैं महम्मद आदि दैकै पैगम्बर तिनके इहां पहुँचाय देय हैं तब उनके चेला वह राहचलि महम्मद के पास पहुँचैहैं तब महम्मद साहब के पास पहुँचावैहैं और हिन्दुन में जे श्रीरघुनाथजी को स्मरण करैहैं ते गुरुद्वारा ह्वैके सुमिरन करै हैं ते गुरु परमगुरु को मिलावै हैं परमगुरु आचार्य को मिलावै हैं ते साहब को मिलाय देइहैं जैसे रामानुजमतवारे आपने गुरु को प्राप्तभये और गुरु शठकोपाचार्य को प्राप्तभये और वे विष्वक्सेन को प्राप्त कियो जीवको और वे संकर्षण को प्राप्तकियो और वे